हैनिमैन पब्लिशिङ्ग कम्पनी प्राइवेट लि० के पक्षमें
श्री गौरीशंकर भट्ट द्वारा
१६५, विपिन विहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
से प्रकाशित

प्रथम सस्करण—नवम्बर, १९५२
तृतीय सस्करण—मार्च, १९६२
चतुर्थ संस्करण—जनवरी, १९६८
पञ्चम सस्करण—जून, १९७२
षष्ठ सस्करण—जनवरी, १९७८

मुद्रक
सुराना प्रिंटिङ्ग वर्क्स
२०५, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-७

ग्रन्थकारका निवेदन

मेरे चिकित्सक-वन्धुओंमें वहुतोंने मुझसे प्रश्न किया है कि मै वायोकेमिक पुस्तक न लिख यदि होमियोपैथिक पुस्तक लिखता तो जनसाधारणका और अधिक उपकार होता। किन्तु वे लोग नही जानते कि वायोकेमिक मतसे औषधका प्रयोग कर समय-समयपर मैं कितना आश्चर्य-जनक सुफल पाता हूँ। अन्य मतोंसे चिकित्सित असफल छोड दिये गये रोगी जवकि ऐसी हालतपर पहुँचे हैं, जिस समय कि कोई अच्छे लक्षण नहीं पाये जाते—इसके अलावा रोगीकी हालत भी चिन्ताजनक, और जिन सव दुरारोग्य जटिल रोगियोंके लिये प्रख्यात होमियोपैथिक चिकित्सकोंके साथ परामर्श करनेपर भी सुफल नहीं पा सका हूँ अथवा उनके परामर्शके ऊपर रोगीके जीवन-मरणकी समस्याके समय सम्पूर्णरूपसे निर्भर नही रह सका हूँ—उन्ही सव सकटके मुहूर्तोंमें इन वारह दवाओंकी सहायतासे ही रोगी और उसके सगे-सम्वन्धियोंको ढाढस वँधा सका हूँ। वादमें उपयुक्त लक्षणोंकी सहायतासे होमियोपैथिक अथवा अन्तमें उन्ही टिशू दवाओंकी सहायतासे ही रोगी को निर्दोषपूर्णरूपसे आरोग्य कर सका हूँ। किसी भी रोगीकी चिकित्सा करते समय मैं जो असफल नहीं होता हूँ उसका यही कारण है। चिकित्सकोंके लिये इसका मूल्य कितना अधिक है, यह अनुभव व अनुधावन करनेके अलावा प्रकट करना सम्भव नही। ग्रामांचलके चिकित्सकोंको मुख्यतः दरिद्र रोगियोकी चिकित्सा कर ही अपनी रोटी चलानी पडती है। वे दरिद्र न तो चिकित्सकको रोगी ही दिखला सकते हैं और न उसकी हालतोंका ठीक-ठीक वर्णन ही कर सकते हैं। इन हालतोंमें उपयुक्त लक्षणोंके अभावमें रोगीको छोड देनेपर वे अशिक्षित चिकित्सकोंके हाथमें पडकर कुचिकित्साके फलस्वरूप मृत्युके मुखमें जा पडते हैं अथवा वहुत दिनोंतक रोग भोगकर समस्त जीवनको ही विषाद-पूर्ण वना डालते हैं। ऐसी

प्रकाशनके सम्बन्धमें

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध पुरानी वीमारियोके चिकित्सक, विविध दैनिक व मासिक पत्रिका तथा अन्यान्य कईएक चिकित्सा सम्बन्धी उपयोगी बंगला पुस्तकोंके लेखक डॉ० श्री विजयकुमार वसु, एच० एम० बी० के वगला भाषाकी वायोकेमिक कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिका व थेराप्यूटिक्स नामक पुस्तकका हू-ब-हू और सरल हिन्दी अनुवाद है। वगलामें वहुत थोडे समयके अन्दर ही इसके १४ संस्करण हो चुके हैं। इसीसे पता लग जाता है कि वगभाषामें इसका कितना आदर और प्रचार है। वगलामें इसका इतना आदर और प्रचार तथा इसकी उपयोगिता देखकर ही हिन्दी-साहित्यके एक आवश्यक अंगकी सेवा करनेके उद्देश्यसे हिन्दी भाषा-भाषी पाठकोंके हाथमें इस परमोपयोगी चिकित्सा-ग्रन्थको सौंपते हुए हमें अत्यन्त ही हर्ष होता है कि हम हिन्दी-जगतकी एक महान आवश्यकताकी पूर्ति करनेमें हाथ बँटा सके। इसकी विषय समझानेकी उत्तमता, अन्य औषधोंसे तुलना तथा साथ-ही-साथ जगह-जगहपर रोगियोंके विवरण दे चिकित्साके रहस्यको वताते जाना ही खास एक विशेषता है।

इसकी भाषाको यथासाध्य सरल वनानेकी तथा अर्थानुसार यथोपयुक्त हिन्दी शब्दोको व्यवहारमें लानेकी चेष्टा रखी गयी है, किन्तु इस विषयपर भी पूरा ध्यान रखा गया है कि जिसमें मूल विषयोंमेंसे कुछ छूटने न पाए तथा विषय भी वगलाके अनुरूप ही रहें, उनमें कोई अन्तर न आने पाये। चिकित्सक या विद्यार्थी या अन्य वायोकेमिक चिकित्सा-प्रेमी जो घर वैठे चिकित्सा करते हैं—उनके लिए भी यह पुस्तक उपयोगी तथा अनिवार्य है।

आशा है पाठकगण इस उपयोगी पुस्तकको भी हमारी प्रकाशित अन्यान्य हिन्दी पुस्तकोंकी ही भाँति अपनाकर हमें उत्साहित करेंगे और तभी हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

हैनिमैन पब्लिशिंग कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड

सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ

बायोकेमिक
कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिका

बायोकेमिककी उत्पत्ति

वायस (bios) एक ग्रीक शब्द है , इसका अर्थ लाइफ या जीवन होता है। केमिष्ट्री (chemistry) शब्दका अर्थ रसायन है। अतः वायोकेमिष्ट्री शब्दका अर्थ जीवन-रसायन या जैव-रसायन होता है।

हमारा शरीर साधारणतः ऑर्गैनिक या जान्तव एव इन-ऑर्गैनिक या धातव—इन दो प्रकारके पदार्थोंकी सहायतासे रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अस्थि, मज्जा, मांस इत्यादि जरूरी चीजोंको वनाकर जीवनकी पुष्टि, वृद्धि और रक्षा कर रहा है। जीवित देहमें हमेशा धातव और जान्तव इन दोनों प्रकारके पदार्थोंमें आवश्यकतानुसार आदान-प्रदान होनेके फलस्वरूप ही जीव स्वस्थ रहता है। **जीवित शरीरमें कभी जान्तव पदार्थोंकी कमी नहीं होती।** केवल धातव पदार्थकी ही कमी होती है। जव किसी कारणसे इस धातव पदार्थका अभाव होता है, तव जिन-जिन धातव पदार्थोंका अभाव हुआ है, उनके साथ सम्बन्धित जान्तव पदार्थ भी स्वयं वेकार हो जाते हैं। वे अभावग्रस्त धातव पदार्थ समूह दवाके रूपमें शरीरके भीतर ग्रहण करनेसे अभावकी पूर्ति एवं शारीरिक गड़वड़ी दूर हो जाती है। जीवित दशामें जो रासायनिक क्रिया चल रही है, उसे **जीवन-रसायनके नामसे** पुकारा जाता है।

बायोकेमिक चिकित्साका इतिहास

१८३२ ई० में किसी एक जर्मन सवादपत्रमें किसी एक अभिज्ञ चिकित्सकने घोषित किया था कि मानव शरीरका सवसे आवश्यकीय उपकरण समूह ही सर्वश्रेष्ठ दवा है। इसके कई एक वर्षोंके पश्चात् अर्थात् १८६४

ईसवीमें उक्त पत्रिका ही में दूसरे एक विज्ञ चिकित्सकने एक लेखमें लिखा कि मानव शरीरके जो-जो स्थान जिन-जिन जरूरी चीजोंसे वने हुए हैं, वही-वही जरूरी चीज उन स्थानोंमें लाभदायक होते हैं। इसके वाद १८७३ ईसवीमें जर्मनके अन्दर ओल्डेनवर्गमें रहनेवाले डॉ० मेडी शुसलरने लिपजिग होमियोपैथिक गैजेट नामक एक होमियोपैथिक चिकित्सा पत्रिकामें एक लेख लिखा कि वे एक वर्ष तक रोग दूर करनेके निमित्त टिशू दवाओंकी परीक्षा कर सफल हुए हैं।

उक्त लेख प्रकाशित होनेके वाद किसी चिकित्सकने उसका प्रतिवाद करके महात्मा शुसलरको उनके द्वारा परीक्षित नई चिकित्सा-प्रणालीका सविस्तार वर्णन करनेके लिये अनुरोध किया। अतः तदनुसार उन्होंने उक्त पत्रिकामें एब्रिजड् सिस्टेम ऑफ थेराप्यूटिक्स (Abridged system of Therapeutics) नामसे एक सविस्तार लेख लिखा। सात वार प्रकाशित होनेपर यह लेख समाप्त हुआ। अमेरिकाके एच० मी० जी० लुटिम नामक किसी चिकित्सकने होमियोपैथिक न्यूज (*Homœopathic News*) नामक पत्रिकामें उक्त जर्मन लेखका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया। यह अनुवाद प्रकाशित होनेपर चारों ओर इस विषय पर तीव्र समालोचना होने लगी। उसी समय अमेरिकाके विख्यात होमियोपैथिक चिकित्सक कॉन्स्टैनटाइन हेरिङ्गने (Constantine Hering) टिशू रेमेडीके विषयपर एक पुस्तक लिखी। उन्होंने स्वयं उनमें एक लेख लिखकर शुसलरके लेखोंको भी उसमें सम्मिलित कर दिया एवं इसके आविष्कारक महाप्राण शुसलरको विशेष धन्यवाद देकर सर्वसाधारणको प्रचारित विषयके सत्यासत्यका निर्णय करनेके लिये अनुरोध किया। जनसाधारणके आग्रहसे थोडे ही दिनोंके अन्दर इस पुस्तकके कई संस्करण विक गये। इसके वाद अमेरिका, जर्मन, स्काटलेण्ड आदि विभिन्न देशोंमें ख्यातनामा चिकित्सकोंने अनेक पुस्तकों और पुस्तिकाओंको प्रकाशित कर इस मतकी नवीनताको दूर किया है। अव अधुना ग्रामवासी भी वायोकेमिक चिकित्साके विषयमें जान गये हैं।

वायोकेमिष्ट्री और होमियोपैथीमें अन्तर

कोई-कोई कहते हैं कि वायोकेमिष्ट्री और होमियोपैथी एक ही चीज है ; किन्तु यह विलकुल गलत धारणा है। दोनों चिकित्सा प्रणालियाँ ही सम्पूर्ण भिन्न हैं। **वायोकेमिकका मूलसूत्र यह है—अभावकी पूर्ति करना**, अर्थात् जव जिस वस्तुका अभाव या कमी दिखलाई पडती है, तव ठीक उसी वस्तुसे उक्त अभाव या कमीकी पूर्ति करना। अभावकी पूर्ति होनेसे रोग-लक्षणोंकी भी शान्ति होगी। किन्तु होमियोपैथीका मूलसूत्र यह है—सम. सम शमयति, अर्थात् नीरोग शरीरमें जिस दवाके सेवनसे जो-जो लक्षण उत्पन्न होते हैं, रोगग्रस्त शरीरमें उन्हीं लक्षणोंके दिखलाई देनेपर वहुत सूक्ष्म मात्रामें वही दवा पिलाने या सेवन करानेसे वे लक्षण दूर होकर वीमारी दूर हो जाती है। नीरोग शरीरमें किन-किन नियमोंसे दवा सेवन करनेपर लक्षण-समूह प्रकट होते हैं वह यदि अच्छी तरहसे जानना चाहें, तो हैनिमैनका ऑर्गानन पढना चाहिए।

शरीरमें कौन-सा द्रव्य किस परिमाणमें है

हम लोगोंके शरीरमें द्वादश (वारह) धातव लवण है। उनके नाम—(१) कैल्केरिया फ्लोरिकम (calcarea fluoricum) ; (२) कैल्केरिया फॉस्फोरिकम (calcarea phosphoricum), (३) कैल्केरिया सल्फ्यूरिकम (calcarea sulphuricum) ; (४) फेरम फॉस्फोरिकम (ferrum phosphoricum) ; (५) कैलि म्यूरियेटिकम (kali muriaticum), (६) कैलि फॉस्फोरिकम (kali phosphoricum) ; (७) कैलि सल्फ्यूरिकम (kali sulphuricum), (८) मैगनेशिया फॉस्फोरिकम (magnesia phosphoricum) ; (९) नेट्रम म्यूरियेटिकम (natrum muriaticum), (१०) नेट्रम फॉस्फोरिकम (natrum phosphoricum), (११) नेट्रम सल्फ्यूरिकम (natrum sulphuricum), (१२) साइलिसिया (silicea)। इन वारह धातव-लवणोंको छोडकर और भी कई एक धातव-लवण शरीरके

अन्दर हैं, किन्तु दवाके लिये इनकी आवश्यकता नहीं होती। महाप्राण शुसलरने अपने अन्तिम जीवनकी अभिज्ञतासे केल्केरिया सल्फ्यूरिकमकी आवश्यकताका अनुभव नहीं किया है। उन्होंने इस दवाकी जगह नेट्रम फॉस एवं साइलिसियाके व्यवहार करनेका उपदेश दिया है। किन्तु हमलोग जब कैल्क सल्फ से उपकार पाये हैं, तब इसको छोड़ नही सके। हमारा शरीर नष्ट हो जानेपर जान्तव पदार्थ समूह और जल नष्ट हो जाते हे, किन्तु धातव पदार्थ रह जाते हैं। और धातव पदार्थ ही दवाके रूपमें व्यवहृत होते हैं।

जान्तव पदार्थ-समूह धातव पदार्थोंकी सहायताके बिना कार्यशील नहीं होते, यह तो पहले ही कहा जा चुका है। प्राणी शरीरमें २/१० अंश जान्तव पदार्थ हैं। वे जान्तव पदार्थ चरबी, अण्डलाला, जिलेटिन, कार्बोनेट एव फाइब्रिनके रूपमें शरीरमें वर्तमान हैं। शेष ८/१० अंशके अन्दर ७/१० अंश ही जल एव केवल १/१० अंश धातव पदार्थ हैं। यह १/१० अंश धातव पदार्थ ही हम लोगोंकी पूर्व वर्णित द्वादश दवाएँ हैं। धातव-लवणका अंश थोड़ा होनेपर भी उसकी क्रिया बहुत विस्तृत है। और ये ही जान्तव पदार्थ-समूहको कार्यशील बनाते हैं।

किस प्रकार धातव-लवण समूह गृहीत होते है

साँसके रास्ते वायु ग्रहण, भोजन, पानीय, सूर्यकिरणादि द्वारा धातव-लवण समूह शरीरके अन्दर गृहीत हुआ करते हैं। खाया और पीया हुआ द्रव्य लाला, पाकस्थलीके रस, क्लोम-रस इत्यादिके साथ मिलित होकर धीरे-धीरे रक्तके रूपमें परिणत होते हैं। इसके बाद यह रक्त फेफड़ेमें प्रविष्ट होकर साँस द्वारा गृहीत आक्सिजेनकी सहायतासे विशोधित होकर धमनी और केशिका नाड़ीकी सहायतासे सारे शरीरमें परिचालित होकर प्रत्येक टिशूको उसके अभावके अनुसार धातव-लवण दिया करता है।

जीव-शरीरकी तरह वृक्ष-लतादि भी मिट्टी, पानी और हवा इत्यादिसे धातव-लवण समूह ग्रहण किया करते हैं। यदि किसी कारणसे भूमिकी

उर्वरता-शक्ति नष्ट हो जाय, या उपयुक्त सूर्यकिरण और वायु का अभाव हो और यदि वह शीघ्र ही पूरा नहीं होता है, तब वृक्ष-लतादि शीर्ण हो जाते हैं। अगर हम लोग उन अपुष्टिकर वृक्षोंके फल, शीर्ण शाक-सब्जी इत्यादि खावें, तो वृक्ष-लतादिकी तरह अल्प परिमाणमें धातव-लवण ग्रहण करनेके कारण हम भी शीर्ण हो जायेंगे। अतः खाद्य द्रव्यादि सदा विचारपूर्वक ग्रहण नहीं करनेसे हमें अस्वस्थ या पीडित हो जाना पडता है।

वीमारीके कारण

पहले ही कहा जा चुका है कि हमारे शरीरमें कभी जान्तव पदार्थोंकी कमी नहीं होती—धातव पदार्थोंकी ही कमी हुआ करती है। यदि कभी किसी कारणसे धातव पदार्थका अभाव हो जाता है, तो जिस धातव पदार्थका अभाव हुआ है, उस धातव पदार्थके साथ सम्बन्धयुक्त कोई भी जान्तव पदार्थ कार्यकारिताके अभावके कारण शरीरके लिये हानिकारक हो पडता है एव प्रकृति इस हानिकारक पदार्थको शरीरसे निकाल देनेकी चेष्टा करती है। अथवा कुछ लक्षणोंको प्रकट कर शरीरमें धातव पदार्थके अभावको सूचित करती है। **ये अभावसूचक लक्षण ही पीड़ाके नामसे पुकारे जाते हैं।**

हमारा शरीर हमेशा क्षय होता रहता है। पानाहारादिसे हमलोग फिर इस क्षयकी पूर्ति करते हैं। यदि किसी वजहसे पाकस्थलीकी गड-बडीके कारण खायी हुई वस्तुका परिपाक नहीं होता है, तब इन धातव-लवणोंके अभावसे अनेक प्रकारकी वीमारियाँ पैदा हो जाया करती हैं। जब जिस प्रकारके द्रव्यका अभाव होता है, यदि उस समय उस द्रव्यके अभावकी पूर्ति न की जाय, तो उस पदार्थके साथ सम्बन्ध रखनेवाला एक और धातव-लवणकी कमी हो पडती है। इस प्रकार धीरे-धीरे वीमारी जटिल या कठिन हो जाती है।

कोष-समूहकी अप्राकृतिक अवस्था ही पीड़ा है। महाप्राण शुसलरने परीक्षाके द्वारा यह ज्ञान प्राप्त किया कि जो-जो कोष पीडित

हो जाते हैं और उन पीडित कोषोंमें जिन-जिन धातव-लवणोंकी आवश्य-कता रहती है, वे यदि सूक्ष्म मात्रामें शरीरके अन्दर प्रविष्ट करायी जायँ, तो पीडित कोष-समूह पुनः स्वस्थ होकर कार्यशील हो जाते हैं।

चिकित्साका उद्देश्य

इसके पहले पीडाके कारण अध्यायमें जो कुछ कहा गया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रक्त या कोषमें धातव-लवणोंकी कमी ही पीडा या बीमारी है और **इस अभावकी पूर्ति ही वास्तविक चिकित्साका उद्देश्य है।** जिस प्रकार भूख लगनेपर जब तक उचित रूपमें खाना नही मिलता, तब तक किसी दूसरी चीजोंसे जठरानलको शान्ति प्राप्त नही होती, उसी प्रकार चिकित्साका उद्देश्य भी अभावग्रस्तके अभावको पूरा करना है। लक्षणो ही से अभाव जाना जाता है एवं यही एकमात्र उपाय है।

लक्षण (symptom)

स्वस्थ शरीरकी विकृति अथवा औषध सेवनजनित अस्वाभाविक अवस्थाको लक्षण कहते हैं।

साधारण लक्षण (generic symptom)

वे लक्षण जो कि अनेक दवाओमें दिखाई देते हैं, उन्हे जेनरिक या साधारण लक्षण कहा जाता है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptom)

किसी एक दवाका जो लक्षण या लक्षण-समूह केवल उसी दवामें दिखाई देता है, उसे उस दवाका कैरेक्टरिस्टिक या विशेष अथवा परि-चायक लक्षण कहते हैं।

क्लिनिकल लक्षण (clinical symptom)

जो सब लक्षण दवाकी परीक्षा (provings) के समय प्रकट नही हुए हैं, तथापि जो लक्षणसमूह किसी दवासे दूर हो जाते हैं, उन्हें उस दवाका

अभिज्ञतामूलक या क्लिनिकल लक्षण कहते हैं। क्लिनिकल लक्षणके सम्बन्धमें केवल सत्यवादी विद्वान चिकित्सकोंकी वातोंपर ही निर्भर किया जा सकता है।

सवजेक्टिव लक्षण (subjective symptom)

जिन सब रोग-लक्षणोंको रोगी केवल अपने ही अनुभव कर सकता है और विना वताये हुए चिकित्सक अनुभव नहीं कर पाते, उन्हे सवजेक्टिव लक्षण कहते हैं।

ऑवजेक्टिव लक्षण (objective symptom)

जिन सब रोग-लक्षणोंको चिकित्सक रोगीकी सहायताके विना अपने ही रोगीकी परीक्षा करके समझ सकते है, उन्हे ऑवजेक्टिव लक्षण कहते हैं।

दवाओं का सूक्ष्म मात्रामे व्यवहृत होनेका कारण

दवाएँ किसी प्रकार रक्तमें मिश्रित न होनेसे कार्यशील नही होती। रक्तस्रोतमें मिश्रित होनेके लिये कैशिका नाडीसमूह (capillary) ही केवल एक रास्ता है, किन्तु कैशिका नाडीसमूह इतनी छोटी है कि एक ग्रेनके सहस्रांशके एक अंशके अलावा उसके अन्दर प्रविष्ट नही हो सकता। दवा यदि स्थूल होती है, तो वह पाकस्थलीमें जाकर खाद्यादि की तरह परिपाक होकर तव कैशिका नाडीके द्वारा रक्तमें मिश्रित होती हैं (दवा खाद्यादिसे सूक्ष्म होनेके कारण उससे अल्प समयमें ही परिपाक हो जाती है)। स्थूल दवाके प्रयोगसे तीन मुख्य हानियाँ दीख पडती हैं।

(१) स्थूल दवा परिपाक होकर रक्तमे मिश्रित होनेसे वहुत विलम्ब होता है। (२) रुग्न शरीरमें परिपाक यन्त्रसमूह स्वभावत. दुर्वल हो पडते हैं एव इस स्थूल दवाको सूक्ष्म रूपमें परिणत करनेमें **पाकस्थली और भी दुर्वल और परिश्रान्त हो जाती है।** (३) रुग्न शरीरमें पुष्टिके अभावके कारण पाकस्थलीके अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकारके

हानिकर पदार्थ सञ्चित होनेसे शोषण-शक्ति अधिकाशमें नष्ट हो जाती है। ऐसी हालतमें स्थूल दवाके कितने अश कार्योपयोगी हुए, यह निश्चित नहीं किया जा सकता। इन्हीं कारणोंसे होमियोपैथिक और बायोकेमिक चिकित्सकगण सूक्ष्म मात्रामें दवाका व्यवहार करते हैं। दूसरे मतके चिकित्सकका रोगी आरोग्य प्राप्ति करनेके बाद भी इसी वजहसे दुर्वल हो पडता है।

पुरानी बीमारियोंमे दवाकी सूक्ष्मतर एवं सूक्ष्मतम मात्रा

बहुत दिनोंसे बीमारी रहनेके कारण परिपोषणका अभाव होनेसे कोष-समूह अत्यधिक पीडित होते हैं और पीडित्त कोष-समूहके चारों ओर बहुत परिमाणमें अनुपयोगी पदार्थ समूह सञ्चित होकर तत्रत्य विधान समूह (tissue) को सकुचित बना देते है। इस सकुचनके परिणाम-स्वरूप शोषण-क्रिया भी अच्छी तरह सम्पन्न नही हो पाती। अतः पुरानी बीमारी आराम करनेके लिए बहुत सूक्ष्म मात्रामें दवा सेवन नही करानेसे वह शारीरिक रक्तमें गृहीत नही होती। दवा जितनी ही सूक्ष्म होगी, शक्ति उतनी ही उच्च होगी। सूक्ष्मतर एव सूक्ष्मतम मात्राकी दवा ही उच्चतर और उच्चतम शक्तिकी दवा है।

चूर्ण अथवा तरल व्यवहार करना चाहिए

केवल दो उपायोंसे दवा सूक्ष्मरूपमें व्यवहारकी जाती है। प्रथमतः—सुरासारमें, द्वितीयतः—दुग्ध शर्करामें (दूधकी चीनी)। बायोकेमिक दवाएँ दूधकी चीनीके साथ व्यवहार करना ही ठीक है। बायोकेमिक औषधके आविष्कारक डॉ० शुसलर, डॉ० चैपमैन, डॉ० कैरे प्रभृतिने भी चूर्ण या टैबलेट (टिकिया) में व्यवहार करनेके लिए उपदेश दिया है। सुरासारके साथ व्यवहार करनेमें कौन-कौन-सी बाधाएँ हैं उसके बारेमें अब कहा जाता है।

(१) प्रथमावस्थामें बायोकेमिक दवाएँ सुरासारमें पिघलायी नहीं जा सकती। ६x तक चूर्ण बनाकर इसके बाद सुरासारके साथ मिश्रित

किया जा सकता है। लेकिन १x से ६x तककी शक्तियाँ अधिकतर व्यवहृत होती हैं।

(२) रासायनिक परीक्षासे यह प्रमाणित हुआ है कि हमारे शरीरमें सुरासारके ऐसा किसी पदार्थका कोई अस्तित्व ही नहीं है, किन्तु दुग्ध शर्कराका अस्तित्व विशेषरूपसे प्रमाणित हुआ है। अतः सुरासारके द्वारा दवा बनाना बुद्धिमानीका काम नहीं।

(३) सुरासार उत्तेजक है, किन्तु दुग्ध शर्करा अनुत्तेजित एवं एक प्रकारका खाद्य पदार्थ है।

(४) सुरासार द्वारा बनाई गयी औषध दुग्ध शर्करासे बनाई हुई औषधकी तुलनामें बहुत कम दिनों तक स्थायी होती है। चूर्ण औषध अनेक वर्षों तक भी नष्ट नहीं होती और उसकी भेषज-क्रिया भी ठीक रहती है; और तरल औषध बहुत वर्षों तक स्थायी नहीं होनेपर भी दो-तीन वर्षों तक आसानीसे रहती तो है, किन्तु थोडे ही दिनमें स्पिरिट उड जानेकी वजहसे इसके भेषजगुणोंमें फर्क आ जाना कोई आश्चर्यजनक नहीं।

किस रीतिसे चूर्ण बनाया जाता है

दवा बनानेकी प्रणालीके सम्बन्धमें विशेष ज्ञानार्जन करनेके हेतु फार्माकोपिया (pharmacopœia) नामक पुस्तकका अध्ययन करना चाहिये। जो कुछ हो, चूर्ण बनानेकी प्रणालीके विषयमें यहाँ कुछ कहना आवश्यक है।

बायोकेमिक दवाएँ दशमिक प्रक्रियाके नियमानुसार बनी हुई हैं। एक अंश मूल औषधके साथ ९ अंश दुग्ध-शर्करा मिश्रित करनेसे १x चूर्ण तैयार होता है। प्रथम क्रमकी दवामें दवाके दस हिस्सेका एक हिस्सा मूल औषध रहता है। दूसरे क्रमके औषधमें इसके पहलेवाले क्रमसे दस अंश का एक अंश क्रमकी दवा रहती है। x या द चिह्नसे दशमिक क्रम प्रकट होता है। डॉ० हेरिङ्गने सबसे पहले यह नियम प्रकट किया। औषध बनाने की तीन दशाएँ हैं। जैसे—

(१) जिस दवाका चूर्ण बनाना होगा उसका एक ग्रेन लेकर एक अच्छी तरहसे साफ किये हुए वेजऊडसे बने खरलमें रखिये। उसके अन्दर तीन ग्रेन दुग्ध शर्करा देकर अच्छी तरहसे स्पेचुला द्वारा मिलाना होगा। इसके बाद वेजऊडसे बने हुए एक मर्दक (मूसल) द्वारा उसे ६ मिनट तक चक्रकारमें जोरसे मर्दन करना पड़ेगा। इसी समयके अन्दर ही जिससे यह मिलावट उत्तम रीतिसे मिश्रित हो जाय। इसके पश्चात् तीन मिनट तक स्पेचुला द्वारा खरल एवं मर्दकसे अणुसमूहको पृथक करना होगा। तब एक मिनट तक उस मिश्रित वस्तुको आलोड़ित करना होगा। पुनः ६ मिनट तक मर्दक द्वारा मर्दन, तीन मिनट तक स्पेचुला द्वारा खरल एवं मर्दकसे अणुसमूह अलग करना और एक मिनट तक मिश्रित पदार्थको आलोड़ित करना—इस प्रकार प्रथम अंशको बनानेमें २० मिनट समय खर्च हुआ।

(२) पहलेके बनाये हुए अंशमें और तीन ग्रेन दुग्ध शर्करा मिलाकर प्रथमांशके नियमानुसार २० मिनट तक द्वितीय अंश बनाना होगा।

(३) पहले बनाये हुए अंशके साथ और तीन ग्रेन दूधकी चीनी मिश्रित कर पूर्व नियमानुसार २० मिनट तक औषध तैयार करनेसे तृतीयांश बनानेमें भी २० मिनट समय लगा।

उपरोक्त प्रणालीसे एक क्रम तैयार करनेमें पूरे एक घण्टे समयकी आवश्यकता होती है। किन्तु कोई-कोई कहते है कि एक क्रम तैयार करनेमें १० घण्टेका समय खर्च करना चाहिए। एक भाग औषधके साथ ३ भाग करके तीन बारमें ९ भाग दुग्ध शर्करा २० मिनट करके पूरे एक घण्टेमें बनाना ही साधारण नियम है। किन्तु वे लोग एक भाग औषधके साथ पहले १ भाग दुग्ध शर्करा ३ घण्टेमें, द्वितीय बारमें उसके साथ ३ भाग दुग्ध शर्करा तीन घण्टेमें एवं तृतीय बारमें ५ भाग दुग्ध शर्करा ४ घण्टेमें, कुल एक क्रम तैयार करनेमें पूरे दस घण्टेका समय लगाते हैं।

डॉ० वार्टके मतसे दुग्ध शर्कराके साथ अत्यल्प परिमाणमें सुरासार

मिश्रित करके थोडा भिगा लेना कर्त्तव्य है। इससे चूर्ण अच्छी तरह तैयार होता है।

चूर्ण और टैबलेटमे अन्तर

चूर्ण और टैबलेटमें कोई अन्तर नहीं है। टैबलेटमें मात्रा या खोराक ठीक रहता है। अतः अनेक समय इसे व्यवहार करना ही सुविधाजनक है। जब कोई अन्तर नहीं है, तो जो जैसा चाहे व्यवहार कर सकते हैं।

औषधिकी मात्रा

बायोकेमिक दवाओंकी मात्राके विषयमें बहुतेरे चिकित्सकोमे थोडा-बहुत मतभेद है। इसका कारण मालूम होता है कि बायोकेमिक दवाओके आविष्कारक डॉ० शुसलर दवाओ का परिमाण इस रूपमें निर्दिष्ट नही कर गये हैं कि जिसके अनुसार सभी एक ही सिद्धान्तपर पहुँच सकते है। उनकी लिखी हुई पुस्तक *An Abridged Therapy Manual* के अतिम संस्करणमें वे a quantity of the trituration as large as a pea अर्थात् विचूर्ण दवाका परिमाण एक मटरके दानेकी तरह होगा यही उल्लिखित है। एक मटरके दानेकी वजन कितनी होगी, इसका कोई उल्लेख नहीं है। फलस्वरूप कोई ग्रन्थकार लिखे हुए है कि बायोकेमिक दवाकी मात्रा पूरी आयुके लोगोंके लिये पाँच ग्रेन, बालकोके लिये उसकी आधा मात्रा और शिशुओंके लिये एक ग्रेनकी मात्रा होनी चाहिए। अमेरिकाके विख्यात औषध प्रस्तुतकारक बोरिक एण्ड टैफेल कम्पनी एक ग्रेन, तीन ग्रेन व पाँच ग्रेनकी टिकिया (टैबलेट) तैयारकी है। किन्तु उनकी कम्पनीसे प्रकाशित डॉ० विलियम बोरिक व डॉ० डिवि लिखित पुस्तकमें लिखा हुआ है कि विचूर्ण दवा एक ग्रेनकी टिकियामें तैयारकी जाती है और दो या तीन टिकियाकी एक मात्रा दवा, (These triturations may be moulded into tablets usually of one grain each, the dose being two or three taken dry on tongue) डॉ० केरे (Carey) पूरी आयुवालोको पाँच ग्रेन और बालक-बालिकाओंके लिये उसका आधा देनेके लिये कहते हैं (The usual dose for adults is 5 celloids of the indicated remedy For children about one-half the quantity)

डॉ० शुमलर मात्राका परिमाण सुस्पष्टरूपमें निर्दिष्ट न कर देनेपर भी वे जो क्षुद्रतम मात्राके व्यवहार करनेके पक्षमें हैं, यह उनकी लिखी पहलेकी पुस्तकसे मालूम होता है। वे वायोकेमिक उद्देश्यसे व्यवहृत लवणका परिमाण अत्यधिककी अपेक्षा अतिक्षुद्र करनेका उपदेश दिये हुए हैं। मात्रा अति क्षुद्र होनेपर सफलता मिलेगी, किन्तु मात्रा अत्यधिक वडी होनेपर विफलता लायेगी (It is better, in prescribing a salt for a biochemical purpose, to make the dose too small than too large. If it is too small, the goal will be reached by repeating it, but if it is too large, the end to be gained is wholly lost).

हमलोग विभिन्न मतवादोंपर निष्ठाके साथ विचारकर और दीर्घ ४० वर्षों तक शय्यासायी रोगियोंपर परीक्षा व उत्तम रूपसे पर्यवेक्षण कर इस सिद्धान्तपर पहुँचे हुए हैं कि **वायोकेमिक दवाओंकी मात्राका काफी क्षुद्र होना उचित है।** वडी मात्रा वहुत लम्वे समय तक व्यवहार करनेसे प्राथमिक अवस्थामें रोगीको फायदा होनेपर भी परिणाममें रोगीको नुकसान ही पहुँचाया जायगा। हमलोग जो मात्रा व्यवहार करते हैं और जिस मात्रासे कोई नुकसान न होगा ऐसा हमलोग समझते हैं, अतएव **एक ग्रेनके परिमाणमें जो टिकिया तैयार होती है, उसकी दो टिकियासे पूरी आयुवालोंके लिये एक मात्रा, वालकोंको उसकी आधा मात्रा और शिशुओंको चौथाई मात्रा देनी चाहिए।** ३०x शक्ति तक इस प्रकारकी मात्रामें दवा देकर वादकी उच्च शक्तियोंके क्षेत्रमें सदा एक ग्रेनकी मात्रामें ही दवा देनी उचित है। किन्तु **औषध पुनः पुनः प्रयोग करनेकी आवश्यकता होने पर** १० या २० ग्रेन औषध, ८ या १२ आउन्स सुसुम पानीके साथ मिश्रित कर उसमेंसे एक-एक चम्मच सेवन करनेके लिये देना चाहिये। २ या ३ दवाएँ पर्यायक्रमसे या मिश्रित कर देनेकी जरूरत पडनेसे दवाका परिमाण भी कम कर देना पडता है। किन्तु कुछ अधिक

औषध हो जानेपर भी रोगीको कोई हानि नहीं पहुँचता यह धारणा ठीक नहीं।

वायोकेमिक औषधिकी मात्राके सम्बन्धमें बहुतसे अच्छे-अच्छे चिकित्सकोंको भी कुछ ज्ञान नहीं है, मैंने यह देखा है। कई एक प्रसिद्ध चिकित्सकोंके साथ परामर्श करनेके लिए बुलावेमें जाकर मैंने देखा है कि वे प्रति मात्रामें ४ ग्रेन करके औषधका व्यवहार किया करते हैं। वे कहते हैं कि यद्यपि किसी पुस्तकमें इस प्रकारका कोई उपदेश नहीं है, तथापि व्यवहारिक क्षेत्रमें इस प्रकार मात्राका प्रयोग कर सफल हो रहे हैं। किन्तु दुःखकी वात है कि उनको पर्य्यवेक्षणकी कोई योग्यता या उसका कुछ मूल्य है ऐसा तो प्रतीत नहीं होता। लेखकने वहुत दिनों तक भिन्न-भिन्न प्रकारके रोगियोंकी चिकित्सा कर जो कुछ समझा है उससे प्रकट है कि पूर्ण वयस्कके लिए दवाकी मात्रा एक ग्रेन ही यथेष्ट है।

जिस परिमाणमे दवा रोगियोंको अनावश्यक रोगकी वृद्धि न कर आरोग्य क्रियाको सहायता करती है, वही मात्रा है। वह मात्रा साधारणतः एक ग्रेन मान लिया गया है और मृतवत् दशामें वह और भी कम मात्रामें व्यवहार करनेकी आवश्यकता हुआ करती है। इसीलिये जगद्विख्यात डॉ० नैशने कहा है—

"It is the dose, crude or potentized, capable of affecting the patient curatively, without unnecessary aggravation"—*The Testimony of the Clinic* by Dr. E. B Nash, Preface, page 4.

होमियोपैथिक चिकित्सामें शक्ति, मात्रा व मात्राके प्रयोग करनेकी समस्याको लेकर वहुत आलोचनायें हो चुकी हैं। हैनिमैन अपने पचास वर्षों तकके चिकित्सक-जीवनकालमें शक्ति, मात्रा व उसके प्रयोगके विषय में विस्तृत रूपमें आलोचना कर गये हैं और क्रमशः अनुभवके फलस्वरूप-विभिन्न समयमें विभिन्न मतोंको प्रकट कर गये हुए हैं। विभिन्न समयमें विभिन्न मतोंको प्रकट करनेपर भी वह पहलेके प्रकट किये मतके साथ सामञ्जस्यपूर्ण था और जीवनके अन्तिम समयमें उसका समाधान कर गये हैं। होमियोपैथीकी मूल भित्ति है सदृशनीति और एक समयमें केवल एक

ही दवाका प्रयोग करना उसकी मूल नीति है। इस कारणसे होमियोपैथीमें मात्रा व प्रयोग समस्याको जो जटिलता व महत्व है—वायोकेमिक चिकित्साकी मूल भित्ति अभावकी पूर्त्ति करनेकी नीति होनेके कारण आग अत्यावश्यकीय क्षेत्रमें एकसे अधिक औषधका प्रयोग किया जा सकता है, इसलिये वायोकेमिक चिकित्साके क्षेत्रमें यह जटिलता व समस्या उत्पन्न नही की है।

औषधके पुनः प्रयोगका समय

श्वासकाश, हेजा, शूलके दर्द इत्यादि तुरन्त प्राणनाशक और कष्ट देनेवाली वीमारियोमें ५-१०-१५-३० मिनटके अन्तरसे दवाका प्रयोग करना पडता है। सर्दी, ज्वर, खाँसी, अतिसार इत्यादि पीडाओंमें २-३ घण्टोके अन्तरसे दवाका प्रयोग करना पडता है। पुरानी वीमारियोंमें सुवह और शाम दैनिक दो वार, अथवा उच्च शक्ति होनेसे दैनिक एक वार औषधका प्रयोग करना पडता है। औषधसे उपकार होना आरम्भ होनेपर अधिक समयके अन्तरसे औषधका प्रयोग करना पडता है और पुरानी पीडामें जव तक या जितने दिनों तक वह उपकार होता रहे, तव तक या उतने दिनों तक रोगियोंको कोई भी दवा नहीं देनी चाहिये। रोगीके सन्तोषके लिए विना औषधकी पुडियाँ देनी चाहिये।

प्लासिवो, फाइटम, नाइहिलम इत्यादि किसे कहते हैं

रोगके आरोग्य होनेके समय रोगीके सन्तोषके लिये जो अनौषधि पुडियाँ दी जाती हैं उन्हींके भिन्न नाम प्लासिवो, फाइटम, नाइहिलम और सैक-लैक हैं। प्लासिवो (placebo) का लैटिन अर्थ है I will please, अर्थात् मैं सन्तुष्ट करूँगा, फाइटम (phytum) और नाइहिलम (nihilum) का अर्थ होता है nothing, अर्थात् कुछ (दवा) नही है, और सैक-लैक (sac lac) का पूरा नाम saccharum lactis or lactose अर्थात् दुग्ध शर्करा है।[1]

---

1 क्रमशः परीक्षाके द्वारा यह मालूम हो रहा है कि दुग्ध शर्करा भेषज गुण विहीन वस्तु नही है—इसके द्वारा वहुतेरे रोग आरोग्य होते हैं।

औपधोका पर्य्याय, अनुपर्य्याय और मिश्रण व्यवहार

वायोकेमिक दवाएँ बहुत समय २-३ एक साथ व्यवहार करनेकी आवश्यकता हो पडती है। प्रथम औपध सेवन करानेके बाद द्वितीय औपध और इसके बाद फिर प्रथम औपध पुनः द्वितीय औषध—इस प्रकारसे औपध प्रयोगको **पर्यायक्रमसे** औपध व्यवहार कहते हैं। कभी-कभी दो दवाएँ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेके समय अन्य किसी दवाकी भी २-१ मात्रा देनेकी आवश्यकता हो जाती है; इस प्रकारके व्यवहार को **अनुपर्यायक्रमसे** औषध व्यवहार कहा जाता है। एक औषधके साथ दूसरे औपधको मिलाकर व्यवहार करनेको **मिश्रण** व्यवहार कहा जाता है। किसी-किसी रोगीको औपध-सेवन करते रहनेके समय औषधकी क्रियाको वृद्धि करनेके हेतु या बल प्रदानार्थ २-१ मात्रा कैल्क फॉसकी व्यवहार करनी पडती है, उस हालतमें कैल्क फॉसको अनुपर्यायी औषध कहा जा सकता है।

औपध मिश्रण विधि

किसी-किसीके मतसे औपध पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये; और कोई-कोई कहते हैं कि औषधि मिश्रित करके प्रयोग करना ही अच्छा है। हम लोगोंके मतसे औपधकी क्रियामें जब कोई अन्तर नही पडता, तब दोनो ही प्रथायें ठीक हैं। पर हम लोग साधारणतः पर्यायक्रमसे दवाका व्यवहार करते हैं और दूसरोंको भी ऐसा करनेके लिए उपदेश देते हैं।

औपध मिश्रित कर व्यवहार करना हो, तो **सभी फॉसफेटोंको एक साथ, म्यूरियेट सबोंको एक साथ एवं सभी सल्फेटोंको एक साथ मिश्रित कर देना पड़ता है।** सल्फेटके साथ म्यूरियेटको, या म्यूरियेटके साथ फॉस्फेटको मिश्रित करना ठीक नही है। साइलिसिया सभीके साथ मिश्रित होता है। एक रोगीके लिये तीनसे अधिक औषध व्यवहार करनेकी इतनी अधिक आवश्यकता नही होती और होना भी

नही चाहिये। अगर तीन औषधोंका व्यवहार करना ही हो, और मिश्रण प्रथा चुनी जाय, तो दो मिश्रित कर एक पर्यायक्रमसे व्यवहार करना उचित है।

मिश्रण उचित है या नहीं

डॉ० चेपमैनका कहना है कि सभी दवाओके साथ सभी दवाओंको मिश्रित कर दिया जा सकता है। डॉ० वाकरने इस प्रथाकी निन्दा करते हुए किस दवाको किस दवाके साथ मिश्रित किया जा सकता है, इसकी एक तालिका निकाली है, किन्तु वह भ्रमपूर्ण है। उसका भी साराश चैपमैनकी ही वातका समर्थन करता है। हमलोग फॉस्फेटके साथ फॉस-फेट, सल्फेटके साथ सल्फेट इत्यादि इस प्रकारके मिश्रणके पक्षपाती हैं। हम एक जातीय औषधके साथ दूसरी जातीय औषधके मिश्रणका पक्षपाती नही हैं। पर पर्यायक्रमसे प्रयोग किया जा सकता है। किन्तु डॉ० शुसलरने अपनी लिखी हुई पुस्तकमें औषध कभी भी पर्यायक्रमसे या मिश्रित करके व्यवहार करनेका उपदेश नही दिया है।

वे अपनी लिखी पुस्तकमें कहे हुए हैं, Biochemical remedies are to be prescribed singly, mixtures are inadmissible. अर्थात् वायोकेमिक औषधियोंको एक वारमें एक ही का व्यवहार करना चाहिए, मिश्रितकर प्रयोग करना उचित नही। विदेशी लेखकोंके सौ-सौ आरोग्यकी कथायें हमलोग पढ़े हैं, जिन सव क्षेत्रोंमें कि केवल एक ही दवाका व्यवहार किया गया था। लक्षणोंपर विचारकर जिस दवाका अभाव सवसे अधिक हो, उसी दवाका प्रयोग करनेपर जितनी शीघ्रतासे रोगी आरोग्य होता है, २, ३, ४ औषधियोंका व्यवहार करनेपर उस शीघ्रतासे रोगी आरोग्य नहीं होगा। क्योंकि उसमें उपयुक्त दवाकी मात्रा व परिमाण रोगीको कम करके दिया जाता है। किन्तु इस दशामें रोगी वहुत लम्वे समय तक भोगते-भोगते एकसे अधिक धातव-लवणोका अभाव प्रवल रूपसे दीख पडता है, अथवा रोगी अत्यधिक दुर्वल व रक्तहीन हो पडनेपर या अन्य किसी कष्टदायक रोगके साथ

पाचनशक्तिकी क्रियामें बहुत बाधा पडने या अन्यान्य रोगोंके साथ रातमें अनिद्रा रहनेपर या हृद्‌पिण्ड (heart) अत्यधिक दुर्बल हो जानेपर स्थानानुसार एकसे अधिक औषधका व्यवहार किया जा सकता है। किन्तु उस दशामें भी दो, कभी-कभी तीन औषधियोंसे अधिकका व्यवहार करना कभी भी उचित नहीं और चिकित्साक्षेत्रमें उसकी आवश्यकता भी नहीं पडती है। हम लोगोंके पास परामर्श लेनेके लिये आकर कोई-कोई चिकित्सक अपनी चिकित्साविधिका जो विवरण देते हैं, उससे मालूम होता है कि ६ या ८ औषधियों तक एक साथ या पर्यायक्रमसे व्यवहार किये हुए हैं। इस प्रकारकी व्यवस्थासे रोगीका आरोग्य लाभ करना कठिन है। इस विषयमें चिकित्सकगण सावधान होनेपर बायोकेमिक चिकित्सामें वे आशानुरूप फल प्राप्त करेंगे इसमें सन्देह नहीं।

किस तरह औषध प्रयोग करना पड़ता है

बायोकेमिक दवायें तीन प्रकारके उपायोंसे व्यवहृत होती हैं। (१) शुष्क अवस्थामें जीभके ऊपर रखकर खा जाना ; (२) ठण्डे पानीके साथ ; (३) सुसुम पानीके साथ। मैग फॉस सदा सुसुम पानीके साथ देना चाहिए। शूलादि बीमारियोंमें गरम पानीके साथ दवाका व्यवहार करना पडता है। शूलादि रोगों एवं मैग फॉसका क्षेत्र छोडकर साधारणतः जिन सब रोगोंमें रोगी केवल ठण्डा ही पसन्द करता है, उन सब स्थानोंमें दवा ठण्डे पानीके साथ और जिन सब क्षेत्रोंमें रोगी गरम पानी पसन्द करता है उन सभी क्षेत्रोंमें गरम पानीके साथ दवाका प्रयोग करना पडता है। सर्दी, खाँसी, शूल, उदरामय, आमाशय और हैजा इत्यादि रोगोंमें हमलोग प्रायः सभी क्षेत्रोंमें गरम पानीके साथ औषध व्यवहार किया करते हैं। हमलोग पानीके साथ औषध मिलाकर कभी नहीं देते—एक खोराक दवा रोगीके मुखमें डालकर एक घूँट गरम पानी उसके मुखमें डाल देते हैं ; क्योंकि थोडी-सी दवाको मिश्रित कर प्रयोग करनेसे अधिकांश समय औषधि वर्त्तन ही में लगी रह जाती है। पर बार-बार

औषध प्रयोग करना हो (औषधिकी मात्रा अध्याय देखें) तो बात दूसरी है।

शक्तिकी मीमांसा

औषधिकी शक्तिकी मीमांसा करना केवल जो एक कठिन विषय ही है ऐसा नहीं बल्कि असम्भव भी है। पर इसके सम्बन्धमें प्रत्येकको ही एक धारणा उत्पन्नकर दी जा सकती है। प्रथमतः इस धारणाको लेकर कार्य-क्षेत्रमें व्रती होनेपर क्रमशः अनुभवके द्वारा शक्तितत्त्वके विषयमें ज्ञान उत्पन्न होगा। डॉ० शुसलर, कैरे, चैपमैन, वाकर प्रभृति विज्ञ चिकित्सकोंके मतसे तरुण रोगोंमें ३x, ६x और पुराने रोगोंमें १२x से २००x तक व्यवहार करना चाहिए। डॉ० शुसलरने अपनी पुस्तकके अन्तिम सस्करणमें लिखा है कि अन्यान्य औषध समूह ६x शक्तिके नीचे एवं केल्क फ्लोर, फेरम फॉस और साइलिसिया १२x शक्तिके नीचे व्यवहार करना उचित नहीं। और फिर कोई-कोई नेट्रम म्यूरका १२x शक्तिके नीचे व्यवहार करना मना करते हैं। हमलोग तरुण रोगमें मैग फॉस एवं नेट्रम फॉस ३x शक्तिके अलावा अन्यान्य औषध ६x के नीचे व्यवहार नहीं करते और केल्क फ्लोर व नेट्रम म्यूर १२x व्यवहार करते हैं। फेरम फॉस एवं साइलिसिया रोगकी अवस्थानुयायी ६x और १२x दोनों ही व्यवहार करते हैं। केल्क फ्लोर ६x भी बीच-बीचमें प्रयोगकर उत्तम फल प्राप्त किये हैं। उच्चक्रमसे फल न मिलनेपर निम्नक्रमकी परीक्षाकर देखना उचित है। स्नायविक धातुवाले व कर्कश स्वभावके और कमजोर आदमियोंके लिये निम्न और मध्यम क्रम व्यवहार करना ही ठीक है, क्योंकि उच्चक्रमसे प्रायः ही इनके रोगकी वृद्धि हुआ करती है। स्नायविक रोगियोंके क्षेत्रमें केलि फॉस १२x शक्ति अत्यधिक फलदायक होनेके कारण मैंने इसे सैकड़ों रोगियोंपर परीक्षाकर देखा है। वृद्ध रोगी और जिनकी बीमारी आराम होनेवाली नहीं—केवल उपशम ही करते जाना होगा, उन लोगोंकी बीमारीमें निम्नक्रमका ही व्यवहार करना बुद्धिमानीका काम है; क्योंकि उच्च क्रमसे इन लोगोंकी बीमारी अत्यधिक बढ़कर जीवन सकटमय भी

हो जा सकता है। इस सम्बन्धमें विस्तारपूर्वक लिखनेसे लेख अत्यन्त दीर्घ हो जाता है इसलिये ऐसा करनेसे विरत रहे।

शक्ति, मात्रा, पर्यायक्रमसे औषध व्यवहार व औषधके पुनः प्रयोगके सम्बन्धमे अन्तिम बात

शक्ति व मात्राके विषयमें नाना प्रकारके प्रश्न कर भारतवर्षके विभिन्न स्थानोंसे मेरे पास पत्र भेजे गए हैं। उन सबोका उत्तर यथासम्भव दिया हूँ। बहुतसे व्यर्थके प्रश्नोको छोडकर उन लोगोने औषधकी शक्ति, मात्रा, औषधके पुनः प्रयोगके समयके सम्बन्धमें लिखा है और प्रश्न न करनेपर भी बहुतोंके निर्देशनामें देखा है कि लोग अत्यधिक रूपमें पर्यायक्रमसे औषध व्यवहार किए हैं। इस सम्बन्धमें पुस्तकमें दूसरी जगह काफी आलोचना करनेपर भी लिख रहा हूँ कि महात्मा शुसलर साधारणतः सभी औषधोंका ६x विचूर्ण व्यवहार करते थे, केवल फेरम फॉस, साइलिसिया व कैलसियम फ्लोराइड १२x शक्ति व्यवहारमें लाते थे।

शक्तिके विषयमें साधारण तौरपर कहा जाय तो सभी प्रकारके **नये रोगोंमें** निम्नशक्ति अर्थात् ३x, ६x व १२x शक्ति, **आधे नये रोगोमे** मध्यशक्ति अर्थात् १२x, २४x व ३०x और सभी प्रकारके **पुराने रोगोंमें** उच्चशक्ति अर्थात् ६०x, १००x व २००x व्यवहृत होती हैं। नये रोगोंमें रोगी आरोग्य होनेकी ओर अग्रसर होते रहनेपर आरोग्य न होनेतक क्रमश उच्चतर शक्ति व्यवहारमें लाना पडता है। पुराने रोगमें उच्च शक्तिके प्रयोगसे रोगी उन्नतिकी ओर बढते रहनेपर बहुत बार निम्नतरका प्रयोग कर रोगको तेजीसे आरोग्य किया जा सकता है।

जिस शक्तिके प्रयोगसे रोगी उन्नतिकी ओर बढता रहता है, अचानक उस शक्तिका परिवर्तन नही करना चाहिए। कभी-कभी उससे फल अच्छा नही होता है। ऐसा देखा जाता है।

एक ही प्रकारके उपसर्गमें किसी रोगीमें निम्न शक्ति, किसी रोगीमें मध्य शक्ति और किसी रोगीमें उच्च शक्ति फलदायक होती है।

नये रोगीके क्षेत्रमें सदा ही ६x शक्तिके द्वारा चिकित्साका आरम्भ करना और पुराने रोगीके क्षेत्रमें सदा १२x शक्तिके द्वारा चिकित्सा आरम्भ करना ही सुरक्षित होता है। अधिकाश क्षेत्रोंमें यह व्यवस्था अत्यन्त ही फलदायक और रोगीकी चिकित्सा आरम्भ करनेमें यह सुरक्षित और निर्भर योग्य है।

डॉ० ग्रॉभोग्ल (Grouvogl) सभी आरोग्यदायक रोगियोंको तीन श्रेणियोंमें बाँटे हैं। इन तीन श्रेणियोंको धातुगत श्रेणी कहा जा सकता है।

(१) हाइड्रोजेनॉइड (hydrogenoid) धातु। सीडभरे या भीगे स्थानमें रोगकी वृद्धि होना। इस धातुके रोगमें निम्न शक्तिसे १२x शक्ति, विशेषकर ३x, ६x अति ही फलदायक होती है।

(२) ऑक्सिजेनॉइड (oxygenoid) धातु। रोगीका चेहरा पतला या लम्बा होता है। ऋतुके परिवर्तनसे रोगकी वृद्धि होती है। बरसातमें रोगका घटना। क्लोरोसिस, हिस्टिरिया, कामज व्याधि, रक्तस्राव। प्रायः ही २०x-३०x के अन्दर रोगीकी चिकित्सा होती है, कदाचित १२x से निम्न शक्तिकी आवश्यकता होती है।

(३) कार्बोनाइट्रोजेन (carbonitrogen) धातु। फुसफुस व हृत्पिण्डकी अनियमितता। ऊपरी स्तर (periphery) में दर्द। मृगी, टेबिस। केवल उच्च शक्तिके द्वारा ही रोगी चिकित्सित होता है।

ग्रॉभोग्ल व शुसलर नेट्रम सल्फ निम्न शक्तिका प्रयोग करते थे।

नेट्रम म्यूर व साइलिसिया बहुतसे क्षेत्रोंमें मध्य व उच्च शक्तिकी अधिक फलदायक होती है।

नये रोगोंमें डॉ० शुसलर २-१ घण्टाके अन्तर और पुराने रोगोंमें नित्य ३-४ बार औषधका प्रयोग करते थे। औषध जलके साथ या सूखे रूपमें प्रदान करते थे और उसका परिमाण एक मटरके दानेकी तरह होता था। साधारण नये रोगमें हमलोग ३-४ घण्टा अन्तर दिनमें ३-४ बार औषधका प्रयोग करते हैं और विशेष आवश्यक न हो पडने पर बाहरी प्रयोग नही करते। इसीसे ही सुन्दर रूपमें आरोग्यकी क्रिया सुसाधित होती है।

कॉलेरा, शूलके दर्द इत्यादि तेज कष्टदायक नये रोगोंमें रोगकी तीव्रताके अनुसार ५-१० मिनटके अन्तरसे आराम न पहुँचने तक औषधका प्रयोग करते हैं। रोग घटते ही रोगीकी अवस्थाके अनुसार २-१ घण्टा या अधिक समयके अन्तरसे औषधका पुनः प्रयोग करना पडता है। सुनिर्वाचित औषध होनेपर बहुत थोडे समयके अन्दर ही सुफल दीख पडता है और पुनः प्रयोगके समयको और बढा देना पडता है या रोगके फिर प्रकट न होने तक औषधको बन्द रखना पडता है। ये सब विषय चिकित्सककी अभिज्ञतापर निर्भर करते हैं।

कोई-कोई बडी मात्रामें बायोकेमिक औषध देनेके पक्षपाती हैं। किसी एक होमियोपैथिक कॉलेजके प्रिन्सिपलने भी एक ग्रेनकी मात्रामें दवा देनेके विरुद्ध मत प्रगट कर पत्र लिखा है। प्रमाण स्वरूप डॉ० बोरिककी बातका उल्लेख किया गया है। किन्तु दुःखकी बात है कि इन लोगोंमें किसीने भी बायोकेमिक औषधका व्यवहार नहीं किया है। डॉ० बोरिकके मतमे भी प्रति मात्रा एक ग्रेन देनेकी व्यवस्था है। हमलोग बहुत वर्षोंसे हर मात्रामें एक ग्रेन व्यवहार कर आकांक्षित फल पाते आ रहे हैं।

पर्यायक्रमसे औषध व्यवहार करनेकी बात कही गई है पर उसका यह अर्थ नही कि हर हालतमें ३-४ औषधियाँ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनी ही होंगी, ऐसी बात नहीं कही गई है। डॉ० शुसलरने विशेष आवश्यक न होनेपर कभी कही पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेका उपदेश नही दिया है।

औषध विशुद्ध न होनेसे, उस औषधसे आकांक्षित फल मिलना सम्भव नहीं, यह सभीको मालूम है। किन्तु किस प्रकार विशुद्ध औषध प्राप्त की जाय यह बहुतेरे ही नही जानते। कलकत्तेसे खरीदनी हो तो किसी अच्छी कम्पनीसे दवा खरीदनेसे ही चल जायगा। अधिक मूल्य देकर दवा खरीदनेसे ही अच्छी दवा नहीं मिलती—विश्वसनीय कम्पनीकी होनी चाहिए। किन्तु गाँवोंमें दवा खरीदनी पडे तो कोई विचूर्णरूपमें दवा न खरीदें। इस हालतमें हमेशा ही टिकियाके रूपमें दवा खरीदनी उचित है। टिकिया गाँवोंमें नहीं बनती, कलकत्तेमें कई एक विश्वसनीय दुकानों-

में ही केवल वनती है। गाँवोंमें वायोकेमिक दवा तैयार करनी तो दूर रहे, अधिकतर दुकानोंमें देखा है होमियोपैथिक औषध शक्तिकृत नहीं की जाती—केवल एक ड्राम शीशीके अन्दर स्पिरिट भरकर एक बूँद उसके पहले वाली शक्तिकी दवा डालकर डाइल्यूशन या मिश्रण कर दिया जाता है। इससे आकांक्षित शक्तिका कार्य कभी सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके अलावा शीशीका मूल्य वढ जानेके वादसे (मूल्य सस्ता रहनेके समय भी था, किन्तु कम) वहुतेरे पुरानी शीशियाँ व्यवहार करते हैं। यह एक वडे ही दुःखकी वात है। इस सम्बन्धमें सभी विशेष सावधान रहें।

सदा व्यवहृत शक्तियोंकी तालिका

इस पुस्तकका प्रथम संस्करण प्रकाशित होनेके वाद अनेक सज्जनोंने पत्र लिखकर मुझसे पूछा है कि दवाके लिए आदेश भेजनेके समय किन-किन दवाओंकी कौन-कौन-सी शक्तियाँ पहले आवश्यक हैं। अतः नीचे सदा व्यवहृत शक्तियोंकी एक तालिका दी गई है—

(१) कैल्केरिया फ्लोरिकम—१२x, *२००x, ३०x, ६x।
(२) कैल्केरिया फॉसफोरिकम—६x, *१२x, ३०x, ३x।
(३) कैल्केरिया सल्फ्यूरिकम—६x, *१२x, २००x।
(४) फेरम फॉसफोरिकम—१२x, *६x।
(५) केलि म्यूरियेटिकम—६x, *३x, १२x।
(६) केलि फॉसफोरिकम—६x, *१२x, *३x।
(७) केलि सल्फ्यूरिकम—६x, १२x, ३०x।
(८) मैगनेशिया फॉसफोरिकम—३x, *६x, १२x।
(९) नेट्रम म्यूरियेटिकम—१२x, ३०x, २००x।
(१०) नेट्रम फॉसफोरिकम—३x, *६x, १२x, ६०x।
(११) नेट्रम सल्फ्यूरिकम—६x, १२x, ३०x, ३x।
(१२) साइलिसिया—१२x, *६x, ३०x, २००x।

वड़ी संख्याओंमें लिखित और *तारा चिह्नित शक्तियाँ अधिक आव-

श्यकीय हैं। इनमें बडी संख्याओंमें लिखी हुई शक्तियाँ सबसे अधिक प्रयोजनीय हैं। यहाँपर लिखित शक्तियोंके अलावा अन्यान्य शक्तियाँ चिकित्सक अपनी आवश्यकतानुसार प्रयोग करेंगे। किन-किन रोगोंमें कौन-कौन-सी शक्तियाँ साधारणतः अधिक फलप्रद हैं, यह इस पुस्तकमें प्रत्येक रोगके लक्षणोंका वर्णन करते समय लिखी हुई हैं।

बायोकेमिक जुलाब

किसी रोगीके चिकित्साकालमें यदि अधिक समय तक उसे दस्त न हो, तो रोगी, विशेषकर उसके सगे-सम्बन्धी बहुत घबडा उठते है एवं चिकित्सकको इसकी व्यवस्था करनेके लिए बार-बार अनुरोध करते हैं। कोई-कोई चिकित्सक ऐसी हालतमें डूश या पिचकारीसे दस्त करवा दिया करते हैं, जो ऐसा नही करते है, उनके रोगी बहुत समय उनसे बेहाथ हो जाते हैं।

जुलाब या विरेचक शब्दसे आजकल ऐलोपैथिक चिकित्साकी कृपाके कारण सभी परिचित हैं। किसी रोगीको दस्त न होनेपर वे अन्त्रको उत्तेजित करनेवाली कोई दवा सेवन करनेके लिये देते हैं, जिसके फलस्वरूप बहुत शीघ्र ही दस्त हो जाता है। किन्तु कोष्ठबद्धता (कब्जियत) स्वाभाविक होनेसे यह प्रणाली बिलकुल ही असफल होती है। बहुत दिनों तक आँत (अन्त्र) की क्रियाके विरुद्ध जबरदस्ती दस्त करानेके फलस्वरूप बादमें भयानक कठिन कोष्ठबद्धता पैदा हो जाती है और क्रमानुसार जुलाबकी मात्रा वृद्धि न करनेसे दस्त अब होना ही नही चाहता। बहुतोंको ही मालूम है कि रेमिटेण्ट ज्वरकी प्रथमावस्थामें जुलाब लेकर बहुतोंका कैसा सर्वनाश हुआ है।

पर दस्तका होना भी बहुत ही जरूरी है। किन्तु हरेक हालतमें दस्त जो करवाना ही होगा, ऐसी कोई बात नही। तरुण रोगमें दो-एक दिन दस्त न होनेपर भी अगर रोगी इससे विशेष कोई क्लेश अनुभव न करे, तो और भी दो-एक दिन विलम्ब करना चाहिए। होमियोपैथिक चिकित्सामें

अन्त्रकी क्रिया सबल और स्वाभाविक होते रहनेके समयसे ही दस्त होना आरम्भ होता है और वह स्थायी होता है। इसके लिये किसी-किसीको कुछ अधिक समयकी आवश्यकता होती है, किसी-किसीको साथ-साथ—यहाँ तक कि दो-एक मात्रा औपध प्रयोग करनेके बाद ही हो जाता है। परन्तु औपधका निर्वाचन विशेप यत्नपूर्वक करना होगा।

वायोकेमिक चिकित्सकोंका कहना है कि कोष्ठबद्धताके कारणोंका निर्णय कर जिन-जिन लावणिक द्रव्योंके अभावके कारण बीमारी हुई है, उन्हें ही अधिक मात्रामें प्रयोग करनेसे अल्प समयमें ही दस्त हो जाता है। अतः सभीको पहले कारणका अनुसन्धानकर औपधका प्रयोग करना कर्त्तव्य है। नीचे कारणोंका उल्लेख किया गया है।

(१) पित्तस्थित सोडियम सल्फेट (नेट्रम सल्फ) एवं सोडियम फॉसफेट (नेट्रम फॉस) नामक पदार्थद्वयकी स्वल्पता हेतु पित्त घनीभूत होकर; अथवा (२) क्लोराइड ऑफ पोटास (केलि म्यूर) की कमीके कारण पित्त निःसरण (पित्तका निकलना) कम होकर; अथवा (३) रक्तके अन्दर क्लोराइड ऑफ सोडियम (नेट्रम म्यूर) की स्वल्पता हेतु शरीरके जलीय पदार्थके अनियमित सचालनकी वजहसे यन्त्रकी श्लैष्मिक झिल्लीके शुष्क हो जानेके कारण मल शुष्क होकर; अथवा (४) रक्तमें फेरम फॉसका अभाव होकर अन्त्रस्थ पेशियोंकी सकुचन-शक्ति घट जानेसे; या कभी (५) कैल्केरिया फ्लोरिकाका अभाव हो जानेसे सकुचन शक्तिका ह्रास होकर; अथवा (६) समय-समयपर साइलिसियाके अभाव हेतु मरलान्त्रके स्नायु-समूहकी दुर्वलताकी वजहसे भी कोष्ठवद्धताकी वीमारी उत्पन्न हो जाया करती है।

प्रत्येक औपधके लक्षणोंका वर्णन उसी दवाके अध्यायमें विस्तृत रूपसे किया गया है। इसलिये लक्षण रहनेपर केलि म्यूर ६x चूर्ण १० ग्रेन, नेट्रम म्यूर ३०x चूर्ण २।१ मात्रा, साइलिसिया ३०x चूर्ण २।१ मात्रा, नेट्रम म्यूर ३०x और साइलिसिया ३०x एक साथ मिश्रित कर दैनिक २।१ मात्रा करके, नेट्रम फॉस १x चूर्ण १० ग्रेन मात्रामें शिशुओंके भोजन-

के साथ मिलाकर, नेट्रम सल्फ ६x चूर्ण १० ग्रेन मात्रामें सेवन करानेसे आसानीसे एवं थोडे ही समयके अन्दर कोष्ठ साफ हो जाता है, इसके साथ ही खाने-पीनेकी तरफ भी विशेष ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। कहना यह है कि पुरानी कोष्ठबद्धताकी बीमारीमें अधिक दिनोंतक उक्त नियमसे दवा सेवन करना चाहिये और इसका फल भी स्थायी होगा।

औषधका वाह्यिक (वाहरी) व्यवहार

भीतरी औषध सेवन करनेके समय कभी-कभी औषधके वाह्य प्रयोग-की भी आवश्यकता पडती है। अवस्था विशेषके अनुसार इस वाह्यिक प्रयोगकी व्यवस्था भिन्न-भिन्न प्रकारकी हो सकती है। वाह्य प्रयोगके लिये सभी दवाओंका ही ३x चूर्ण व्यवहार करना पडता है।

(१) **चूर्णके रूपमें**—आक्रान्त स्थानोपर चूर्ण औषध छिडक देना पडता है। जैसे कि कोई स्थान कट जाने या किसी स्थानसे रक्तस्राव होते रहनेपर फेरम फॉस ३x चूर्ण उस स्थान पर छिडक देना होता है।

(२) **गरम पानीके साथ**—३x चूर्ण रूपके औषधका १५ ग्रेन दो-तीन सेर गरम पानीके साथ मिलाकर लोशन या स्नानके रूपमें व्यवहृत होता है। क्षत, कट जानेकी वजहसे हुआ घाव, प्रदाह इत्यादिमें मोटे कपडेको लोशनसे भीगा आक्रान्त स्थानपर लगाकर बीच-बीचमें उसी लोशनसे उसे भिगा रखना पडता है। उस लोशनके भिगाये हुए कपडेको सूखे कपडेसे लपेट रखना पडता है। आवश्यक मालूम होनेपर एक सेर या आधा सेर जलके साथ भी उक्त मात्रामें औषध डालकर घना लोशन तैयार किया जा सकता है। स्नानके रूपमें व्यवहार करनेके लिये जलका परिमाण ४।५ सेर होना आवश्यक है।

प्रदाह, घाव, कटा-घाव इत्यादिकी प्राथमिक दशामें लोशनका वाहरी प्रयोग करना हो तो ३x चूर्ण दवाका १० या १५ ग्रेन एक औंस विशुद्ध जलके साथ मिला लेकर व्यवहार करना पडेगा।

(३) **ग्लिसरिन, वेसलीन और घृतके साथ**—३x चूर्ण रूपका

औषध १५ ग्रेन मात्रामें ३।४ बूँद जल मिलाकर उसके साथ एक आँस परिमाणमें ग्लिसरिन, वेसलीन या घृत थोडे अग्निके उत्तापमें गलाकर मिश्रित करना पडता है।

(४) **पुल्टिसके साथ**—गरम और ठण्डा दोनो प्रकारके पुल्टिस व्यवहृत होते हैं। किन्तु क्षतके लिये गरम पुल्टिस ही ठीक है। मैदा, सूजी, तोकमारी इत्यादिके द्वारा पुल्टिस तैयार होता है। पुल्टिसको जिस ओरके क्षत स्थानपर लगाना हो, उस ओर थोडे परिमाणमें चूर्ण औषधको छिडककर पीडाक्रान्त स्थानपर लगा देना चाहिए। थोडेसे गरम पानीके साथ औषधका चूर्ण मिश्रित कर आक्रान्त स्थानपर प्रलेपके ऐसा लगाकर इसके ऊपर पुल्टिस देनेसे भी काम चल सकता है।

पिचकारीका प्रयोग

खानेवाली दवा सेवन करनेके समय कभी-कभी पिचकारीका देना भी आवश्यक हो पडता है। पिचकारी गुह्यद्वार एव जननेन्द्रियके अन्दर प्रयोग किया जाता हे। पिचकारीके लिये उष्ण और शीतल जल व्यवहृत होता है। **पिचकारी देनेके समय रोगीको बाईं तरफ लेटाना चाहिए।** कमरके नीचे तकिया लगाकर ऊँचा रखनेसे अन्त्रके अन्दर बहुत देर तक पानी रहता है। जलका परिमाण शिशुओंके लिये एक आंस, बालकोंके लिये दोसे चार आंस और युवकोंके लिये एक पाइण्टसे दो पाइण्ट तक लेना चाहिए। १००° डिग्री गरम पानी स्त्रियोंके जननेन्द्रिय-में पिचकारीसे प्रयोग करनेपर लुप्त ऋतु या लोकिया इत्यादि पुनः प्रगट होते हैं। और भी अनेक प्रकारकी जरायु सम्बन्धी बीमारियोंमें पिचकारी देनेकी आवश्यकता होती है। मलद्वारके अन्दर ग्लिसरिन देना हो, तो एक-दो आंससे ही युवकोंका मल निकल जाया करता है।

जब रोगी मुँहसे पथ्य नही ले सकता, अथवा पाकस्थलीमें आहार्य वस्तु नही सहाती, उस हालतमें गुह्यद्वारके रास्ते पिचकारीकी सहायतासे आहार योग्य वस्तुओंका प्रयोग करना पडता है। पहले पिचकारीकी

सहायतासे जल देकर मल निकाल लेना पड़ता है। इसके बाद दुग्धादि खाद्य पदार्थ ९८° डिग्रीकी गरम हालतमें गुह्यद्वारके अन्दर प्रयोग कर देना होता है, किन्तु एक बारमें दो या अढाई औंससे अधिक प्रयोग करना उचित नहीं। अगर फिर खिलानेकी जरूरत पड़े, तो इसी प्रकार कम-से-कम दो घण्टेके बाद खिलाना चाहिये। धीरे-धीरे खाद्य-पदार्थ प्रविष्ट कराना ही अच्छा है।

मुखकी आकृति देखकर दवा या रोगका निर्णय

शरीरकी आकृति और विशेषकर मुँहकी आकृति देखकर औषध या रोगका निर्णय करना सम्भव है। कुछ दिनों तक चेष्टा करनेपर इस गुणको प्राप्त करना सम्भव है। दीर्घकाल तक चिकित्सा करते-करते चिकित्सकको इस विषयमें काफी निपुणता आ जानेपर मुँह देखकर रोगीकी भीतरी दशा, आये हुए रोगकी बात, यहाँतक कि समय-समयपर मृत्यु तककी बात या किस समय रोगीकी मृत्यु होगी यहाँ तक बतलाना सम्भव है। किस तरह इस गुणको प्राप्त किया जाय उसकी प्राथमिक अवस्थाकी बात अर्थात् पहलेसे ही किस तरहसे चलनेपर उस गुणको प्राप्त किया जाता है, नीचे उसके विषयमें उल्लेख किया जाता है।

पहले फॉस्फेटके साधारण गुणोंके विषयकी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। जैसे फॉस्फेटके रोगीके साधारण मुँहकी आकृति होती है दुर्बल जीवनीशक्ति, उद्वेग, अवसाद, अवस्थानुसार उत्तेजित, स्नायविक व चिड़चिड़ा। कोमल त्वचा, नरम व मोटे केश, फीका, पीली आभामय या मिट्टीके रंगवाला मुँहका रंग। शीघ्रतासे दुबले होते जाना, फूला-सा चेहरा और धँसी हुई आँखोंके चारों तरफ नीले रंगका घेराव।

फॉस्फेट-रोगीके मुँहकी साधारण दशाके विषयमें जानकारी प्राप्त होनेके बाद कैल्केरिया फॉस, फेरम फॉस, केलि फॉस, मैग्नेशिया फॉस, नेट्रम फॉस इत्यादि औषधियोंके मुँहकी आकृतिकी विशेषताओंको उत्तम रूपसे अध्ययन करना होगा।

इसके वाद **सल्फेट**के विशेषत्वसूचक मुँहके लक्षणोको अपनाना होगा। मुँह फीका, किन्तु होठ, कान इत्यादि द्रष्टव्य अश सव लाल रंगके होते हैं। शरीरसे निकला हुआ स्राव वदवूदार होना। रोगी नीचा तकिया लगाकर सोता है। गला इतना दुर्बल होता हे कि सिरका भार भी वहन नहीं कर सकता , फलस्वरूप सिरके सामनेका भाग कुछ झुका-कर चलता है।

इसके वाद कैल्केरिया सल्फ, केलि सल्फ व नेट्रम सल्फके मुँहके विशेषत्वसूचक लक्षणोंको अच्छी तरहसे अपनाना होगा।

इसके वाद **क्लोराइड्स**के रोगियोंके विशेषत्वसूचक मुँहके लक्षणोको अपनाना होगा। फॉस्फेट श्रेणीके रोगियोंकी अपेक्षा कम स्नायविक, निकले हुए स्रावमें कम बदवू और शारीरिक गठन आवश्यतानुसार। चेहरा रोगिया, फूला-फूला और फुन्सियोमय। निश्चेष्ट व वुद्धिकी जडता।

इसके वाद केलि म्यूर, नेट्रम म्यूर, कैल्केरिया फ्लोर और साइलिसियाके रोगियोंके मुँहकी आकृतिके भी विशेषत्वसूचक लक्षणोको अपनाना होगा।

मुँहके केवल कुछ लक्षणोको देखनेसे ही न होगा—उन लक्षणोंको रोगीकी चिकित्साके द्वारा जाँच लेना होगा। औषधमें अन्तर या रोग-निर्णयमें असुविधा उत्पन्न होनेपर वहुत वार मुखाकृति ही सहायता करेगी। जो लोग चिकित्साकी अनेक औषधोंकी सहायतासे या नाना प्रकारकी दवा या उपायोकी सहायतासे रोगीके रोगकी यातनाओंको घटाते हैं या आरोग्य करते हैं, वे लोग कभी भी मुखाकृतिके लक्षणोंको देखकर रोग या औषधका निर्णय करनेकी क्षमता प्राप्त नही कर सकेंगे।

भोजनके विषयमें विधि और निषेध

औषध व्यवहार करनेके समय रोगीके खाने-पीनेपर चिकित्सकोंका विशेष ध्यान रहना चाहिये। कोई-कोई चिकित्सक पथ्यादिपर ध्यान नही रखते और कोई-कोई पथ्यादिके विषयमें अतिरिक्त कठोरता अव-

लम्वन करते हैं। ये दोनों प्रकारके चिकित्सक ही सावधानीसे चुनी गई अपनी उपयुक्त औषधके द्वारा भी कोई फल नही पाते। पथ्यादिके विषयमें विस्तारपूर्वक वर्णन करनेकी जगह यह नहीं है, किन्तु महात्मा हैनिमैनने पुरानी बीमारियोकी चिकित्साके विषयमें जो कुछ कहा है और हमलोग चिकित्सा करते समय जो कुछ देख रहे हैं, उन्हे ही लिख रहे हैं। **कपूर** सभी औषधोंके गुणको नष्ट कर देता है। इसलिये इसे पीने वाले जलके साथ पान, आघ्राण, यहाँ तक कि दवाके निकट रखना भी ठीक नहीं। कॉफी, चाय को सीमित मात्रामें व्यवहार करना होगा। मदिरा, विनिगर, नस इत्यादि सम्पूर्ण निषिद्ध हैं। तम्बाकू किसी-किसी हालतमें निषिद्ध है और अवस्थानुकूल कभी-कभी व्यवहार भी किया जा सकता है। तम्बाकूकी अपेक्षा नस अधिक हानिकारक है। सुगन्ध या तीव्र गन्धवाले द्रव्य, दन्तमजन एवं गुरुपाक द्रव्यादिका भोजन करना मना है। मसाला, प्याज और तीता जहाँ तक सम्भव हो सके कम खाना चाहिये। नाटक, नावेल, नृत्य, गीत एवं जिससे स्नायुमण्डल उत्तेजित होता हो, ऐसी किसी पुस्तकका पाठ अथवा श्रवण करना उचित नही। स्त्री और पुरुषके अन्दर अतिरिक्त आसंग लिप्सा रहनेसे इसके लिए संयम करना चाहिये। पेटकी बीमारीमें तीता, आदी, इलायची, मसाला, शाक-सब्जी और तिक्त द्रव्य खाना निषिद्ध है। सूखी हुई नमकीन मछली-को भी छोड देना होगा। औषध सेवनके एक घण्टा पूर्व एवं एक घण्टेके अन्दर धूम्रपान, आहार एव पेय (आधा घण्टा) लेना मना है।

बायोकेमिक व होमियोपैथिक चिकित्साकालमें **दन्त-मञ्जन व टूथ-पेस्टका** व्यवहार करना उचित नहीं। हैनिमैन भी इन्हे मना किये हुए हैं। नाना प्रकारके औषधगुणयुक्त सुगन्धित दन्त-मञ्जन या टूथ-पेस्टके द्वारा दाँत माज मुख धोकर उसकी गन्धके अन्दर ही एकमात्रा औषध व्यवहार करनेपर औषधकी क्रिया विघ्नित होती है। दूसरे समयमें भी उन सब द्रव्योंके द्वारा दाँत माजना स्वास्थ्यके लिये व चिकित्साके लिये हानिकर है। खड़िया मिट्टीकी बुकनी बनाकर उसे कपडेमें छान कर,

इमलीकी छाई,बबूलका दातौन,बकुई मिट्टी और [illegible] इसमें नमक-तेलसे दाँत माजना ही उचित है। नीमके दातौनसे दाँत माजना उत्तम होनेपर भी चिकित्साकालमें उसका व्यवहार न करना ही उचित है।

रोगी-लिपि तैयार करना

बायोकेमिक मतानुसार औषधका निर्वाचन होमियोपैथिककी अपेक्षा बहुत सहज है और इसीलिये बहुत कुछ निर्भरयोग्य है। इसी कारणसे बायोकेमिक औषधियाँ व्यापक रूपमें व्यवहृत हो रही हैं। जो लोग व्यवहार कर रहे हैं, उनमेंसे अधिकांश चिकित्सक नहीं हैं। इसीलिये किस तरहसे रोगीकी परीक्षा करनी होती है या लक्षणोंको संग्रह किया जाता है, इससे बहुतेरे अनभिज्ञ हैं। इसीलिये बहुतोंको असफलता भी ग्रहण करनी पड़ती है। रोगका नाम पकड़ और दो-एक लक्षणके ऊपर निर्भर किया करते हैं। हमलोगोंसे जब रोगीका नुस्खा (प्रेस्क्रिपशन) डाकके द्वारा माँगा जाता है, तो हम सब देखते हैं कि रोगीकी चिट्ठीमें रोगीका नुस्खा लिखकर भेजनेके योग्य निर्भरशील रोगीका चित्र नहीं रहता। इस कारण कोई रोगी विशेषकर यदि बहुत दिनोंसे भोग रहे हैं, तो ऐसे रोगीके क्षेत्रमें निम्नलिखित विषयोंपर ध्यान रखकर लक्षणोंको संग्रह करना पड़ेगा।

(१) रोगीके सभी कष्टदायक लक्षण—वे सब लक्षण किस तरहसे कितने दिनोंसे मालूम पड़ते आ रहे हैं; लक्षण सब किस समय व किस बातसे बढ़ते व घटते हैं।

(२) रोगी ठण्डे अथवा गरमीसे घबड़ाता है। ठण्डा सहाता है अथवा ठण्ड लगनेपर सर्दी-खाँसी, गलेमें दर्द, शरीरमें दर्द इत्यादि होता है। ठण्डे जलसे स्नान करना सहाता है या उससे कोई उपसर्ग उत्पन्न होता है। धूप या गरम सहाता है या नहीं और न होनेपर कौन-कौनसे उपसर्ग आ उपस्थित होते हैं। बारहों महीने ठण्डे जलसे ही स्नान करते हैं क्या?

(३) किस करवट सोते हैं। किसी करवट सोनेसे कोई कष्ट होता है क्या? क्या-क्या कष्ट होता है? नींद कैसी होती है?

(४) भूख, पायखाना, प्यास कैसी है? नमक, तीता, खट्टा, मीठा, दूध, मछली, माँस, अण्डे इत्यादि खाद्योंमें किस-किस खाद्यपर अधिक चाह है। किस-किस खाद्यपर बिलकुल अनिच्छा रहती है और कौन-कौनसे खाद्य बिलकुल सहाते ही नहीं हैं।

(५) स्त्रियोंके मासिक ऋतु होनेके पहले, होते रहनेके समय व हो जानेके बादके उपसर्ग, ऋतुस्रावका रंग, अनियमित या नियमित रूपसे ठीक समयपर होता है, कितने दिनों तक ठहरता है और किस समयपर जरायु बाहर निकल पडती है या जरायुकी स्थानच्युति घट चुकी है—इन सबोंके विषयकी जानकारी प्राप्त करनी होगी। ल्यूकोरिया, प्रदर या सफेद स्रावका रंग, परिमाण, स्रावजनित खुजलाहट या घाव इत्यादि। काम वासना अत्यधिक है या उसका अभाव है।

(६) पुरुषोंमें स्वप्नदोष, हस्तमैथुन, ध्वजभंग, अत्यधिक काम वासना या उसका अभाव इत्यादि। प्रमेह (गॉनोरिया), गर्मी (सिफिलिस) हुआ था या अभी है कि नहीं।

(७) मानसिक दशाका पूरा विवरण।

(८) पहलेका इतिहास। जन्मसे अब तक किसी कठिन रोगसे ग्रस्त हुए रहनेपर उन्हें सिलसिलेवार लिखना पडेगा और वे सब रोग किस तरहसे आरोग्य हुए थे यह सब भी जानना पडेगा। माता-पिता, भाई-बहन, नानी, दादी, मामा इत्यादि निकट रिश्तेदारोंमें किसीको वात, अर्श, दमा, यक्ष्मा (टी० बी०), कैन्सर, डायबिटीज, सर्दी, खाँसी या ठण्ड लगनेकी प्रवणता, प्रमेह, गर्मी इत्यादि कोई पुरानी प्रकृतिका रोग हुआ था या है कि नहीं।

रोग-लक्षण लिपिबद्धकरण पुस्तिका (केस टेकिंग फॉर्म) सभी होमियोपैथिक फार्मेसीमें ही बिकती है। इस पुस्तिकामें सिलसिलेवार रूपमें विस्तारपूर्वक प्रश्न लिखे हुए होते हैं। रोगी स्वयं ही लिख सकनेपर

बायोकेमिक
कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिका

कैल्केरिया फ्लोरिकम
(Calcarea Fluoricum)

दूसरा नाम—कैलसियम फ्लोराइड।

साधारण नाम—फ्लोराइड ऑफ लाइम।

सक्षिप्त नाम—कैल्क फ्लोर (Calc Fluor.)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति :—यह एक प्रकारका खनिज पदार्थ तथा आसानीसे ही मिलनेवाला एक धातु विशेष है। यह स्फटिककी तरह स्वच्छ और भिन्न-भिन्न रग व आकारका दीख पडता है। यह पानीमें घुलनशील होता है। विशुद्ध फ्लोराइड ऑफ लाइमसे होमियोपैथिक विचूर्णन पद्धतिके अनुसार तैयार होकर औषधार्थ व्यवहृत होता है।

क्रिया—यह देहस्थ अण्डलाला (एल्व्यूमेन) नामक पदार्थके साथ मिश्रित होकर फलीभूत होता रहता है। इसमें प्रति सैकडा ५४ २१ भाग चूना है। किसी-किसीका कहना है कि चूनाका भाग इसकी अपेक्षा और भी अधिक है अर्थात् ५८ २ भाग है। अण्डलालाके साथ मिश्रित होकर यह पदार्थ दाँत और अस्थिके ऊपरका आवरण (enamel) बनाता है। इसीलिये दाँत और अस्थिकी अपौष्टिकता, अस्थिमें अर्वुद, अस्थिकी बीमारीमें पत्थरकी तरह कठिनता, दाँतोंकी शिथिलता, दाँतोंका क्षय होना इत्यादि भिन्न-भिन्न रोग दृष्टिगत होते हैं। दाँत और अस्थिकी तरह यह शिरा, धमनी और चर्मके ऊपरी हिस्सेमें (एपिडर्मिसमें) क्रिया प्रकट किया करता है और इसकी अभावपूर्ण क्रिया होनेसे शिरा और धमनी फूलकर अर्श (ववासीर), धमनीके अर्वुद, शिरास्फीति इत्यादि बीमारियाँ उत्पन्न होती है। यह सभी स्थानोंके सयोजक टिशुओ (connective

tissues) एव मासपेशीस्थ स्थितिस्थापक तन्तुओंको (elastic fibres) वनाता है।

इसकी अभावपूर्ण क्रियाके द्वारा हमलोग दो प्रकारके लक्षण देख पाते है। (१) किसी-किसी स्थानकी शिथिलता और (२) किसी-किसी स्थानकी या तो पत्थरकी भाँति कठिनता। स्थिति-स्थापक तन्तुओंमें इसका अभाव होनेसे वे क्रमशः स्फीत होकर शिथिल भाव धारण करते हैं। क्योंकि फ्लोराइड ऑफ लाइमका अभाव होनेसे उनकी सकुचन शक्ति नष्ट हो जाती है। जरायुकी शिथिलता, जरायुकी शिथिलतावश रक्तस्राव, दाँतोंकी शिथिलता, जरायुकी स्थान-च्युति, उदरकी शिथिलता इत्यादि लक्षण इसी कारणसे प्रकट होते हैं और इनमें इस दवाके व्यवहारसे आश्चर्यजनक फल मिलता है। इसकी अभावपूर्ण क्रियासे शिरादि स्फीत होनेपर अर्शकी वली उत्पन्न होती है। शिरा और धमनीके स्थितिस्थापक तन्तुओं, कोई रसवाही प्रणाली (lymphatic system) अथवा सयोजक तन्तुओंमें इसकी अभावपूर्ण क्रिया भी इन सव स्थानोंकी स्वाभाविक क्रिया उत्पन्न करनेमें असमर्थ होती है और रक्त एवं रसस्थ कठिन पदार्थादि अशोषित न हो सकनेके कारण उन सव स्थानोंमें **कठिन स्फीत** (स्थूलता) पैदा हो जाती है। अतः **जो कोई यन्त्र जिस किसी रोगके कारणोंसे ही क्यों न हो, यदि पत्थरकी तरह कड़ा हो जाय तो उसकी अभावपूर्ण क्रियाका इसे एक सर्वश्रेष्ठ प्रमाणस्वरूप समझना होगा एवं उक्तलक्षणोंमे दवा कभी निष्फल नहीं होती।**

डॉ० शुसलर जव इस औषधका व्यवहार कर विविध रोगोंमें सुफल प्राप्त करने लगे, तव होमियोपैथिक चिकित्सकोंने इसकी प्रूविंगकी और व्यवहार करने लग गये, किन्तु होमियोपैथिक शास्त्रमें वायोकेमिककी भाँति इसका इतने विस्तृत रूपमें व्यवहार नही होता। वे लोग साधारणतः अस्थि-पीड़ा और कमरके वात रोगमें इसका व्यवहार किया करते हैं।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—अत्यन्त अवसाद और सन्दिग्ध चित्त। धनहानि होनेका भय।

२—हालही के उत्पन्न हुए शिशुके मस्तकके पैराइटल अस्थिमें रक्तार्बुद (blood tumour) के लिये यह एक अव्यर्थ दवा है। मस्तकके अस्थिका जो कोई स्थान फूलकर कडा होने एव अस्थिक्षतके चारो ओर पडा रहनेपर।

३—यह मोतियाबिन्दका एक अति उत्कृष्ट महौषध है। विशेषकर यदि वह कठिन हो।

४—आँखकी पुतलीमें दाग।

५—दाँतोंकी शिथिलता हेतु दन्तशूल एव भोजन करते समय इनकी वृद्धि। दर्दविहीन शिथिल दाँत। दाँतोंकी शिथिलताके कारण रक्तस्राव।

६—दाँत निकलनेमें विलम्ब (कैल्क फॉस)।

७—शीघ्र-शीघ्र दाँत क्षय हो जाते हैं।

८—स्फोटक (फोडा), व्रण, ग्रन्थिस्फीति इत्यादि पत्थरकी भाँति कडे रहनेपर यह अव्यर्थ दवा है। पत्थरकी भाँति कडे रहनेपर प्लीहा, यकृत इत्यादिमें भी यह उत्कृष्ट दवा है।

९—जिस किसी स्थानका हो, अथवा जिस किसी प्रकारकी ही क्यों न हो, उसके चारों ओर कडा और रुखडा होने और उसमें से दुर्गन्धयुक्त गाढी पीले रगकी पीव निकलनेपर।

१०—अन्त्रवृद्धि या हर्नियाका इससे अधिक फलप्रद दवा और दूसरी नहीं है।

११—अतिशय कूथनेके कारण मलद्वार विदीर्ण हो जानेके रोगमें (fissure of the rectum) यही सर्वप्रधान दवा है। यन्त्रणा, दर्द प्रभृति भी इसी दवासे अच्छे होते हैं।

१२—स्रावी, अस्रावी सभी प्रकारके अर्शोंकी यही श्रेष्ठ औषध है। कोष्ठबद्धता (कब्जियत) रहनेपर यह और भी उपयोगी है।

१३—दुर्दम कोष्ठवद्धता, मल वहुत देर तक मलभाडमें जमा रहनेपर भी निकलना नही चाहता। वहुत देर तक कूथन देनेकी आवश्यकता होती है।

१४—अण्डकोषमें पानी जमा होना और अण्डकोपकी प्रस्तरवत कठिनताके साथ किसी प्रकारकी अण्डकोपकी वीमारी।

१५—अण्डकोषकी शीर्णताके साथ प्रस्टेटिक रस और वीर्यका गिरना।

१६—सर्व प्रकारके जरायु-स्थानच्युतिकी (केलि फॉस, कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर) सर्वप्रधान दवा है। प्रसव-वेदना-सी वेदना (दर्द)। मालूम होता है कि जैसे जरायु योनिपथसे निकल आवेगा। जरायु कठिन, मुलायम अथवा शिथिल, जो कुछ भी क्यों न हो, इसका व्यवहार अनिवार्य है।

१७—जरायुकी कठिनताके कारण रजःकष्ट रोग अथवा जरायुकी शिथिलता हेतु अतिरिक्त रक्तस्राव, गर्भस्राव, अल्प मात्रामें प्रसव-वेदना, प्रसवके वादकी वेदना इत्यादि समुदाय पीड़ा।

१८—गर्भावस्थामें समय-समयपर सेवन करानेसे जरायुके वलकी वृद्धि होकर सरलतासे प्रसव होता है।

१९—डिफ्थिरियाकी कृत्रिम झिल्ली श्वासनली तक फैल जानेपर (कैल्क फॉस सह)।

२०—दुर्दमनीय कोष्ठवद्धताके साथ उदरी पीड़ा। उदर कड़ा और उसके ऊपर शिरायें उभरी हुई हैं यह दीख पड़ता है।

२१—अजीर्णके वमनमें फेरम फॉससे उपकार न होनेपर।

२२—पुराना कटिवात। सेक्रम-अस्थिमें दर्द, भारी मालूम होना और थकावट। सभी प्रकारके वात-दर्द ठण्डेमें और प्रथम सञ्चालनसे वृद्धि। उत्तापसे और हमेशा हिलते-डोलते रहनेपर कम होना।

२३—सर्दी और खाँसीमें अधिक परिमाणमें गाढ़ा और दुश्छेद्य थक्का-थक्का हरा या पीला दुर्गन्धयुक्त स्राव।

२४—ओजिना रोगमें पूर्वोक्त स्रावके साथ अस्थिक्षत।

२५—अलिजिह्वाकी वृद्धिके कारण गला सुरसुराकर सूखी खाँसीका आना।

२६—जिन किसी स्थानका चमड़ा फटा-फटा रहना, उसमें भी यह उपयोगी है। पैरके नीचे घट्टा (corn)। चमड़ा फूला व कड़ा।

२७—जिह्वा फटी-फटी-सी। प्रदाहके बाद जिह्वाकी कठिनता—उसमें दर्द रहे या न रहे।

२८—पुराने ज्वरमें प्लीहा और यकृतकी वृद्धिके साथ कठिनता।

२९—रक्तकी कमी (कैल्क फॉस)।

३०—चिल्लाकर पढ़नेके बाद अथवा देर तक जोरोंसे हँसने पश्चात् स्वरभग।

३१—सभी प्रकारके लक्षण आर्द्र वायु और सीड़ स्थानमें बढ़ जाते हैं। उत्तापसे और शुष्क स्थानमें पीड़ाके लक्षणोंका ह्रास होना। अस्थि और वात रोगमें—घूमने-फिरनेसे रोग-लक्षणोंका घटना, चुपचाप रहनेपर रोगकी वृद्धि।

विशेपत्व (peculiarity)—शिथिलता और पत्थर-सी कठिनता—ये दोनों प्रकारकी क्रियाएं ही इस दवाका विशेपत्व है। एक ओर तो जरायुकी शिथिलता और इस कारणसे रक्तस्राव, गर्भस्राव, **प्रसवके अन्तकी वेदना** (after pain), जरायुकी स्थानच्युति इत्यादिमें जिस तरह अपरिहार्य है, दूसरी ओर—जो कोई यन्त्र जिस किसी कारणसे पत्थर-सा कठिन हो जाय, तो यह दवा अव्यर्थ है। कठिन मोतियाबिन्द (आँखोंमें पर्दा पड़ जाना) की चिकित्सा करनेमें इस दवाका नाम ही पहले याद आता है। चर्मरोग हुए स्थान फटे-फटे होना इसकी बीमारीका और एक विशेपत्व है।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—अत्यन्त थकावट और सन्देही दिलका। मानसिक थकावटके कारण रोगी हमेशा सोचता है कि उसका अर्थनाश होकर सर्वनाश हो जायगा। किसी विषयकी चिन्ता करके भी किसी सिद्धान्तपर नहीं पहुँच सकता।

मस्तककी अस्थिका रोग (diseases of the cranium)—**नवजात शिशुके पैराइटल वोनमे (मस्तकपार्श्वस्थ अस्थि) जो रक्तमय अर्बुद** (blood tumour) **उत्पन्न होता है, उसमे यह दवा अव्यर्थ है।** मस्तककी हड्डी फूल जाना और उसमें अत्यन्त ही दर्दका होना, मस्तककी हड्डियोमें क्षत होना और उनके किनारोका किसी हालतमें न जुटना अथवा क्षतके चारो ओर फूलकर कडा होनेपर यह उपयोगी है। मस्तककी हड्डियोमें चोट लगकर अगर अर्बुद या ट्यूमर उत्पन्न हो जाय अथवा चोटके कारण मस्तक रुखडा हो जाय, तो यह दवा फलदायक है। शक्ति—१२x के नीचे नही।

रोगी-विवरण—१९५५ ई० की वात है। किसी एक भद्र महोदय ने आकर पूछा कि हालके उत्पन्न हुए शिशुओके मस्तकका अर्बुद आप लोगोकी दवासे अच्छा होता है कि नही? मैंने कहा कि सैकडे प्रायः १०० रोगीको ही आरोग्य होनेकी आशा की जाती है। प्रश्न किया गया कि—कितने दिनोंके अन्दर अच्छे होनेकी आशा की जा सकती है? कहा—७ से १० दिनोके अन्दर। उसी समय भद्र महोदयने मुझे दक्षिणी कलकत्तेके वालीगजमें एक रोगी देखने जानेके लिए अनुरोध किया।

रोगीके घर पहुँचकर देखा कि रोगी-शिशुके मस्तकमे वहुतसे अर्बुद हुए हैं। उम्र १२ दिन हुआ है और जन्मसे ही दो ठो करके इन्जेक्शन दिया जा रहा है। किन्तु अर्बुदोंका आकार वढनेके सिवाय घटनेका कोई लक्षण ही दीख नही पडता। मैंने **कैल्क फ्लोर** १२x नित्य दो मात्रा कर सेवन करनेकी व्यवस्था की। दवासे आश्चर्यजनक फायदा दीख पडा। आरम्भसे ही कुछ घटता मालूम पडा और १० दिनोके अन्दर ही सारे अर्बुद दूर हो गए।

दूसरे कठिन रोगोको अच्छा करनेकी अपेक्षा वहुत वार अर्बुद व मसे अच्छा कर सकनेसे चिकित्सकका सुनाम वहुत अशोमें वढ जाता है। उस शिशुकी माँ पित्त-पथरीके दर्दसे कष्ट पाती रहनेके कारण मेरी चिकित्साके अधीन आई। वहुत थोडे समयमें ही आरोग्य हो गई।

मोतियाविन्द (cataract)—मोतियाविन्दका इससे अधिक फलदायक दवा और नहीं है (कैल्क फॉस)। डॉ॰ बोरिकका कहना है many cases of cataract undoubtedly been influenced favourably by it—W. Boericke)। मोतियाविन्द कड़ा हो गया है ऐसा मालूम होते ही इसका प्रयोग करना पड़ता है। आँखोंके सामने मानो आगकी चिनगारियों जैसी चीजें उड़ रही हैं और विजलीकी तरह कोई उज्ज्वल पदार्थ दिखाई देता है। कॉर्निया (आँखोंकी पुतली) में दाग। कुछ देर तक पढ़नेके बाद आँखोंसे धुँधलापनकी भाँति दीख पड़नेकी तरह अस्पष्ट देखना। चक्षु-गोलक (eye balls) दर्दनाक **होते हैं और वह दर्द आँखें वन्द करनेपर या आस्ते-आस्ते दवानेसे आराम मालूम होता है।** आँखोंके चारों ओरकी शिराएँ और धमनी समूहके वाहरी आवरणोंकी पेशियोंकी शिथिलताके कारण रक्ताधिक्य। मोतियाविन्द नरम रहनेपर केलि म्यूर। इसके साथ आँखोंकी पलकोंमें अंजनी (विलनी) अथवा किसी प्रकारका कठिन अर्वुद हो जानेपर यह अधिकतर उपयोगी होता है (शक्ति—३०x)।

मोतियाविन्दकी अन्यान्य औषधियाँ—कैल्क-फॉ, कैल्क-स, केलि-म्यू, केलि-स, नेट-म व साइलि।

मोतियाविन्दकी मुख्य औषधियाँ—कैल्के-फ्लो व साइलि। मोतियाविन्दकी वृद्धिको रोकनेमें कैल्क-फॉ अत्यधिक फलदायक है। कैल्क-फॉसके निर्देशक लक्षण कैल्क-फॉस अध्यायके मोतियाविन्द शीर्षक अंश में द्रष्टव्य।

अन्धेपनके साथ मोतियाविन्द होनेपर कैल्क-फॉस व्यवहार्य है।

अम्ल, अजीर्णता इत्यादि रहनेपर कैल्क-फॉ, नेट्रम-फॉ। चोट लगनेके कारण उत्पन्न होनेपर केलि-म्यू।

उद्भेदके वाद—साइलि।

पैरका पसीना वन्द होनेके वाद होनेपर—साइलि।

मोतियाविन्दकी प्रारम्भावस्थामे आँखोंके लेन्सकी अस्पष्टता

रहनेपर—नेट्रम-म्यू ३०x। प्रथमावस्थामें मोतियाविन्द कोमल रहनेपर नेट्रम-म्यू।

कोमल मोतियाविन्दमें—कैल्क-फ्लोर, केलि-म्यू।

कड़े मोतियाबिन्दमें—कैल्क-फ्लोर व केलि-म्यू पर्यायक्रमसे। कड़े मोतियाविन्दकी प्रायः सभी दशायें केवल एक कैल्क-फ्लो द्वारा ही आरोग्य हुआ करती हैं।

दाहिनी आँखके मोतियाविन्दमें—साइलि।

रक्ताधिक्य होनेपर—फेरम-फॉ।

वृद्धोंके मोतियाबिन्दमें—कैल्क-फॉ उत्कृष्ट औषध है।

धूसर रग का होनेपर—नेट्रम-म्यू, *साइलि।

दफ्तर (ऑफिस) के कर्मचारियोंके क्षेत्रमें—साइलि।

दाँतमें दर्द (toothache)—दाँतकी जड शिथिल होनेपर यह दवा बहुत उपकारी है—इसके साथ दाँतमें दर्द रहे या न रहे। भोजन करते समय खाद्यद्रव्य दाँतमें स्पर्श करनेसे ही दर्द या शूलका होना। मसूढेके रक्तस्रावमें भी यह व्यवहृत होता है, लेकिन दूसरी दवाओंके सहायकके रूपमें।

रोगी विवरण—१९६१ ई० की वात है। दक्षिण कलकत्ताकी एक मध्य आयुकी महिलाको उन्मादकारक दाँतका दर्द हो रहा था। दर्द गरम सेंकसे व दवावसे घटता और ठण्डा पानी लगनेपर वढता था। दाँतकी जड ढीली थी। होमियोपैथिक मतानुसार वडी सावधानीसे दवा का चुनाव कर प्रयोग करनेपर भी कोई स्थायी फल प्राप्त न हुआ। मैग-फॉससे कोई फायदा न हुआ। ब्रायोनियामे थोडा फायदा हुआ था। अन्तमें ढीली दाँतकी जडमें दर्दके लक्षणपर ध्यान रख कर **कैल्क फ्लोर** १२x एक मात्रा देनेके सग-सग यन्त्रणाका ह्रास होने लग गया। आधे घण्टेके अन्दर दर्द प्राय निर्मूल हो गया। और एक मात्रा दवा केवल दी गई थी। दर्द और फिर नहीं हुआ। इतनी शीघ्रतासे वायो-केमिक दवासे दाँतका दर्द घटना न देखनेपर विश्वास नही होता है।

दन्तक्षय (caries of the teeth)—दाँतोंका आवरक एनामेल (enamel) नामक पदार्थ नष्ट हो जानेके कारण दाँत असमृण , दाँतोंमें क्षत होता है एव वे शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं (कैल्क फॉसके साथ पर्याय-क्रममें)।

दाँत निकलनेके समयकी पीड़ा (dentition and its effects) दाँतोंके आवरक पदार्थ (एनामेल) का अभाव होनेसे अथवा दाँत निकलकर ही क्षय होना आरम्भ होनेपर, अथवा दाँत निकलनेमें देर होनेपर प्रधान औषध कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए (कैल्क फॉस अध्याय)।

दाँत निकलनेके समय के होनेपर भी यह व्यवहृत होता है। किन्तु दूसरे-दूसरे और खास लक्षण रहना चाहिए।

स्फोटक, क्षत, व्रण इत्यादि (abscess, ulcers, carbuncles etc.)—अस्थिक्षतमें गाढी पीली पीव, क्षतके चारों ओर कडा, अस्थिका आवरण नष्ट और छोटे-छोटे अस्थि खण्ड निर्गत होनेसे ; जो सब क्षत बहुत दिनों तक आराम होना नही चाहते (साइलि)।

स्फोटककी प्रथमावस्थामें कैल्क फ्लोरके साथ साइलिसिया पर्यायक्रमसे सेवन और वाह्यिक प्रयोग करनेसे शीघ्र ही यह पककर पीव पैदा होती है। रक्त दूषित होकर व्रण अथवा जिस किसी प्रकारके ही स्फोटक क्यों न उत्पन्न हों, आक्रान्त स्थान पत्थर-सा कठिन होनेपर यह एक अतिशय उत्कृष्ट दवा है। २००x एक मात्रा खिलाकर ऐसे बहुतसे स्फोटकोंको मैंने आराम किया है (शक्ति—१२x व उच्चक्रम)।

अन्त्रवृद्धि या हर्निया (hernia)—इस बीमारीकी यही सर्व-श्रेष्ठ दवा है। इसके सेवन करनेसे शिथिल अंश संकुचित होते हैं और पेशियोंकी स्थितिस्थापकता-गुण बढकर रोग आराम हो जाता है। प्रथमावस्थामें आक्रान्त स्थान प्रदाहयुक्त, उत्तप्त और वेदनायुक्त रहनेपर फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये।

रोगी विवरण—१७ वी अप्रैल, १९७० ई०। रोगी श्री ... दास, आयु नौ वर्ष, दुवला शरीर। रोगीके पिता कलकत्तेमें नौकरी करते हैं—निवास उडीसाका कोई एक विल्कुल गाँव। पुत्रकी चिकित्साके लिये वे उसे कलकत्ता लाये हैं और रोग आरोग्य होते ही वे पुत्रको फिर घर पहुँचा आयेंगे। दाहिनी तरफके अण्डकोषसे लेकर पुट्ठेके अधिक स्थान तक बहुत फूला हुआ—एक मोटी रस्सीकी तरह दीख पडना। दवानेसे दर्द नही मालूम पडता है। कलकत्तेके मेडिकल कॉलेजमें दिखलाया गया है। वहाँ पर दाहिनी तरफका हर्निया-रोग निर्णय किया गया और अस्त्र-चिकित्सा (ऑपरेशन) के लिये सलाह दी गई। दूसरे एक अस्पतालमें भी दिखलाया गया। वे लोग encysted hydrocele of right cord रोगका निर्णय किये और अस्त्र-चिकित्सा ही करनेके लिये कहे। रोगीके पिता और रिश्तेदार अस्त्र-चिकित्सा कराना नही चाहते और रोगीके चिकित्सार्थ हमारे पास ले आये।

दाहिनी तरफका हर्निया और वह स्थान मोटी रस्सीकी तरफ फूले रहनेके सिवाय मानसिक या शारीरिक कोई लक्षण ही नही मिले। इस दशामें होमियोपैथिक मतानुसार भी चिकित्सा नही की जा सकती है, क्योंकि वगैर लक्षणके किसके ऊपर निर्भर कर होमियोपैथिक दवा दी जायगी।

१७-४-७०—**कैल्क फ्लोर** १२x की मात्रा नित्य दो वार खानेके लिये दी गई।

२५-४-७०—फिर वारह मात्रा दी गई।

९-५-७०—**कैल्क फ्लोर** ३०x की वारह मात्रा।

१३-५-७०—इस वार स्पष्टरूपसे उन्नति होते दीख पडी। सूजन प्रायः घट गई है। दाहिने अण्डकोषमें वहुत मामूली सूजनके अलावे अन्य कोई सूजन नही है। **कैल्क फ्लोर** ३०x की वारह मात्रा।

फिर और दवा देनी नही पडी। एक हर्नियाका रोगी वगैर अस्त्र-चिकित्साके केवल एक महीनेके अन्दर आरोग्य होना वायोकेमिक चिकित्साके लिये कम कृतित्वकी वात नही है।

गुह्यद्वार विदीर्ण होना (fissure of rectum)—अत्यन्त कब्जियत होनेसे कूथन देकर मल त्याग करनेके समय **गुह्यद्वार फट जानेपर या क्षत हो जानेसे यही प्रधान दवा है।** इसके सेवनसे मलद्वारका दर्द इत्यादि यन्त्रणायें दूर होती हैं और पेशियोंकी स्थिति-स्थापकता बढ़कर कोष्ठ साफ होता है। कांन्शि (rectum) निकल आनेपर यही प्रधान दवा है। इस दवाका बाह्य और आभ्यन्तरिक व्यवहार विधेय है।

भगन्दर (fistula in ano)—क्षतके चारों ओर अतिशय कठिन होने एवं उसमें गाढ़ी पीब निकलनेपर यह फलप्रद है। सरलान्त्रकी शिथिलताके कारण मल त्यागनेमें कष्ट और कूथन।

कैल्क सल्फ—कैल्क फ्लोरकी भाँति इस दवामें भी गाढ़ी पीब निकलना है, किन्तु पीबका रंग प्रायः पीला होता है, कभी-कभी इसके साथ रक्त मिश्रित रहता है। कैल्क फ्लोरमें क्षतके चारों ओर जितना कड़ा होना है, इस दवामें उतना नहीं है।

अर्श (बवासीर—piles)—**यही अर्शकी एक प्रधान दवा है।** स्रावी या अस्रावी सर्व प्रकारके अर्शमें इसका व्यवहार आवश्यक है। अर्शमें रक्तस्राव होनेसे रक्तका रंग देखकर अथवा रक्तस्राव न होनेपर केवल जीभका रंग देखकर दूसरी दवाके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है। अर्श रोगके साथ मस्तकमें रक्ताधिक्य (फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे), गुह्यद्वारमें अत्यन्त खुजलाहट और दर्द। अतिशय कोष्ठ-बद्धता, कष्टकर कूथनके सिवा मल त्यागा नहीं जाता। अन्तर्वली या वहिर्वली—शक्ति १२x, ३०x, ६०x।

कोष्ठबद्धता (constipation)—सरलान्त्रकी पेशियोंकी अक्षमतावश बहुत दिनों तक मल मलभांडमें जमा रहनेपर भी निकल नहीं सकता। गर्भावस्थामें एवं प्रायः प्रसवके बाद ऐसी हालत होती है और इसमें इस दवासे बहुत फायदा होता है।

नेट्रम म्यूर—इस दवामें भी सरलान्त्रकी दुर्बलता-सी रेक्टमकी शक्तिहीनताके कारण कोष्ठबद्धता होती है। कैल्क फ्लोरकी भाँति

इसमें भी मल कुछ दिनों तक मलभाडमें जमा रहनेका लक्षण है। किन्तु नेट्रममें जिस तरहके कोष्ठकाठिन्यताके कारण रोगीका मानसिक अवसाद, शिर-पीडा, मुखसे जल निकलना, आँसू गिरना इत्यादि लक्षण हैं—कैल्क फ्लोरमें वे नहीं हैं। कोष्ठ साफ होनेसे ही नेट्रमका रोगी आनन्दित होता है।

नेट्रम सल्फ—नेट्रम सल्फके रोगियोंको तरल मल त्यागनेके पश्चात् मानसिक आनन्द होता है। मल तरल होनेपर भी जोर देकर मल त्यागना पडता है। कठिन गोली जैसा मल, कभी-कभी उसमें रक्तके छींटे दीख पडते हैं।

साइलिसिया—इस दवामें भी अनेक दिनों तक मल मलभाडमें जमा रहता है। सरलान्त्रकी दुर्वलताके कारण मल किसी प्रकारसे नहीं निकलना चाहता, किन्तु जव मल निकलता है, तव **थोड़ा-सा वहुत कष्टसे वाहर निकलकर फिर भीतर घुस जाता है।**

केलि म्यूर—यकृतकी क्रिया विकृत होनेसे कोष्ठवद्धता, मल सफेद, फीके रगका और कीचडके ऐसा। गुरुपाक और तैलाक्त द्रव्यके भोजन करनेसे कब्जियत। जीभ सफेद या राखके रगकी मैलोंसे आवृत रहना। **मालूम पड़ता है कि आँखें निकल आवेंगी।**

उपदंश (syphilis)—यह हार्ड-सैंकरकी प्रधान औषध है। **वाघी कठिन होनेसे यह अव्यर्थ दवा है।** पुरानी उपदशकी वीमारीमें अस्थियोंके आवरणोंमें प्रदाह होनेपर। क्षतोंके किनारे असम और कठिन होनेसे व्यवहार करना चाहिये। पुराने उपदशजनित अस्थिक्षतोंमें २००x शक्ति उत्तम है।

रोगीका विवरण—दिलपाशारके (पवना) मृत कुवान हालदार, उम्र ३०-३२ साल। कुक्षिमें पत्थर-सा कठिन एक वडी **वाघी** हुई। दर्द थोडा था और थोडा पैदल चल सकते थे। **कैल्क फ्लोर** २००x एक मात्रा देनेपर दो दिनोंके अन्दर ही वाघी वगैर किसी चिह्नके वैठ गयी।

अण्डकोषकी वीमारियाँ (diseases of the testicle)—कोषके

अन्दर जलसंचय (कैल्क फॉस) ओर **अत्यन्त कठिनता** के साथ जिस किसी प्रकारकी अण्डकोषकी वीमारीमें नेट्रम म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे। इसके सेवन करनेसे संयोजक तन्तुओंमे वल प्राप्त होकर पानी जमने देनेमें वाधा डालते है। अण्डकोषकी शीर्णताके साथ हमेशा प्रस्टेटिक रस एव शुक्रका निकलना। प्रस्टेट ग्रन्थिकी वृद्धिके कारण कठिनता।

जरायुकी स्थानच्युति (displacement of the uterus)—जरायुके सर्व प्रकारकी स्थानच्युतिमें, अर्थात् सामने (एन्टिवर्सन), पीछे (रेट्रोवर्सन), पार्श्वमें (लैटरल वर्सन), अथवा जिस किसी स्थानमें जरायु क्यो न रहे (केलि फॉस, कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर) ये ही सर्व प्रधान दवाएँ हैं। मालूम होता है मानो जरायु ठेलकर निकली आ रही है और इसके साथ प्रसव वेदनाकी तरह दर्द (bearing down uterus)। **जरायु और कुक्षिमें खींचनेकी भाँति** दर्द। जरायु शिथिल, नरम अथवा कठिन जिस प्रकारकी ही हो और **जरायु यदि झूलकर बाहर निकल भी आये,** तव भी इसके सेवन करनेसे जरायुकी पेशियोंमें वल वढकर रोग आराम होता है। यद्यपि कैल्क फ्लोर इस वीमारीकी मुख्य दवा है और दूसरी किसी दवाके लक्षण रहनेपर उसे इस दवाके साथ पर्यायक्रमसे अथवा अनुपर्यायक्रमसे खिलाना चाहिये। तव भी दूसरी दवा खासकर नेट्रम म्यूरके साथ इसका भेद निर्णय करना आवश्यक है।

नेट्रम म्यूरके साथ तुलना—कैल्क फ्लोरकी भाँति इस औषधमें भी जरायुकी स्थानच्युति और प्रसव वेदनाकी तरह दर्द है। किन्तु नेट्रमकी तरह कैल्क फ्लोरमें जरायुका निर्गमन रोकनेके लिये वैठनेको वाध्य होनेका लक्षण नही है। वैठे रहनेपर ही जरायुका वहिर्गमन रुक जाता है। नेट्रम म्यूरमें **प्रत्येक दिन प्रातःकाल इस प्रकारके भावकी वृद्धि होती है** एव इसके साथ कमरमें दर्द रहना निश्चित है। यह कमरका दर्द चित **होकर कड़े** विछावनपर सोनेसे अथवा तकियामे दवानेपर कम होता है। इसके अलावा पेशाव करनेके पश्चात पेशावके रास्तेमें जलन और दर्द, सहज ही में रोना, शरीर शीर्ण एव मुखमण्डल

शुष्क इत्यादि नेट्रमके विशिष्ट परिचायक लक्षण हैं। ये सव लक्षण केल्क फ्लोरमें नही हैं। अत. निर्वाचन करनेके समय भ्रम होनेकी सम्भावना नहीं है।

केल्क फॉस अध्यायमे—जरायुकी स्थानच्युति द्रष्टव्य।

केलि फॉस—स्नायविक लक्षणोंकी अधिकता रहनेपर।

रक्तप्रदर, कष्टरजः इत्यादि (menorrhagia, dysmenorrhœa etc)—जरायुकी कठिनताके कारण कष्टरजःकी वीमारी एव जरायुकी शिथिलताजनित जरायुसे अतिरिक्त रक्तस्रावमें यह अति उत्कृष्ट दवा है। जरायुकी कठिनता एव शिथिलताके कारण जिस किसी प्रकारका ही रोग क्यों न हो, उसमें भी यह उपकार करता है। जरायुकी स्थान-च्युतिके साथ अधिक परिमाणमें ऋतुस्राव (केलि फॉस)।

गर्भस्राव (miscarriage)—यही प्रधान दवा है। अत्यन्त प्रसव-वेदना और रक्तस्राव इसके प्रयोगका लक्षण है। इस दवाके सेवनसे जरायुकी पेशियाँ शक्तिशाली होकर गर्भस्राव-दोप दूर होता है। जिनको वार-वार गर्भस्राव होता है, उन्हें गर्भावस्थामें २।१ मात्रा केलि फॉस सेवन कराना चाहिये।

गर्भ और प्रसव-वेदना (pregnancy and labour)—गर्भा-वस्थामें यह दवा वीच-वीचमें सेवन करवानेसे जरायु शक्तिशाली होकर सहज ही में प्रसव होता है और प्रसवके वाद गर्भस्राव और प्रसवके वादका दर्द (after pain) नहीं होता। जरायुकी शिथिलता हेतु अत्यधिक प्रसव-वेदना। प्रसव-वेदना कम होनेपर केलि फॉसके साथ जरायुकी संकुचन शक्तिकी अल्पताके हेतु प्रसवके वादके दर्दमें उत्कृष्ट है।

स्तनग्रन्थि-प्रदाह (mastitis)—**स्तन अतिशय कठिन और प्रस्तरवत् होनेसे** यह अति उत्कृष्ट दवा है। पहले ही से **फेरम फॉस** के साथ प्रधान औषध **केलि म्यूर** पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर स्तन-स्फीति एव ज्वर इत्यादि उपसर्ग नहीं हो सकते। किन्तु प्रथमावस्थामें अगर **केलि म्यूर**का प्रयोग न हुआ हो एव स्तनग्रन्थि प्रस्तरवत

कठिन हो गया हो, तब कैल्क फ्लोरके व्यवहार करनेका क्षेत्र आ जाता है। **स्तनमें दुग्ध** बहुत घट जानेसे अथवा विलुप्त होनेसे यह अत्यन्त उपकारी औषध है। कैल्क फॉसमें भी स्तनदुग्ध कम होनेका लक्षण है। शक्ति ६x, १२x।

अर्बुद (tumour)—**प्रस्तरवत् कठिन अर्बुद** मस्तक, कर्ण, मुख, धमनीमें, ओवरीमें, हाथ, पैर अथवा शरीरके जिस किसी स्थानमें ही क्यों न उत्पन्न हो, यह दवा विफल नहीं होती। शक्ति—१२x के नीचे नहीं। साधारणतः सभी क्षेत्रोंमें १२x शक्ति व्यवहृत होती है। हमारे विचारसे २००x सर्वोत्कृष्ट है—विशेष हालतमें एक मात्रासे ही आरोग्य हो सकता है।

रोगी-विवरण—(१) ई० १६४८ सालमें खुलना शहरके श्री नकुल साहा बहुत ही भयभीत होकर मेरे पास चिकित्सा कराने आये। उनके पेटमें एक बहुत बडा अर्बुद हुआ था और वह बहुत कडा था। मैंने उन्हें साहस देकर **कैल्केरिया फ्लोर** १२x नित्य तीन मात्रा करके सेवन करनेकी व्यवस्था कर दी। दो दिनोंमें ही बारह आने घट गया। दो मात्रा कर और भी दो दिन प्रयोग करते ही रोगी सम्पूर्ण आरोग्य हो गया।

(२) खुलना शहरके एक वैद्यने खुलनाके दक्षिणकी ओरके एक नमःशूद्रके पेटके एक बडे अर्बुदकी चिकित्साके लिये एक चिट्ठी लिखकर हमारे पास भेजा। इसके पहले होमियोपैथिक चिकित्सा कराये हुए थे, किन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। वे उपस्थित बहुत ही भयभीत हो पडे हैं। मैंने **कैल्क-फ्लोर** १२x नित्य दो बार सेवन करनेके हिसाबसे एक सप्ताहके लिये मात्रा दे दी। एक सप्ताहके बाद रोगीके आनेपर देखा कि अर्बुद प्रायः चौदह आने घट गया हुआ है। उसी दवाकी और कई मात्रा सेवन कराते ही रोगी सम्पूर्ण रूपसे आरोग्य हो गये।

अर्बुद या ट्यूमरकी चिकित्सामें साधारणतः ***कैल्क-फ्लोर**, कैल्क-फॉ व **साइलि** व्यवहृत होते हैं।

फाइब्रायड ट्यूमर या सूत्रजात अर्वुदमें—कैल्क-फ्लोर, कैल्क-फॉ व साइलि।

जरायुका फाइब्रॉयड अर्वुद—*कैल्क-फ्लोर, कैल्क-फॉ, कैल्क-स, साइलि।

कड़े अर्वुदमें कैल्क-फ्लोर, किन्तु साइलिसियाका भी व्यवहार होता है।

अर्वुदके दूषित हो पडनेका सन्देह होनेपर या दूषित होनेपर केलि-फॉ। दूषित अर्वुद या कैन्सर जरायुमें होनेपर कैल्क-फ्लोर, साइलिका व्यवहार होता है।

छातीमें कड़ा अर्वुद होनेपर—कैल्क-फ्लोर, कैल्क-फॉ व केलि-म्यू।

स्तनमें कड़ा अर्वुद होनेपर—कैल्क-फ्लोर, साइलि।

अर्वुद, ग्लैण्ड या ग्रन्थिकी सूजन, गूमड इत्यादिमें कडापनका भाव किन्तु पीव होनेकी आशका रहनेपर—साइलि। पीव होनेपर साइलि व कैल्क-स।

स्त्रियोंकी छातीमें कोमल अर्वुद होनेपर—कैल्क-फॉ, फेरम-फॉ, केलि म्यूर।

आँखोंकी पलकोंपर अर्वुद होनेसे—कैल्क-फ्लोर, नेट्र-म्यू, साइलि।

घुटनेके पीछे गहरेमें अर्वुद होनेपर—कैल्क-फ्लोर, साइलि।

ओठमें होनेपर—साइलि।

रक्तार्वुद—तुरन्तके उत्पन्न शिशुके मस्तकके ऊपर होनेपर कैल्क-फ्लोर उत्कृष्ट है। फेरम-फॉ भी क्षेत्र विशेपमें व्यवहृत होता है। ऐडिनॉयडकी वृद्धिमें कैल्क-फॉ उत्कृष्ट दवा है।

कौपिक (cystic)—कैल्क-फॉ, कैल्क-स, साइलि।

कौपिक अर्वुद होनेपर—कैल्क-स फलदायक है।

पलकोंपर होनेपर—साइलि २००x अति उत्कृष्ट है।

पलकोंके ऊपर या चारों तरफ होनेपर—कैल्क-फ्लोर, फेरम-

फॉ, साइलि फलदायक हैं।

योनिके अन्दर होनेपर—साइलि।

स्नायुकेन्द्र (ganglion) में अर्वुद होनेपर—कैल्क-फ्लोर, कैल्क-फॉ, केलि-म्यू, साइलि।

कलाईमे—साइलि।

ऊपरी कलाईपर—कैल्क-फ्लो, साइलि।

वाई कलाईमे—साइलि।

हाथपर तलहथीके विपरीत भागमे—साइलि।

रोगी विवरण—ऊपरी कलाईमें पत्थरकी गोलीकी आकारके रक्तार्वुदके कई रोगियोंमें **कैल्क-फ्लोर** १२x, २००x, २०० व एक हजार शक्ति प्रयोग कर आरोग्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। एक-एक रोगीमें एक-एक प्रकारकी शक्ति व्यवहृत हुई थी।

सरकोमा या मांसार्वुदमें कैल्क-फ्लोर फलदायक है।

कन्धेपर कडे पिण्डकी (ग्लैडका नही) भाँति सूजन होनेपर साइलिसिया।

वसार्वुद (wens)—साइलि अति उत्कृष्ट है।

शक्ति—साधारणतः सभी क्षेत्रोमें ही १२x शक्ति अति उत्कृष्ट होती है। वहुत दिनों तक चिकित्सा चलानेकी जरूरत होनेपर क्रमशः २४x, ३०x, ६०x व २००x तक व्यवहार करना पडता है। नित्य एक मात्रा या दो मात्रा कर दवाका प्रयोग करना पडता है और वीच-वीचमें २-१ दिन दवा वन्द रख देनी पडती है।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—डिफ्थिरियाकी कृत्रिम झिल्ली (falsemembrane) श्वासनली तक विस्तृत होनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है (केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)। **केलि म्यूर** ही इस रोगकी प्रधान और एकमात्र दवा है (केलि म्यूर अध्याय देखना चाहिये)।

प्लीहा और यकृत्की बीमारियाँ (diseases of the spleen and liver)—यकृतकी किसी प्रकारकी वीमारीमें यकृत अत्यन्त कडा, वढ़ा हुआ (enlarged), उदरके ऊपरके चमडीकी शिरास्फीति रहनेपर

यह विशेष उपयोगी है। लेकिन इसके साथ कोष्ठकाठिन्यताके लक्षणोंको भी याद रखना चाहिये। यकृतमें तीव्र कतरनेकी-सी वेदना और हिलने-डोलनेपर एव रातमें उसका घटना। दाहिनी करवट सोनेसे और प्रातः-काल ८ वजे वृद्धि। प्लीहाके लक्षण भी यकृतके लक्षणकी ही भाँति हैं।

उदरी (ascites)—उदरी रोगमें जब उदरके चमडेकी शिराएँ स्पष्टरूपसे दृष्टिगोचर होती हैं, उदर अत्यन्त कडा रहता है और इसके साथ ही इसकी प्रकृतिगत कोष्ठवद्धता रहे, तभी यह व्यवहृत होता है। इतनी कोष्ठवद्धता रहती है कि मल त्याग करनेकी इच्छा तक नहीं होती और जब इच्छा होती भी है, तो बहुत ही कूथन देकर मल बाहर निकालना पडता है। किन्तु इस रोगमें यह दूसरी दवाके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।

अजीर्ण (dyspepsia)—अजीर्ण रोगमें इस दवाका विशेष व्यवहार नही होता। किन्तु खायी हुई वस्तु जीर्ण न होकर जब अजीर्ण वमन होता है, उस समय **फेरम फॉस**के व्यवहारसे निष्फल होनेपर इस दवासे लाभ होनेकी सम्भावना है। पेट फूल जाना। दाहिनी कोखमें वेदना।

गलगण्ड (goitre)—पत्थरकी भाँति कड़ा होनेपर यह अव्यर्थ है। किन्तु दूसरी दवाओंके साथ इसका प्रभेद निर्णय करना जरूरी है।

केलि म्यूर—सभी प्रकारकी ग्रन्थिस्फीतिकी यह प्रधान दवा है। किन्तु स्फीतिमें कड़ाई न आने तक ही इसका व्यवहार करना चाहिये—कडाई आ जानेपर कैल्क फ्लोर।

नेट्रम म्यूर—ग्रन्थिकी स्फीतिके साथ आँख या मुखसे जल निकलना इत्यादि जलीय लक्षण विद्यमान रहनेपर।

कैल्क फॉस—सभी प्रकारकी ग्रन्थिस्फीतिमें केलि म्यूर प्रधान दवा होनेपर भी इस रोगकी कैल्क फॉस ही प्रधान औषध है। क्योंकि फॉसफेट ऑफ लाइमके अभावसे ही यह बीमारी पैदा होती है। कैल्क फॉस अध्यायमें गलगण्ड द्रष्टव्य।

कानकी बीमारियाँ (diseases of the ear)—सभी प्रकारके

कानकी बीमारियोंमें कानकी अस्थि और अस्थिआवरक (periosteum) आक्रान्त होनेपर कानके अन्दर चूनाकी भाँति पदार्थ (calcareous) इकट्ठे होते हैं।

सर्दी (coryza)—नाकसे अधिक परिमाणमें थक्का-थक्का गाढ़ी पीली या हरे रङ्गकी सर्दी निकलती है एव उसमें बहुत दुर्गन्ध रहती है।

ओजिना (ozæna)—नाककी हड्डियाँ आक्रान्त होकर पूर्व-वर्णित दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलनेपर यह विशेष उपयोगी होता है। नाककी हड्डियाँ सडकर दुर्गन्ध निकलनेपर इससे विशेष लाभ होता है। नाककी हड्डियोंके बढ जानेपर भी यह एक अच्छी दवा है।

साइलिसिया—यही प्रधान औषध है। नाकसे गाढ़ा पीले रंगके दुर्गन्धयुक्त स्रावके साथ नाककी अस्थि आक्रान्त होती है। लेकिन **नाकसे दुर्गन्धजनक घाव पैदा करनेवाला पतला स्राव ही इसका निर्वाचक लक्षण है।** मस्तक और पैरमें दुर्गन्धयुक्त पसीना। स्क्राफुला और रिकेटिक धातुवालोंके लिए विशेष उपयोगी है।

केलि फॉस—नासिकासे **अत्यन्त दुर्गन्धमय पतला स्राव** होनेपर यह व्यवहृत होता है। अस्थि आक्रान्त होनेका लक्षण इसमें न रहनेपर भी जब किसी स्रावमें अत्यन्त दुर्गन्ध रहती है, तो उसमें यह फलदायक होता है। अधिक रक्तस्रावी प्रवृत्ति। रक्त पतला और कालिमा लिये, जमता नही।

खाँसी (cough)—अलिजिह्वा (uvula) बढ़नेके कारण गला सुरसुराकर सूखी खुरखुरी खाँसी (नेट्रम म्यूर)। सोये रहनेपर मालूम होता है मानो अलिजिह्वा गलेके पिछली तरफ छू रहा है। इसके अलावा गला सुरसुराकर खाँसीके साथ टुकडे-टुकडे थक्का-थक्का गहरे पीले रंगका बलगम निकलनेपर भी यह उपयोगी है। गलेके अन्दर सूखापन मालूम होता है। घुडी खाँसीमें (croup) केलि म्यूर या फेरम फॉससे फायदा न होनेपर। शक्ति—१२x।

स्वर-भंग (hoarseness)—डॉ० केण्टका कहना है कि उच्च

स्वरसे पढनेके वादका स्वरभंग ; स्वररज्जु साफ करनेकी इच्छा। गलेके भीतर वहुत ही सूखापन मालूम होता है।

दमा (asthma)—कफ निकालनेमें अत्यन्त कष्टके साथ पीले रगका थक्का-थक्का कडा वलगम निकलता है।

पुराना टान्सिल प्रदाह (chronic tonsillitis)—पुराने टान्सिल प्रदाहमें जव वढी हुई ग्रन्थियाँ अत्यधिक कडी हो जाती हैं।

हृद्स्पन्दन (palpitation of the heart)—हृद्पिण्डके फैलने या वढनेके कारण हृद्स्पन्दन होनेपर (केलि म्यूर)। इससे स्थितिस्थापक तन्तुओंमें वल आकर वीमारी दूर हो जाती है। हृद्पिण्डकी वीमारी हेतु शोथ।

एम्फाइसिमा (emphysema)—केल्क फ्लोर ही इसकी प्रधान दवा है। इसके साथ पर्यायक्रमसे **फेरम फॉस** व्यवहार करना चाहिये। इससे स्थितिस्थापक पेशियाँ वलवती होकर उपकार करती हैं।

कटिवात (lumbago)—पुराने कटिवातमें यह विशेष उपयोगी है। सेक्रम-अस्थिमें (कमरके पीछेकी हड्डी) दर्द और थकावट, ऐसा मालूम पडता है मानो कमर गतिशून्य हो गयी है, जलन, भारी मालूम होना और दुर्वलता। **यह दर्द प्रथम हिलना-डोलना आरम्भ करनेपर वढता है, किन्तु क्रमागत घूमने-फिरनेपर कम होता है।** ठण्डेसे रोगकी वृद्धि होती है। गरम प्रयोगसे घटता है। मल त्यागके समय अत्यधिक कूथन या किसी भारी द्रव्यका उठाना इस रोगका कारण होनेपर यह और भी उपयोगी है।

रोगी-विवरण—ई० १९५३ साल। पूर्वी पाकिस्तानके श्रीहट्ट नामक स्थानसे २४-२५ वर्षकी उम्रकी एक वातकी रोगिणीकी डाकसे चिकित्सा कर चुका हूँ। स्वामी व स्त्री दोनोंकी ही चिकित्सा हो रही थी। रोगिणी साइकोटिक दोषसे दूषित होनेपर भी वातकी रोगिणी इस नामसे सम्बोधित नहीं की जा सकती थी। किन्तु वातके क्षेत्रमें इस दवाकी उपयोगिता व प्रयोगके लक्षण दिखानेके लिए ही केवल इस नामसे

सम्बोधित करना पडा, इसलिए रोगिणीके उपसर्गोसे कुछेक अशोका ही यहाँ उल्लेख किया गया है।

रोगिणीको कष्टदायक उदरामय था, जरायुके लक्षण, यकृत, किड्नी, आँख, छाती, मस्तक इत्यादिमें नाना प्रकारके कष्टदायक लक्षण मौजूद थे जिनकी कि यहाँपर हमलोगोंको आवश्यकता नही है।

रोगिणी वहुत क्रोधी थी, किन्तु क्रोध होनेपर प्रकट नही करती—अपने मन-ही-मन दुःखसे रोती थी। आत्महत्या करनेकी इच्छा होती थी। अपना मास अपने ही नोच कर खानेकी इच्छा, केश नोच फेंकने की इच्छा, मन चचल व दौडनेवाला और हमेशा घूमते-फिरते रहनेकी इच्छा होती थी। डर भी वहुत अधिक लगता था। चोर, डाकुओंका भय, उदास, आनन्दका विलकुल अभाव, अकेले रहना पसन्द करती थी। और भी अनेकों प्रकारके मानसिक लक्षण थे।

रोगिणीको सिहरावन लगा ही रहता था। १२ हो महीने गरम जल से स्नान करती थी। ठण्डसे वातके लक्षण वढ जाते थे। सायंकालके पहलेसे मारी रात तक वातका दर्द वढ़ता था। धूपकी गरमी वढ़नेसे शरीर हल्का मालूम होता था।

मुख्य वात यह है कि कमरका दर्द वहुत ही कष्टदायक हो पडा था और पाँच वर्षोसे वातकी तकलीफ वहुत वढ़ी हुई हालतमें चल रही थी। दोनों घुटनोंसे नीचे पैर तक वहुत दर्द, अकुलाना, चिलक इत्यादि। वृद्धि—सभी ठण्डसे व हिलने-डोलनेपर। ह्रास—गरम सेंकसे, गरमसे, गरम जल ढालनेसे और चलने-फिरनेसे। चिकित्सा वहुत हुई पर कोई फल नहीं हुआ।

होमियोपैथिक मतानुसार उच्च शक्तिकी गहरी क्रियाशील एण्टि-साइकोटिक दवा देकर वातवाले लक्षणोंमें विशेष कोई सुविधा नहीं हुई। मैं भी वडे आश्चर्यमें पड गया था। अन्तमें केवल वातवाले लक्षणोंके लिए **कैल्क फ्लोर** १० एम० शक्ति वदल कर एकके वाद एक दो मात्रा दी गई। इससे आश्चर्यजनक फल हुआ और रोगिणी वहुत कुछ स्वस्थ

मालूम करने लगी। वायोकेमिककी तुलनामें होमियोपैथिक मतसे इस दवाका व्यवहार वहुत ही कम होता है। इसका अधिक व्यवहार होना चाहिए।

वात, गठियावात (rheumatism, gout)—वातके दर्दमें जोड़ सबोंके फूलने और कडे होनेपर **सन्धिस्थानोंमें कड़कड़ शब्द होना।** अगुलियोके गाँठमें दर्द और सन्धिस्थान नव फूले हुए। घुटने और केहुनीके जोडोमें दर्द और उनका फूलना। **प्रथम वार हिलने-डोलनेमे वृद्धि, किन्तु क्रमागत हिलते-डोलते रहनेपर ह्रास इसका प्रमाणित लक्षण है।** इसके अलावा कटिवातके लक्षणपर भी ध्यान दें।

हॉज्किन्स (Hodgkin's) **डिजीज**—इस रोगमें साधारणतः लक्षणानुसार **कैल्क-फ्लोर,** केलि-म्यूर व नेट्रम-म्यूर व्यवहृत होते हे।

चर्मरोग (diseases of the skin)—विभिन्न स्थानोंके चमड़े फट जाते हैं—हाथ, पैर, ओठ और मुँहके चमडे फटते है, खासकर जाडेमें। चमडोंके फटनेपर थोडेसे वैसलिनके साथ यह दवा फटे स्थानोपर लगानेसे वहुत जल्द फायदा मिलता है। हाथ और पैरोंमें घट्ठे (corn) उत्पन्न होते हैं। मलद्वार फटा, चमडा मोटा और कडा, स्तनवृन्त फटा। मछलियोंकी चोइयो (scales) की भाँति दागयुक्त एक्जिमा। जिन घावोके चारो तरफ कडा हो गया हो। जिन सव रोगोमें उक्त प्रकारके लक्षण रहेंगे, उनमें ही यह उपयोगी है।

कैन्सर (cancer)—सभी प्रकारके कैन्सरोंकी प्रथमावस्थामें जव स्फीत स्थान वहुत कडे हो जाते हैं। अवस्थानुसार **साइलिसिया** या **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है। शक्ति—१२x, २४x, ३०x।

कैन्सरमें साधारणतः कैल्क-फ्लोर, कैल्क-फॉ, कैल्क-स, फेरम-फॉ, केलि-म्यू, केलि-का, केलि-स साइलि इत्यादि दवायें लक्षणानुसार व्यवहृत होती हैं।

दूषित अर्बुदका सन्देह होनेपर—केलि-का।

केन्सरकी प्राथमिक दशामें साधारणतः कैल्क-फ्लोर दवा ही व्यवहृत होती है। उसके साथ लक्षणानुसार फेरम-फॉ व साइलि व्यवहृत होते है। मध्यवर्ती औषधके हिसावसे कैल्क-फॉ व्यवहृत होता है।

कैन्सरके दर्दको घटानेके लिये मैग-फॉ व साइलि लक्षणानुसार व्यवहृत होते हैं। असहनीय दर्दको घटानेके लिये केलि फॉस उत्कृष्ट दवा है। वदवूदार स्राव होना रहनेपर केलि फॉस अधिकतर उपयोगी है। कैन्सरके अत्यधिक दर्दके साथ अत्यधिक रक्तस्राव रहनेपर फेरम-फॉस आश्चर्य फलदायक दवा है।

कैन्सरका रोगी वहुत कमजोर हो पडनेपर केलि-फॉ फलदायक है।

मैलेरिया ज्वर भोगनेके वाद नाना प्रकारके कैन्सरमें विशेषकर जरायुका कैन्सर होनेपर नेट्रम-म्यूर।

स्कॉफुला धातुग्रस्तोको कैन्सर होनेपर कैल्क-फॉस। पत्थरकी भाँति कडा होनेपर अथवा आक्रान्त स्थानके चारो वगल कडा रहनेपर कैल्क-फ्लोर उत्कृष्ट है।

मुखका कैन्सर होनेपर—साइलि।

ओठका कैन्सर होनेपर—केलि-म्यू, केलि-स, साइलि।

पुरुषोंकी जननेन्द्रियमे होनेपर—साइलि।

पाकस्थलीमे होनेपर—कैल्क-फॉ, कैल्क-स, केलि-फॉ, साइलि।

पाकस्थलीके कैन्सरमें असहनीय जलन व दर्द रहनेपर और कै तथा हिचकी इत्यादि होनेपर मैग-फॉस रोगीको आराम पहुँचाता है।

जीभके कैन्सरमें—कैल्क-फॉ, फेरम-फॉ, नेट्रम-फॉ, *साइलि।

जरायुके कैन्सरमे—कैल्क-स, केलि-फॉ, केलि-स, मैग-फॉ, नेट्रम-म्यू, साइलि।

एनसेपालोमा—साइलि।

एपिथेलियोमा—कैल्क-फॉ, केलि-फॉ, केलि-स, साइलि।

ओठका—केलि-म्यू, साइलि।

निम्न ओठमें—केलि-स।

छातीका—केल्क-फॉ, साइलि।

सिरस (scirrhus या कठिन अर्बुद या कर्कट रोग)—कैल्क-स, साइलि।

कड़ेपनके साथ—साइलि।

छातीका—साइलि।

दाहिनी—साइलि।

वायाँ—साइलि।

मुखमें—साइलि।

शक्ति—६x कम व्यवहृत होती है। प्रायः क्षेत्रोंमें १२x शक्ति देकर चिकित्सा आरम्भ करनी पडती है। आवश्यकतानुसार उच्च शक्तिका व्यवहार करना पडता है।

जीभ (tongue)—जीभ फटी-फटी, उसमें दर्द रहे या न रहे, जीभके प्रदाहके वाद उसकी कडापनवाली अवस्था।

निद्रा (sleep)—नये स्थान, नये दृश्य, अथवा किसी संकटका स्वप्न देखता है। स्वप्न देखकर भयभीत हो भागनेकी चेष्टा करता है।

ज्वर (fever)—यह दवा पुराने ज्वरमें व्यवहृत होती है—नये ज्वरमें इसका व्यवहार किया जाना दीख नहीं पडता। पुराने ज्वरमें जव प्लीहा और यकृत् अत्यधिक वडे और कडे हो जाते हैं एव उदरस्थ चमडेकी शिराएँ स्फीत होती हैं, तभी यह व्यवहृत होता है। ज्वरके समय प्यास रहती है, जीभ और ओठ सूखे व फटे रहते हैं।

वृद्धि (aggravation)—दलदली या भींगे हुए स्थानमें, तर वायु में, अस्थिके रोग और वातमें एवं विश्राममें वृद्धि।

ह्रास (amelioration)—अस्थि और वात-व्याधियोंमें उत्तापसे एव हिलने-डुलनेपर घटना। वहुतसे रोगोंका, खासकर गलेके अन्दरके रोगोंका उत्तापसे एव उत्तप्त पीनेवाली वस्तुओंसे ह्रास होना। हाथ फेर देनेपर घटा मालूम होता है।

शक्ति (potency)—डॉ० शुसलरका कहना है कि १२x ही

सर्वोत्कृष्ट है—उसके नीचे व्यवहार करना उचित नहीं। लेकिन ६x से भी लाभ उठा सकते हैं। २४x, ३०x और २००x हमेशा व्यवहृत होते हैं।

सम्बन्ध (relation)—रक्ताल्पता रोगमें यह कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है। ओजिना रोगमें, अस्थिक्षत और पीव पैदा होनेपर इसके साथ कैल्क फॉसके प्रभेद भरका ही निर्णय करना आवश्यक है।

ओजिना रोगमें कैल्क-फॉसके साथ, हड्डीकी पीव व घावमें कैल्क-फॉ व साइलिसियाके साथ और आलसी प्रकृतिके क्रोधी, कठोरता व शिशुओंके मस्तककी खोपडीकी सूजनमें साइलिसियाकी कैल्क-फ्लोरके साथ तुलना होती है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक दवाइयाँ—रस टक्सके कमरके वात (lumbago) के लक्षणके साथ इसका वहुत कुछ सादृश्य है। दोनोंके ह्रास और वृद्धिके लक्षण सभी एक ही प्रकारके हैं। रस टक्ससे असफल होनेपर इस दवासे प्रायः ही सुफल मिलता है। पीव उत्पन्न होनेमें साइलिसियाके वाद। संधिवात (arthritis) में कैल्केरिया व ब्रायोनियाके वाद। अस्थिमें पीव उत्पन्न होनेपर कैल्क फॉस व साइलिसियाके साथ इसकी तुलना हो सकती है। इसका मानसिक लक्षण वहुत कुछ कैल्क कार्वमें भी दीख पडता है। फाइब्रॉयडके कडापनमें कैल्क आयोड व कैलि आयोडके साथ इसकी तुलनाकी जा सकती है।

कैल्केरिया फॉस्फोरिकम
(Calcarea Phosphoricum)

*एण्टि-सोरिक, एण्टि-साइकोटिक और एण्टि-ट्यूवक्यूलर।

दूसरा नाम—कैल्सियम फॉसफेट, कैल्सिस फॉसफस।

साधारण नाम—फॉसफेट ऑफ लाइम।

संक्षिप्त नाम—कैल्क फॉस (calc phos)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—डॉ॰ हेरिङ्गने सर्वप्रथम चूनाके जलमें डाइल्यूट फॉसफोरिक एसिड क्रमश॰ मिश्रित करके एक प्रकारके श्वेत वर्ण पदार्थकी तलछट (sediment) पाई। वादमें उसको चुआये हुए साफ पानी (distilled water) में उत्तमरूपसे धोकर और जलीय उत्तापसे सुखाकर दवाके काममें व्यवहार किया जाता है। यह जल अथवा चुआये हुए सुरामें घुलता नही। केवल नाइट्रिक एसिड, कार्वोलिक एसिड इत्यादि एसिडोंमें ही घुलता है। होमियोपैथिक फार्माकोपियाकी विचूर्णन पद्धतिके अनुसार यह वनाना पड़ता है।

क्रिया—मानव शरीरके निर्माणके लिये यह एक विशेप उल्लेखनीय पदार्थ है। शरीरस्थ अण्डलाला (albumen) नामक पदार्थके साथ मिश्रित होकर यह कार्यकरी होता है। फॉस्फेट ऑफ लाइम अण्डलाला के साथ मिश्रित होकर शरीरके प्रधान-प्रधान उपादानोंका निर्माण किया करता है। इसीलिये जिस किसी प्रकारसे और किसी भी द्वारसे अण्ड-लाला निकल जानेपर इस लावणिक-पदार्थकी आवश्यकता होती है। इसके अभावके कारण अण्डलाला अकार्यकरी रूपमें नासापथसे निकलने पर सर्दी, फेफडेकी राहसे निकलनेपर खाँसी, मूत्रपथसे निकलनेपर एल्व्यू-मिनुरिया, चर्मपथसे निकलनेपर खुजली और घाव इत्यादि नाना प्रकारके चर्मरोग इत्यादि भिन्न-भिन्न नामोंके विभिन्न रोग उत्पन्न हुआ करते हैं।

पाकस्थलीपर यह तीव्र क्रिया प्रकट करता है। इसीलिये इसका अभाव होनेपर नाना प्रकारके लक्षणयुक्त अजीर्ण रोग उत्पन्न होते हैं।

हरे रंगका लसदार और दुर्गन्धमय तरल गर्म मल वायुके साथ निकलनेपर इसका अभाव सूचित होता है।

यह अस्थिका एक प्रधान उपादान है, यहाँ तक कि इसका अभाव होनेपर अस्थि निर्मित ही नही हो सकती, क्योकि अस्थिमें सैकडे ५७ भाग फॉसफेट ऑफ लाइम पाया जाता है। इसी कारणसे किसी स्थानकी अस्थि टूट जानेपर उसको जोड़नेके लिए, रिकेट्स रोगमें एवं सभी प्रकारके अस्थि-रोगमे इसकी बहुत ही आश्चर्यजनक क्रिया दिखाई देती है। अस्थिकी भाँति दाँतपर भी इस औषधकी अद्भुत क्रिया दीख पडनेके कारण बच्चोंके दाँत निकलनेके समय होनेवाले उदरामय, ज्वर, चिड़चिड़ापन इत्यादि क्लेशोंमे यह मन्त्रशक्तिकी तरह क्रिया करता है।

डॉ० शुसलरका कहना है कि यह रक्तके श्वेत-कणिकाको बनानेमें एवं अपर्याप्त श्वेत-कणिकाओको नये रक्त-कणिकाओंमें परिणत करनेमें विशेष कार्यकरी होता है। कोषोंको उत्तेजित और शक्तिशाली करनेमें इसकी क्रिया विशेष उल्लेखनीय हैं। इसीलिये एनीमिया, क्लोरोसिस इत्यादि रक्तहीनता रोगोंमे एवं कोई रोग भोगनेके बाद इसका व्यवहार अनिवार्य है।

सिरस-झिल्लीके एपिथिलियमसे तरल अण्डलालावत जलीय-पदार्थ निकलनेपर इसकी कमीका विषय ही समझना चाहिये। इसलिये घुटनेके सन्धिस्थान (knee-joint) मे जल जमनेपर इस दवाके व्यवहार स्वरूप इसकी क्रियासे शीघ्र ही जलीय-पदार्थ शोषित हो जाता है।

स्नायु समूहोंके ध्वसको रोकनेमें यह अद्वितीय है (केलि फॉस)। इसीलिये वृद्धावस्थामें, शीर्णता रोगमें, क्षय रोगमें, स्वप्नदोष इत्यादि रोगोमें इसकी क्रिया देखनेपर आश्चर्य होना पडता है।

इस औषधकी क्रिया शरीरके प्रत्येक अङ्ग-प्रत्यगमें दिखाई देती है। इस दवाकी क्रिया इतनी विस्तृत है कि सोचनेपर आश्चर्यसे चकित हो जाना पडता है। बायोकेमिक भेषज-तत्त्वमें यदि केवल इसी एक दवाको ही स्थान मिलता, तब भी इसका ऋण सदाके लिये अपरिशोध ही रहता।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—फॉसफेट ऑफ लाइमके अभावके कारण ही जो सव रोग उत्पन्न होते हैं, उनमें ही यह उपयोगी है।

२—अण्डलालाकी भाँति गाढा, लसदार और स्वच्छ स्राव ही इनका विशेष लक्षण है। जिस किसी वीमारीमें इस प्रकारका स्राव दीख पड़े, विना सकोच किये ही इस दवाका प्रयोग किया जा सकेगा।

३—जिन वच्चोंका शरीर अत्यन्त शीर्ण, ककालावशिष्ट, पेट धँसा हुआ, सिर वडा, सिरकी हड्डियोंके जोड वहुत दिनोंसे असंयुक्त दशामें रहते हैं, जिनके मस्तकमें वहुत पसीना होता है एवं किसी-न-किसी प्रकारके अस्थि-रोगसे पीडित रहते हैं, उनके लिये यही केवल एक महौपध है (साइलिसिया)। वास्तवमें गण्डमाला (scrofulous) और वालास्थि विकृति (rachitic) धातुके रोगियोंके लिये यह एक प्रकारसे मृतसञ्जीवनी सुधा सदृश है। स्कॉफ्यूला-धातु हेतु मेरुदण्डकी वक्रता भी इस दवाका एक विशेष परिचायक लक्षण है।

४—जो सव शिशु देरसे चलना और विलम्वसे वोलना सीखते हैं।

५—शिशुओंके दाँत निकलनेमें देर होना और दाँत निकलनेके समयके विविध उपसर्गोंमें, जैसे—ज्वर, खाँसी, उदरामय, चिहुँक इत्यादिमें यह अव्यर्थ है।

६—जो सव युवक और युवतियाँ शीघ्रतासे वढ़ती हैं अर्थात् लम्बी होती जाती हैं।

७—शिशु अत्यन्त ही चिडचिडा और डरपोक।

८—शोक, दुख, विरक्ति और प्रेमसे नैराश्य हेतु जो सव वीमारियाँ होती हैं।

९—जिनकी स्मरणशक्ति अत्यन्त ह्रास हुई है, मानसिक परिश्रम करनेमें असमर्थ होते हैं और रोगके विषयकी चिन्ता करनेपर ही जिनके रोगकी वृद्धि होती है।

१०—जिन लोगोंका उत्साह, कर्मशीलता विलकुल गायव हो जाती है, किसी कामको करनेकी इच्छा नहीं होती।

११—जो लोग अत्यन्त दुर्बल, रक्तहीन और पीले हों—उनके किसी भी रोगमें। टाइफॉयड इत्यादि किसी प्रकारके रोगके भोगनेके पश्चात—क्षयकी पूर्ति करनेके लिए इसका व्यवहार आवश्यक है।

१२—जो सव स्त्रियाँ वहुतसे सन्तानोका प्रसव कर अथवा अधिक दिनों तक सन्तानको स्तनपान करानेके कारण दुर्वल हो पडी हैं।

१३—रक्ताल्पता रोगकी यह एक प्रधान औषध है। खासकर यदि वह परिपाक क्रियाकी गडवडीके कारण उत्पन्न हुआ हो।

१४—जो लोग विना किसी कारणसे ही क्रमशः शीर्ण होते जाते हैं, उनके लिये यह विशेप उपयोगी है। शिशु तो भर पेट भोजन करता है पर फिर भी शीर्ण (marasmus) होता जाता है।

१५—जिनको सहज ही में ठण्ड लग जाती है और सर्दी हो जाती है (फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)।

१६—क्षय-रोगियोंको रातमें वहुत ज्यादा पसीना होना, खासकर सिरमें। शरीर क्रमशः शीर्ण होते रहनेपर अति सुन्दर दवा है।

१७—सिर-दर्दमें रोगी अपना मस्तक वरफकी भाँति ठण्डा अनुभव करता है एव कोई हाथ लगानेपर उसे भी वैसा ही ठण्डा अनुभव होता है। मस्तकके अस्थियोंके निचले सयोग स्थानोंमें अधिकतर वेदना होती है।

१८—यह मुँहासाकी एक वहुत अच्छी दवा है। लाल मुँहासोसे पूरा मुँह भर जाता है।

१६—उदरामयमें हरा, पिच्छिल, तरल, उष्ण मल वायुके साथ निकलना अतिशय निश्चित है।

२०—खायी वस्तुके परिपाकके अभावके कारण उत्पन्न हुई किसी भी वीमारीमें इसका व्यवहार स्वतः सिद्ध है।

२१—अजीर्ण रोगमें शीतल पानीय और खाद्यद्रव्य, आइसक्रीम सेवन, हरा और सरस-फल खाना एव गुरुपाक द्रव्यादिका भोजन सहा नही जाता—खानेपर पेटमें दर्द, वमन और उदरामयकी वृद्धि होती है। ग्रीष्मकालके उदरामयमें यह विशेष उपयोगी है।

२२—शिशुको दूध नहीं पचता, पेटमें दर्द और थोड़ेसे दूधके पीने पर भी छेनेकी भाँति जमा हुआ दुर्गन्ध और खट्टी गन्धमय (नेट्र फॉस) वमन होनेपर यह अव्यर्थ है।

२३—बच्चे सदा ही खानेको माँगते ही रहते हैं। अधिक उम्रवालों को भी अति भूख लगना दीख पड़ता है।

२४—जो सब बालिकाएँ विद्यालयमें पढ़ती हैं, उनका सिर-दर्द।

२५—धूम्रपानकी प्रवृत्तिको छोड़नेके लिये इसकी ५x शक्ति विशेष कार्यकरी है।

२६—यह पित्तशिलाकी उत्पत्तिको रोकनेमें अव्यर्थ है।

२७—यह गलगण्डकी प्रधान दवा है।

२८—प्रचारक, गायक और वक्ताओंके अतिरिक्त स्वरयन्त्रके व्यवहारके कारण स्वरभंग (फेरम फॉस), लगातार गलेको खखारकर साफ करना पड़ता है।

२९—शिशुओंको खाँसते-खाँसते दम अटक जानेकी अवस्था आ जाती है। श्वास-प्रश्वास घना और छोटे हो जाते हैं। अत्यन्त कष्ट-दायी हूपिंग-खाँसीमें एवं जब खाँसी किसी तरहसे ही आराम नहीं होती उस समय इसका प्रयोग करना चाहिए।

३०—मोतियाबिन्दकी प्रारम्भावस्थामें यह दवा व्यवहार करनेसे रोग और न बढ़कर दूर हो जाता है। सभी लक्षण दाहिनी आँखमें बढ़ते हैं; मस्तकके दाहिने भागमें सिर-दर्द उपस्थित हो जाता है।

३१—पॉलिपस नामक बीमारीकी यह एक प्रधान दवा है। नाकमें यह रोग होनेपर रोगीकी घ्राण-शक्ति अत्यन्त दुर्बल हो जाती है।

३२—टूटी हुई हड्डियोंको जोड़नेमें इसकी अद्भुत शक्ति दृष्ट होती है।

३३—रजोदर्शनके समय बालिकाएँ अतिशय शीर्ण, भीत और चंचल स्वभावकी होती हैं।

३४—जो सब स्त्रियाँ रिकेटिक सन्तानका प्रसव करती हैं, उनकी गर्भावस्थामें इस दवाकी दो या एक मात्रा करके सेवन करानेसे भविष्यमें

रिकेटिक सन्तान होनेका दोष दूर हो जाता है एवं शिशुकी हड्डियाँ पुष्ट होती हैं।

३५—पौष्टिक भोजनकी कमीसे अथवा खाई हुई वस्तु का समीकरण होनेमें अभावके कारण जो सब वालिकाएँ रक्तहीन, पीली एव दुर्बल हो जाती हैं, उनलोगोके स्वल्परजः और कष्टरजः रोगोंमें यह विशेष उपयोगी है। इस हालतमें वालिकाओंको कार्य करनेमें अनुत्साह एवं क्लान्तिका भाव दिखाई देता है।

३६—शीघ्र-शीघ्र अथवा देरसे रज.स्राव होना।

३७—स्त्रियोंकी अस्वाभाविक या वावला वनानेवाली कामेच्छा इस दवासे घटती है।

३८—जरायुकी दुर्वलता और शिथिलता हेतु जरायुका निर्गमन (वाहर आना) या स्थानच्युति और इस हेतु विविध यन्त्रणायें (कैल्क फ्लोर, केलि फॉस)।

३९—श्वेतप्रदर, खाँसी, प्रमेह, कानसे पीव निकलना, चर्मरोग इत्यादिमें इसकी २य सख्यक लक्षणमें वर्णित स्राव रहनेपर।

४०—युवकोंके स्वप्नदोपको रोकनेमें इसका निम्नक्रम विशेष शक्तिशाली है। अतिरिक्त स्वप्नदोष या काम-परिचालना हेतु विविध कुफलों में, यहाँ तक कि—मृगी इत्यादिमें भी इसका व्यवहार स्वतः सिद्ध है।

४१—वहुमूत्र-रोगमें अतिशय शीर्णता अथवा अदम्य प्यास व क्षुधाहीनता रहनेपर यह अत्यन्त उपयोगी है।

४२—भगन्दर-अस्त्रोपचार करनेके वाद जो सब रोग होते है उनमें यह उपयोगी है। खाँसी और भगन्दरमें पर्यायक्रमसे ह्रास और वृद्धि होती है।

४३—गुह्यद्वारके स्नायुशूल-दर्दमें—सेक्रम-अस्थिका दर्द मल त्यागके समयसे रातमें शयनकाल तक रहता है।

४४—ठण्डा लगनेके कारण हाथ और पैरके भिन्न-भिन्न स्थानोंमें दर्द होता है।

४५—लम्बेगो-रोग प्रातःकाल वढनेपर यह एक अति उत्कृष्ट औषध है।

४६—वातका दर्द एक स्थानसे दूसरे स्थानपर घूमता रहता है (केलि सल्फ)। वातसे पीडित स्थान शीतल और चेतनाहीन प्रतीत होता है। वातके दर्दसे पैदा हुई अस्थिरता रातमें बढ़ती है और चलने-फिरनेपर घटती है। ठण्डा लगकर गर्दनकी पेशियाँ कडी और वेदनायुक्त हो जाती हैं।

४७—इस दवाकी सब प्रकारकी बीमारियाँ रातमें, ठण्डमें, ऋतु परिवर्तनके समय, पानीमें भीगनेपर और चलने फिरनेसे बढ़ जाती हैं।

४८—गरमसे, चुपचाप बैठे रहनेपर और ग्रीष्मकालमें सभी बीमारियाँ घट जाती हैं। केवल वात-व्याधिमें चलने-फिरनेसे रोगी आराम अनुभव करता है। ह्रास-वृद्धिपर विचार करके सभी रोगोंमें इसका व्यवहार हो सकता है।

चेतावनी—कैल्केरिया फॉसफेटके क्रूड अथवा मूल औषधसे अनेक हाइपोफॉसफेट आफ लाइमका पेटेण्ट सिरप वनकर विक रहे हैं। उसको वहुत दिनों तक व्यवहार करनेसे क्षय रोग होनेकी सम्भावना है। एलोपैथिक मतानुसार व्यवहार करके किसी-किसीके मुखसे रक्त तक निकलता है। होमियोपैथिक मतसे इसका अधिक व्यवहार निषिद्ध है—खासकर अस्थि पूर्णत्वको प्राप्त हो जानेपर। शिशु या वालकके लिये जितने दिनों तक और जिस मात्रामें व्यवहार किया जाता है, पूर्ण वयस्कोंके लिये कभी भी वैसा नहीं किया जा सकता। किन्तु वायोकेमिक मतसे इसका प्रयोग अत्यन्त अधिक होनेपर भी वयस्कोंके लिये इसका संयमपूर्वक व्यवहार करना चाहिये। अगर अधिक दिनों तक व्यवहार करना हो, तो १२x शक्तिसे निम्न शक्तिकी व्यवहार करना उचित नहीं।

विशेषत्व (peculiarity)—परवर्ती शारीरिक आकृति अध्यायमें वर्णित जीर्ण-शीर्ण स्क्राफ्यूला—शिशुके सब प्रकारके रोगोंमें ही यह अमृतके समान है। इस प्रकारका शिशु प्रायः किसी-न-किसी प्रकारके

अस्थि-रोगसे पीडित रहता है। दाँत निकलनेके समयकी चिहुँक, ज्वर, उदरामय इत्यादि सभी बीमारियोंमें यह ब्रह्मास्त्र है। सर्दी, खाँसी, प्रमेह, श्वेतप्रदर, चर्म-रोग इत्यादि जिस किसी रोगमें अण्डलालके समान गाढ़ा, लसदार और स्वच्छ स्राव निकलनेपर यह दवा निःसन्देह प्रयोग की जाती है। खायी वस्तुके परिपाक होनेके अभावके कारण उत्पन्न सभी रोगोंमें यह एक प्रधान दवा है। युवकोंके स्वप्नदोष और अतिरिक्त काम-चरितार्थ हेतु सभी बीमारियोंमें यह अद्वितीय है। क्षयरोगमें, शीर्णता-रोगमें अथवा बिना किसी कारणके शीर्ण होते रहनेपर इस दवाका ही नाम पहले याद आता है। टूटी अस्थिको जोडनेमें इससे उत्कृष्ट औषध और दूसरी नहीं है।

शारीरिक आकृति—शिशुका शरीर अत्यन्त जीर्ण, अस्थिसार, पेट बढ़ा हुआ (flabby abdomen) अथवा उदर भीतरको धँसा (abdomen sunken) और वह किसी-न-किसी प्रकारके अस्थि रोगसे पीडित रहता है। उसका मस्तक बहुत बडा, करोटीकी अस्थि बहुत पतली एव ऐसा मालूम होता है कि मानो हाथसे छूटनेपर ही टूट जायगी। फॉण्टानेल अर्थात् ब्रह्मरन्ध्र (fontanelles) एवं करोटीकी अस्थिके नीचेके संयोजक स्थान बहुत दिनों तक अयुक्तावस्थामें रहता है या युक्त होकर फिर खुल जाता है। मस्तकमें बहुत पसीना होता है।

किसी-किसीके मेरुदण्डकी वक्रता (curvature of the spine) समय-समयपर दिखाई देती है। मेरुदण्ड इतना कमजोर होता है कि शिशु शरीरका पूरा भार ढोनेमें मानो समर्थ नहीं है। इसलिये देरसे चलना सीखता है। गर्दन भी इतनी कमजोर होती है कि मस्तकके भारको ढोनेमें असमर्थ होती है, फलस्वरूप मस्तक झुक जाता है और इसलिये केवल रोता है।

ऊपरमें जो कुछ कहा गया है, उससे समझमें आता है कि कैल्केरिया फॉसमें शरीरके पोषण-क्रियामें विविध गडबडी दृष्ट होती है एव पुष्टिके अभावके कारण उत्पन्न रोगोंकी यही एकमात्र दवा है। यह

रक्तहीन पीले रंगवाले व्यक्तियोंके लिए विशेष उपयोगी है। यद्यपि यह क्षीणकाय व्यक्तियोंके लिये उपयोगी है फिर भी पुष्टिके अभावके कारण स्थूल होनेपर भी आवश्यक है।

साइलिसियाके साथ प्रभेद—कैल्केरिया फॉसके साथ साइलिसिया अनेक लक्षणोंमें समतुल्य है। दोनों दवाएँ स्क्रोफ्यूलाके रोगियोंके लिये उपयोगी हैं। कैल्केरिया फॉसमें जिस तरहसे शिशुका मस्तक बड़ा, मस्तककी अस्थियोंके किनारे बहुत दिनों तक खुले, मेरुदण्डकी अस्थिकी वक्रता, पेट निकला या धँसा हुआ, शिशुका देरसे चलना, विलम्बसे दाँत निकलना इत्यादि लक्षण रहते हैं—**साइलिसियामें** भी वे लक्षण हैं। कैल्केरियामें जैसे ठण्डेमें, तरीमें, हिलने-डोलनेपर रोग-लक्षणोंकी वृद्धि होती है—**साइलिसियामें** भी ऐसा ही है। कैल्केरियाकी भाँति **साइलिसियाके** शिशुका मिजाज भी चिड़चिड़ा होता है। कैल्केरियाकी तरह **साइलिसियामें** भी मस्तकमें काफी पसीना होता है। लेकिन कैल्केरिया में **साइलिसियाकी** तरह पैरमें पसीना होना नहीं है, और कैल्केरियाकी अपेक्षा **साइलिसियाका** शिशु और भी शीर्ण, मुखमण्डल शुष्क मर्कटकी तरह; **साइलिसियाके** शिशुको देखने ही से प्रतीत होता है कि उसकी वृद्धि रुक गई है। कैल्केरियासे जहाँ उपकार न हो, वहाँ **साइलिसियाका** व्यवहार करना चाहिये; अथवा पैरमें पसीना होनेका लक्षण रहनेपर प्रधान औषध कैल्केरिया फॉसके साथ पर्यायक्रमसे **साइलिसियाका** व्यवहार करना चाहिए।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)

शिशु अत्यन्त चिड़चिड़ा स्वभावका और भीतचित्त।

जिनलोगोंकी स्मरण-शक्ति बहुत घट गई हो, किसी विषयमें दिल नहीं लगता, एक विषयकी चिन्ता करते समय दूसरा विषय ध्यानमें आ जाना, उनलोगोंके लिये यह विशेष उपयोगी है। किसी भी कार्यमें यदि उत्साह न रहे, चुपचाप बैठा रहे, किसीके साथ मिलना न चाहे—

जैसे उत्साह-हीन हो गया हो, तो इस दवाके सेवनसे उनका उत्साह और उद्यम लौट आता है। शोक, दुःख, विरक्ति और प्रेमसे नैराश्य हेतु जो रोग होते हैं, उनमें यह उपयोगी है। रोगके विषयमें सोचनेपर रोग उपस्थित हो जाता है। मानसिक परिश्रम करनेसे डरता है और उससे मस्तकमें कष्ट होता है। एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाना पडता है। मन अत्यन्त थका हुआ मालूम होता है। शिशुओंके अत्यधिक क्रन्दनको रोकनेके लिये इसका ३x शक्ति व्यवहार करना पडता है।

रिकेट् (rachitis)—इसके पहले **शारीरिक आकृतिके वर्णनके प्रसगमे** जिन सब लक्षणोंका वर्णन किया गया है, उन्हें यहाँ याद करना चाहिये। शारीरिक रक्तमें इस लावणिक-पदार्थके अभावके कारण ही ऐसी बीमारी उत्पन्न होती है। इसीलिये **कैल्क-फॉस ही इस रोगकी प्रधान औषध है।** बालकोकी उपास्थिको अस्थिमें परिणत करने एवं कोमल अस्थिको कठिन अस्थिमें बदलनेमें विचित्ररूपसे शक्तिशाली है। अगर मालूम हो कि बालककी वृद्धि रुक गई है, थोडी-सी सर्दी लगनेपर ही वह विविध प्रकारकी बीमारियोसे पीडित हो जाता है—खासकर सर्दी, खाँसी, सर्वाङ्गमें दर्द, ग्रन्थिस्फीति इत्यादिकी यदि थोडी-सी सर्दीसे ही वृद्धि हो, थोडा भी चलने-फिरनेसे यदि सभी कष्टोंकी वृद्धि हो, उत्साह और उद्यम मानो रह ही न गये हों, व समय-समयपर उदरामय इत्यादि लक्षण प्रकट होने लगते हो, तो समझना चाहिये कि **यह रिकेट्के पूर्व लक्षण** हैं एव इनको **रोकनेमे केवल कैल्क-फॉस ही समर्थ** है। कुछ दिनों तक इस दवाका व्यवहार करनेसे फॉण्टानेल युक्त हो जाते हैं। मेरुदण्डकी वक्रता और ग्रीवाकी शक्तिहीनता दूर होकर स्वाभाविक दशाको प्राप्त हो जाते हैं।

इस रोगमें पैरमें पसीना एव दुर्गन्धयुक्त उदरामय दीख पडनेपर प्रधान दवा कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे साइलिसियाका व्यवहार करना चाहिये।

इस रोगमें कैल्क फॉसके साथ **नेट्रम फॉसका** घनिष्ट सम्बन्ध है। यदि परिपाक क्रियाकी गडबडीके साथ **अम्ललक्षण** दीख पडे, तो प्रधान

औषध कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे इस दवाका प्रयोग करना चाहिये। कृमिका लक्षण रहना भी इस दवाका एक और प्रयोग लक्षण है। अम्ल और कृमिका लक्षण न रहनेपर इसकी आवश्यकता नहीं पड़ती।

यदि प्रसूति पहले रिकेट् रोगसे ग्रसित किसी सन्तानका प्रसव कर चुकी हो, तो गर्भावस्थामे यह दवा कुछ दिनों तक सेवन करानेसे भविष्यमे रिकेटिक सन्तानका प्रसव होनेवाला दोप दूर हो जाता है।

शक्ति—पहले ४x, ६x और वादमें १२x।

रोगी-विवरण (१)—खुलनाके वहिरदिया निवासी किसी एक वसुकी स्त्री गर्भावस्थामें अपने पिताके घर यशोहर जिलाके अन्तर्गत दक्षिणडिही ग्राममें आई थी। प्रसवके कुछ दिनोंके वाद नव शिशु-कन्याकी चिकित्साके लिये मेरे चिकित्सालयमें ले आई। वह शिशु-कन्या वहुतही दुवली, हड्डियोंकी पुष्टि विलकुल नही हुई और वहुत ही कमजोर मालूम पडी। ऐलोपैथिक चिकित्सकगणने कॉडलिवर तेल पोत रखनेके लिये कहा था। उन लोगोंकी व्यवस्थाके अनुसार कुछ दिन तक रहनेपर भी कुछ फल न होनेसे मेरे पास लाई गई थी। मैने **कैल्क फॉस** ६x कुछ दिनो तक नियमित रूपसे व्यवहार कराके ही उस शिशुको सम्पूर्ण आरोग्य कर दिया। शिशुकी माँको भी कैल्क फॉस, केलि म्यूर इत्यादि २-१ दवा वीच-वीचमें देनी पडी थी। वादमें वह कन्या वहुत हृष्ट-पुष्ट व वलिष्ठ हो गई थी। आरोग्य होनेके वाद उसकी माँ कई वार मेरे घरपर आकर शिशुको दिखला ले गई थी। कैल्क-फॉससे और भी कई एक रिकेटग्रस्त शिशु आरोग्य हुए हैं।

(२) १६५० ई० के मध्यभागकी घटना है। २४ परगना जिलाके वैरकपुर महकमाके एक ८-६ महीनेकी आयुके रिकेट्ग्रस्त शिशुका हरदम खाना दो—खाना दो—शीर्णता, वृद्धोंकी भाँति झूली त्वचा व कपाल कुञ्चित रहनेके साथ सफेद रगके पायखाना इत्यादि लक्षणोंको देखकर **केलि म्यूर** ६x व **कैल्क फॉस** ६x पर्यायक्रमसे २ मात्रा कर ४ मात्रा व्यवहार करनेको दिया। एक सप्ताहके अन्दर ही पाखाना पीले रगका और स्वाभाविक हो आनेपर द्वितीय सप्ताहमें केवल **कैल्क फॉस** ६x नित्य दो मात्राके

हिसावसे व्यवहार करनेके लिया दिया। शिशुकी काफी शारीरिक व मानसिक उन्नति दीख पडी, किन्तु माताके अपन रिश्तेदारके यहाँ कुछ दिनोंके लिये चली जानेके कारण और आगे उसकी चिकित्सा नही की गई। सफेद रंगका मल जिस किसी रोगीमें रहेगा, केलि म्यूर वहाँ अव्यर्थ फलदायक औषधके रूपमें निःसन्देह व्यवहार किया जा सकेगा, यह हम बहुत वर्षोंकी चिकित्सामें लक्ष्य कर देखे हैं।

(३) २४ परगाना जिला अन्तर्गत बैरकपुरका एक तीन वर्षकी उम्रका शिशु चल नहीं सकता था। २-१ शब्द भर केवल उच्चारण करता था। माताको लिवरका दोष था और गर्भके अन्तिम भागमें कामला होकर आँखका सफेद अंश, चेहरा, हथेली, पेशाब इत्यादि पीले रंगके हो गए थे। शिशुके जन्म-ग्रहण करनेके बाद ही उसे भी माताकी तरह कामलाके लक्षण प्रकट हुए। प्रसवके बाद माताको उदरामय, पेट फूलना, भूख न लगना इत्यादि प्रकट हुए। दोनोंकी ही ऐलोपैथिक मतसे चिकित्सा होने लगी, किन्तु किसीको विशेष कोई फायदा न हुआ। मैंने लक्षणके अनुसार माताको सलफर १००० दिया और शिशुको केवल कहे अनुसार पथ्य देनेके लिए कह दिया। फलस्वरूप दोनों ही स्वस्थ हो गए। कई एक महीनेके बाद सर्दी-खाँसीके लिए शिशुको **ब्रायोनिया** ३० देनेसे आरोग्य हो गया। बच्चेको जन्मके बादसे ही कब्जकी धातु थी। २-३ दिनके अन्तर बहुत सूखा लेंड पाखाना होता था। ब्रायोनिया देनेसे कुछ अच्छा रहता था, बादमें **एल्यूमिना** २०० एक मात्रा देनेपर वह दूर हो गया। स्वास्थ्य भी अच्छा होने लगा। किन्तु शिशु खडे होने या चलनेकी चेष्टा भी नहीं करता था। इस तरहसे तीन वर्ष बीत गए। ऐलोपैथिक डॉक्टर द्वारा विशेष रूपसे परीक्षा कर कोई दोष पकडनेमें नही आया या चिकित्साके योग्य कोई लक्षण भी दीख नहीं पडे। आवश्यकतानुसार बीच-बीचमें पूर्व वर्णित रूपमें २-१ मात्रा होमियोपैथिक औषध केवल पडा था, किन्तु तीन वर्षमें भी चल या बात बोल नहीं सकता था; अतएव गृहस्थके लिए और अपेक्षा करना सम्भव नहीं।

शिशुका मिजाज वहुत चिडचिडा, उदास प्रकृतिका, नींद कम, भूख कम, प्रायः ही खाँसता था, कब्ज और उससे ऊपर लम्बे समयके अन्दर भी चल या वात न वोल सकनेके कारण कैल्क फॉस ६x एक दिनके अन्तर एक दिन एक मात्राके हिसावसे व्यवस्था की गई। दो सप्ताहके वाद खवर मिली कि शिशुका मिजाज अच्छा हुआ है, उदासी दूर हो गई है और भूख व नीद स्वाभाविक हो गई है। उसी दवाकी दो दिन अन्तर एक दिन व्यवस्था की गई। दो सप्ताहके वाद खवर मिली कि, अव अपनी चेष्टासे खडा हो सकता है और दिवाल पकडकर थोडा चल भी सकता है। अन्तिम व्यवस्था १९५३ सालके जनवरीके शेष सप्ताहमें की गई थी।

दवा वदलनेकी और कोई आवश्यकता नही पडी और रोगी भी अच्छा हो गया। रोगका कोई एक नाम देना पडता है इसीलिए रिकेट नाम दिया, किन्तु वास्तवमें क्या रोग रिकेट था ? वायोकेमिक चिकित्सकके मतसे रोगी कैल्सियम फॉस्फेटसे अभावग्रस्त था।

(४) १८ वीं जुलाई, १९६० ई०। वर्दवान जिलाके किसी एक गाँवके एक मुसलमान भद्रपुरुष अपने २½ वर्षकी आयुके पुत्रकी चिकित्साके लिये हमारे दवाखानेमें ले आये। पहलेसे ही ऐलोपैथिक मतानुसार चिकित्सा हो रही थी, किन्तु कोई फायदा न होनेपर तथा विशेषकर शिशु क्रमशः शीर्ण व कमजोर होते रहनेपर हमारे द्वारा कुछ दिनो तक चिकित्सा कराना चाहते हैं।

शिशु अत्यधिक शीर्ण, कमजोर, इतनी आयुमें भी वात वोलने, चलने—यहाँ तक कि खडा होना तक नही सकता है। हाथ-पैर सव वहुत अधिक शीर्ण हो गये हैं। शरीरकी तुलनामें सिर वडा दीख पड रहा है। सदा ही रोता रहता है, कभी हो तो गेंगियानेकी तरह शब्द करता है, गोदमें लेकर घूमनेपर कुछ शान्त रहता है। जन्मके वादसे वार-वार सर्दी-खाँसी, ज्वर, उदरामय इत्यादिसे भोग रहा है। वर्तमानमें कुछ दिनोंके अलावे हमेशा ही काफी कै होनेसे कष्ट पाया है। पायखाना ५-६ वार होता है। किन्तु ऐलोपैथिक दवा सेवन करनेपर केवल २-१ वार ही मल त्यागता है।

मल सफेद-सा व उसके साथ म्यूकस रहता है। रातको पेट फूलता है और प्रातःकाल काफी मात्रामें पायखाना होता है। भूख नहीं है। थोडे समयके लिये ही नींद होती है। वारहो महीने जीभमें घाव रहता है। मलद्वारमें घाव। मिजाज चिड़चिड़ा। आयुकी तुलनामें सिरकी वृद्धि नहीं हुई है। फलस्वरूप बुद्धि-कर्ममें विशेष कमी दीख पड रही है। लगातार २-३ दिनों तक ठण्डे जलसे स्नान करनेपर ही सर्दी-खाँसी हो जाती है। पितामें ऐमेविक डिसेण्ट्री व मातामें अजीर्णका दोष है।

१६-७-६०—**कैल्क फॉस** १२x दो मात्रा और **केलि म्यूर** १२x एक मात्रा, कुल तीन मात्राके हिसावसे ७ दिनोंकी दवा दी गई।

५-८-६०—पाखाना एक वार कर हो रहा है। पीले रंगका वधा मल हो रहा है। स्वास्थ्यकी स्पष्ट उन्नति दीख पडी है। **कैल्क फॉस** १२x दैनिक दो मात्राके हिसावसे १२ दिनोंके लिये।

२५-८-६०—मलद्वारमे घाव नहीं है। अव स्नान करना सहाता है। इस समयसे लेकर दिसम्बर महीने तक क्रमोन्नत शक्तिमें **कैल्क फॉस** प्रयोग किया गया है। फलस्वरूप शिशु स्वाभाविक रूपमें न होनेपर भी वात वोलनेमें समर्थ हुआ है, चल सकता है, जो कुछ खाता है हजम कर सकता है, स्वास्थ्यकी काफी उन्नति हुई है, भूख स्वाभाविक हुई है, सर्दी-खाँसीकी प्रवणता दूर हो गई है। रोना-गाना वन्द हो गया है। अव खेलता-कूदता है।

मस्तकमें जलसंचय होना (hydrocephalus)—शिशुको प्राय. ही पेटके रोगकी शिकायत रहती है। मल हरा, लसदार, उत्तप्त और पानी-सा होता है। शीतल वस्तु पान करने, शीतल खाद्य और दुग्ध पानके पश्चात् वमन (कै) अथवा उदरामयकी वृद्धि होती है। शिशु अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण और मेरुदण्डकी दुर्वलताके हेतु मस्तक उठानेमें समर्थ नहीं हो पाता। अधिक दस्त और कै होनेके कारण दुर्वलतावश वेहोश-सा पडा रहता है। कभी-कभी पैरोंमें अस्थिरता दिखाई देती है।

शरीर शीर्ण होना (marasmus)—शारीरिक आकृति, रिकेट

और मस्तकमें जल-संचय अध्याय देखना चाहिये। शिशु पेट भर अच्छी-अच्छी चीजें भोजन करता है, तो भी क्रमशः शीर्ण होता जाता है।

नेट्रम म्यूर—कैल्क फॉस की भाँति इसमें भी शिशुके उत्कृष्ट भोजन करते रहनेपर भी शीर्ण होनेका लक्षण है; किन्तु नेट्रममें शिशुकी गर्दन ही ज्यादा शीर्ण होती है और अत्यन्त जल पीनेकी इच्छा तथा कब्जियत रहनेका लक्षण रहता है।

टूटकर संयुक्त न होना (un-united fracture)—हड्डी टूट (fracture) जानेपर यदि शीघ्र जुटती न हो, खासकर यदि पुष्टिकी कमीके कारण शीघ्र जुटती नहीं है ऐसा मालूम हो, तो कैल्क फॉस ही एकमात्र दवा है। सभी प्रकारके अस्थि-रोगमें इसका प्रयोग करना पड़ता है। इस अधिकारमें दूसरी कोई दवा भी इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

साइलिसिया—अस्थि-रोगमें साइलिसिया भी विशेष उल्लेखनीय है। यदि अस्थिके क्षतसे दुर्गन्धपूर्ण तरल पीतवर्ण स्राव निकलता हो, तो यह विशेष आवश्यक है। इस दवामें सभी प्रकारके स्राव ही अत्यन्त दुर्गन्धपूर्ण होते हैं। इसके साथ साइलिसियाके धातुगत लक्षणोंको भी याद करना चाहिये।

कैल्क फ्लोर—अस्थिके क्षतसे स्राव निकलकर यदि अस्थिके ऊपर कठिन आवरण सृष्टि करे, तो इसका प्रयोग करना चाहिये।

रोगी विवरण—१९५२ ई० की घटना है। दक्षिण कलकत्ताका एक बालक रेलिंगके ऊपर चढ़कर खेलकी खबर रेडियोसे सुन रहा था। रेलिंगके लोहेकी छड़ (rod) का अग्रभाग नुकीला था। अंगुलीमें अँगूठी पहने हुए था। रेलिंगसे नीचे उतरते समय अंगूठी रेलिंगकी नोकमें फँस गई और अंगुलीके साथ अंगूठी रेलिंगमें फँसी रह गई। काफी खून बहता रहा। निकटवर्ती २-३ ऐलोपैथिक दवाखानेमें बालकको ले जानेपर वे लोग उसे अस्पताल ले जानेके लायक जखम है कहकर लौटा दिये। मेरे दवाखानेमें आने पर उपस्थित एक ऐलोपैथिक चिकित्सकको

प्रथमोपचार कर देनेके लिये कहा। किन्तु वे भी सम्भवतः अनभ्यस्त होनेके कारण उसमें हाथ नहीं लगाये। मैंने ही प्रथमोपचार पूराकर बालीगंजके सैनिक अस्पतालमें भेज दिया। बहुत दिनों तक पट्टी (dress) आदि बाँधनेपर भी घाव सूखता नहीं था। हड्डीमें भी चोट होनेका शल्य-चिकित्सकगण सन्देह कर रहे थे। ऐसी दशामें मामूली तौरपर अस्त्रोपचार करनी पड़ेगी और इसलिये उसे दूसरे दिन आनेके लिये कहा गया। इसी समय मैंने दो दिनोंके लिये **कैल्क फॉस** ६x दिनभरमें तीन मात्राके हिसाबसे ६ मात्रा दे दी। इससे आश्चर्यजनक फल हुआ और घाव सूख गया। तीसरे दिन शल्य-चिकित्सक साहब घाववाले स्थानको देखकर आश्चर्यमें पड़ गये, किन्तु उन्हें ऐसा होनेका कारण नहीं कहा गया। मैं बहुतसे क्षेत्रोंमें हड्डीपर कैल्क फॉसकी तेजीसे आरोग्यकारक क्रिया देखनेका सौभाग्य प्राप्त किया हूँ। यह कहना आवश्यक है कि अस्पतालसे आनेके दिन आधीरातके बाद बालककी कटी अंगुलीके ऊपरकी ओर तीर बिंधनेकी तरह दर्द हो रहा था। वह धनुष्टंकार होनेके पहलेका लक्षण था। जब कि ऐण्टि-टिटेनस इञ्जेक्शन और अन्यान्य औषधियोंके प्रयोग करनेमें कोई त्रुटि नहीं की गई थी। मैंने इस दशामें **हाइपेरिकम** ३० शक्ति दी और इसीसे वह लक्षण शीघ्रतासे दूर हो गया।

शिरःपीड़ा (headache)—जो सब बालिकाएँ विद्यालयमें पढ़ती हैं, उनके सिर-दर्दकी यह एक सुन्दर दवा है। वे बालिकाएँ प्रायः ही स्नायविक और चंचल स्वभावकी होती हैं। युवती स्त्रियोंके सिर-दर्दके साथ बेचैनी। वृद्धाओंके सिर-दर्दमें यह विशेष उपकारिताके साथ व्यवहृत होता है। अनेक समय बालिकाएँ मृदु सिर-दर्दके साथ घर लौटती हैं और ठण्डे पानीसे सिरको धो डालना चाहती हैं।

सिर-दर्दके समय मुख और मस्तक गर्म रहते हैं। मस्तकका दर्द ललाटसे कान व जबड़े तक विस्तृत होता है। कानके पीछेकी हड्डियों तकमें भी दर्द मालूम होता है। **सिर दर्दमें रोगी अपना मस्तक बरफ-सा ठण्डा अनुभव करता है** और अन्य किसीके छूनेपर भी **मस्तक अत्यन्त ही ठण्डा**

मालूम होता है, मस्तककी हड्डियोंके सयोगस्थलमे दर्दकी अधिकता; मस्तक कसकर पकडनेकी भाँति कडा मालूम होता है। सिर-दर्दके साथ मस्तक खुजलाता है एव खुजलाहट सन्ध्या समय बढ जाती है।

सिर-दर्द—चलने-फिरनेपर, खुली हवामें, मस्तक अवनत करनेसे एवं ऋतु परिवर्तनके समय बढ जाता है। शान्तभावसे रहने व धूम्रपान करनेसे घटता है। सिर-दर्द चलनेपर, परिश्रम करनेसे, मस्तक दबानेपर एवं रातको बढता है।

सब प्रकारकी मस्तिष्क-विकृति, प्रलाप इत्यादि (insanity, delirium etc)—अत्यन्त चंचल चित्त, स्वभाव चचल, बैठे हुएसे उठकर चलनेपर शरीर काँपता है। दोनों पैर ठीक नहीं गिरते। शारीरिक और मानसिक चचलता एक-सी रहती है। सर्वदा ही चचल चित्त, भ्रान्त, चित्त किसी काममें ही मन नहीं लगता। केवल घर जाना चाहता है, और घर जानेपर भी घर रहना नहीं चाहता—दूसरी जगह जानेकी इच्छा करता है। मनोवासना पूरी न होनेका कुफल। अकेला ही रहना चाहता है। उसे जो करना उचित है, उसे वह करना नहीं चाहता। मस्तिष्क-विकृतिकी सर्वप्रधान औषध केलि फॉस है। केलि फॉस अध्याय देखें।

मस्तिष्क-शून्यता (brain fag)—अतिशय मानसिक परिश्रम-जनित स्नायविक दुर्बलता और क्षीणता। दुर्बलता इतनी अधिक कि हाथ-पैर ठण्डे हो जाते हैं। मस्तिष्क गर्म रहता है इसलिये रातमे बहुत थोडी ही नींद आती है। अच्छी तरह भूख नहीं लगती। शरीरमें जडता, जैसे भार-भार मालूम होना और शरीरके स्पर्श व अनुभव-शक्तिमें भी ह्रास हो जाना। रातमें बहुत पसीना होना। स्नायविक दुर्बलताकी अधिकता रहनेपर **केलि फॉस** पर्याय अथवा अनुपर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। क्योंकि स्नायुमण्डलको नष्ट होनेसे रोकने और पुनर्गठन करनेमें **केलि फॉस** अद्वितीय है। मानसिक परिश्रमसे रोगकी वृद्धि और रोगकी सृष्टि भी मानसिक परिश्रम-जनित हो : तो चिकित्साकालमें

शरीर और मन दोनोंको पूरा विश्राम देना चाहिए। केवल औषध ही से पूर्ण सफलता प्राप्त करना सम्भव नही।

शक्ति—६x।

मोतियाबिन्द (cataract)—बहुत स्थानोंमें इसका व्यवहार करके यह प्रमाणित हुआ है कि **यह दवा व्यवहार करनेपर मोतियाबिन्द और बढ़ नहीं सकता**। रोगकी प्रथमावस्थामें इस औषधका प्रयोग करनेपर प्रथमावस्था ही में रोग आराम हो जाता है। दाहिनी तरफ तक्लीफका बढ़ना इस दवाका एक विशेष लक्षण है। मस्तककी दाहिनी ओर सिर-दर्द, दाहिनी आँखके चारो ओर दर्द, दाहिनी आँखके अन्दर शूलवत् या अविराम मृदु दर्द और दाहिनी आँखमें थकावट मालूम होना इस दवामें निर्दिष्ट है। दृष्टि शक्तिकी क्षीणता और आमवातका दर्द इसमें दृष्ट होता है। अजीर्ण और बुढ़ापेकी बीमारियोंमें उपयोगी है। **कृत्रिम आलोक** (गैस, प्रदीप इत्यादि) सहा नही जाता। मोतियाबिन्द बहुत पुराना होनेपर २ या ३ माह तक इस दवाके साथ **केलि म्यूर** व **कैल्केरिया फ्लोर** सेवन करानेसे जरूर सुफल मिलता है।

चक्षुपीड़ा (diseases of the eye)—मोतियाबिन्दके सिवाय अन्य प्रकारके चक्षु-रोगमें इस दवाकी विशेष कोई आवश्यकता नही होती, लेकिन **स्क्राफ्यूलाग्रस्त** व्यक्तियोंके चक्षु-प्रदाहमें इसका व्यवहार होता है। चक्षु-प्रदाहके बाद चक्षुकी अस्वच्छता और चक्षुसे पानी गिरता है। **कार्नियाका घाव** और उसका प्रदाह। कार्नियासे दूध-सा सफेद स्राव निकलता है।

बालकोंके दाँत निकलनेके समय आँखोके शुष्क-प्रदाहमें, अर्थात् जिस प्रदाहमें आँखें केवल लाल होती हैं—किसी प्रकारका स्राव नही होता, उसमें भी यह व्यवहृत होता है। कृत्रिम-आलोक सहा नही जाता। अस्वाभाविक आलोकमें पाठ करनेके कारण आँखोमें दर्द होता है। आँखोंके सामने उज्ज्वल और चलते हुए वृत्त दृष्ट होते हैं। आँखकी ऐसी हालतोंको सोचनेपर आँखके दर्दका बढना।

कानकी बीमारियाँ (diseases of the ear)—सभी प्रकारकी कानकी बीमारियोंकी चिकित्सा प्रायः एक ही प्रकारकी है। अतः इनके भिन्न-भिन्न नाम देकर औषधके लक्षणोंको नहीं दिया गया। जिस किसी प्रकारकी भी कानकी बीमारीमें नीचे लिखे हुए लक्षण रहेंगे, उनमें ही यह उपकारी होगा।

कानके चारों ओरकी हड्डियोंमें दर्द, कानके दर्दके साथ नासस्राव। गण्डमाला-धातुवाले व्यक्तियोंकी ग्रन्थि वृद्धिके साथ कर्ण-वेदना, कर्ण-स्फीति होती है व जलन और खुजलाहट होती है। अण्डलाल-सा **लसदार घाव कर देनेवाली पीबका स्राव होना इसमें निश्चित है।** कानके अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकारके शब्द होते हैं, कभी-कभी कानके भीतर गीतकी ध्वनिकी तरह आवाज सुनाई देती है। कानके भीतर और बाहर लाल हो जाते हैं और उनमें खुजलाहट होती है। कानका बाहरी हिस्सा अत्यन्त स्फीत हो जाता है, मालूम होता है कि वह फट जायगा। कानमें शीतलता अनुभव करना।

किसी प्रकारके क्षयरोगके साथ यदि शरीर अत्यन्त शीर्ण हो जाय और इसके साथ कानसे पतली और दुर्गन्धयुक्त पीब निकलती हो (साइलि), तो यह एक अत्यन्त अच्छी दवा है।

मुँहासा (acne)—युवक और युवतियोंका मुँहासा इस औषधसे आरोग्य होता है। इस दवाका आभ्यन्तरिक और वाह्य लोशनके रूपमें भी व्यवहार करना पड़ता है। २x शक्तिकी एक ड्राम दवा एक आउन्स जलके साथ मिश्रित करनेसे ही लोशन तैयार हो जाता है। पूरा मुँह ही मुँहासेसे भर जाता है। मुँहासा लाल वर्णका होता है।

अधकपारी (hemicrania)—निर्वाचित औषधसे फल न मिलनेपर इसका व्यवहार करना पड़ता है। दुर्बल और रक्तहीन व्यक्तियोंकी पीड़ा। अमावस्या और पूर्णिमाके दिन बढ़ती है।

नैजल पॉलिपाइ या नासिकार्श (polypus of the nose)—शारीरिक रक्तमें कैल्क फॉसकी कमी होनेसे यह बीमारी होती है एवं

यही इस पीड़ाकी प्रधान दवा है। इस दवाके व्यवहारसे पॉलिपस (नाकड़ा) सूखकर शीघ्र ही आरोग्य हो जाता है। वृन्तयुक्त पॉलिपसमें भी यह दवा विशेष कार्यकारी है। रोगी नाकसे गन्ध अनुभव नहीं कर सकता। इस दवाका सेवन और सुंघनीके रूपमें व्यवहार करना चाहिये।

शक्ति—३०x।

साधारण पॉलिपसमें—केलि-स, नेट्रम-म्यूर (प्रधान दवा) व साइलि व्यवहृत होते हैं।

सर्दी व छींकके साथ होनेपर—नेट्रम-म्यू।
पुरानी सर्दीके कारणवश होनेपर—कैल्क-फॉ।
जब सूंघनेकी शक्तिमें गड़बड़ी होती है—कैल्क-फॉ।
गन्ध और स्वाद लोप पानेपर—नेट्रम-म्यू।
सरलान्त्र (रेक्टम) के पॉलिपसमें—कैल्क-फॉ।
जरायुका होनेपर—कैल्क-फॉ, साइलि।
नरम—केलि-स।
जरायुके अन्दर होनेपर—नेट्रम-म्यू।
वाहरी कर्ण-द्वारमें होनेपर—कैल्क-फॉ, केलि-म्यू, साइलि।
कानके छिद्र बन्द कर देनेपर—केलि-स।

सर्दी (coryza)—पुरानी सर्दीकी यही प्रधान औषध है। किन्तु सब प्रकारकी सर्दीमें ही बल लानेके लिये २-१ मात्रा करके व्यवहार करना पड़ता है। इसके सब प्रकारके अन्य स्रावोंकी तरह **नासिकास्राव भी गाढ़ा, लसदार और अण्डलालाकी भाँति होता है।** पीछेके नासिका-विवरसे उक्त प्रकारका स्राव निकलता है। इसलिये बार-बार नाक झाड़ना और खखारना पड़ता है। नई सर्दी होनेपर नासिकामें दर्द और छींक होती है। ठण्डेमें वृद्धि और गर्मीमें घटती है। गण्डमालाग्रस्त बालकोंको सर्दी होनेपर बहुधा नाक स्फीत हो जाती है, नासिका-छिद्रके किनारे प्रदाहित और घावयुक्त हो जाते हैं।

जिन लोगोंको सामान्य कारणोंसे या बिना कारण ही शीघ्र-शीघ्र सर्दी

लगती है, **फेरम फास**के साथ थोड़े दिनों तक इस दवाके सेवन करानेसे उनकी धातु परिवर्तित होकर सहज ही में सर्दी लगनेवाला दोष दूर हो जाता है।

नासिकासे रक्तस्राव (bleeding of the nose)—दुर्बल और रक्तहीन व्यक्तियोंकी नाकसे रक्तस्राव, विशेषतः अपराह्नमें।

दन्तवेदना (toothache)—दाँतोंमें तीव्र वेदना, नोचने या फाड़ देनेकी-सी वेदना और यह वेदना अगर रातमें (नाइली) एवं ठण्डमें बढ़ती हो, तो यह विशेष उपयोगी है। दाँतका दर्द असहनीय होनेपर प्रधान औषध **मेग फास**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है। डॉ० शुसलरका कहना है कि मसूढ़ा रक्तहीन होनेपर यही एकमात्र प्रधान दवा है।

दन्तोद्गमकालीन पीड़ा (dentition and its effects)—दाँतोंकी अस्थिके निर्माण करनेमें कैल्क फॉसकी शक्ति असीम है। इसी-लिए दाँत निकलनेके समयके सभी उपसर्गोंमें यह विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है। दाँत निकलनेमें विलम्ब होनेपर अथवा दाँत निकलनेके बहुत पहले ही से इस दवाका बीच-बीचमें सेवन करानेसे उद्देश्य सफल होता है। दन्तोद्गमकालीन उदरामयकी भी यह प्रधान दवा है। जो सब बच्चे दुबले-पतले हों और जिनकी मांसपेशियाँ शिथिल और मस्तककी अस्थियाँ शीघ्र संयुक्त न होती हों, मस्तकमें पसीना होता हो, उनके लिए यह विशेष उपयोगी है।

दाँत निकलनेके समयके विविध उपसर्गोंमें इसकी ६x शक्ति विशेष कार्यकारी है, किन्तु के होते रहनेपर १२x का व्यवहार करना चाहिये। दाँत निकलने देनेके लिये ३x दूधके साथ व्यवहार्य। दन्तोद्गमकालीन चिहुँकमें १२x फलप्रद है।

कैल्क फ्लोर—दाँतोंके आवरक-पदार्थ (enamel) का अभाव होने अथवा दाँतके निकलनेके बाद ही क्षय होते रहनेपर या दाँत निक-लनेमें विलम्ब होनेसे कैल्क फॉसके साथ यह पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए।

रोगीका विवरण—अंग्रेजी १९३६ सालमें एक सात या आठ महीनेकी लड़कीकी चिकित्साका भार मैंने लिया। लड़कीको पेटकी बीमारी थी, कभी ज्वर, कभी आमाशय या कभी-कभी सभी रोग एक साथ होते—इस प्रकार १५।२० दिनोंके अन्तरसे होने लगा। दवा प्रयोग करनेपर खूब कम हो जाया करें, कई दिनों तक तो अच्छी भी रहे, किन्तु १०-१५ दिन या एक महीनेके बाद फिरसे पीड़ित हो जाया करती। ११ महीनेमें भी दाँत न निकला देख एवं दाँत निकलना ही रोगका उत्तेजक कारण निर्णय कर कैल्क फॉस ३x दैनिक एक मात्रा करके एक महीना तकके लिये मैंने व्यवस्था दी। एक महीनेके अन्दर ही दाँत निकल गया एवं आज दो वर्ष तक अच्छी है। लेकिन बीचमें शायद एक बार पेटकी बीमारी हुई थी ऐसा याद होता है।

उदरामय (diarrhœa)—शिशुओंके दन्तोद्गमकालीन उदरामयकी यह अति उत्तम दवा है। उदर-वेदनाके साथ अजीर्णमय लसदार हरे रङ्गका मल निकलता है (नेट्र फॉस)। **मल उत्तप्त दुर्गन्धयुक्त और शब्दके साथ निकलता है** एवं मल चारों ओर छोटी-छोटी कणाओंके रूपमें विभक्त होकर बिखर (sputtering) जाता है। कभी-कभी दुर्गन्धयुक्त जलकी भाँति तरल मल (केलि फॉस) निकलता है। मलके साथ कभी या तो दुर्गन्धयुक्त या कभी दुर्गन्धहीन पीब-सा सफेद पदार्थ दीख पड़ता है। विविध प्रकारके गुरुपाक द्रव्य खानेसे पैदा हुए उदरामयमें यह विशेष फलप्रद है। ग्रीष्मकालीन उदरामयमें अथवा कच्चे या सरस-फल खानेसे उत्पन्न अतिसार-रोगमें यह उत्कृष्ट है।

बार-बार दस्त होनेका वेग मालूम होता है—लेकिन पायखानेमें बैठनेपर कुछ होता नहीं अथवा थोड़ा-सा मल निकलता है (केलि फॉस, मैग फॉस)।

नाभिके चारों ओर घाव मालूम होना, वेदना, जलन, उदर स्फीत एवं दुर्गन्ध-वायु निःसरण होनेसे उस वेदनाका उपशम होता है। सिर-दर्दके साथ उदरशूलके दर्दमें मलद्वारसे वायु निकलनेपर आराम मालूम

नहीं होता अथवा कष्ट मालूम होता है। रक्तहीन और दुर्बल व्यक्तिके हृदयकी दुर्बलता और निस्पन्दता इत्यादि लक्षण भी इस औषधमें दीख पड़ते हैं।

शक्ति—१२x (पुराना होनेसे), नई अवस्थामें ६x।

अजीर्ण (dyspepsia)—अजीर्ण रोगमें कैल्क फॉसकी क्रिया वास्तवमें असाधारण है। जिस किसी कारणसे ही हो या किसी भी प्रकारका अजीर्ण-रोग क्यों न हो, कैल्क फॉस देना ही होगा। अन्य किसी भी दवाका विशिष्ट लक्षण रहनेपर भी प्रत्यह अथवा २-१ दिनके अन्तरसे इसकी दो-एक मात्राका व्यवहार करना ही पड़ता है, अम्ल क्षार रहनेपर भी (नेट्रम फॉस) यदि शीतल जल पीने अथवा थोड़ा भोजन करनेके बाद ही उदर-वेदना हो, तो यह देना पड़ता है। खाई हुई वस्तुका परिपाक होनेमें अभाव होनेसे अगर शरीर क्रमशः शीर्ण होता हो, तो इस दवाके व्यवहारसे खायी हुई वस्तुका परिपाक होकर शरीरमें बल प्राप्त होता है। हजम-शक्तिको बढ़ानेमे यह अद्वितीय एवं अव्यर्थ है।

पाकस्थलीमें अधिक परिमाणमें गैस (gas) पैदा होनेपर यह अति उत्तम दवा है। भोजनके बाद ही पाकस्थलीमें दर्द मालूम होता है। पाकस्थलीका दर्द भोजनसे घट जाता है और उपवास करनेसे वृद्धि होती है। उदरमें अत्यन्त वायु उत्पन्न होती है एवं उद्गार कम हो जाता है। भोजनके बाद वेदनाकी वृद्धि अथवा भोजन नहीं करनेसे वेदनाकी वृद्धि—ये दो विभिन्न और विपरीत लक्षण भी इस दवामें दिखाई देते हैं। फिर भी यदि भोजनकी इच्छा करनेपर ही जब पेटमे दर्द होता है, तब भी यह उत्कृष्ट दवा है।

इसमें छातीमें जलन, अम्लोद्गार, मुखमें पानी आना, सिर-दर्द इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

अजीर्ण-रोगमें आइसक्रीम, शीतल पानीय, हरा या सरस-फल एवं सब प्रकारका शीतल खाद्य सहाता नहीं। खानेपर भी पेटमें दर्द, वमन और उदरामय होता है। इसके अलावा अजीर्ण-रोगमें जिस चीजको

खानेसे रोग-वृद्धि होती है, उसे ही खानेकी अतीव स्पृहा रहती है, बच्चे बेकन खाना चाहते हैं, लेकिन खानेमें ही वमन (कै) करते हैं। लवणाक्त मांसादि और तम्बाकू खानेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है। धूम्रपान करनेसे सिर-दर्द घट जाता है। कॉफी पीना नहीं सहाता। अन्यान्य अनेक प्रकारके अखाद्य और कुखाद्य खाना पड़ता है।

शिशु हमेशा खाना ही माँगा करते हैं—वयस्क लोगोंको भी अस्वाभाविक भूख दिखाई देती है, विशेषतः अपराह्न ४ बजे। इसके अलावा भूख न रहनेपर भी यह व्यवहृत होता है।

शिशु-वमन (infantile vomiting)—शिशुओंके सदा स्तन्यपान करनेकी इच्छाके साथ **छेनाकी तरह जमा हुआ दूध और अम्ल** या दुर्गन्धयुक्त वमन (नेट्रम फॉस) होनेसे यह औषधि अति उत्कृष्ट है। यह दवा खायी वस्तुका परिपाक करनेमें विशेष सहायता देती है। शीतल खाद्य और पानीय सेवनके बाद वमनकी वृद्धि। दूध पीनेके पश्चात् प्रायः शिशुओंके पेटमें दर्द होता है।

नेट्रम फॉस—कैल्क फॉसकी तरह इस दवामें भी दूध पीनेके साथ ही पेटमें दर्द, **छेना-सा गन्धयुक्त जमा हुआ दुग्धवमन** होता है, लेकिन शिशुके दाँत निकलनेके समयके वमनमें प्रधान औषध कैल्क फॉसके साथ इस दवाकी २-१ मात्रा करके देना पड़ता है। और कृमिजनित लक्षणोंकी विद्यमानता और अम्लकी प्रधानता रहनेपर नेट्रम फॉस ही प्रधान औषध है।

साइलिसिया—नेट्रम फॉस और कैल्क फॉसकी तरह इस दवामें भी शिशु दुग्धपान करते ही वमन कर देता है और पेटके दर्दसे कष्ट पाता है। किन्तु कैल्क फॉस और नेट्रम फॉसकी तरह **साइलिसियामें अम्लवमन नहीं है**। दैवात् कभी अम्लवमन दिखाई देता है। साइलिसियाका शिशु भी अत्यन्त खानेकी इच्छा करता है, लेकिन मातृस्तन्य पान करना नहीं चाहता—पान करने ही से कै कर देता है। गर्म खाना भी नहीं चाहता, केवल ठण्डे भोजनमें ही प्रेम रखता है। सर्वदा प्रत्येक दवाकी शारीरिक आकृतिपर ध्यान रखना चाहिये।

आक्षेप, चिहुँक, शूल इत्यादि (spasms, convulsions, colic etc.)—शिशुओंके दाँत निकलनेके समयकी चिहुँकमें **कैल्क फॉस** जो एक प्रधान औषध है—यह पहले ही लिख चुका हूँ। जिस किसी प्रकारका शूल, चिहुँक, आक्षेप इत्यादि क्यों न हो, **मेग फॉस** ही प्रधान औषध है। किन्तु कैल्क फॉस मेग फॉसकी क्रियाको बढाता है एव कुछ अशों तक पूरा करता है, इसलिये, मेग फॉमसे उपकार न होनेपर इसके प्रयोगसे सुफल मिलता है। अनेक समय प्रधान औषध **मेग फॉसके** साथ २-१ मात्रा करके कैल्क फॉसका व्यवहार करना पडता है, क्योंकि उससे शीघ्रतासे फल मिलता है।

गलगण्ड (goitre or bronchocele)—शारीरिक रक्तमें कैल्क फॉसका अभाव होनेसे ही यह बीमारी पैदा होती है। **अतः यह औषध इस बीमारीकी प्रधान औषध है**, विशेषतः दुर्बल धातुवाले व्यक्तियोके लिये। एक या दोनो ओरके थाइरायड ग्लैण्डकी विवृद्धि। दूसरी किसी दवाका लक्षण रहनेपर उसके साथ पर्यायक्रमसे।

एनिमिया और क्लोरोसिस (anæmia, pernicious anæmia, chlorosis)—**इन सब बीमारियोंकी यही सर्वप्रधान औषध है।** दूसरी जो कोई औषध निर्वाचित क्यो न हो, इस औषधकी २-१ मात्रा करके प्रयोग करना ही होगा। शुसलरका कहना है कि रक्तहीनता, अतिशय मारात्मक रक्तहीनता और क्लोरोसिस रोग इस दवा से स्थायी रूपसे आरोग्य होते हैं। वे कहते हैं कि कैल्क फॉसकी कमीके कारण रक्तमें लोहित कणिकायें पैदा नहीं होती। डॉ० ह्यूजका कहना है कि रक्तमें स्वाभाविक विधानकी कमीके कारण रक्ताल्पता होनेपर कैल्क फॉसके सेवनसे परिपाक-कार्य सम्पन्न होकर रक्तकी वृद्धि होती है। **खाद्यके परिपाक होनेमे दोषके हेतु रक्ताल्पता होनेपर उसमें यह अद्वितीय और अमोघ है।** बहुत दिनों तक कोई रोग भोगनेके पश्चात स्त्रियोंका बार-बार गर्भधारण, सन्तान-प्रसव करना और बच्चेको स्तन्यपान करानेके कारण रक्तहीनता होनेपर इसका व्यवहार अति उत्तम है।

अजीर्ण-उदरामयके साथ रक्तहीनता होनेपर इसका व्यवहार उत्कृष्ट है। मुखमण्डल रक्तहीन, फीकापन लिये, रक्तहीनताके कारण सोने और बैठे हुएसे उठ खड़ा होनेपर सिरमें चक्कर आना और आँखोंसे अन्धकार देखना, छाती धड़कना, हाथ और पैरोंका काँपना, मालूम होता है मानो हाथ-पैर टूट जायेंगे, पैरके जोड़ोंमें अत्यन्त दुर्बलता मालूम होना प्रभृति लक्षण रहनेपर यह दवा विशेष उपयोगी है।

मासिकधर्म प्रकट होनेके समय बालिकाएँ अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण भीत एवं अत्यन्त चञ्चल स्वभावकी होनेसे—अर्थात् एक स्थानमें यदि शान्त भावसे रहना पसन्द न करें, हमेशा स्थान परिवर्तन करना चाहें तो यह औषध उपकारी है। इस हालतके सिर-दर्दमें यह निर्दिष्ट दवा है।

शक्ति—३x।

स्वल्परजः (amenorrhœa)—पौष्टिक भोजनके अभावसे, खायी वस्तुका उचित रूपमें परिपाक न होनेके कारण धीरे-धीरे रक्तहीनतावश रजःरोध होनेपर इस दवाका निश्चित प्रयोग करना चाहिये। क्रमशः रोगिणीका मुखमण्डल पाण्डुवर्ण, सामान्य परिश्रमसे थकावट मालूम होना, सब प्रकारके कार्योंमें ही अनिच्छा और सर्वदा उत्साहहीन रहनेपर यह दवा उत्तम काम करती है। इस औषधके साथ केलि फॉसका प्रभेद निर्णय करना आवश्यक है। अधिकांश समय दोनों औषध पर्याय या अनुपर्यायक्रमसे प्रयोग करना पड़ता है।

शक्ति—६x।

केलि फॉस—स्नायवीय धातुका आधिक्य रहनेपर यह औषध अव्यर्थ है। रोगिणी सहज ही में रोती है, अत्यन्त चिड़चिड़ी, अत्यन्त अस्थिरचित्त, सर्वदा सिरमें दर्द, शारीरिक और मानसिक अवसाद और रजःरोध होकर वक्ष-पीड़ा होनेपर यह औषध व्यवहार करना चाहिये। केलि फॉसकी रोगिणी अत्यन्त दुर्बल होती है। दोनों ही औषधोंमें बहुत देरसे थोड़े परिमाणमें मासिकधर्म होनेका लक्षण है। दुर्बलताकी अधिकता रहनेपर केलि फॉसके साथ कैल्क फॉस पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है।

दर्द तेज रहनेपर बार-बार गर्म पानीसे **मैग फॉस** सेवन कराकर दर्दको कम करना चाहिये।

कष्टरजः (dysmenorrhœa)—स्वल्परजः अध्यायमें समस्त लक्षणोका वर्णन किया गया है, पुनरुल्लेख करनेकी आवश्यकता नहीं। कष्टरजःमें कैल्क फॉसकी अपेक्षा **केलि फॉस** ही अधिक व्यवहृत होता है, खासकर स्नायविक लक्षणोंका प्राधान्य रहनेपर **केलि फॉसके** लक्षण भी स्वल्परजः अध्यायमें वर्णित हुए हैं।

जरायुकी स्थानच्युति (displacement of the uterus)—जरायुके चारो ओरकी बन्धनियोकी शिथिलताके हेतु जरायु निकल आना या स्थानच्युत हो जाना और उस हेतु नाना प्रकारकी तकलीफोंके लिये (कैल्क फ्लोर, केलि फॉस) यह उत्कृष्ट औषध है। यद्यपि जरायुकी संकुचन-शक्तिको बढानेमें **कैल्क फ्लोर** अमोघ है, तो भी शारीरिक और स्थानिक बलको बढाकर शीघ्र आरोग्य-क्रियाको सम्पादित करनेके लिए २।१ मात्रा करके इस दवाका प्रयोग करना पडता है। अजीर्णादि दोष रहनेपर तो कहना ही नही। पेशाब और मल त्यागनेके समय जरायु स्थानमें दुर्बलता अनुभव करती है और ऐसा मालूम पडता है मानो तलपेट नीचे उतरता जा रहा है। जरायुमें तीव्र सुई गडनेकी भाँति, धपधप और लगातार मीठा दर्द होनेपर भी यह उपयोगी है। मलत्याग और पेशाब करनेके पश्चात पीडाकी वृद्धि होती है।

ऋतुस्राव (menses)—अतिशय **विलम्बसे होनेवाले रजःस्रावमें** यह व्यवहृत होता है। ऋतुका रक्त पर्यायक्रमसे काला और लाल रंगका होता है। ऋतुके पहले या उस समयमें प्रसव-वेदना-सी वेदना होती है। मल-मूत्र त्यागनेके बाद जरायु-प्रदेश दुर्बल मालूम होता है। रक्त-हीना युवतियोंका देरसे रज.स्राव। युवती स्त्रियों और बालिकाओंको **ऋतु प्रायः अत्यन्त शीघ्र-शीघ्र** यहाँ तक कि दो सप्ताहके अन्तरसे ही होता है। ऋतुका रक्त घोर लाल रंगका होता है। प्रायः ही वेदना नही रहती। ऋतुकालमें कमरमें दर्द।

इस ओषधमें और एक प्रकारका ऋतुकष्ट दिखाई देता है। लड़कियोंकी अवस्था जब बढ़कर यौवनमें पहुँच जाती है, उस समय उनके लिये यह दवा बहुत अच्छी है। प्रथम ऋतुकालमें ठण्डा लगकर साधारणतः अतिशय दुःखदायी ऋतुकष्ट होता है। इस समय यदि यह ओषध व्यवहृत न हो, तो जीवनभर ही ऋतुकालमें उनको इस प्रकार कम या अधिक कष्ट भोगना पड़ता है। स्राव आरम्भ होनेके पहले ही वह समझ जाती है, क्योंकि उसके दो या तीन घण्टे पहले ही जरायु व कुक्षिमें एक प्रकारकी भीषण खिंचती हुई वेदना होती है और जब तक पूरा ऋतुस्राव नहीं हो जाता तब तक यह तकलीफ दूर नहीं होती।

गर्भ और प्रसव-वेदना (pregnancy and labour)—गर्भावस्थामें और प्रसवके बाद अधिक दुर्बलता मालूम होना इस दवाके प्रयोगका लक्षण है। सन्तानको अधिक दिनों तक स्तनपान करानेसे प्रसूतिका शरीर अत्यन्त दुर्बल हो पड़ता है। अतः बल प्रदान करनेके लिये (केलि-फॉस) यह अत्यावश्यक दवा है। स्तनका दूध घट जानेपर भी यह व्यवहार्य है।

स्तन-दुग्धके विविध वैलक्षण्यके सम्बन्धमें शिशु-वमन अध्याय द्रष्टव्य। दुग्ध जल-सा पतला और लवणाक्त (नेट्र म्यूर) एवं इतना खराब कि बच्चा दूध पीना ही नहीं चाहता, बच्चेके दूध पीनेपर भी सहा नहीं जाता—**छेनाकी तरह जमा हुआ अम्लगन्ध युक्त दूध वमन करता है।** स्तन्यपान करानेवाली माताको ऋतु होनेपर यह दवा व्यवहृत होती है।

प्रसवके पश्चात् दो-एक मात्रा करके इस दवाका व्यवहार करनेसे प्रसूतिका शरीर दुर्बल नहीं होता एवं **गर्भावस्थामें प्रतिदिन सुबह और शामको एक-एक मात्रा कैल्क फॉस सेवन करानेसे सन्तानकी अस्थियाँ पुष्ट होकर सर्वाङ्ग सुन्दर सन्तानका प्रसव होता है।** दाँत निकलनेके समय भी कोई कष्ट नहीं होता। सुप्रसवके लिये भी **केलि फॉस** आवश्यक है। पहले कभी गर्भस्राव हुआ रहने पर **कैल्क फ्लोर**के

साथ आवश्यकतानुसार केल्क फॉस और केलि फॉसका व्यवहार करना चाहिये।

शक्ति—४x (स्तन्यदुग्ध घट जानेपर)।

श्वेत प्रदर (leucorrhœa)—अण्डलालावत (अण्डेके श्वेतांशकी तरह) गाढ़ा स्वच्छ लसदार स्राव होनेपर यह उपकारी है।

केलि म्यूरका स्राव—गाढ़ा श्वेतवर्ण होता है, किन्तु केल्क फॉसका स्राव जिस तरह घाव पैदा करनेवाला और स्राव निकलनेके समय जिस प्रकार योनिपथमें जलन होती है, केलि म्यूरमें उस प्रकार नहीं होता। केलि म्यूरमें अतीक्ष्ण अनुत्तेजक एवं जीभ श्वेत-लेपसे आवृत होती है। इसके अलावा छातीमें आगकी तरह जलन-सा अनुभव होना, उत्तापोच्छ्वास एवं सहज ही में पसीना और दुर्बलता केल्क फॉसमें निर्दिष्ट है।

स्त्रियोंका कामोन्माद (nymphomania)—स्त्रियोंके जननेन्द्रिय के अन्दर धपधप करना और सुरसुरी मालूम होती है—ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके अन्दर रक्त जमा हुआ है, इसलिये आनन्द मिलता है। **ऋतु होनेके पहले सहवासकी इच्छा अत्यन्त प्रबल होती है, यहाँ तक कि सयत रहना उसके लिये कष्टकर होता है।**

प्रुराइटस (pruritus)—वृद्ध स्त्रियोंके योनिद्वारमें कष्टकर खुजलाहट—इसके साथ अण्डलालावत् श्वेत-प्रदरका स्राव रहे या न रहे।

स्वप्नदोष (night pollution)—हस्तमैथुनसे उत्पन्न सभी **कुफलोंको दूर करनेके लिये यह अद्वितीय महौषध है।** जो सब लड़के बहुत दिनोंसे हस्तमैथुनके अभ्यासी हैं एव जो इच्छा करनेपर भी हस्तमैथुनकी प्रवृत्तिका दमन नहीं कर सकते, उन लोगोंको यह दवा देनेपर **हस्तमैथुनकी प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है।** बहुत दिनोंसे शुक्रक्षय करते रहनेपर शारीरिक और मानसिक दुर्बलतामें यह दवा व्यवहृत होती है। इससे शुक्रस्राव गाढ़ा होता है। मलत्याग करनेके समय कूथन देनेपर धातुस्राव होनेसे नेट्रम म्यूर और केल्क फॉस दोनो ही उपयोगी हैं। किन्तु केल्क फॉसका धातु गाढ़ा और नेट्रमका पतला होता है। अनेक समय

दोनों औषधोको पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है। स्वप्नदोष दूर करनेके लिये रातमें सोनेके समय ३x व्यवहार्य है।

अपरिमित इन्द्रियचालनाके कारण पीड़ाएं (diseases from excessive venery)—निम्नलिखित लक्षणोंमें यह फलप्रद है। प्रातःकालमें सहवासकी इच्छा अत्यन्त प्रवल होती है। यान और अश्वारोहणसे भी पुरुषांग अत्यन्त उत्तेजित होता है, किन्तु सहवास की प्रवृत्ति नही रहती। इस औषधके व्यवहारसे शिथिल इन्द्रिय सवल होता है। वहुत अधिक इन्द्रिय परिचालनावश मृगी होनेपर भी यह उपयोगी है।

क्षय-रोग (phthisis)—**शरीर धीरे-धीरे शीर्ण होता है—लेकिन क्षय-रोगका कोई लक्षण ही दिखाई नहीं देता।** ऐसी हालतमें इसके व्यवहारसे आश्चर्यजनक फल मिलता है। सब प्रकारके क्षय-रोगको दूर करनेमें और वल वढानेमें यह विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है। **अत्यन्त पसीना, खासकर रातमे।** मस्तिष्क और गलेमें ही पसीना अधिका होता है। नये या पुराने दोनों ही प्रकारके क्षय-रोगमें यह व्यवहृत होता है। **हरिद्रावर्ण अण्डलालावत् गाढा कफ निकलने एवं प्रातःकाल वृद्धि होनेपर यह फलप्रद है।**

सव प्रकारकी खाँसी (all kinds of cough)—न्यूमोनिया, व्राङ्काइटिस, दमा, साधारण खाँसी, क्षय-रोग इत्यादि सव प्रकारकी खाँसियोंमें निम्नलिखित लक्षण रहनेपर यह उपयोगी है। खाँसीके साथ **हरिद्रावर्ण अण्डलालावत् गाढ़ा कफ निकलना एवं प्रातःकाल वृद्धि** इसका खास परिचायक लक्षण है। वातचीत करते समय या दूसरे समयमें भी वार-वार खखारकर गला साफ करना पडता है। मालूम होता है मानो गलेके अन्दर कफ है। निगलते समय गलेके भीतर कफ है ऐसा प्रतीत होता है, इसलिये न खखारनेसे वुरा मालूम होता है। स्वरभङ्ग होता है। गलेके भीतर शुष्क जलन एव छातीमें वेदना होती है। गला सुरसुराकर खाँसी आती है।

शक्ति—१२x, ३x (दमामें)।

हूपिंग खाँसी (whooping cough)—जब हूपिंग-खाँसी अत्यन्त कष्टसाध्य हो जाती है, किसी भी हालतमें आराम नहीं होती, उस समय यह व्यवहृत होता है। कफ बहुत सूखा होनेपर इसके व्यवहारसे तरल हो जाता है। बच्चोंको जब खाँसते-खाँसते दम अटक जानेकी हालत होती है, श्वास-प्रश्वास शीघ्र-शीघ्र और क्षुद्र हो जाते हैं, सोनेपर खाँसी कम हो जाती है शिशुओंके दाँत निकलनेके समयकी खाँसी, अथवा रक्तहीन पीले व्यक्तियोंकी खाँसीमें यह अधिकतर उपयोगी है। हूपिंग-खाँसीकी प्रधान औषध **केलि म्यूर** है।

शक्ति—१२x।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—डिफ्थिरियाकी कृत्रिम-झिल्ली (false membrane) श्वासनली तक विस्तृत होनेपर अथवा आरोग्य-लाभके बाद किसी स्थानमें सफेद झिल्ली दीख पड़नेपर यह व्यवहृत होता है (कैल्क फ्लोर)। बीमारी आराम होनेपर शारीरिक दुर्वलता दूर करनेके लिये।

पुराना टॉन्सिल प्रदाह (chronic tonsillitis)—बीमारी पुरानी होनेपर, खासकर मुख खोलने या बात करनेमें तकलीफ होनेपर यह अच्छी दवा है। बालक एव रक्तहीन व्यक्तियोंके लिये यह अधिक-तर उपयोगी है। नये रोगमें श्वासकष्टकी अधिकता रहनेपर इससे विशेष फल मिलता है। प्रातःकाल वेदनाकी वृद्धि होती है। गलेके बाहर और भीतरकी ग्रन्थियोंमें दर्द रहता है।

शक्ति—३x और बादमें १२x।

स्वरभङ्ग (hoarseness)—वक्ता, गायक और प्रचारकोंके स्वर-यन्त्रका अतिरिक्त व्यवहार होनेके कारण स्वरभङ्ग (फेरम फॉस)। बात करते समय बार-बार खखारकर गला साफ कर लेना पड़ता है—मालूम होता है मानो गलेके अन्दर कफ है। बीमारी पुरानी होनेपर यह अधिकतर उपयोगी है, खासकर दुर्वल धातुवाले आदमियोंके लिये। अण्डलालावत गाढा लसदार कफ इसका लक्षण है। जिन्हें प्रायः ठण्डा लगकर स्वरभङ्ग

होता है, कुछ दिनों तक **फेरम फॉस**के साथ इस दवाका व्यवहार करनेपर अचानक ठण्डा लगनेका दोष दूर हो जाता है।

फेरम फॉस—वक्ता, गायक और प्रचारकोंके गलेके दर्द और स्वर-भङ्गकी प्राथमिक अवस्थामें फेरम फॉस व्यवहृत होता है। प्रायः सभी बीमारियोंकी प्रथमावस्थामें फेरम फॉसका प्रयोजन होता है। अतिरिक्त चिल्लानेसे स्वरयन्त्रकी उत्तेजनाके हेतु पीडा। प्रथमावस्थामें गलेमें वेदना, घूँट निगलनेमें कष्ट, ज्वर-सा मालूम होना—या ज्वर रहता है। ठण्डा लगकर स्वरभग। कैल्क फॉस रोगकी पुरानी अवस्थामें व्यवहृत होता है।

अण्डकोषकी बीमारियाँ (diseases of the testicle)—एकशिरा रोगमें अण्डकोषके अन्दर जल उत्पन्न होनेपर (नेट्रम म्यूर) व्यवहार्य है। अण्डकोष खुजलाता है, पसीना होता है और वहाँसे रस निकलता है। अण्डकोष स्फीत, वेदनायुक्त और प्रदाहित होता है।

भगन्दर (fistula in ano)—खाँसी और भगन्दरकी पर्यायक्रमसे ह्रास-वृद्धि ; अर्थात् जब खाँसी बढती है तब भगन्दरकी नली अच्छी रहती है और जब भगन्दरकी नली बढ जाती है तब खाँसी कम हो जानेपर यह दवा विशेष उपयोगी है। भगन्दरका अस्त्रोपचार होनेके बाद किसी प्रकारकी भी पीडा होनेपर यह फलप्रद है। गुह्यद्वारमें जलन, 'धपधप करना, प्रातःकालमें वृद्धि, खासकर दुर्वल व्यक्तियोंको ऋतु परिवर्तनके समयमें शरीरकी सन्धियोंमें वेदना होती है। भगन्दरके साथ क्षय-रोग।

साइलिसिया—वक्ष-रोगके साथ भगन्दर होना इस औषधमें भी है। किन्तु कैल्क फॉसकी तरह पर्यायक्रमसे खाँसी और भगन्दरके ह्रास-वृद्धिका लक्षण इसमें नही है। गुह्यद्वारमें तेज सूई गडनेकी भाँति वेदना एव उत्ताप प्रदान करनेपर उसका घटना।

कोष्ठबद्धता (constipation)—अत्यन्त कडे मलके साथ—अथवा बादमें रक्तस्राव एवं मलके चारों ओर अण्डलालावत् कफ लगा रहता है या स्वतन्त्र रूपमें कफ निकलनेपर यह उपयोगी है। रक्तहीन, दुर्वल और वृद्ध व्यक्तियोंकी कब्जियतमें यह अधिकतर उपयोगी है।

पित्तशिला (gallstone)—शारीरिक रक्तमें फास्फेट ऑफ लाइमके अभावके कारण ही यह बीमारी पैदा होती है। यह **पित्तशिला की उत्पत्तिको रोकनेमें व्यवहृत होता है।** पत्थर (stone) जब बडा हो जाता है, तब भी इसके सेवनसे पत्थर गलकर निकल आता है एवं फिर उत्पन्न नही होता। दूसरी किसी दवाका लक्षण रहनेपर इसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए।

वहुमूत्र (diabetes)—**अतिशय शीर्णता व क्षुधाहीनता एवं नमक और मासाहार करनेकी तीव्र रुचि रहनेपर** यह निर्दिष्ट है। मुख और जीभ वहुत सूखे मालूम होते हैं और प्यास भी तृप्त रहती है। पेशावमें शर्करा नही रहता, शर्करायुक्त वहुमूत्र रोगमें फेफडा आक्रान्त होता है। रोगी पेशाव करते-करते अत्यन्त दुर्वल हो पडता है। दुर्बलताके साथ अति भूखमें **केलि फॉस** कभी विफल नही होता।

पेशाव परिमाणमें अत्यन्त अधिक होता है। यद्यपि इस दवाके सव प्रकारके स्राव ही अण्डलालावत् गाढा होते हैं, किन्तु पेशावमें यथेष्ट परिमाणमें सफेद खडिया मिट्टीकी भाँतिका पदार्थ भी दीख पडता है (फॉस्फेट)। किसी वर्तनमें पेशाव करनेपर उस वर्तनके नीचे सूतेकी तरह पदार्थ जमता है।

दुर्वलता हेतु वृद्ध और लडके अनजानमें पेशाव कर देते हैं। इस हेतु विछावनपर भी मूत्रत्याग हो जाता है। **हमेशा ही थोड़ा-थोड़ा पेशाव होता रहता है। सर्वदा पेशाव त्यागनेकी इच्छाकी प्रवृत्तिके** साथ मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें चिलक मारना और काटनेकी-सी वेदना (फेरम फॉस)।

शय्यामूत्र, अनजानमे मूत्रत्याग इत्यादि (wetting of the bed, enuresis etc)—वहुमूत्र अध्याय द्रष्टव्य। दूसरी दवाओंका प्रभेद, फेरम फॉस अध्यायमें शय्यामूत्र, अनजानमें मूत्रत्याग इत्यादि देखें। सवसे अधिक संख्यक रोगी इस दवासे ही आराम हुए हैं। शिशु और वृद्ध व्यक्तियोंके लगातार मूत्र होते रहनेमें यह एक प्रकारकी पेटेण्ट दवा-सी व्यवहृत होती है। शक्ति—३x।

ब्राइट्स-रोग (bright's disease)—इस रोगका कैल्क फॉस ही प्रधान औषध है। इस दवासे अधिकांश रोगी ही आरोग्य हो जाते हैं।

शक्ति—६x, उपकार न होनेपर ३०x और इसके वाद २००x व्यवहार करनेसे निश्चय ही सफलता मिलती है।

प्रमेह (gonorrhœa)—दुर्वलताके साथ प्रमेह-स्राव।

स्राव—पिच्छल, स्वच्छ, गाढ़ा और अण्डलालावत्। सर्वदा पेशाव त्यागनेकी इच्छाके साथ पेशावकी नली व मूत्रस्थलीके ग्रीवादेशमें चुभने या काटनेकी तरह जलन और वेदना (फेरम फॉस)। उस प्रकारके लक्षणसे वहुतसे पुराने प्रमेहके रोगी आराम हुए हैं। पेशाव करनेके पहले, करते समय और वादमें जलन होती है। लगातार ही पेशाव होता रहता है। कमर और किडनीकी जगह वेदना मालूम होती है। ग्लीट हालतमें नेट्रम म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है।

हृद्‌पिण्डकी वीमारियाँ (diseases of the heart)—सव प्रकारके हृद्‌पिण्डकी वीमारियोंकी चिकित्सा एक ही प्रकारकी है। इसलिये अलग-अलग उनके नामोंका उल्लेख नहीं किया। निम्नलिखित लक्षण रहनेपर यह फलप्रद है।

हृद्‌पिण्डके किसी भी रोगके साथ अत्यन्त ही दुर्वलता, छाती धड़कना और व्याकुलताकी उत्पत्ति। हाथ और पैर काँपना। उपयुक्त रक्त सचालनकी कमीके कारण हाथ और पैरोंकी शीतलता। हृद्‌पिण्डमें तीव्र काटनेकी तरह वेदनाके कारण श्वास-कष्ट—साँस लेनेमें वेदनाकी वृद्धि। सभी प्रकारके हृद्‌पिण्डकी पीड़ाओंमें ताकत लानेके लिये वीच-वीचमें २।१ मात्रा करके व्यवहार करना चाहिए।

दुर्वलता (debility)—सव प्रकारकी दुर्वलताकी वीमारियोंमें एवं वीमारीके आरोग्य होनेके वादकी दुर्वलतामें उत्कृष्ट दवा और दूसरी नहीं है। जिस किसी कारणसे हो या किसी भी प्रकारकी

दुर्वलता ही क्यो न हो और यह दुर्वलता बीमारीके समयकी या रोग भोग-के वादकी हो, विना द्विविधाके इसका व्यवहार करना चाहिये। दुर्वलताके लिये दूसरी कोई दवा निर्वाचित होनेपर भी इसकी २-१ मात्रा करके व्यवहार करना ही होगा। स्नायविक दुर्वलतामें केलि फॉस (केलि फॉस अध्याय द्रष्टव्य) उत्कृष्ट है।

शक्ति—६x, स्नायविक दुर्वलतामें—१२x।

कटिवात (lumbago)—प्रातःकाल शय्यासे उठते समय वेदना वढनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है।

वात (rheumatism)—रातमें, ठण्डी हवामें, पानीमें भींगनेपर आँधी-वर्षाके दिनोंमें और ऋतु परिवर्तनके समय वात-वेदनाकी वृद्धि होती है एव गर्मीसे वेदना कम हो जाती है। दूसरे अन्य सभी रोगमें हिलने-डोलनेपर रोग वढ़ता है। किन्तु वात-व्याधिमें हिलने-डोलनेपर दर्द घट जाता है। सन्धि-स्थानकी वात-व्याधिमें आक्रान्त स्थान शीतल और चेतनाहीन मालूम होता है। आक्रान्त स्थानपर ऐसा मालूम होता है मानो किसीने ठण्डा जल ढाल दिया हो, सन्धि-स्थलमें वेदना और फटनेकी भाँति दर्द। वात-वेदनाजनित अस्थिरता। प्रथम सचालनसे वेदनाकी वृद्धि, किन्तु अधिक देर तक चलने-फिरनेपर सव प्रकारकी वेदनाका ह्रास होना। वातकी वेदना स्थान वदलती रहती है (केलि सल्फ)—अर्थात् कभी यहाँ, कभी वहाँ—एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें घूमती रहती है। हाथ, पैर और समूचे शरीरमें जव दुर्वलताका अनुभव हो, तव यह दवा अधिकतर उपयोगी होती है। दूसरी किसी दवाका लक्षण रहनेपर भी वीच-वीचमें २।१ मात्रा करके इस औषधके प्रयोग करनेसे आरोग्य-क्रिया शीघ्रतासे साधित होती है। **ठण्डा लगकर गर्दनकी पेशियाँ कड़ी और घातकी भाँति वेदनासे आक्रान्त होती है।** शरीरके निचले अंगोंमें सवसे अधिक कष्टकर, छेदकारी और तीर विंधनेकी तरह वेदनाका अनुभव होता है। निम्नागोंमें वेदनाकी अधिकताके कारण सम्भवतः घुटनेसे पैर तक ठण्डा रहता है, इसलिये और ठण्डेमें ही इस बीमारीकी वृद्धि होती है।

नेट्रम सल्फ—कैल्क फॉसकी तरह इस दवामें भी वर्षाकालमें, नम जलवायुमें, रातमें और चुप-चाप रहनेपर बीमारीकी वृद्धि एव सचालनसे कम होनेका लक्षण है। लेकिन **कैल्क फॉस**का रोगी ठण्डा बिलकुल ही सहन नही कर सकता और ठण्डेमें ही उसकी सभी तकलीफोकी वृद्धि होती है। और नेट्रम सल्फका रोगी समय समय पर गर्म पोशाकसे आवृत्ति होना चाहनेपर भी वह गर्म घरमें अनुभूतियुक्त होता है एवं खुली हवामें रहना पसन्द करता है। **कैल्क फॉस**की वेदनामें केलि सल्फकी तरह स्थान परिवर्तनशीलता है, किन्तु नेट्रम सल्फमे ऐसा कोई लक्षण नहीं है।

पक्षाघात (paralysis)—पक्षाघातका स्थान चेतनाहीन, शीतल, भारी अनुभव होना एव ऐसा मालूम होता है मानो वहाँ चीटियाँ चलती हों। ठण्डा लगकर पक्षाघात होनेपर भी यह उपयोगी है। वातके पश्चात पक्षाघात या पक्षाघातके पश्चात वात।

ल्यूकिमिया (leukæmia)—यह बहुत ही खतरनाक रोग है। इसमें रक्तकी श्वेत कणिकायें अत्यधिक बढ जाती हैं। इसे रक्तका कैन्सर भी कहा जा सकता है। प्राथमिक दशामें चिकित्सा न होनेपर जीवनकी रक्षा होना कठिन है। किसी स्नायविक रोगके बाद रक्तमें श्वेत कणिकाओंकी अत्यधिक वृद्धि होनेपर कैल्क फॉस उत्कृष्ट औषध है।

रक्त कणिकायें परिमाणमें स्वाभाविक हैं, किन्तु काले रगकी होनेपर फेरम फॉस।

इस रोगमें लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ व्यवहृत होती हैं :—

जैसे—**कैल्क फॉस**, फेरम फॉस, **केलि-फॉस, नेट्रम-म्यू, नेट्रम-फॉ, नेट्रम-स।**

चर्म-पीड़ा समूह (diseases of the skin)—सब प्रकारकी चर्म-पीडाओंमें निम्नलिखित लक्षणोंमें यह उपयोगी है। एक प्रकारकी खुजली है जिसमें किसी प्रकारका उद्भेद दिखाई नही देता, किन्तु हमेशा खुजलाता रहता है और जलन होती है। चर्म शुष्क, शीतल और

सिकुडा। चर्ममें अत्यधिक खुजलाहट रहनेपर वीच-वीचमें उससे अण्ड-लालावत् रस निकलता है। चर्मके ऊपर पीलापन लिये श्वेतवर्णकी पपडी पडती है। रक्तहीन वात-व्याधिसे पीडित और स्क्राफ्यूलाग्रस्त व्यक्तियोंकी एक्जिमा पीडा। **सव प्रकारकी पीड़ाओंमे अण्डलाला-वत् स्राव निकलता है।** स्नान करनेके वाद खुजलाहट वढ जाती है और जलन होती है। वृद्ध व्यक्तियोंके शरीरकी खुजलाहट। अत्यधिक पसीना निकलता है, खासकर मस्तकमें।

जीभ (tongue)—जिह्वा स्फीत, चेतनाहीन, कठिन और अग्र-भाग क्षतयुक्त। क्षतस्थानमें जलन और फफोले या फुन्सियोंकी तरह दिखाई देते हैं। जीभपर सफेद रंगकी मैल दीख पडती है, खासकर प्रातःकालके समय। कभी-कभी जिह्वामें अम्लस्वाद, कभी या तो तिक्तस्वाद।

निद्रा (sleep)—निद्राका लक्षण सुनकर अनेक समय औषधके निर्वाचनमें सहायता मिल जाया करती है। यदि सन्ध्या समय नींद आकर रात-भर नीद न आये, तव यह औषध व्यवहृत होती है। लडके निद्रामें चिल्ला उठते हैं, चिहुँक पडते हैं, और नीद टूट जानेसे जाग पडते हैं। वालकोंकी कृमिजनित अस्थिर निद्रा (नेट्रम फॉस), रात-भर सुनिद्रा न होनेके कारण प्रातःकाल विछावन छोडनेमें आलस्य मालूम होना और निद्रालुता। दिनमें निद्रालु होना।

ज्वर (fever)—वहुत ही कम्पनके साथ जाडा लगकर ज्वर आता है (फेरम फॉस)। शीत पृष्ठ-देश (पीठ) से ऊपरकी ओर उठता है। रातमें वहुत पसीना होता है, खासकर मस्तकमें। सभी स्थानका ही पसीना लसदार होता है। **सारा शरीर अत्यन्त ठण्डा मालूम पड़ता है।** रक्तहीन दुर्वल व्यक्तियोंका दवा-दवा-सा धीमा ज्वर। टायफायड एव अन्यान्य ज्वरोंके आराम होनेके समय क्षयकी शीघ्रतासे पूर्तिके लिये यह अत्यन्त आवश्यकीय दवा है।

औषधकी क्रिया-हीनता—सव प्रकारके रोगोंकी चिकित्साके समय वीच-वीचमें २।१ मात्रा करके इस दवाका प्रयोग करनेसे

अन्यान्य औषधोंकी क्रियाकी वृद्धि होती है। सुनिर्वाचित दवासे फलकी प्राप्ति न होनेपर यह औषध प्रयोग करना चाहिये। इससे या तो रोग घट जायगा या फिर पूर्व निर्वाचित दवाने फल होगा।

वृद्धि (aggravation)—इस औषधके सभी लक्षण रातमें, वर्षा कालमें, पानीमें भीगनेपर, ऋतु परिवर्तनमें, ठण्डी हवामें, हिलने-डोलने पर और रोगके विषयमें चिन्ता करनेसे रोगकी वृद्धि होती है।

ह्रास (amelioration)—ग्रीष्मकालमें, गरमसे, शान्तभावसे सोने और मानसिक विश्रामसे घटता है। केवल वात-व्याधि हिलने-डोलने पर घटती है।

कार्यपूरक औषध (complementary medicine)—यह मैग फॉसकी कार्यपूरक औषध है। नव प्रकारकी तीव्र वेदनामें जहाँ मैग फॉस सुनिर्वाचित होनेपर भी आंशिक अथवा असम्पूर्ण क्रिया प्रकट करती है, वहाँ इस औषधकी सहायता लेनी पडती है।

शक्ति (potency)—६x शक्ति सर्वदा व्यवहृत होती है। १२x एवं ३०x अति उत्कृष्ट है। ३x, ६०x एवं २००x भी फलदायक हैं।

सम्बन्ध—क्रूप या काली खाँसीमें कैल्क-फ्लोरके साथ; हड्डीके रोगमें कैल्क-फ्लोर व माइलिसियाके साथ, भगन्दर या फिश्चुलामें कैल्क-फ्लोर व माइलिसियाके साथ, अर्शमें फेरम फॉसके साथ; छात्रोंके सिरदर्दमें कैल्क-फॉस व नेट्रम-म्यूरके साथ; कृमिके उपसर्गमें नेट्रम फॉसके साथ; शिशुओंकी रक्तहीनता, दुर्बलता व शीर्णताके साथ रिकेट होनेकी प्रवणतामें तथा मस्तकके ऊपर तैलाक्त पसीनामें साइलिसियाके साथ; साइनोवाइटिस या घुटनेकी सन्धिके प्रदाहमें नेट्रम-म्यूरके साथ, लूपसमें केलि-म्यूरके साथ, मलद्वारके फिश्चुलाके साथ फुसफुसका उपसर्ग पर्यायक्रममें रहनेपर; मृगी रोगमें फेरम फॉस, केलि म्यूर, केलि फॉस व माइलिसियाके साथ, बहुमूत्रमें केलि फॉस व नेट्रम फॉसके साथ, दाँतके केरीजमें मैग-फॉस व साइलिसियाके साथ; अर्शमें फेरम फॉसके साथ कैल्क-फॉसकी तुलना होती है।

तुलनात्मक होमियोपैथिक औषध—यह कार्बो एनि, हिपर व रूटाका अनुपूरक (complementary) दवा है। कैल्क कार्बके साथ इसका सादृश्य है, किन्तु शारीरिक आकृतिमें विशेष अन्तर भी है। प्रयोगके पहले दोनोका अन्तर अवश्य ही निर्णीत हो जाना आवश्यक है। साइलिसियाके साथ इसका अन्तर इस अध्यायके आरम्भमें ही विस्तृत रूपसे दिखला दिया गया है। भगन्दरमें (fistula in ano) कैल्क फॉसके साथ बार्बेरिसकी विशेष एकता दीख पडती है। भगन्दरका अस्त्रोपचार होनेके बाद छातीके उपसर्ग दीख पडनेपर दोनो दवा ही लक्षणके भेदसे लाभदायक हैं। रक्तहीनता व मस्तिष्कोदकमें चायना समतुल्य औषध है। टायफॉयड इत्यादि कई बीमारियोकी अन्तिम अवस्थामें अत्यधिक पसीना होनेपर सोरिनमके साथ, वृद्धावस्थामें बैराइटा कार्बके साथ, रक्तहीनतामें नेट्रम म्यूरके साथ, टूटी हड्डी न जुटनेपर सिम्फाइटमके साथ, क्षयरोगमें ट्यूबर्क्युलिनम व साइलिसियाके साथ और दाँतके घावमें फ्लोरिक एसिडके साथ तथा बहुमूत्रमें केलि फॉस व नेट्रम फॉसके साथ तुलनीय है।

कैल्केरिया सल्फ्यूरिकम
(Calcarea Sulphuricom)

भिन्न नाम—कैल्सियम सल्फेट ऑफ लाइम।

साधारण नाम—जिपसम (gypsum), प्लास्टर ऑफ पेरिस।

संक्षिप्त नाम—कैल्क-सल्फ (calc. sulph.)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—अनेक स्थानोंके जलमें यह पदार्थ दृष्ट होता है। यह एक प्रकारका सफेद रंगवाला दानेदार पदार्थ है। यह कैल्केरिया म्यूरियेटिका (calcarea muriatica) सॉल्यूशनके साथ डाइल्यूट सल्फ्युरिक एसिड मिश्रित करके उत्पन्न होता है।

क्रिया—डॉ० शुसलर यद्यपि इस दवाकी जगह नेट्रम फॉस और साइलिसियाका प्रयोग करनेके लिये उपदेश देते हुए इस दवाका व्यवहार करना मना किये हैं, तो भी हमलोगोंको इससे उपकार मिलता है, इसलिये इसको छोड नहीं सके। होमियोपैथिक चिकित्सकगण पहले इस औषधके विषयमें कुछ भी नहीं जानते थे। डॉ० शुसलरके अपने बायोकेमिक चिकित्साकी पुस्तकमें इसके विषयमें लिखनेपर होमियोपैथिक चिकित्सकों ने भी इसका व्यवहार आरम्भ किया और बहुत फायदा उठाया।

इस दवाकी क्रिया सभी सिरस-झिल्ली (serous membrane), श्लैष्मिक-झिल्ली, सिरस-गह्वर (serous cavity), सभी स्थानोंके घाव, यहाँ तक कि ट्यूबर्क्युलर क्षत इत्यादिपर विशेष रूपसे दृष्ट होती है। टिशुओ (tissue) के अन्दरके बेकार पदार्थोंको निकाल देना ही इसका काम है। यकृतसे निकले पित्तमें इसका अस्तित्व वर्तमान है। यकृतके भीतरके बेकार रक्तके केवल जलीयांशको ग्रहण करके उसे दूर कर देता है। इस हेतु शरीरकी स्वाभाविक अवस्थामें कुछ परिवर्तन दृष्ट नहीं होता। किन्तु यदि किसी कारणसे पित्तमें कैल्क सल्फका अभाव होता है, तो अप्रयोजनीय रक्त निकल न सकनेके कारण चर्म और श्लैष्मिक-झिल्लीके रास्ते आकर विविध रोगोंकी सृष्टि करता है। इसके सेवनसे

अभावकी पूर्ति होनेपर यह दृष्ट होता है कि टिशुओंके अन्दर बेकार चीजें जमा होकर चर्मके ऊपर जिन स्थानोंपर स्फीति और सदा पीव निकलती रहती थी, वह शीघ्र ही स्वाभाविक अवस्थामें परिणत हो जाता है। **अतः जिन सब स्थानोंसे बहुत दिनोंसे पीव निकलती रहती है — किसी भी हालतमें पीव बन्द नहीं होती, उन क्षेत्रोंमे यह मन्त्र-शक्तिकी तरह काम करता है।** इस औषधके प्रयोगसे बहुत थोडे ही समयके अन्दर उस प्रकारके घाव सूख जाते हैं। **पीले रंगकी गाढ़ी रक्तयुक्त पीव ही इसका निर्देशक लक्षण है।** किसी प्रकारके आरम्भावस्थामें इसका व्यवहार दृष्ट नही होता। नाकमें सर्दी, फेफडेमें सर्दी, अन्त्रोंमें सर्दी इत्यादि सब प्रकारकी सर्दियोंकी तृतीयावस्थामें यह व्यवहृत होता है। सब प्रकारके क्षतोंकी तृतीयावस्थामें यह लाभदायक होता है। पीवके साथ इसका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि शरीरमें इस पदार्थका अभाव न होनेपर पीव पैदा ही नही हो सकती। इसकी पीवका लक्षण पहले ही बतला चुका हूँ। किन्तु किसी घावसे पतली पीव निकलनेपर इसका अभाव नही हुआ है ऐसा समझना ठीक नहीं। क्योंकि इस पदार्थके साथ नेट्रम म्यूरके अभावके कारण ही पीव तरल होती है। इसलिए चिकित्साके समय इसके साथ दूसरी जिस दवाकी क्रिया दृष्ट होगी, बहुत समय उसी दवाके साथ इसको पर्यायक्रमसे व्यवहार करना आवश्यक हो पडता है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—मानसिक अवस्थाकी परिवर्तनशीलता। मनको स्थिरकर कोई भी काम नही कर सकता। स्मरणशक्तिकी कमी होना।

२—ठण्डा लगकर सिर-दर्द एव खुली हवामें उसका घटना।

३—बालकोंके मस्तकके घावमें पीले रगकी घनी पीव या पीले रगकी पपडी पडती है।

४—मस्तकमें बहुत रूसी उत्पन्न होती है।

५—जिस किसी भी स्थानपर और किसी भी प्रकारका घाव ही क्यों न हो, उसमें पीले रङ्गकी गाढी पीव या रक्तके छीटोंयुक्त पीव रहनेसे यह निष्फल नही होता। जिन सब क्षतोंसे वहुत दिनों तक पूर्वोक्त प्रकार की पीव निकलती रहती है, किसी भी उपायसे क्षतस्थान सूखना नही चाहता, उसमें यह दवा कभी निष्फल नहीं होती।

६—सर्दी, खाँसी, न्यूमोनिया, ब्रॉङ्काइटिस, क्षयकाश, स्फोटक, क्षत, कर्णपीडा, चक्षुपीडा, फिश्चुला इत्यादि सभी स्रावशील रोगोंकी तृतीयावस्थामें इसके ५म सख्यक लक्षणमें वर्णित स्राव रहनेपर यह अव्यर्थ है।

७—इसके स्रावके साथ साइलिसियाके स्रावका सादृश्य है। किन्तु साइलिसियाके स्रावमें अत्यन्त दुर्गन्ध रहती है और इसके स्रावमें दुर्गन्ध नही रहती।

८—किसी स्थानकी स्फीति, जैसे स्फोटक इत्यादिमें—इसकी दो प्रकारकी क्रिया दिखाई देती है। कैल्क सल्फ किसी स्थानसे पीव निकलना वन्द करनेके लिए जैसे अद्वितीय है, वैसे ही पीव पैदा होनेके पहले ही इसके प्रयोगसे पीवका उत्पन्न होना रुक जाता है। पीवका उत्पन्न होना रोकनेके लिये वहुधा प्रथमावस्थामें फेरम फॉस अथवा द्वितीयावस्थामें केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है।

९—किसी गहरे स्थानमें पीव पैदा होना।

१०—घुटनेकी सन्धियोंमें सूई गडनेकी तरह वेदना और स्पर्श सहन न होना। पीव पैदा होनेके पहले फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य।

११—किसी चीजका केवल अर्द्धांश दृष्ट होना।

१२—उदरामय और रक्तामाशयमें पीव-सा, पीवके साथ रक्तमिश्रित और पीवमिश्रित कफ रहनेपर यह उत्कृष्ट है। पाकाशयका क्षत, टाइफॉयड, टाइफस इत्यादि रोगोमें पूर्वोक्त रूपका मल रहनेपर।

१३—ऋतुस्राव वहुत देरसे होता है और वहुत दिनों तक रहता है।

१४—जीभके ऊपर कीचड़-सी मैल। जीभका स्वाद साबुनके ऐसा तीक्ष्ण।

१५—सीडमें वृद्धि और शुष्कतामें ह्रास। खुली हवामें रोगीको आराम मालूम होता है।

विशेषत्व (peculiarity)—बीमारीका नाम चाहे कुछ भी क्यों न हो और जिस किसी स्थानसे ही वह क्यों न निकलती हो, यदि पीले रंगकी घनी, पीव-सी अथवा रक्तके छीटोंयुक्त पीव निकले एवं उस स्रावका यदि बहुत दिनोंसे निकलते रहनेका इतिहास पाया जाय, तब तो फिर दूसरी कोई बात ही नहीं, कैल्क सल्फ प्रयोग करनेपर हाथों-हाथ फल मिलेगा। यह सब प्रकारके रोगोंकी तृतीय अवस्थामें व्यवहृत होता है।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—मानसिक अवस्थाकी परिवर्तनशीलता अर्थात् भिन्न-भिन्न समयमें भिन्न-भिन्न कार्य करता है—मनको स्थिर रखकर कुछ भी नहीं कर सकता। एकाएक स्मरण-शक्तिका ह्रास होना या ज्ञानहीनता, भीत चित्तवाला और क्रोधी। क्रोधके बाद दुर्बलता अनुभव करना। भविष्यके विषयमें चिन्ता, मुक्तिके विषयमें उद्वेग और सुबह जागनेके पश्चात् उत्कण्ठा। प्रातःकाल और सन्ध्या समय मनकी गड़बड़ी। उत्कण्ठा और मनकी गड़बड़ी खुली हवामें कम होती है। रातको सोनेकी चेष्टा करनेपर भीतिप्रद मूर्तियाँ देखता है, मृत्यु-भयसे सर्वदा मानो वह भयभीत रहता है। पागल हो जानेका भय, दुर्भाग्य होनेका भय, विपदका भय और नाना प्रकारके भय उसे हमेशा लगे ही रहते हैं। रातमें भयकी अधिकता दीख पड़ती है। नाना प्रकारके विचार और अनाप-सनाप भाव दिखाई देते हैं। अस्थिर, दुःखी, जिद्दी, डरपोक, लज्जाशील, भययुक्त और झगड़ालू होता है। सहज ही में दोष मान लेता है और अपनेको अपमानित समझता है। वह बात करते-करते भूल कर बैठता है और गलत शब्दोंका व्यवहार करता है। वह सहज ही में चौंक उठता है। चारों ओर जो क्या हो रहा है उसकी तरफ ध्यान भी नहीं देता और खुद बहुत व्यस्त रहता है। जिन लोगोंसे

उसका मतभेद होता है, उनको देख भी नहीं सकता। वह समझता है कि उसके गुणको कोई ठीक रूपमें ग्रहण नहीं करता और इसीलिये वह दुःखी होता है।

शिरः पीड़ा (headache)—ठण्डा लगकर सिर-दर्द होनेपर और वह यदि ठण्डी हवामें कम होता हो, तब यह उपयोगी है। सिरके चारों ओर दर्द होता है, खासकर ललाटमें। सिर-दर्दके साथ कै होनेका डर। इस दवामें सिर घूमना प्रायः अधिकांश समय ही दिखाई देता है व प्रातः और सन्ध्या समय इसकी वृद्धि होती है, किन्तु खुली हवामें यह कम हो जाता है। इसके साथ गिर जानेका भाव रहता है। मस्तिष्कमें शीतलता, कपाल भी शीतल रहता है। प्रातः और सन्ध्या समय सिर उत्तप्त होता है। उत्तापकी झलक निकलती है, खाँसनेपर, ऋतुकालमें, ऋतु बन्द होनेपर और गर्म कमरेमें वेदनाकी वृद्धि, खुली हवामें उपशम होता है। अपराह्न ४ बजे सिरपर टोपी रखी हुई है ऐसा मालूम होता है।

मस्तकमें क्षत (ulcers of the head)—बालकोंके मस्तकके क्षतमें यदि पीले रंगकी गाढ़ी पीब निकलती हो या पीले रङ्गकी पपड़ी जमती हो तो यह एक सुन्दर दवा है। पपड़ीको दबानेपर भी उसी प्रकारकी पीब निकलती है, उसमें रक्त भी दीख पड़ता है। रिकेट्ससे पीड़ित अथवा उपदंश रोगग्रस्त बालकोंके मस्तकके क्षतमें। मस्तकमें बहुत रूसी उत्पन्न होती है।

सब प्रकारके क्षत (all kinds of ulcers)—जिस किसी स्थानका ही क्षत क्यों न हो, यदि उनसे **पीले रंगकी गाढ़ी पीब निकलती हो एवं उस पीबके साथ रक्तके छींटे रहें तो** यह औषध प्रायः ही व्यर्थ नहीं होती। लेकिन याद रखना चाहिये कि **साइलिसिया**की पीबमें बदबू रहती है एवं इस औषधके सब प्रकारके ही स्राव दुर्गन्धहीन होते हैं। साइलिसियाके व्यवहारके बाद जब स्फीति इत्यादि घट जाते हैं पर पीब निकलना बन्द होकर क्षत सूखता नहीं, तभी यह दवा प्रयोग करनेका उपयुक्त

समय है। क्षतकी प्रथमावस्थामें इस दवाकी प्रायः ही जरूरत नहीं होती—सब प्रकारके क्षत, प्रदाह, दग्ध और आघातादि लगनेकी **तृतीयावस्थामें** यह व्यवहृत होता है।

स्फोटक (abscess, boils, inflammation etc.)—सर्दी, खाँसी, क्षत इत्यादि सब **प्रकारके स्रावशील रोगोंकी तृतीयावस्थामें** यद्यपि कैल्क सल्फका प्रयोजन निर्दिष्ट है, तथापि स्फोटक इत्यादि वैठानेके लिये यह प्रथमावस्थामें भी आवश्यक हो जाया करता है। यह प्रथमावस्थामें फेरम फॉस एव द्वितीयावस्थामें केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करानेसे स्फोटक इत्यादि वैठ जाते हैं। इस औषधका उच्चक्रम वीमारीके पुनराक्रमणको रोकता है। जिन लोगोंको वार-वार व्रण (मुँहासा) होता है उनको इस दवाका सेवन करानेसे भविष्यमें फिर व्रण नहीं होता। साइलिसियामें भी यह लक्षण है ; लेकिन रोगकी प्रकृति समझकर ही औषधकी व्यवस्था करनी चाहिये। कैल्क सल्फ पीव उत्पन्न होनेके पहले प्रयोग कर सकनेपर पीव उत्पन्न नही हो सकती। अतः याद रखना चाहिये कि **कैल्क सल्फ जैसे अतिरिक्त पीवके स्रावको सुखा देता है, वैसे ही पीव उत्पन्न होनेके पहले व्यवहार होनेपर यह पीवकी उत्पत्तिको रोकता है।** पीठके कार्वङ्कलमें यह विशेष उल्लेखनीय है। कार्वङ्कलकी पीव घटानेमें (केलि म्यूर, साइलिसिया) यह विशेष शक्तिशाली है। किसी गहरे स्थान या गड्ढेमें पीव होनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है।

रोगी-विवरण—पवना जिलाके अन्तर्गत दिलपाशार व लाहिडी मोहनपुरके वीचके किसी मुहल्लेके एक वृद्ध मुसलमानकी स्त्रीके मस्तकके पीछेकी तरफ एक वहुत वडा फोडा हुआ था। फोडा हुए प्रायः तीन महीने हो गए। फोडा वहुत दिन पहले ही पक गया था, थोडी-थोडी गाढी पीले रगकी पीव निकल रही थी और उसमें थोडा दर्द था। फोडेको तुरन्त चीर देनेकी मेरी इच्छा प्रकट करनेपर रोगिणी व उसके स्वामी तैयार नहीं हुए। अस्त्रोपचार न कर चिकित्सा करनेके लिए ही वे

लोग मुझे बुलाके ले गये थे। पहले और भी २-३ चिकित्सकोंके अस्त्रोपचार करनेकी इच्छा प्रकट करनेपर उन्हें विदा कर दिया गया था। अतः मैंने **कैल्क सल्फ** १२x नित्य तीन बार कर सेवन करनेकी व्यवस्था कर दी। कई एक दिनोंके अन्दर ही फोडेका फूलना घट गया और पीव निकलना नाममात्र रह गया। कई एक दिनोंके वाद फोडेवाला स्थान कुछ कडा मालूम पडा और उस स्थानसे जलकी तरह पतली पीव निकलते रहनेके कारण **साइलिसिया** १२x देनेपर २-३ दिनोंके अन्दर ही फोडेवाला स्थान स्वाभाविक रूपमें आ गया।

हिपजॉयण्टके रोग (hip joint diseases)—ऊपर स्फोटक अध्यायमें लिखित लक्षणोंमें यह उपयोगी है। घुटनेकी सन्धिमें दर्द, दर्द सूई गडनेकी तरह, किसीके छूनेपर भी दर्द मालूम होता है। पैरके तलवेमें जलन और खुजलाहट। जानुसन्धिमें पीव उत्पन्न होनेकी सम्भावना होनेपर **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे इसका व्यवहार करनेपर विशेष उपकार होता है। पीव उत्पन्न होनेके पहले व्यवहार कर देनेपर पीवका उत्पन्न होना रुक जाता है। शक्ति—१२x।

चक्षुपीड़ा समूह (diseases of the eye)—चक्षुप्रदाहकी तृतीयावस्थामें जव आँखसे गाढी पीले रंगकी पीव या कीचड निकलती है (नेट्रम फॉस)। कार्नियाके स्फोटक एवं उससे पूर्वोक्त रूपमें पीव निकलने अथवा पीव उत्पन्न होनेके पहले दिया जानेपर पीव उत्पन्न नही होती। कार्नियाके गहरे क्षतमें (साइलि)। आँखमें चोट लगनेकी तृतीयावस्थामें जवकि आँखसे पूर्वोक्त प्रकारकी पीव निकलती है। **अर्द्ध-दृष्टि** अर्थात् जव किसी चीजका केवल अर्द्धांश ही दिखाई देता है। पलकोंका कम्पन और प्रदाह।

कर्णपीड़ा समूह (diseases of the ear)—कानसे गाढी पीले रंगकी या कभी-कभी रक्तमिश्रित पीव निकलनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है। वहुधा **साइलिसिया**के व्यवहार करनेके वाद इस औषधकी आवश्यकता होती है। साइलिसियाकी पीव भी इस दवाकी तरह ही होती

है, लेकिन साइलिसियाकी पीवमें बदबू रहती है। इस दवामें दुर्गन्ध नही है—यही प्रभेद है। कानके चारो ओर कण्डूयन या गुजगुलाहट। कानके पीछेकी ग्रन्थियाँ जब स्फीत, वेदनायुक्त और इनमें पीव उत्पन्न होनेका डर रहता है। उक्त प्रकारके स्रावके साथ बहरापन। कानमें गुन-गुन घण्टी बजना, सगीत इत्यादिकी ध्वनि सुनाई पडती है। साइलिसियाकी पीव बहुधा पतली और इस औषधकी पीव गाढी होती है। कभी-कभी इस औषधकी पीवमें बदबू भी रहती है।

टॉन्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—स्फोटक अध्याय देखें।

पाकाशयका क्षत (cancer of the stomach)—रोग पुराना होनेपर यह उपयोगी है। मलके साथ अधिक परिमाणमें कफ रहनेपर यह व्यवहृत होता है। जीभ कीचडकी तरह मेलसे ढॅकी रहती है।

उदरामय (diarrhœa)—पुराने उदरामयमें विशेष उपयोगी है। उदरामयमें जब मलके साथ रक्त और पीव निकलती है। कभी-कभी कीचडके रगका मल भी दृष्ट होता है। टाइफॉयड ज्वरमें ऐसा मल रहनेपर। गुह्यद्वार निकल आना।

आमाशय (dysentery)—केलि म्यूरकी अवस्था उत्तीर्ण हो जानेपर अथवा उससे कुछ उपकार न होनेपर यह औषध व्यवहृत होती है। **पीबकी तरह कफ अथवा रक्तमिश्रित पीब निकलनेपर यह महौषध है। पुराने रक्तामाशयमें खासकर** अन्त्रमें क्षत रहनेपर यह विशेष उपयोगी है। नये रोगमें भी पूर्वोक्त मलके लक्षण रहनेपर यह उपकारी है। शक्ति १२x या कभी-कभी ३०x।

कोष्ठबद्धता (constipation)—कष्टदायक मल। क्षयरोगकी अन्तिम अवस्थामें कोष्ठबद्धता। पीव उत्पन्न होनेके कारण ज्वरके साथ कोष्ठबद्धता और श्वासकष्ट। टाइफॉयड ज्वरके साथ कोष्ठबद्धता और श्वासकष्ट। मल रक्तमय, कठिन, शुष्क और गाँठ-गाँठ। निष्फल मलप्रवृत्ति।

अजीर्ण (dyspepsia)—अजीर्ण रोगमें इसकी प्रायः आवश्य-

चता नहीं पटनी। खट्टे फल खानेकी और चाय पीनेकी प्रबल इच्छा एव क्षुधाहीनताकी जगह क्षुधा और प्यासकी प्रबलता दीख पडती है। पाकस्थलीमें जलनमय दर्द रहता है। रोगी दुर्बलताको दूर करनेके लिये कोई बलकारक दवा सेवन करनेकी इच्छा करता है। सिरमें चक्करके साथ वमनोद्वेग।

भगन्दर (fistula in ano)—पीले रगकी घनी पीवका स्राव होने, पीवके साथ रक्त मिश्रित रहनेपर। मलद्वारके निकट वेदनाहीन स्फोटक। मलद्वारके चारो ओर भी भींगा मालूम होता है। मलद्वार खुजलाता है।

यकृतके रोग (diseases of the liver)—यकृतमें दर्द और चर्राना। यकृतमें स्फोटक होनेपर पीव उत्पन्न होनेके पहले इस दवाके देनेसे पीव उत्पन्न न होकर ही स्फोटक बैठ जाता है। पीव उत्पन्न होनेपर जब मलद्वारसे गाढी अथवा रक्तमिश्रित पीव निकलती है।

ग्रन्थिस्फीति (diseases of the glands)—पीव उत्पन्न होनेके पहले उच्चक्रमके व्यवहारसे विना पके ही आराम हो जाता है। बहुत दिनोंसे गाढी पीव अथवा रक्तमिश्रित पीव निकलते रहनेपर यह फलप्रद है। बहुधा साइलिसियाके व्यवहारके बाद प्रयोजन होता है।

अण्डकोषके रोग (diseases of the testicle)—पूर्वोक्त ग्रन्थिस्फीति द्रष्टव्य।

प्रमेह (gonorrhœa)—प्रमेह रोगमे मूत्रनलीसे गाढ़ी पीले रंग की पीवका स्राव अथवा रक्तमिश्रित पीवका स्राव होता है (साइलि)।

उपदंश (syphilis)—उपदश क्षतमें पूर्वोक्त स्राव रहनेपर यह उत्कृष्ट कार्यकारी है। बाघीमें पीवकी उत्पत्तिको रोकनेके लिये इसका उच्चक्रम (६०x शक्तिके नीचे नही) साइलिसियाके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

मूत्राशय-प्रदाह (cystitis)—प्रदाहकी तृतीयावस्थामें जब पेशाबके साथ इसकी निर्दिष्ट पीव निकलती रहती है।

चेचक (pox)—दोनों प्रकारके गोटियोंकी (small-pox and chicken-pox)—तृतीयावस्थामें उत्कृष्ट है। केलि म्यूरके वाद वहुधा इस दवाकी आवश्यकता होती है। दानाके अन्दर पीव उत्पन्न होनेपर यह व्यवहृत होता है। जल-वमन्तकी वीमारीमें जव गाढ़ी पीले रंगकी पीव उत्पन्न होती है अथवा रक्तमिश्रित पीव निकलती है, तव यह अति उत्तम दवा है।

सर्दी (coryza)—सर्दीकी तृतीयावस्थामें जव नाकसे इसका निर्दिष्ट स्राव (सव प्रकारके क्षत अध्याय द्रष्टव्य) निकलता हो। इनफ्लुएञ्जाकी छींक जव खुली हवामें कम मालूम करे। नाकके छेदोंके किनारे क्षत। एक नाकसे स्राव निकलना या कभी-कभी नाक वन्द रहती है। स्नान करनेपर या खुली हवामें सर्दी घट जाती है।

सव प्रकारकी खाँसी (all kinds of cough)—न्यूमोनिया, ब्रॉङ्काइटिम, कुकुर-खाँमी, साधारण खाँमी इत्यादि **सव प्रकारकी खाँसियोंकी तृतीयावस्थामे जव पीले रंगका अथवा हरी आभा लिये पीले रंगका गाढ़ा और पीव ऐसा कफ या उसके साथ रक्तके छींटे रहनेपर** यह विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। खाँसीके साथ छातीमें दर्द रहता है। हूपिंग खाँसीमें इसका प्राय. व्यवहार नही होता। इस दवाके प्रयोगसे पीव इत्यादि शीघ्र ही शोषित होकर रोग आराम हो जाता है। क्रूप रोगमें स्वर वन्द हो जाना।

शक्ति—१२x।

क्षयरोग (phthisis)—सव प्रकारकी खाँसीके लक्षण लिखते समय जो-कुछ कहा जा चुका है, इस स्थानमें भी वे ही प्रयोज्य हैं। क्षय रोगसे पीडित रोगीको पूर्वोक्त खाँसीके साथ पैरके तलवोंमें जलन रहनेपर यह दवा अधिकतर उपयोगी है। इसकी खाँसीका एक और भी विशेषत्व यह है कि पीव-सा कफ पात्रके नीचे गिरनेके वाद चारों ओर फैल जाता है (साइलि) एवं किसी पात्रमें पानी रखकर उसमें मल त्यागनेपर वह पानीमें डूव जाता है। इससे प्रमाणित होता है कि क्षय-रोगीकी अन्तिम

अवस्थामें यह औषध विशेष कार्यकरी होता है। क्षय-रोगकी अन्तिम अवस्थामें यह कोष्ठबद्धता (कब्जियत) और पीव-सा अथवा पीवके साथ रक्तमिश्रित उदरामयमें इसका व्यवहार करना चाहिये।

खाँसीके साथ छातीमें वेदना। यक्ष्मा रोगीकी खाँसीमें जब पीव या रक्तमिश्रित पीव निकलती है, तब इसका व्यवहार अपरिहार्य है।

क्रूप (croup)—डॉ० केण्टका कहना है कि यह क्रूप-रोगकी एक मूल्यवान औषध है। रोगी रोगके समय केवल हवा चाहता है, आच्छादन-वस्त्र हटा देता है एवं इसके लिए उसकी खाँसी भी कम हो जाती है। सन्ध्या और रातमें कष्टदायक श्वास-प्रश्वास। ऊपर चढ़नेसे, चलनेसे और सोनेपर बढ़ जाता है। साँय-साँय और घड़घड़ शब्द होना। केलि म्यूरके बाद व्यवहृत होता है।

शक्ति—१२x।

स्तनग्रन्थि-प्रदाह (mastitis)—गर्भावस्थामें अथवा प्रसव-वेदनाके समय इसकी आवश्यकता दीख नहीं पड़ती। पहले ही कह चुका हूँ कि पीवके परिमाणको घटानेमें यह अद्वितीय महौषध है; इसीलिये स्तन फटकर पीव निकलते रहनेपर बहुत दिनों तक यदि पीव निकलती ही रहे तो शायद ही कभी विफल होता है। अन्यान्य ज्ञातव्य विषय स्फोटक अध्यायमें देखिये। **साइलिसियाके** व्यवहारके पश्चात् प्रायः ही इस दवाकी अवस्था आती है।

प्रदर (leucorrhœa)—गाढ़ी पीले रंगकी या रक्तमिश्रित पीवका स्राव (साइलि) रहनेपर यह व्यवहृत होता है।

विलम्बित ऋतुस्राव (delayed menstruation)—यदि ऋतु बहुत ही विलम्बमें होता हो और बहुत दिनों तक रहता हो, तो यह दवा उपयोगी है। इस प्रकारके ऋतुस्रावके साथ प्रायः ही सिर-दर्द दीख पड़ता है। ऋतुके बाद योनिके अन्दर खुजलाहट।

मसूढ़ोंकी स्फीति (gum boil)—मसूढ़े स्फीत होकर जब पीव उत्पन्न होती है, उस समय इसका उच्चक्रम व्यवहार करनेसे और पीव

इन औषधकी प्रकृतिगत पीबकी तरह अथवा रक्तमिश्रित पीबकी तरह उदरामय रहे और उदरामय तथा रक्तामाशयमें इसके निर्दिष्ट मलके साथ यदि ज्वर रहे तो यह उपयोगी है। रातमें धीमे ज्वरके साथ कब्जियत। पूर्वोक्त लक्षणके अलावा अन्य किसी प्रकारके ज्वरमें यह व्यवहृत नही होता। लेकिन ज्वरके साथ इसकी निर्दिष्ट खाँसी अथवा स्फोटकादिसे बहुत दिनों तक पीब निकलती रहनेपर यदि उसके साथ धीमा ज्वर रहे, तो यह व्यवहृत हो सकता है। ज्वरके साथ भीतियुक्त उत्कण्ठा दीख पड़ती है।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डा लगनेपर, पानीमें भीगनेपर या तर स्थानमें रहनेपर रोगके लक्षण बढ़ते हैं। पैदल चलनेपर, खासकर तेजीसे चलनेपर, शरीर उत्तप्त होनेपर बहुतसे रोग-लक्षणोंकी वृद्धि होती है। बिछावनकी गरमीसे और गर्म कोठरीमें वृद्धि। खड़ा होनेपर अनेक रोग, विशेषतः सन्धिस्थानके रोग बढ़ जाते हैं।

ह्रास (amelioration)—शुष्क और उष्ण वायुमें रोग-लक्षणोंका घटना। खुली हवामें रोगी आराम अनुभव करता है। अक्सर वह नंगा रहना चाहता है।

शक्ति (potency)—डॉ० शुसलर ६x व्यवहार करनेका उपदेश देते हैं। अन्यान्य बायोकेमिक महारथीगण एवं हमलोग सर्वदा ६x, १२x, ३०x और २००x शक्ति व्यवहार कर फल प्राप्त कर रहे हैं। इसकी उच्चतर शक्तियाँ ही अधिक फलप्रद हैं।

सम्बन्ध—आरक्त ज्वरके बाद शोथ होनेपर नेट्रम-सल्फके साथ; कॉर्नियाके घाव या पीबमय ग्रन्थिमें, मसूढ़ेके फोड़ेमें, स्तनप्रदाहमें, टॉन्सिल प्रदाहमें साइलिसियाके साथ, काली या क्रूप खाँसीमें, आमाशय, चर्मरोगमें, गण्डकी सूजनमें केलि म्यूरके साथ, स्नायुशूलमें मैग-फॉस व केलि-फॉसके साथ, प्रदाहकी तीसरी अवस्थामें केलि-सल्फ व साइलिसियाके साथ कैल्क-सल्फकी तुलना होती है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक दवाइयाँ—उपयुक्त दवाका निर्वाचन

फेरम फॉस्फोरिकम
(Ferrum Phosphoricum)
एण्टि-सोरिक व एण्टि-ट्यूबर्क्युलर

भिन्न नाम—फेरि फॉसफस।

साधारण नाम—फॉस्फेट ऑफ आयरन।

सक्षिप्त नाम—फेरम फॉस (ferrum phos)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—फॉस्फेट ऑफ सोडियम और फॉस्फेट ऑफ आयरन इन दोनोके सम्मिश्रणसे यह प्रस्तुत होता है। वास्तवमें विशुद्ध फॉस्फेट ऑफ आयरनसे दुग्ध-शर्कराके सहयोगसे यह दवा वनती है।

क्रिया—शरीरस्थ लोहित-कणिकाओंके अन्दर लौह वर्तमान है एव फॉस्फेट ऑफ आयरनकी क्रियासे ये कणायें लोहित वर्ण धारण करती हैं। यह मनुष्यके शरीरमें प्रति सेरमें प्रायः आधा ग्रेन परिमाणमें विद्यमान है। अण्डलाला (albumen) ही शरीरस्थ प्रधान उपादान है एव इस अण्डलालामें जब फेरम है, तब प्रत्येक कोषमें ही फेरम या लौहका अश निश्चय ही है। किसी कारणवश पेशियोंमें आयरनकी कमी होनेपर पेशी-समूह शिथिल हो जाते हैं। धमनी और शिराओंमें लौहका अभाव होनेपर शिरा और धमनी-समूह शिथिल एव स्फीत हो जाते हैं और उस स्थानपर रक्त जम जाता है। अत्यधिक रक्त जम जानेपर धमनी और शिराओंके किनारे फटकर रक्तस्राव भी होता है। इस हालतमें सूक्ष्म मात्रामें फेरम फॉसका प्रयोग होनेपर यह शिथिल धमनी और पेशी-समूहकी सकुचनशक्तिको वढ़ाकर **स्थानीय रक्ताधिक्यको दूर करता** है। विभिन्न स्थानोंकी धमनी, शिरा और पेशियोंमें इस लावणिक-पदार्थकी कमीसे ही भिन्न-भिन्न नामोंके रोग उत्पन्न होते हैं। जैसे कि अन्त्रस्थ पेशियोमें इस पदार्थका अभाव होनेपर पेशियोकी शिथिलता हेतु रसादि शोषित न होनेके कारण उदरामय उत्पन्न होता है। और अन्त्रोंमें

कणिकाकी वृद्धि होती है एवं एनिमिया, क्लोरोसिस आदि रक्ताल्पता रोग पैदा होते हैं। अतः उन सब रोगोंमें भी फेरम व्यवहृत होता है। फेरम व्यवहृत होनेपर आवश्यक परिमाणमें आक्सिजेन आकर्षित होकर बीमारी आरोग्य हो जाती है।

पूर्वोक्त विषयोपर विचार करनेसे उपलब्धि होगी कि समस्त प्रादाहिक रोगोंकी प्रथमावस्थामें यह अति उत्कृष्ट और फलप्रद औषध है। किन्तु प्रथमावस्थामें ही यदि उपयुक्त परिमाणमें सूक्ष्म मात्रामें फेरमका व्यवहार न हो, तब पोटैसियम क्लोराइड या **केलि म्यूरियेटिकम** नामक और एक लावणिक पदार्थका अभाव सूचित होता है। केलि म्यूरके साथ लौहका विशेष सम्बन्ध दृष्ट होता है। रक्तस्थित फाइब्रिन या तन्तुवत् पदार्थमें केलि म्यूरका विशेष प्रभाव रहनेके कारण केलि म्यूर ही उस तन्तुमय पदार्थको रक्तके अन्दर द्रवीभूत करके रखता है। किसी प्रादाहिक रोगमें उपयुक्त समयपर फेरमके अभावकी पूर्ति न होनेपर जब केलि म्यूरकी अवस्था आती है, तब रक्तस्थित फाइब्रिन द्रवीभूतावस्थामें न रहकर अकार्यकारी रूपमें शरीरके भिन्न-भिन्न द्वारोसे निकलकर विभिन्न रोगोंके नामसे अभिहित होते हैं। जैसे वह नाकसे निकलनेपर सर्दी, फेफडेसे निकलनेपर खाँसीके साथ कफ निकलना, फेफडेके पथसे निकलनेके समय फेफडेके कोष-समूह उत्तेजित और प्रदाहित होनेपर न्यूमोनियाके नामसे अभिहित होता है, इत्यादि।

एकोनाइट जिस प्रकार होमियोपैथिक चिकित्साके मेरुदण्ड स्वरूप है, डॉ० शुसलरके बारह टिशू रेमेडियोंमें फेरम फॉस भी उसी प्रकार है। वास्तवमें बायोकेमिक चिकित्सामें इसका व्यवहार इतना विस्तृत है कि सोचनेपर आश्चर्यचकित होना पडता है। कोई भी बायोकेमिक चिकित्सक इस औषधके बिना एक दिन भी नही चल सकते। प्रदाह, प्रदाह-जनित सभी रोगोंकी प्रथमावस्थामें एवं लाल रंगके रक्तस्रावमें यह अव्यर्थ है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—सब प्रकारके रोगोंकी प्रथमावस्थामें जब प्रदाह रहता है, उस

कणिकाकी वृद्धि होती है एव एनिमिया, क्लोरोसिस आदि रक्ताल्पता रोग पैदा होते ह। अतः उन सब रोगोमें भी फेरम व्यवहृत होता है। फेरम व्यवहृत होनेपर आवश्यक परिमाणमें आक्सिजेन आकर्षित होकर बीमारी आरोग्य हो जाती है।

पूर्वोक्त विपयोपर विचार करनेसे उपलब्धि होगी कि समस्त प्रादाहिक रोगोंकी प्रथमावस्थामें यह अति उत्कृष्ट और फलप्रद औपध है। किन्तु प्रथमावस्थामें ही यदि उपयुक्त परिमाणमे सूक्ष्म मात्रामें फेरमका व्यवहार न हो, तब पोटैसियम क्लोराइड या **केलि म्यूरियेटिकम** नामक और एक लावणिक पदार्थका अभाव सूचित होता है। केलि म्यूरके साथ लोहका विशेष सम्बन्ध दृष्ट होता है। रक्तस्थित फाइब्रिन या तन्तुवत् पदार्थमें केलि म्यूरका विशेप प्रभाव रहनेके कारण केलि म्यूर ही उस तन्तुमय पदार्थको रक्तके अन्दर द्रवीभूत करके रखता है। किसी प्रादाहिक रोगमें उपयुक्त समयपर फेरमके अभावकी पूर्ति न होनेपर जब केलि म्यूरकी अवस्था आती है, तब रक्तस्थित फाइब्रिन द्रवीभूतावस्थामें न रहकर अकार्यकारी रूपमें शरीरके भिन्न-भिन्न द्वारोंसे निकलकर विभिन्न रोगोंके नामसे अभिहित होते हैं। जैसे वह नाकसे निकलनेपर सर्दी, फेफड़ेसे निकलनेपर खाँसीके साथ कफ निकलना, फेफड़ेके पथसे निकलनेके समय फेफड़ेके कोष-समूह उत्तेजित और प्रदाहित होनेपर न्यूमोनियाके नामसे अभिहित होता है, इत्यादि।

एकोनाइट जिस प्रकार होमियोपैथिक चिकित्साके मेरुदण्ड स्वरूप है, डॉ० शुसलरके बारह टिशू रेमेडियोंमें फेरम फॉस भी उसी प्रकार है। वास्तवमें बायोकेमिक चिकित्सामें इसका व्यवहार इतना विस्तृत है कि सोचनेपर आश्चर्यचकित होना पड़ता है। कोई भी बायोकेमिक चिकित्सक इस औषधके बिना एक दिन भी नही चल सकते। प्रदाह, प्रदाह-जनित सभी रोगोंकी प्रथमावस्थामें एव लाल रंगके रक्तस्रावमें यह अव्यर्थ है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—सब प्रकारके रोगोंकी प्रथमावस्थामें जब प्रदाह रहता है, उस

इस पदार्थका अभाव होनेपर अन्त्रोकी कार्यकारिणी-शक्ति नष्ट होकर कोष्ठवद्धता भी उत्पन्न हो जाया करती है।

लौह मात्रको ही आक्सिजेन (oxygen) को आकर्षित करनेकी वहुत शक्ति है। पहले ही कहा गया है कि शरीरस्थ लोहित-कणाओंके अन्दर लौहका अश है। अतः रक्तस्थित फेरम निःश्वास द्वारा ग्रहीत वायुसे आक्सिजेन ग्रहण कर उसे समस्त शरीरमे परिचालित करता है। एवं इस प्रकार मानवकी जीवनी-शक्ति सजीवित रहती है। किसी कारणवश रक्तमें फेरमकी कमी होनेपर शरीर अस्वस्थ हो जाता है एवं तेजीसे रक्त सचालन होने लगता है। क्योंकि अल्प परिमाण लौहसे समस्त शरीरमें ही लौह वाँटनेके लिये निश्चय ही लौहयुक्त रक्त-कणिकायें तेजीसे संचालित होगी। पाँच आदमियोके कामको अगर तीन ही आदमियोको करना पडे, तो जिस प्रकार तीन आदमियोंको अधिक परिश्रम करना पडता है, यह भी उसी प्रकार है।

रक्तके इस अस्वाभाविक द्रुत संचालनसे ही शरीरमें ताप पैदा होता है एवं इस ताप ही को ज्वरके नामसे पुकारा जाता है। ज्वरके समय जो **चंचलता** आती है, उसका कारण भी यही रक्तमें लौहांशकी अल्पता और उस कारण शरीरमें आक्सिजेनकी अप्रचुरता (अल्पता) है।

स्थानीय रक्ताधिक्यमें एव साधारण प्रदाहमें सूक्ष्म मात्रामें फेरम प्रायः ही वहुत कम विफल होता है। वेदना, लालवर्ण, उत्ताप, नाडीका द्रुत स्पन्दन, रक्तस्राव इत्यादि फेरमके परिचायक लक्षण हैं। सव प्रकारके प्रदाहकी प्रथमावस्थामें ही यह व्यवहृत होता है। किन्तु **प्रदाहित स्थानमें रस या पीब संचित होनेपर फिर फेरमकी आवश्यकता नहीं होती।** जिन सव वेदनाओंकी सचालनसे वृद्धि होती है एव ठण्डेसे घटती है, उनमे ही इसका व्यवहार उचित है। रक्तमे लौहका अभाव होनेपर सर्दी लग जाती है, इसलिये नयी सर्दीमे इसका व्यवहार होता है।

रक्तमें उपयुक्त परिमाणमें लौहमय पदार्थ रहता है, इस हेतु रक्त लोहित वर्ण धारण करता है। लौहका अश कम होनेसे ही रक्तमें श्वेत-

कणिकाकी वृद्धि होती है एव एनिमिया, क्लोरोसिस आदि रक्ताल्पता रोग पैदा होते है। अत. उन सव रोगोमे भी फेरम व्यवहृत होता है। फेरम व्यवहृत होनेपर आवश्यक परिमाणमे आक्सिजेन आकर्षित होकर वीमारी आरोग्य हो जाती हे।

पूर्वोक्त विषयोपर विचार करनेसे उपलब्धि होगी कि समस्त प्रादाहिक रोगोंकी प्रथमावस्थामे यह अति उत्कृष्ट और फलप्रद औषध है। किन्तु प्रथमावस्थामे ही यदि उपयुक्त परिमाणमें सूक्ष्म मात्रामें फेरमका व्यवहार न हो, तव पोटैसियम क्लोराइड या **केलि म्यूरियेटिकम** नामक और एक लावणिक पदार्थका अभाव सूचित होता है। केलि म्यूरके साथ लौहका विशेष सम्वन्ध दृष्ट होता है। रक्तस्थित फाइव्रिन या तन्तुवत् पदार्थमें केलि म्यूरका विशेष प्रभाव रहनेके कारण केलि म्यूर ही उस तन्तुमय पदार्थको रक्तके अन्दर द्रवीभूत करके रखता है। किसी प्रादाहिक रोगमें उपयुक्त समयपर फेरमके अभावकी पूर्ति न होनेपर जव केलि म्यूरकी अवस्था आती है, तव रक्तस्थित फाइव्रिन द्रवीभूतावस्थामें न रहकर अकार्यकारी रूपमें शरीरके भिन्न-भिन्न द्वारोसे निकलकर विभिन्न रोगोके नामसे अभिहित होते हैं। जैसे वह नाकसे निकलनेपर सर्दी, फेफडेसे निकलनेपर खाँसीके साथ कफ निकलना, फेफडेके पथसे निकलनेके समय फेफडेके कोष-समूह उत्तेजित और प्रदाहित होनेपर न्यूमोनियाके नामसे अभिहित होता है, इत्यादि।

एकोनाइट जिस प्रकार होमियोपैथिक चिकित्साके मेरुदण्ड स्वरूप है, डॉ० शुसलरके वारह टिशू रेमेडियोंमें फेरम फॉस भी उसी प्रकार है। वास्तवमें वायोकेमिक चिकित्सामें इसका व्यवहार इतना विस्तृत है कि सोचनेपर आश्चर्यचकित होना पडता है। कोई भी वायोकेमिक चिकित्सक इस औषधके विना एक दिन भी नही चल सकते। प्रदाह, प्रदाह-जनित सभी रोगोकी प्रथमावस्थामें एव लाल रंगके रक्तस्रावमें यह अन्यर्थ है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—सव प्रकारके रोगोकी प्रथमावस्थामें जव प्रदाह रहता है, उस

समय यह अत्यन्त आवश्यक दवा है। जैसे—(क) ज्वरकी प्रथमावस्थामें जब शरीर अत्यन्त गरम, तेज नाड़ी, अस्थिरता, प्यास, मुख और आँखें लाल, सर्वाङ्गमे वेदना, सिर-दर्दमें कैरोटिड-धमनीका फड़कना इत्यादि रहनेसे यह औषध विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है। (ख) रोगाक्रान्त स्थान उत्तप्त, लालवर्ण व टपक या उसमें दर्द (कभी-कभी जलन भी रहती है)—ये तीन लक्षण—स्फोटक, वेदना इत्यादि जिस किसी प्रादाहिक रोगमें दीख पड़े, उनमें फेरम फॉसके व्यवहारसे निश्चय ही सुफल मिलेगा। ये ही कई-एक लक्षण याद रहनेसे विविध रोगोंके नाम सुननेकी आवश्यकता न होगी। दर्दमय स्थानको हिलाने या स्पर्श करनेसे बहुत ही तकलीफ मालूम होती है। ठण्डके प्रयोगसे आराम मालूम होता है।

२—हृष्ट-पुष्ट, बलवान और रक्ताधिक्ययुक्त व्यक्तियोंके रोगमें जिस तरह उपयोगी है; उसी प्रकार क्षीणकाय, दुर्बल, और रक्तहीन व्यक्तियों के स्थानीय रक्ताधिक्यता (congestion) में भी उपयोगी है।

३—जिन सब व्यक्तियोंका चर्म बहुत पतला व स्वच्छ होता है और जिनके चर्मके अन्दर रक्तकी आभा दीख पड़ती है।

४—मस्तिष्कके अन्दर रक्ताधिक्य होनेसे टपकके साथ सिर-दर्द। आँख और चेहरेका लालपन। अजीर्ण रूपमें खायी हुई वस्तुका वमन, नाकसे रक्तस्राव, प्रलाप बकना, उत्तेजित होना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। मालूम होता है मानो माथेमें हथौड़ीसे मार रहा हो। केशकी जड़ तकमें वेदना। शीतल जलसे सिर धोनेपर आराम मिलना—चलने या छूनेसे वृद्धि।

५—सब प्रकारके चक्षु-रोगोंकी प्रथमावस्थामें जब आँखें लालवर्ण, उत्तप्त, वेदनायुक्त और जलन करनेवाली होती हैं। मालूम होता है कि आँखोंमें बालू गिर गई है। आँखमें पीब पैदा होनेके पहले ही यह दवा व्यवहृत होती है।

६—सब प्रकारके कानके रोगोंमे १म संख्यक लक्षणके अन्तर्गत

(ख) में वर्णित प्रादाहिक लक्षण रहनेसे यह अति उत्कृष्ट है। ठण्डा लगनेके कारण वेदना। चलने-फिरनेसे वेदनाकी वृद्धि।

७—दन्तशूलमें १म सख्यक लक्षणके (ख) में लिखित लक्षणोंके रहनेपर। गरम पानीके कुल्लासे वृद्धि—शीतल जलसे घटना। स्पर्श व दबानेमें वृद्धि।

८—प्रदाह हेतु जीभ साफ रक्तवर्ण।

९—मस्तकमें रक्ताधिक्य हेतु अनिद्रामें उच्चक्रम।

१०—टान्सिलाइटिसमें जब १म सख्यक लक्षणके (क और ख में) वर्णित लक्षण रहते हैं, उस समय यह बहुत अच्छी दवा है। टान्सिलकी वेदना पहले दाहिनी ओर बादमें बायीं ओर जाती है।

११—नये या पुराने—दोनों ही प्रकारके गलेके घावमें—ज्वर रहे या न रहे—गलेमें दर्द रहनेसे ही इसका प्रयोग करना चाहिये। वक्ता और गायकोंके गलेके घाव (sore throat) और स्वर-भंग (hoarseness) में।

१२—जिन लोगोंको ठण्डा सहन नहीं होता एव थोडी-सी ठण्डकसे ही सर्दी हो जाती है (कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)।

१३—सब प्रकारकी पाकस्थलीकी पीडाओंमें जब खायी हुई वस्तु अजीर्णावस्थामें मल और वमनके साथ निकलती है, उस समय यह महौषध है। पाकस्थलीके प्रदाहमें सामान्य भोजन करनेपर भी पाकस्थलीमें वेदना, भार और खिचाव मालूम होता है। फेरम फॉसकी जीभ साफ रहती है। मास और दूधसे अनिच्छा—पीनेवाली ठण्डी वस्तुओंके लिये प्रबल आग्रह।

१४—जिस किसी रोगके साथ अथवा अकेले ही अजीर्ण रूपमें खायी वस्तुका वमन होनेसे केवल यही एक दवा है। कृमिकी उत्तेजनाके कारण इस प्रकारका वमन होनेपर भी यह उपयोगी है।

१५—ग्रीष्मकालके उदरामयमें कुथनविहीन पानीकी भाँति मल। ठण्डा लगकर उदरामय होनेपर यह उल्लेखनीय औषध है। उदरपर दबाव डालनेसे जब दर्द मालूम होता है।

१६—दाँत निकलनेके समयके उदरामयमें जलवत् तरल मलके साथ ज्वर, आँख और मुख रक्तवर्ण, मस्तक इधर-उधर करके चलना, निद्रामें चिहुँकना इत्यादि लक्षण रहनेपर।

१७—कॉलेरा (cholera) में पूर्ववर्णित उदरामयके लक्षणोंके साथ बेचैनी और प्यास रहनेपर। शामको आँखकी पुतली सकुचित, दर्दमे रोना इत्यादि लक्षणोंमें केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे।

१८—आमाशयमें भी मल त्यागनेके समय कूथन नहो रहता। मल, कफ और रक्तमिश्रित अथवा केवल चमकीला लाल रक्त रहना। पेट दवानेसे दर्द होता है। इसके साथ ज्वर और अन्यान्य प्रदाहके लक्षण रहनेपर।

१९—सरलान्त्र, जरायु और प्रसवद्वारके प्रदाह एव अन्त्रस्थ पेशी-समूहकी शिथिलता हेतु कोष्ठवद्धता।

२०—मूत्रपथके पथको रोकनेवाली पेशियोंकी शिथिलता हेतु पेशाव धारण करनेकी शक्तिहीनता। सदा मूत्रत्यागकी प्रवृत्ति।

२१—मूत्रनलीके प्रदाहके कारण पेशाव होते रहना, पेशाव वन्द होकर मूत्रविकार (uræmia) होनेसे नेट्रम फॉसके साथ व्यवहार करना चाहिये।

२२—गनोरियाकी प्रथमावस्थामें स्राव न होकर जव मूत्रनली प्रदाहित, आरक्त, लाल वर्णका पेशाव और दर्द रहता है, तव यह अति उत्तम है। कभी-कभी रक्तका पेशाव भी होता है।

२३—अर्श (ववासीर), श्वासनली इत्यादि जिस किसी स्थानसे ही क्यो न हो, उज्ज्वल लाल वर्णका रक्तस्राव होनेपर एव वह रक्त निकलनेके थोडी ही देरके अन्दर जम जानेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है।

२४—स्त्री-जननेन्द्रियकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी शुष्कता हेतु सहवास (संगम) कालमें कष्ट और इसलिये अनिच्छा प्रकट करना।

२५—प्रसवके वादकी उदर-वेदना (after-pain), प्रसवके वादके घाव इत्यादि एवं शारीरिक वेदनाके लिये यह अद्वितीय है। प्रसवके

वाद इनके व्यवहारसे सभी कष्ट देनेवाली भविष्यकी पीडाओसे छुटकारा पाया जाता है।

२६—चोट और चोटके कारण उत्पन्न हुई सभी बीमारियोंमें फेरम फॉस अद्वितीय है।

२७—गरम तेल, जल अथवा किसी भी कारणसे ही क्यों न हो, जल जानेपर फेरम फॉसका भीतरी और बाहरी व्यवहार करना चाहिये।

२८—वक्ता और गायकोंके स्वरयन्त्रसे अतिरिक्त काम लेनेके कारण स्वर-भग। ठण्ड लगकर अथवा पसीना रुक जानेसे स्वर-भग। गलेमें वेदना और उसके अन्दर सूखापन मालूम होता है।

२९—सब प्रकारकी सर्दीकी प्रथमावस्थामें जब ज्वर-ज्वर-सा मालूम होता है, मस्तक भारी मालूम होना, आँखें छलछलायी हुई इत्यादि प्राथमिक लक्षण प्रकट होते हैं।

३०—छातीसे सम्बन्धित सभी रोगोंमें श्वासनलीकी उत्तेजना हेतु गला सुरसुराकर सूखी खुसखुसी खाँसी, कफ नहीं निकलता। कभी-कभी खाँसते-खाँसते छातीमें दर्द मालूम होता है। ठण्डा लगकर खाँसीकी उत्पत्ति। खुली हवा और रातमें खाँसीकी वृद्धि। कमरेके अन्दर रहनेसे घटती है। कफके साथ चमकीले लाल वर्णका रक्त निकलनेपर यह उत्तम दवा है।

३१—ठण्डा लगकर गर्दनकी पेशियोका सुन्नपन या ठिठुर जाना और वेदनामय होना। विभिन्न सन्धि और पेशियोकी वात-वेदनामें यह उपयोगी है। वेदनामें १म सख्यक लक्षणके (ख) में वर्णित लक्षणोंकी भाँति लक्षण रहनेपर। हिलने-डोलने और अधिक सचालनसे वेदनाकी वृद्धि होती है। सामान्य सचालन और उत्तापसे घटना।

३२—रक्तहीनता-रोगमें कैल्क फॉसके वाद विशेष उपयोगी है। अजीर्णावस्थामें खाद्यादि मलके साथ निकलता है। सुखमण्डल रक्तहीन, मस्तक उत्तप्त, हाथ और पैर ठण्डे, थोडे कारण ही से ठण्डा लग जाता है।

३३—दोपहरको १-२ वजे ज्वरका आना फेरमका एक विशेष

लक्षण है। अन्यान्य लक्षण २य सख्यक लक्षणके (क) मे वर्णित लक्षणोंके समान हैं।

३४—सब प्रकारके रोगोका ही सचालनसे, दबानेसे, छूनेपर, भोजन करते समय, ठण्डी हवामे, रातको और सुबहमें वृद्धि।

३५—शान्तभावसे रहनेपर और ठण्डके प्रयोगसे दर्दका घटना।

विशेषत्व (peculiarity)—ज्वर, सर्दी, खाँसी इत्यादि सब प्रकारकी पीडाओंकी प्रादाहिक अवस्थामें यही एक महौषध है। जिस किसी रोगके ही साथ ज्वर क्यो न रहे, यदि उस ज्वरमें शरीर बहुत अधिक गरम, तेज नाडी, सिर दर्द, रक्तवर्ण मुख और आँखें, बेचैनी, प्यास इत्यादि प्रादाहिक लक्षण रहे, तो यह दवा अव्यर्थ है। स्फोटक, चक्षु-रोग, कर्ण-रोग इत्यादि कोई भी रोग क्यो न हो, आक्रान्त स्थान उत्तप्त, लालवर्ण और टपकमय होनेसे यह औषध कभी भी निष्फल नहीं होती। खाद्य-द्रव्योका अजीर्णावस्थामें वमन या मलके साथ निकलना इसका विशेषत्व है। भिन्न-भिन्न स्थानोंसे उज्ज्वल लालवर्णका रक्त निकलना भी इसका विशेषत्व है।

चेतावनी—विशेष आवश्यक न होनेपर रातमें इसका व्यवहार करना उचित नहीं। यदि विशेष कारणोंसे रातको इसका प्रयोग करना पडे, तो कभी भी १२x शक्तिके नीचे व्यवहार नहीं करना चाहिये। इससे रातमें अनिद्रा उपस्थित होकर रोगीको कष्ट हो सकता है।

शारीरिक आकृति—होमियोपैथिक-शास्त्रमें वर्णित हुआ है कि हृष्ट-पुष्ट, रक्तविशिष्ट और शक्तिशाली व्यक्तियोंके किसी रोगमें यह औषध लाभदायक नहीं है—एकोनाइट ऐसी हालतमें योग्य दवा है। रक्तशून्य, पीला (pale, anæmic) एव दुर्वल धातुके रोगीके शरीरमें रक्तकी कमी होनेपर भी यदि न्यूमोनिया, सिर-दर्द, वात इत्यादि रोगोंमें स्थानीय रक्ताधिक्य (local congestion) उत्पन्न हो, तो फेरम फॉस ही वास्तविक औषध है। इसमें एकोनाइटकी भाँति बहुत अधिक बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि नहीं है। और जेलसिमियमकी तरह इसमें

भयकरता और निस्तेजताका भाव भी नहीं है। इसलिये यह एकोनाइट और जेलसिमियमके बीचकी अवस्थाके लक्षणोंमें उपयोगी है। किन्तु शुसलरकी बायोकेमिक चिकित्सामें एकोनाइट और जेलसिमियम नहीं है। इसलिये सब प्रकारके प्रादाहिक रोगोंमें ही फेरम फॉस व्यवहृत होता है। जिन सब स्थानोंमें एकोनाइट और बेलेडोना इत्यादि होमियोपैथिक मतसे व्यवहृत होते हैं, बायोकेमिक चिकित्सामें उन स्थानोंपर फेरम फॉस अव्यर्थ है। अत. देखा जाता है कि क्षीणकाय, पीले व्यक्तियोंके स्थानीय कानजेशनमें—यह जिस प्रकार फलदायक है—हृष्ट-पुष्ट, बलवान, रक्ताधिक्य धातुके प्रदाहिक रोगोंमें भी यह उसी प्रकार फलदायक है। डॉ० नैशका कहना है कि रक्तस्राव बलवान व्यक्तिको ही हो या क्षीणकाय रक्तहीन व्यक्तिको ही हो, फेरम फॉस उपयोगी है। जिन सब लोगोंके चमडे बहुत पतले और स्वच्छ हो, उनके चमडेके अन्दरसे रक्तकी आभा दीख पडनेपर यह फलदायक है।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—मस्तिकष्कमें धामनिक रक्तके अधिक संचय होनेके कारण प्रलाप। जिस कारणसे ही क्यों न हो, मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य हेतु उन्मत्त-सा होना। रोगी बहुत उत्तेजित होता है, अत्यधिक बात करता है और बहुत ज्यादे आनन्दित भी होता है। बहुत अधिक क्रुद्ध होनेपर यदि मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य हो।

महत्वपूर्ण विषयमें अवहेलना करता है; और तुच्छ विषयमें ऐसा व्यवहार करता है मानो वह बहुत ही जरूरी है। कोई भी काम स्थिर-भावसे नहीं कर सकता। मामूली काम करनेमें भी विरक्त होता है। कभी-कभी चुपचाप पडा रहता है, बातचीत तक नहीं करता, किन्तु मनमे शान्ति नहीं पाता। कभी सुचिन्ता करता है और कभी-कभी कुचिन्ता का उदय होता है।

स्मरणशक्ति इतनी घट जाती है कि परिचित लोगोंके नाम, गाँवका नाम, बहुत थोडे ही दिनोंकी मालूम हुई घटनाको भूल जाता है। मन अत्यन्त दुर्बल हो जाता है। इन्हीं सब कारणोंसे रोगी स्वयं ही आशा-

भरोसा छोड़ देता है। प्रायः ही उसे नींद नहीं लगती, किन्तु लगनेपर वह अच्छा ही अनुभव करता है।

सिर-दर्द (headache)—**मस्तकमें रक्ताधिक्यके कारण टपकमय सिर-दर्द।** आँख और मुखमण्डलकी ललाई। धामनिक रक्त मस्तिष्कमें जानेके कारण रोगी प्रलाप बकता है—कभी-कभी सिर दर्दके लिए पागल-सा हो जाना। प्रदाहके कारण अजीर्णरूपमें खायी हुई वस्तुकी कै भी हो जाती है। सिर-दर्द दोनों ही तरफके रोगोंमें, कपालमें, आँख और मस्तकके ऊपर होता है। मालूम होता है कि दर्द होनेवाली जगहपर कोई हथौडी मार रहा है। सामनेके मस्तकमें अत्यधिक रक्त-सचय होनेके कारण नाकसे रक्तस्राव होता है। इस प्रकारके रक्तस्रावसे मस्तककी तकलीफ कम हो जाती है।

मस्तकके ऊपर अत्यन्त स्पर्श असहिष्णुता (sensitiveness)—थोडेसे कारणसे और ठण्डी हवासे उसकी वृद्धि होती है। मस्तकमें थोडा भी स्पर्श करने ही से दर्द मालूम होता है। मस्तकके केशकी जड तक भी दर्दमय हो जाती है एव केश खींचनेपर केशकी जड़में, टनकमय दर्द मालूम होता है। सूर्यकी गरमीसे या धूपमें घूमनेके कारण सिर-दर्द (कैल्क फॉस)।

बालकोंके प्रदाहिक सिर-दर्दमें यह अत्यन्त उत्कृष्ट औषध है। सिर-दर्दके साथ मस्तकमें टपक और आँखोंमें पानी भर आना। मस्तकके दर्दके कारण किसी तरह भी चलना-फिरना नहीं चाहता, वेदनाकी वृद्धि होती है।

फेरमके मस्तिष्क-सम्बन्धी सभी लक्षण ही रक्ताधिक्यजनित हैं एव शीतल जल लगानेसे आराम मालूम होता है। सिर झुकानेसे, हिलानेसे और गोलमालमें वेदनाकी वृद्धि होती है। सिर-दर्दके समय बहुतसे लोग अन्धे भी हो जाते हैं। सिर झुकानेपर आँखोंसे देख नहीं सकते। मालूम होता है कि आँखोंमें रक्त आकर इकट्ठा हो जायगा।

अधकपारी (hemicrania)—यद्यपि इस रोगकी प्रधान औषध

केलि फॉस है, लेकिन प्रदाहजनित होनेपर फेरम फॉस ही प्रधान औषध है। मस्तकपर शीतल जल देनेसे आराम मालूम होनेपर यह व्यवहार्य है। सिर-दर्द साधारणतः दाहिने कपारके ऊपरी भागमें दाहिनी आँखके ऊपर तक रहता है।

मस्तिष्कावरक-झिल्ली-प्रदाह (meningitis)—परिचायक लक्षण में १ नं० लक्षणके (क) में वर्णित लक्षण रहनेपर।

संन्यास (apoplexy)—सब प्रकारके रक्ताधिक्य और रक्तस्रावकी यही प्रधान दवा है। धमनी फटकर रक्तस्राव होनेपर भी यह फलदायक है। क्योंकि रक्ताधिक्य या रक्तस्राव जो भी क्यो न हो, इस औषधके प्रयोग करनेसे रक्तसचालनकी क्रियाकी समताकी रक्षाकर इन सब लक्षणोंको दूर करता है। मुखमण्डलकी ललाई या पीलापन, गण्डस्थलके दोनों धमनियों (carotid artery) का फड़कन और स्फीति एव मस्तकके शिरा-समूह स्फीत होते हैं। अन्य किसी दूसरी दवाके निर्देशित होनेपर भी प्रायः ही इस औषधके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है।

प्रलाप (delirium)—पूर्व वर्णित मानसिक लक्षण शीर्षक अध्यायके प्रथम पेरामें जो कुछ वर्णित हुए हैं, वे ही इसके लिये भी लागू हैं।

प्रादाहिक-रोग (inflammatory diseases)—सब प्रकारके प्रादाहिक रोगोंमें रस निकलनेके पूर्व ही यह विशेष उपयोगी है। लेकिन किसी-किसी जगह आरम्भसे अन्त तक ही इस औषधके व्यवहार करनेका क्षेत्र उपस्थित हो जाता है। ठण्डा लगकर ही हो या दूसरे किसी कारण से ही हो, अचानक प्रदाह उत्पन्न होकर शीघ्र वढ जानेपर और वह यदि लालवर्ण, टपकमय और वेदनायुक्त हो, तो फेरम फॉस ही वास्तविक दवा है। सब प्रकारकी प्रादाहिक वीमारियोंमें फेरम फॉसके कई-एक विशेषत्व दीख पडते हैं—(१) **प्रादाहित स्थान लाल**, (२) **चर्राना या टपकना**, (३) **उत्ताप**। और आक्रान्त स्थानमें कभी-कभी जलन भी रहती है। और भी देखनेमें आता है कि प्रादाहित स्थान पहले जिस

प्रकार उज्ज्वल लाल होता है, बादमें किन्तु वह क्रमशः अनुज्ज्वल भाव धारण करता है। प्रदाहित-ज्वरमें बहुत समय रोगीके शरीरमें बहुत जलन होने लगती है। ज्वरसे मानो शरीर जला जाता है। इस दाहको रोगी जैसे भीतर अनुभव करता है वैसे ही बाहर भी। शरीर छूनेमे ही मालूम होता है मानो शरीर प्रखर-तापसे जला जा रहा हो। फेरम फॉसमें सिर दर्द निर्दिष्ट है—सभी रोगोंके साथ प्रायः रहता है। रोगी वेदनाक्रान्त स्थान हिलाना नहीं चाहता, क्योंकि सञ्चालनसे उसके सभी कष्टोंकी वृद्धि होती है। वेदनाक्रान्त स्थानमें थोडा-सा भी स्पर्श सह नहीं सकता। मामूली शब्दसे ही वह चौंक उठता है। सभी रोग ठण्डके प्रयोगसे घटते हैं, यह होनेपर भी वह शीतल वायु नहीं सह सकता।

श्लैष्मिक-झिल्ली (mucous membrane) से जितने प्रकारके स्राव निकलते हैं, उनमें प्रायः ही चमकीले लाल रक्तके छींटे रहते हैं। क्षय रोगीके कफमें हो, न्यूमोनिया रोगीके कफमें हो, रक्तामाशयके मलमें हो, जिस स्थानमें ही क्यों न हो, लालवर्णके रक्तका निकलना मालूम होनेपर फेरम फॉसको याद करना चाहिए।

इस अध्यायमें फेरम फॉसके जो सब लक्षण वर्णित हुए हैं, जिस किसी रोगमें उनका समावेश दीख पडनेपर, उसमें ही इस औषधके प्रयोगसे शीघ्र ही फल मिलता है। इसलिये अनेक प्रकारके रोगोंके नाम का वर्णन कर इस लेखका कलेवर नहीं बढाया गया।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eyes)—वायोकेमिक मतसे सभी प्रकारकी चक्षुपीडाओंकी एक ही चिकित्सा है। अतः विभिन्न पीडाओंके नाम उल्लेख करना आवश्यक नहीं। चक्षु-प्रदाहकी प्रथमावस्थामें जब आँखें लाल और वेदनामय होती हैं। आँखमे पीव उत्पन्न होनेके पहले ही इस दवाका व्यवहार करना चाहिये। आँखमें जलन होती है। पलकोंके प्रदाहमें, मालूम होता है मानो आँखके भीतर वालू गिर गयी हो। आँख घुमानेसे, किसी चीजकी ओर एक दृष्टिसे देखनेपर, स्पर्श करनेसे एव रोशनीमें वेदनाकी वृद्धि होती है। ठण्डे जलमें दर्द

घटता है। चेचक या कोदवा (measles) इत्यादि पीड़ाओंके साथ चक्षु-प्रदाह रहनेपर। अञ्जनी और कनीनिका (cornea) के फोडोंकी प्रथमावस्थामें शीघ्र आरोग्य होनेके लिये कभी-कभी इस औषधका वाहरी लोशन व्यवहार करना पडता है। शक्ति—१२x, पुराना होनेपर २४x।

कर्णपीड़ा-समूह (diseases of the ear)—सब प्रकारके कान के रोगोंकी प्रथमावस्थामें जब कानके अन्दर रक्ताधिक्य हेतु टपकना, उत्तप्तता, लालीपन और प्राय. इनके साथ ज्वर भी रहता है। कानके भीतर जलन और सूई विंधनेकी तरह दर्द। ठण्डा लगकर कानके अन्दर दर्द होनेपर यह विशेष उपयोगी है। कानके भीतर नाडीकी स्पन्दन-सी स्पन्दनका अनुभव होना। कानके अन्दर विभिन्न प्रकारके शब्द—कभी घण्टेकी ध्वनि या गुनगुनाहट। रक्ताधिक्य हेतु कभी-कभी रक्तस्राव या कभी पीवका स्राव होता है। किन्तु कानसे स्राव होनेपर भी तकलीफ कम नहीं होती। कानका वहरापन। कर्ण-प्रदाहमें चलने-फिरनेसे या गोलमालमें तकलीफ वढ जाती है। गोलमाल होनेके शब्द मानो कानके अन्दर चोट पहुँचाते हों।

दाँत निकलनेके समयके रोग (dentition and its effects)—केल्क फॉस ही प्रधान औषध है। किन्तु इसके साथ मस्तक और दाँतके मसूढ़े उत्तप्त एव ज्वर होनेपर फेरम फॉस व्यवहार्य है। वीच-वीचमें २।१ मात्रा करके कैल्क फॉस देना पडता है।

दन्त-वेदना (toothache)—मसूढेके प्रदाहके कारण दन्तवेदना। मसूढेके स्फोटककी प्रथमावस्थामें मसूढा लालवर्ण और उत्तप्त। भोजन करनेके वाद दन्तशूलकी वृद्धि। ठण्डे जलके प्रयोगसे आराम मालूम होता है। गरम जलसे कुल्ला करनेपर दाँतका दर्द वढ जाता है। दाँत दवानेसे या स्पर्श करनेसे भी वेदनाकी वृद्धि। दाँतमें अत्यन्त दर्द।

मसूढ़ोंसे रक्तस्राव (hæmorrhage of the teeth)—केवल मसूढों सेही नहीं, जिस किसी स्थानसे ही रक्तस्राव क्यों न हो, यदि रक्त चमकीले लाल रंगका हो एव वह निकलनेके साथ ही जम जाता हो, तो यह दवा

फलदायक है। अगर इसके साथ दर्द या टपक रहे, तब तो कोई बात ही नही—फेरम फॉस ही एकमात्र औषध है। दाँत निकलवा देनेके बादके रक्तस्रावमें भी इस औषधका भीतरी और बाहरी प्रयोग करना चाहिये।

पाकस्थलीके रोग-समूह (diseases of the stomach)—पाकाशयके क्षत (ulcers), पाकाशयके कैन्सर, अजीर्णता (dyspepsia) इत्यादि पाकस्थली सम्बन्धी सभी रोगोंकी चिकित्सा एक ही प्रकारकी है। अतः एक ही साथ लिखा गया है। पाकस्थलीके प्रदाहमें थोडी सी भी कोई खाद्य-वस्तु खानेपर वेदना। पाकस्थलीके ऊपर भार और खिचाव मालूम होता है। मानो पाकस्थलीके ऊपर एक खण्ड पत्थर रखा हुआ है। थोड़ा-सा स्पर्श भी सहा नही जाता। उदर फूला हुआ मालूम होता है। कमरके कपडेको ढीला करना पडता है। पाकस्थलीमें जलन मालूम होना।

जो-कुछ खाया या पीया जाता है, वही वमन हो जाता है। पानी तक पेटमें नही रहता। विना हजम हुई खाई वस्तुका वमन—इस दवाका एक विशेष निर्देशक लक्षण है। जिस बीमारीमें यह लक्षण रहे उसीमें इसका प्रयोग करना चाहिये। मलके साथ खायी वस्तु अजीर्णावस्थामें निकलनेपर भी यह समान रूपसे उपयोगी है। पाकस्थलीकी उत्तेजनाके कारण कभी-कभी **रक्तवमन** हो जाता है। खायी वस्तुका गन्धमय डकार भी इस दवामें दीख पडता है। वमनके साथ सिर-दर्द। बहुत अधिक मिचली आना।

शीतल जल पान करनेसे और पेटमें गरम सेंक देनेसे रोगीको आराम मिलता है। ठण्डा लगकर अगर पाकस्थलीमें वेदना हो एव तरल मल-त्याग हो, तब भी यह उपयोगी है।

पाकस्थली सम्बन्धी किसी रोगमें उपरोक्त लक्षणोके साथ शरीर अधिक गरम, आँख और मुखमण्डल लाल, असहनीय प्यास इत्यादि लक्षण रहनेपर तो कोई बात ही नही—फेरम फॉस ही महौषध है फेरमकी जीभ साफ रहती है। इससे प्रादाहिक अवस्था मालूम होती है।

मांस खाने और दूध पीनेसे रोगी अनिच्छा प्रकट करता है। पीने-वाली शीतल वस्तुओंके लिये प्रबल आग्रह। खट्टा खानेकी इच्छा किन्तु उससे पीडाकी वृद्धि होती है। शीतल भोजनसे भी रोगकी वृद्धि होती है।

वमन (vomiting)—मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य, स्त्रियोंके ऋतुके समय कृमिकी उत्तेजना अथवा जिस किसी भी कारणसे ही क्यों न हो, **अजीर्ण रूपमें खायी वस्तुका वमन** होनेपर यह बहुत ही फलदायक है। कभी-कभी वमनमें खट्टी बदबू भी रहती है। रक्त वमन होनेपर साथ-ही-साथ जम जाता है। रक्त निकलनेके साथ ही जम जाना इसका विशेष लक्षण है। रक्त उज्ज्वल लाल होता है।

उदरामय (diarrhœa)—ठण्डा लगकर उदरामय होनेसे इस औषधसे विशेष उपकार होता है। पेटपर दबाव डालनेसे वेदना मालूम होनेपर। ग्रीष्मकालके उदरामयमें कूथनविहीन पानीकी भाँति तरल मल और कभी-कभी उसके साथ वमन करनेकी इच्छा भी दिखाई देती है। न्यूमोनियाके साथ पानीकी तरह पीले रंगका मल त्यागनेपर। दाँत निकलनेके समयके उदरामयमें पानीकी तरह मलत्यागके साथ ज्वर, प्यास, निद्रामें चौंक उठना, आँख-मुख धँस जाना, सिरमें चक्कर आना इत्यादि रहनेपर, कभी-कभी एकदम रक्तका दस्त भी होता है।

अन्त्र-प्रदाहकी प्रथमावस्थामें। एण्टरिक-फीवर (टाइफॉयड फीवर), अन्त्रावेष्ट-प्रदाह (पेरिटोनाइटिस), आमाशय, कॉलेरा इत्यादि रोगोंकी प्रथमावस्थामें जब शीत-शीत-सा मालूम होता है।

हैजा (cholera)—हैजाकी चिकित्सा सभी बिलकुल उदरामय की तरह हैं। बहुत अधिक प्यास तथा बेचैनी। विकारावस्थामें भी इसकी आवश्यकता होती है। प्रधान औषध केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। इसके साथ प्रलाप, आँखकी पुतली सङ्कुचित और कराहना रहनेपर भी उपयोगी है। पसीना बन्द होकर रोग।

आमाशय (dysentery)—आमाशयकी प्रथमावस्थामें जब पेटपर

दवाव डालनेसे वेदना मालूम हो एवं उसके साथ ज्वरके प्रदाहके लक्षण रहे। मल पानी-सा तरल और उसके साथ कफ और रक्त मिला, लेकिन **कूथनविहीन**। विशुद्ध, उज्ज्वल और लाल रक्तका दस्त अथवा उसके साथ कफ मिला हुआ। प्रायः इसके साथ **केलि म्यूर**की आवश्यकता होती है। आमाशयका वेग और कूथन घट जानेके पश्चात् यदि केवल लाल रक्त अथवा मलके माथ वैसा ही रक्त निकलता है, तो इससे वहुत अच्छा उपकार होता है।

रोगीका विवरण—१९३५ ई० के आरम्भसे १३।१४ मील दूरवर्ती सल्प स्टेशनके निकटका एक मुसलमान युवक मुझसे नाना प्रकार की जटिल पुरानी वीमारियोकी चिकित्सा कराता था। अचानक ही चिकित्साके अन्तिम दिनोंमें भीषण रक्तामाशयके कारण शय्याशायी हो पडा एव एक सम्वन्धीको दवा लेनेके लिये भेजा। प्रवल ज्वरके साथ वार-वार प्रवल कूथनके साथ आँव और उज्ज्वल रक्त निकलता था। पेटमें अत्यन्त दर्द था। मल त्यागनेके वाद वहुत देर तक पेटकी वेदना रहती थी। तीन घण्टेके अन्तरसे **फेरम फॉस** ६x देनेपर दो दिनोंके अन्दर ही विलकुल आरोग्य हो गया। रातमे फेरम फॉस न देकर २।१ मात्रा **केलि म्यूर** देना पडा था। फिर दवाकी जरूरत न हुई।

कोष्ठवद्धता (constipation)—सरलान्त्रकी अधिक गरमी और अन्त्रस्थ पेशियोकी शिथिलताके कारण कोष्ठवद्धता। अन्त्रस्थ श्लैष्मिक-झिल्ली समूहकी शुष्कता और मलमें भी यही शुष्कता दिखाई देती है। जिन सव रक्तहीन पीले रोगियोंको महज ही मे अर्थात् थोडी-सी ही उत्तेजनासे मुखमण्डलमें रक्ताधिक्य हो जाता है। जरायु और योनिके प्रदाहके कारण कोष्ठवद्धता।

अर्श (hæmorrhoids or piles)—जव ववासीर (अर्श) से उज्ज्वल लाल रंगका रक्तस्राव होता है एवं वह रक्त निकलनेके साथ-ही-साथ जम जाता है। अर्शमें रक्ताधिक्यके कारण टप-टप करता हे और उज्ज्वल लाल वर्ण तथा वेदनामय होता हे। हिलने-डोलनेपर वेदनाकी

वृद्धि। मलद्वारका निकल आना। अर्शकी प्रधान दवा केल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। इन दोनों औषधोंको पर्याय-क्रमसे व्यवहार कर हमलोग कभी विफल नहीं हुए हैं।

यकृतके रोग (diseases of the liver)—यकृतके नये प्रदाहमें जब वेदना और चर्राना रहता है, तब यह अति उत्कृष्ट दवा है। प्रथमावस्थामें प्रबल ज्वर इत्यादि रहनेपर। यकृतपर दवाव देने और चलने-फिरनेमें वेदना। यकृतमें भार मालूम होना।

टान्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—टान्सिल-प्रदाहकी प्रथमावस्थामें जब ज्वर, मुखमण्डल लाल, नाडी पूर्ण और तेज, टान्सिल रक्तवर्ण, निगलनेमें कष्ट इत्यादि लक्षण रहें। यही इस पीडाकी प्रधान औषध है एवं शीघ्र-शीघ्र इसका व्यवहार करना चाहिये। गरम जलके साथ औषध मिलाकर कुल्ला करनेसे बडी शीघ्रतासे आराम मिल जाता है। टान्सिल स्फीत और शुष्क मालूम होता है। टान्सिलका दर्द पहले दाहिनी तरफ और वादमें वायीं ओर मालूम होता है। प्रदाह कम होने पर स्फीतिके लिए **केलि म्यूर** और पीब उत्पन्न होनेसे **केल्क सल्फ** पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए। पुराने टान्सिल-प्रदाहमें **केल्क फॉस** ही प्रधान औषध है।

गलक्षत (sore throat)—नये और पुराने दोनों प्रकारके गलक्षत में ही फेरम फॉस उपयोगी है। ज्वर, रक्ताधिक्य और वेदनाके लिये जैसे इस दवाका व्यवहार करना पडता है, ज्वर न रहनेपर भी केवल गलेके दर्दके लिये भी इस औषधका प्रयोग होता है। वक्ता और गायकों के गलेका दर्द, गलक्षत और स्वर-भंग। कुछ निगलते समय मालूम पडता है कि गलेके अन्दर कुछ है। गलेके दाहिनी ओर ही उस भावकी वृद्धि।

सर्दी (coryza)—सब प्रकारकी सर्दीकी प्रथमावस्थामें जब मस्तक और शरीर भारी मालूम होता है, ज्वर-ज्वर-सा मालूम होना, काममें मन न लगना, आँख और मुख लाल होना इत्यादि लक्षण प्रकट

होते हैं। यदि छींक और पानीकी तरह तरल स्राव निकले तो इनके साथ **नेट्रम म्यूर** व्यवहार्य है। रोगी गरममें रहना चाहता है।

जिन लोगोंको थोडेसे कारण ही से सर्दी लगती है और विलकुल थोड़ा-सा भी ठण्डा जिनसे सहा नहीं जाता, उन लोगोंको इस दवाके साथ कुछ दिनों तक **कैल्क फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर यह सर्दी लगने-वाला दोष दूर हो जाता है।

नाकसे रक्तस्राव (bleeding of the nose)—जिस किसी कारणसे ही क्यों न हो, नाकसे उज्जवल लाल वर्णका रक्तस्राव। मस्तक उत्तप्त और भारी मालूम होना एव सिरको उठानेमे असमर्थ। चोट लगकर रक्तस्राव। दुर्बल रक्तहीन व्यक्ति और मन्यास लेनेकी प्रवृत्ति रखने-वाले लोगोंको बीच-बीचमें रक्तस्राव (कैल्क फॉस, नेट्रम सल्फ)।

शय्यामूत्र, अनजानमें मूत्रत्याग इत्यादि (wetting of the bed, enuresis etc) मूत्रमार्गके मुखको रोकनेवाली पेशियोंकी (ब्लाडरके मुखको वन्द करनेवाली स्फिङ्कटर पेशी) शिथिलता हेतु पेशाव रोक रखनेकी शक्ति घट जाना। सदा ही पेशाव करनेकी प्रवृत्ति। पेशावकी इच्छा होनेपर पेशाव निकल आता है—वेग रोक नहीं रक्खा जाता; रोग अधिक पुराना न होनेपर। मूत्रस्थलीकी पेशियाँ इतनी शिथिल हो जाती हैं कि वहुत वार इच्छा न रहनेपर भी पेशाव हो जाता है। कृमि हेतु शय्यामूत्र होनेसे (नेट्रम फॉस सह)। पेशीकी अत्यधिक शिथि-लता हेतु शिशुओंकी भाँति स्त्रियाँ भी विछौनेपर पेशाव कर देती हैं। इसलिये खाँसने और छींकनेपर भी अनेक स्त्रियाँ पेशाव कर देती हैं। शय्यामूत्रमें **केलि फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे।

केलि फॉस—मूत्रमार्गके मुखको रोकनेवाली पेशियोंके **पक्षाघात हेतु** अनजानमें पेशाव होनेपर यह औषध उपयोगी है। **स्नायविक दुर्बलता हेतु भी** पेशावके वेगको रोकनेकी असमर्थता उत्पन्न होती है।

नेट्रम फॉस—नेट्रम फॉसमें भी सर्वदा पेशाव त्यागेच्छा एव पेशावके वेगको रोक रखनेकी शक्तिहीनताके लक्षण हैं। फेरम फॉस और

केलि फॉसकी भाँति मूत्रपथके मुखको बन्द करनेवाली पेशियोंकी शिथिलता और पक्षाघात ये दोनों ही लक्षण दीख पड़ते हैं। लेकिन नेट्रम फॉसमें इनके साथ प्रायः अम्ल और कृमिके लक्षण भी दीख पड़ते हैं। पेशी-समूहकी शिथिलता समझ पड़नेपर इस ओषधके साथ फेरम फॉस एवं पक्षाघात और स्नायविक दुर्बलता रहनेसे केलि फॉस पर्याय-क्रमसे व्यवहार करनेपर शीघ्रतासे फल मिलता है। **बहुत बार पेशाब जाफरानकी तरह पीले रङ्गका होता है।**

मूत्रावरोध (retention of the urine)—मूत्रस्थली या मूत्रनलीके प्रदाह हेतु मूत्र बन्द हो जाना, बालकोंके ज्वरके साथ पेशाब बन्द हो जाना। पेशाब बन्द होकर विकार (uræmia) होनेसे **नेट्रम फॉस**के साथ व्यवहार करनेपर बहुत अच्छा फल मिलता है।

प्रमेह (gonorrhœa)—गनोरियाकी प्रथमावस्थामें स्राव न होकर जब मूत्रनली अतिशय प्रदाहित, लाल और उसके साथ थोड़े परि-माणमें लालवर्णका पेशाब होता है। पेशाब करते समय वेदना और जलन। कभी-कभी मूत्रनलीसे रक्त निकलता है। जलन अधिक होनेसे इसके साथ नेट्रम म्यूर पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। उपरोक्त लक्षणोंके साथ बहुत बार ज्वर भी रहता है। इस दवाके साथ केलि म्यूर पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर बहुत बार प्रथमावस्थामें ही रोग अच्छा हो जाता है।

अण्डकोष-प्रदाह (orchitis)—अण्डकोष-प्रदाहकी प्रथमावस्था में जब अण्डकोष स्फीत, लाल रंगका, वेदनायुक्त और उत्तप्त होता है, उस समय यह उपयोगी है। इसके साथ ज्वर भी रह सकता है। साधा-रणतः दाहिना अण्डकोष ही पहले आक्रान्त होता है। हिलने-डोलनेसे तकलीफ बढ़ती है।

उपदंश (syphilis)—**केलि म्यूर** ही इस बीमारीकी प्रधान दवा है, किन्तु जब कि क्षतके चारों ओर लालवर्ण, वेदना या चर्राना और प्रदाहके लक्षण रहते हैं, तब यह व्यवहृत होता है।

कष्टरजः (dysmenorrhœa)—इस रोगमें जब स्थानीय रक्ताधिक्य, स्राव उज्ज्वल लालवर्णका, मुख और आँख लालवर्णके, ज्वर, नाडी तेज इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। कभी-कभी अजीर्ण खाद्य वस्तुका वमन होता है। कष्टरजः-रोगके साथ प्रायः पेशाब करनेकी इच्छा। जरायुके रक्ताधिक्यके कारण आक्षेपिक वेदना होनेपर फेरम फॉस ही वास्तविक दवा है। नहीं तो अत्यधिक आक्षेपिक वेदनाके लिये मेग फॉस गरम पानीके साथ प्रयोग करना चाहिये।

रक्तप्रदर (menorrhagia, metrorrhagia)—मुखमण्डलकी ललाईके साथ जरायुसे उज्ज्वल लोहित वर्णका रक्तस्राव। रक्त सहज ही में जम जाता है। इस दवासे रक्तस्राव बन्द न होनेपर कैल्क फ्लोर का व्यवहार करना पड़ता है। खासकर यदि जरायुकी शिथिलता हेतु रक्तस्राव हो। प्रत्येक ऋतुकालके समय ऐसी हालत होनेपर ऋतुके पूर्व इस औषधके व्यवहारसे रोग होनेकी गति रुक कर रोग अच्छा हो जाता है।

ऋतुस्राव (menstruation)—समय पूरा होनेके पहले (करीब तीन सप्ताहके अन्तर) बहुत अधिक परिमाणमें उज्ज्वल लोहितवर्णका ऋतुस्राव। स्रावका परिमाण ज्यादा होनेसे मस्तकके ऊपर वेदना मालूम होती है।

डिम्बकोष-प्रदाह (inflammation of the ovary)—रोगकी प्रथमावस्थामें व्यवहार्य है। डिम्बकोषमें वेदना, मालूम पड़ता है कि जननेन्द्रियसे कुछ निकला आ रहा है।

दूसरी-दूसरी स्त्री-व्याधियाँ (other female diseases)—स्त्री-जननेन्द्रियके भीतर स्थित श्लैष्मिक-झिल्ली तन्तुकी अत्यधिक शुष्कता हेतु सहवास करनेमें कष्ट मालूम होना और इस हेतु अनिच्छा प्रकट करती है, सहवास करना आरम्भ करने ही से आक्षेप आ उपस्थित होता है। इसलिये स्त्री-जननेन्द्रिय परीक्षा भी करने देना नहीं चाहती, क्योंकि उससे वह कष्ट अनुभव करती है। कभी-कभी जरायुमें प्रसव-वेदना-सी वेदना।

प्रातःकालीन वमनेच्छा (morning sickness)—गर्भावस्था के समय प्रातःकालीन वमनमें जब खट्टी गन्ध रहती है, उस समय **नेट्रम फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। भोजन करनेके वाद ही वमन हो जाता है।

प्रसवान्तिक रोग (diseases after delivery)—प्रसवके वादका पेट-दर्द (after pains), प्रसव-जनित क्षतादिकी वेदना इत्यादि रहनेसे यह औषध वहुत फलदायक है। उज्ज्वल लालवर्णका रक्तस्राव रहनेपर इसका प्रयोग करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रसवके वादके सभी उपसर्गोको दूर करनेके लिये फेरम फॉस अद्वितीय है। इसका व्यवहार आजकल इतना साधारण है कि प्रसवके वाद ही २।३।४ दिनों तक दैनिक २।१ मात्रा करके प्रयोग करना पडता है, इससे हर हालतमें सुफल मिलता है। प्रसवके वाद इस दवाका व्यवहार करनेसे सूतिका ज्वरके हाथसे छुट्टी पायी जा सकती है। इससे शरीरका दर्द वहुत शीघ्र ही दूर हो जाता है एवं पेशी-समूहको वल देकर शारीरिक उन्नति ला देता है। भविष्यमें आनेवाले अनेक प्रकारके अनिष्टोंके हाथसे छुटकारा पाया जाता है।

दुग्ध-ज्वर (milk fever)—पहले ही कहा जा चुका है कि यदि प्रसवके वाद ही फेरम फॉसका प्रयोग हुआ रहे, तो दुग्ध-ज्वर नहीं हो सकता। किन्तु यदि इसका प्रयोग न हुआ हो एवं ज्वरके साथ स्तन वेदनामय और रक्तवर्ण, नाडी तेज और पूर्ण, उत्तापाधिक्य इत्यादि प्रादाहिक लक्षण रहें, तो फेरम फॉस ही औषध है। इस औषधके साथ २।१ मात्रा करके **केलि म्यूर** प्रयोग करनेसे स्तनग्रन्थि कडी नहीं हो पाती एवं पीवकी उत्पत्तिकी भी सम्भावना नहीं रहती।

स्फोटक (abscess)—स्फोटक, जहरवाद (carbuncle), गलका (felon) इत्यादिकी प्रथमावस्थामें जब प्रदाहित स्थान रक्तवर्ण, उत्तप्त और वेदनामय होता है। इसके साथ ज्वर भी रह सकता है। प्रदाहित स्थान स्फीत होनेपर इसके साथ **केलि म्यूरका** व्यवहार करना चाहिये।

क्योंकि उससे स्फीति कम होकर पीवकी उत्पत्तिकी सम्भावनाको नष्ट करता है। इसके वाहरी प्रयोगकी भी आवश्यकता पडती है। प्रादाहिक रोग अध्याय देखिये।

स्तनग्रन्थि-प्रदाह (mastitis)—स्फोटककी भाँति ही इसकी चिकित्सा होती है। स्फोटक अध्याय देखें।

कटिवात (lumbago)—ठण्डा लगना अथवा अत्यन्त परिश्रम रोगका कारण होनेपर। हिलने-डोलनेपर वेदनाकी वृद्धि और उत्तापसे दर्द घटता है।

वात-व्याधि (rheumatism)—ठण्डा लगनेके कारण अगर गर्दनकी पेशियाँ चेतनाशून्य और वेदनामय हो, एव गर्दन इधर-उधर घुमाया न जा सके, तो यह विशेप उपयोगी है। सोनेके दोपसे गर्दनका जकड जाना और उसमें वेदना इस ओपधका लक्षण है। सव प्रकारके नये-वात-रोगोंमें ही यह व्यवहृत होता है। उसके साथ ज्वर रहनेसे यह और भी उपयोगी है। कन्धेकी सन्धि, दाहिने हाथकी, हिप्‌जयेण्ट, घुटना, पैरकी एँडीकी सन्धि इत्यादि विभिन्न स्थानोंकी सन्धियोंकी एव विभिन्न पेशियोंकी वात-वेदनामें यह विशेप उपयोगी है। वहुत वार वात-वेदनाका स्थान लालवर्ण, स्फीत एव उत्तप्त होता है। दर्द तीखे स्वभावका। वेदना एक सन्धिसे दूसरी सन्धिमें जाती है (कैल्क फॉस, केलि सल्फ)।

वातकी वेदनाकी थोडे ही सचालनसे वृद्धि और उत्तापसे ह्रास होता है।

कैल्केरिया फॉस—फेरम फॉसमें जिस तरह ठण्डेसे रोगकी वृद्धि और उत्तापसे कम होता है, इस दवामें भी वैसा ही है। फेरम की भाँति इस औषधमें भी दर्द स्थान परिवर्त्तन करता है। ठण्डा लगकर गर्दनकी पेशियोका कडा और वेदनाक्रान्त होना, फेरमकी तरह इस दवामें भी है। किन्तु कैल्क फॉसमें आक्रान्त स्थान पहले सचालनसे वढ़ जानेपर भी क्रमशः हिलते-डोलते रहनेपर आराम मालूम होता है।

और फेरममे आक्रान्त स्थान हिला-डुला भी नहीं सकता—दर्दसे वेचैन हो जाता है। कैल्क फॉसमें रातमें वदनाकी वृद्धि निर्दिष्ट रहने पर भी, फेरम फॉसमें भी यह है। फेरम सब प्रकारके वातकी प्रथमावस्थामें ही उपयोगी है। जब आक्रान्त स्थान बहुत वेदनामय होता है एवं हिलने-डोलनेपर वहुत ही कष्ट होता है। कैल्क फॉसमे आक्रान्त स्थान जिस तरह शीतल और चेतनाहीन होनेका लक्षण है, फेरममें वैसा नहीं है।

केलि सल्फ—इस औषधमें भी वातकी वेदना एक स्थानसे दूसरे स्थानको घूमा करती है। कैल्क फॉस और फेरम फॉसमे वात-वेदना जिस तरह गरमसे घटती है, केलि सल्फमें इसके विपरीत होता है ; अर्थात शीतलतासे दर्द घटता है। इस औषधके सभी रोग-लक्षण ही गरमसे और वन्द कोठरीमें वृद्धि—शीतलता और खुली हवामे ह्रास होते हैं।

हिपजयेण्टके रोग (hip-joint diseases)—प्रादाहिक अवस्थामें जव ज्वर, हिपजयेण्ट (चूतरकी सन्धि) मे दर्द और चर्राना, घुटनेसे वेदना स्थानान्तरित होती है एव क्रमशः वह वेदना छाती और कन्धे तक फैल जाती है। इसी समय फेरम फॉसका भीतरी प्रयोग करनेसे वेदना धीरे-धीरे ऊपरसे नीचेकी ओर उतरती रहती है एवं अन्तमे आराम हो जाती है। इस औषधकी प्रथमावस्थासे अन्तिम अवस्था तक आवश्यकता होती है। किन्तु देखा गया है कि प्रथमावस्थामें फेरमके साथ पर्यायक्रमसे **साइलिसिया**का प्रयोग करनेपर पीव इत्यादि न होकर शीघ्र आराम होता है। फेरम फॉस और साइलिसिया दोनो ही औषधोंकी १२x शक्तिका भीतरी और वाहरी प्रयोग करना आवश्यक है।

चोट और चोटसे उत्पन्न रोग (results of injury, fall, traumatism, bruises, sprains etc)—किसी स्थानसे गिरनेपर, किसी स्थानपर चोट लगनेसे, कोई स्थान मोच खा जानेपर, चोट लगकर कोई स्थान खरोच उठनेपर (bruises) इस औषधके सेवन और लोशन-

का वाहरी प्रयोग करनेसे अथवा शुष्कावस्थामें घावपर प्रयोग करनेसे बहुत शीघ्र ही सभी तकलीफ दूर हो जाती है। सभी अवस्थाओंमें फेरम फॉस की ६x शक्ति वार-वार सेवन और ३x विचूर्ण आधा ड्राम एक पाउण्ड पानीके साथ मिलाकर उस लोशनका वाहरी प्रयोग करना पडता है अथवा कटे हुए स्थानपर ६x विचूर्ण छिडककर कपडेसे बाँध रखना पडता है।

यन्त्रणादायक प्रसवके समय शिशुका मस्तक निकलते समय मूत्राशयमें चोट लगकर प्रदाह हेतु यदि पेशाव वन्द हो जाय, प्रसवके कारण चोट लगनेपर प्रसवके वाद जो सव वेदना होती है, गर्भावस्थामें गर्भस्थ भ्रूणके हिलने-डोलनेपर अगर प्रसूति दर्द मालूम करे, तो फेरम फॉस ही वास्तविक औषध है। सिरसे पैर तकके अन्दर जिस किसी स्थानमें, जिस किसी तरहसे, जिस किसी प्रकारकी चोट लगकर जो कोई रोग ही क्यों न हो, फेरम फॉसके प्रयोगके अलावा अन्य कोई उपाय नहीं।

चोटादिके विषयमें अनेक वार कह चुका हूँ, फिर कह रहा हूँ। यदि किसी व्यक्तिके मस्तकमें चोट लगकर मस्तिष्क स्तम्भन (concussion of the brain) हो अर्थात् मस्तक उत्तप्त होकर हाथ-पैर शीतल, अनजानमें मलमूत्र त्यागना इत्यादि विविध लक्षण प्रकट होनेपर फेरम फॉस ही औषध है। इसके साथ ज्वर इत्यादि रहनेपर यह और भी उपयोगी है। इस अवस्थामें फेरम फॉस व्यवहृत न होनेपर आहत व्यक्तिका चित्त सम्पूर्णरूपसे परिवर्तित हो जाता है। मानसिक प्रफुल्लता भी नष्ट हो जाती है। चोट लगकर यदि श्वासकष्ट उपस्थित हो अथवा खाँसीके साथ रक्त निकले, तब भी यह प्रधान दवा है।

वहुत परिश्रम करनेपर अथवा शारीरिक किसी यन्त्रके अत्यधिक व्यवहार हेतु रोग उत्पन्न होनेपर भी इस दवासे वह दूर होता है। स्वर-यन्त्रके अत्यधिक प्रयोग हेतु स्वरभंग, पेशीसमूहका अधिक व्यवहार होनेके कारण उनमें टनक और दर्द होनेपर, अत्यधिक परिश्रम-जनित गर्भपातके वाद, अत्यधिक परिश्रमके कारण रक्तस्राव होनेपर, घोडे या साइकिलपर

अत्यधिक भ्रमण करनेके वाद हृद्‌पिण्डका रोग और इसके कारण नाना प्रकारके कष्ट, अत्यधिक परिश्रम हेतु वार-वार छीक इत्यादि विविध रोगोमें फेरम फॉसकी आवश्यकता होती है।

जल जाना (burns and scalds)—गरम तेल, गरम जल, वहुत गरम अन्न इत्यादिसे किसी भी तरह जल जानेसे वार-वार फेरम फॉसका ६x चूर्ण सेवन करना चाहिये। फेरम फॉसका ६x चूर्ण सेवन एवं ३x चूर्ण आधा ड्राम एक आउन्स जल अथवा वैसलिनके साथ वाहरी प्रयोग करना आवश्यक है। घावका प्रदाह घटनेपर केलि म्यूरके माथ पर्यायक्रमसे इस औषधका व्यवहार करना पडता है। द्वितीया-वस्थामें, खासकर जले स्थानपर फफोले पडनेपर **केलि म्यूर** ही प्रधान औपध है। पहले ही से फेरम फॉसके साथ २।१ मात्रा करके केलि म्यूर एवं द्वितीयावस्थामें २।१ मात्रा फेरम फॉस एव अधिक मात्रामें केलि म्यूर व्यवहृत होनेसे प्रायः ही फफोले नहीं पडते। आगसे जल जानेपर लोशनके प्रयोगकी अपेक्षा चूर्ण दवा छिडकर अथवा वेसलिनके साथ औषध-का प्रयोग करना ही उचित है। घाववाले स्थानमें जिससे वायु न घुस पाये, उसकी व्यवस्था करनी चाहिये।

हर्निया (hernia)—यद्यपि हर्निया या अन्त्र-वृद्धिकी प्रधान औषध कैल्क फ्लोर है, किन्तु प्रथमावस्थामे अगर रोगाक्रान्त स्थान प्रदाहित, वेदनायुक्त और उत्तप्त हो, तो यह ओषघ क्लेल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होती हे।

स्वरभंग (hoarseness)—वक्ता, गायक और पुरोहितोकी यदि स्वरयन्त्रके अत्यधिक प्रयोग हेतु स्वरभंग हो। प्रदाह हेतु, ठण्डा लगकर एव पसीना वन्द होनेके कारण स्वरभग एव इसके साथ गलेमें वेदना ओर गलेके अन्दर सूखा मालूम होता है, उस समय यह फायदेमन्द है। प्रथमा-वस्थामे वहुत वार ज्वर भी रहता है।

केलि सल्फ— पसीना वन्द होनेके कारण या ज्वर इत्यादि प्रादाहिक लक्षण रहनेपर फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर पसीना

होकर शीघ्र ही रोग आराम हो जाता है। स्वरभग रोगकी तृतीया-वस्थामें व्यवहार्य है।

एरिसिपेलस (erysipelas)—प्रथमावस्थामें यह सर्वप्रधान औषध है। वेदना दूर करनेके लिये एक मात्र अस्त्र है। इसके सभी लक्षण प्रादाहिक रोग अध्यायमें वर्णित हुए हैं। सेवनके साथ-ही-साथ वाहरी प्रयोग भी करना चाहिए। २x या ३x विचूर्ण जल, ग्लिसरिन या वेसलिन-के साथ वाहरी प्रयोग करना पडता है। शक्ति—६x।

वेदना (pain)—सब प्रकारकी वेदना शीतलतासे शान्त होनेपर यह अति उत्तम औषध है। अन्यान्य लक्षण प्रादाहिक रोग अध्यायमें देखना चाहिये। वार-वार निम्न शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—इस रोगमें केलि म्यूर ही सर्व-प्रधान औषध है, किन्तु प्रथमावस्थामें प्रदाह-लक्षण रहनेपर केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे प्रदान करना चाहिए। प्रादाहिक रोग अध्याय देखिये। ३x शक्ति आधा सेर जलके साथ मिश्रित कर कुल्ला करनेके लिये देना चाहिये। दोनो ही औषध पर्यायक्रमसे व्यवहार करके हमलोगोंने वहुत रोगियोंको निरोग किया है।

श्वासनली प्रदाह (bronchitis)—सब प्रकारके श्वासनली-प्रदाहकी प्रथमावस्थामें यही प्रधान औषध है। ज्वर, शरीर और मस्तक-में तापाधिक्य, नि.श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, छातीमें वेदना, तकलीफ देनेवाली सूखी खाँसी इत्यादि इसके लक्षण है। नये और पुराने दोनों ही प्रकारके श्वासनली-प्रदाहमें यह व्यवहृत होता है। ज्वर, छातीमें दर्द इत्यादिके साथ यदि कफ निकले, तो कफके रगके अनुसार दूसरी किसी आवश्यकीय औषधके साथ इस औषधको पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। वय-स्कोंके रोगमें १२x शक्ति और वालकोंको ६x शक्ति।

फेफड़ेका प्रदाह (pneumonia)—इसके सभी लक्षण पूर्ववर्णित श्वासनली-प्रदाह अध्यायमे देखिये। कष्टकर खाँसीके साथ रक्त मिश्रित कफ, अस्थिरता अथवा तन्द्रालुता। जब तक पसीना नहीं वहता

तभी तक यह व्यवहृत होता है। पहले वहुत वार कहा गया है कि यह
प्रथमावस्थाकी ही औषध है। अतः प्रादाहिक अवस्था उत्तीर्ण होकर जव
फेफडेमें कफ इकट्ठा होता है, उस समय इस दवाका प्रयोग उचित नही।
खाँसीके साथ रक्त रहनेसे यह सवसे अधिक फलदायक औषध है। वक्ष-
परीक्षा करनेके समय जव चिडचिडा (crepitant rales) वुलवुले फटनेकी
तरहकी आवाज सुनाई देती है, उस समय यही वास्तविक दवा है।
शिशु और वृद्धोंके न्यूमोनियामें यह अधिक उपयोगी है। शक्ति—
६x, १२x।

एम्फाइसिमा (emphysema of the lungs)—इस रोगमें यद्यपि
कैल्केरिया फ्लोरिका ही प्रधान औषध है, किन्तु शरीरस्थ पेशी-समूह
शिथिल एवं intercostal region या पजरास्थिके वीचवाले स्थानोंकी
पेशियाँ शिथिल होनेपर फेरम फॉसकी आवश्यकता होती है। इस रोगमें
दोनो ही दवा पर्यायक्रमसे प्रदान करनेपर पेशियोंमें शक्ति आकर रोग
आराम हो जाता है।

यक्ष्मा (phthisis or consumption)—ज्वर, मुखमण्डलकी
ललाई, तेज और कष्टकर श्वास-प्रश्वास इस औषधमे निर्दिष्ट है। गला
सुरसुराकर सूखी और कष्टकर खाँसीके कारण रोगीको वहुत तकलीफ
मालूम होती है। कष्टकर खाँसीके कारण छातीमें घावकी भाँति वेदना।
रक्त मिश्रित कफ या फेफडेसे उज्ज्वल लालवर्णका रक्तस्राव। रातमें
और खुली हवामें खाँसीकी वृद्धि। यक्ष्मा रोगीको अचानक ठण्ड लगकर
दुर्वलता मालूम होनेपर। शक्ति—१२x।

दमा (asthma)—शीतकालमें या एकाएक ठण्डा लगाकर अथवा
किसी प्रकारका धुआँ, पाटका चूर या धूल इत्यादिके कारण वायुनली
उत्तेजित होकर रोग उत्पन्न होनेपर, प्राय॰ इसी औषधसे प्रथमावस्थामें ही
आरोग्य हो जाता है। किन्तु अधिकाश समय मैग फॉस पर्यायक्रमसे
प्रयोग करनेकी आवश्यकता पडती है।

खाँसी (cough)—श्वासनलीकी उत्तेजना हेतु सूखी खाँसी। मालूम

होता है मानो गलेके भीतर खुजला रहा है। कफ बिलकुल ही नहीं निकलता। समय-समयपर खाँसी इतनी कष्टकर होती है कि छातीमें घावकी तरह दर्द होता है। कभी-कभी अल्प परिमाणमें कफके साथ रक्तके छींटे रहते हैं। छातीमें ठण्डा लगकर सूखी विरक्तिकर ठाँय-ठाँय करके खाँसी आना। लैरिंग्स स्पर्श करनेसे, खुली हवामें, रातमें, सामनेकी तरफ झुकनेपर, लम्बी साँस लेनेपर खाँसी बढ जाती है। कोठरीमें रहनेपर खाँसी घटती है। खाँसते-खाँसते पेशाब हो जाना। शक्ति—१२x

रक्ताल्पता (anæmia)—रक्तहीनतामें कैल्केरिया फॉसका व्यवहार करनेके बाद इस औषधके व्यवहारकी जरूरत होती है एवं व्यवहार करनेपर अधिक फल मिलता है। कैल्क फॉसके व्यवहारसे जब नई रक्त कणिकाओंकी वृद्धि होती है, किन्तु लाल-कणिकाओंका अभाव दूर नहीं होता, उसी समय इस औषधका प्रयोग होना चाहिये। शरीरस्थ लोहित कण-समूहके अन्दर फेरम या लोहेका अंश है। लोहे मात्रको ही आक्सीजनको आकर्षित करनेकी शक्ति है—यह बात पहले ही वर्णित हो चुकी है। रक्तमें श्वेत-कणिकाओंके अभावके कारण रक्त-हीनता रोग उत्पन्न होनेपर फेरम फॉसकी आवश्यकता तो होती है, किन्तु लोहेका अभाव ही रक्तहीनता-रोगका एकमात्र कारण है—यह बात डा० शुसलर, डा० ल्यूज इत्यादि धुरन्धर चिकित्सक स्वीकार नहीं करते। वे लोग विशेष परीक्षाके द्वारा मालूम कर पाये हैं कि कैल्क फॉसका अभाव ही रक्तहीनता-रोगका वास्तविक कारण है एवं ऐनिमिया या क्लोरोसिस रोगमें जो फेरमका अंश दीख पडता है, वह वास्तवमें फेरमके अभाववश ही होता है। किन्तु साधारण लोग फेरम ही को एकमात्र रक्तहीनताका कारण कहते हैं एवं विविध लोहमय औषधादि व्यवहार कर व्यर्थमें स्वास्थ्यको नष्ट करते हैं. क्योंकि साधारण पेटेण्ट दवाओंमें स्थूल मात्रामें फेरम रहता है, इसलिये परिपाक न होकर मलके साथ निकल जाता है।

रोगी अत्यन्त आलसी, सहज ही में उत्तेजित हो जाता है और मामूली कारणमें ही उसे ठण्ड लग जाती है। मुख पीला किन्तु सहज ही में रक्तवर्ण

अथवा सुर्ख रक्तवर्ण—किन्तु सहज ही में पीला हो जाता है। ऋतु बन्द होकर यदि नाक और मुखसे रक्तस्राव हो, तो फेरम फॉससे उपकार होता है। मस्तक गरम, सिर दर्द और हाथ एवं पैर दोनों ठण्डे। दोनों पैरोंमें शोथ भी हो जाता है। अजीर्णरूपमें खायी वस्तुका वमन, अथवा मलके साथ अजीर्णावस्थामें खायी वस्तु निकलने पर ही एकमात्र औषध है। शक्ति ३x।

एपेण्डिसाइटिस (appendicitis)—प्रथमावस्थामें फेरम फॉसका सेवन और उसका लोशन पेटमें लगाना चाहिये। कुछ विलम्ब होनेपर फेरम फॉसके साथ **केलि म्यूर** पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है। अन्यान्य लक्षण प्रादाहिक रोग अध्यायमें देखिये।

रक्तोत्काश (hæmoptysis)—फेरम फॉस ही इसकी सर्व-प्रधान औषध है। रक्तके रंग आदिको देखकर चिकित्सा करनी पड़ती है। नासिकासे रक्तस्राव अध्याय देखिये।

ग्रन्थकार सैकड़ों क्षेत्रोंमें इस दवाका व्यवहारकर आशासे भी अधिक सुफल पाये हैं।

हृद्स्पन्दन (palpitation of the heart)—हृद्पिण्डके प्रदाह हेतु हृद्स्पन्दन होनेपर। हृद्पिण्डमें रक्ताधिक्य। हृद्पिण्डके बाहरी आवरण एवं भीतरी झिल्लीके प्रदाह हेतु रक्ताधिक्य। हृद्पिण्डमें तनाव या टपकमय वेदना। हृद्पिण्ड और उसकी धमनियोंकी विस्तृतिमें प्रधान औषध कैल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे। हृद्स्पन्दन-रोगोंमें केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये।

वेरिकोज शिरा (varicose veins)—बहुत देर तक खड़े रहनेपर अथवा अन्य किसी कारणसे शिरामें रक्तसञ्चय होनेपर शिराके टिशुओंकी शिथिलता हेतु शिरासमूह स्फीत होकर रक्त जम जाता है। कभी-कभी उनमें घाव भी हो जाता है। यद्यपि कैल्क फ्लोर ही इस रोगकी प्रधान औषध है, किन्तु फेरम फॉससे मांसपेशियाँ दृढ़ होती हैं, इसलिये दोनों ही औषध पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए। विशेषतः प्रदाह रहनेपर।

प्लेग (plague)—प्रथमावस्थामें अत्यन्त आवश्यकीय दवा है। प्रादाहिक रोग और ज्वर अध्यायमें वर्णित लक्षणोंकी पर्यालोचना कर औषध प्रयोग करना चाहिये।

चेचक (pox)—सब प्रकारके चेचककी प्रथमावस्थामें अत्यन्त आवश्यक दवा है प्रथमावस्थासे **केलि म्यूर** २।१ मात्रा करके प्रयोग करना चाहिये। आँखसे पानी गिरनेपर **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे। अन्यान्य सभी लक्षण ज्वर अध्यायमें देखिये।

कोदवा (measles)—चेचककी तरह ही चिकित्सा होती है। इसकी प्रथमावस्थाकी सर्वप्रधान औषध है। किन्तु अधिकांश समय कभी **केलि म्यूर**, कभी **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे इस औषधको देना पड़ता है। अन्यान्य लक्षण ज्वर अध्यायमें देखना चाहिये।

प्लीहा (diseases of the spleen)—प्लीहाकी प्रथमावस्थामें जब ज्वर और प्लीहाके स्थानमें चरानेवाली वेदना रहती है; पुरानी अवस्थामें रक्तहीनता, भूख न लगना, अनपच इत्यादि लक्षण रहनेपर।

सब प्रकारके घाव (all kinds of ulcers)—सब प्रकारके घावकी प्रथमावस्थामें जब प्रदाहके लक्षण रहते है। घावके किनारे लालवर्ण, वेदनामय और ज्वर रहनेपर। घावसे रक्त निकलनेके अलावा अन्य कोई स्राव होनेका लक्षण नहीं है। घाववाला स्थान गरम रहता है।

अनिद्रा (insomnia)—मस्तकमें रक्ताधिक्यके कारण अनिद्रा रोग उत्पन्न होनेपर इस औषधके उच्च क्रमसे आरोग्य होता है। मस्तकमें रक्ताधिक्य होनेसे मस्तक गरम, मस्तक भारी—इसलिए उठा नहीं सकता, सिरके अन्दर टप-टप करना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। अगर शोक, दुःख या किसी उत्तेजनावश मस्तकमें रक्ताधिक्य होकर अनिद्रा हो, तो **केलि फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे इस औषधका व्यवहार करना चाहिये।

अपराह्नमें तन्द्रालुता एव रातमें अस्थिरता। रातमें तन्द्रा आनेपर नींद भी अत्यन्त स्वप्नपूर्ण होता है। प्रात:काल शरीर और मन अवसाद-पूर्ण मालूम पड़ते हैं।

जिह्वा (tongue)—प्रदाहजनित रक्तवर्ण और साफ जीभ। उस प्रकार रक्तवर्ण जीभ स्फीत और वेदनामय होनेपर। सिर-दर्द रहने पर जीभ एक हालतमें आरक्त दीख नहीं पड़ती, किसी-किसी हालतमें मैलयुक्त दिखाई देती है।

ज्वर (fever)—सब प्रकारके ज्वरकी चिकित्सा एक ही प्रकारकी है, अतः एक ही साथ लिखा गया है। वातज्वर, टाइफॉयड ज्वर, टाइफस ज्वर, स्फोटक ज्वर, मैलेरिया-ज्वर, स्कार्लेट (आरक्त) ज्वर इत्यादि सब प्रकारके ज्वरकी प्रथमावस्थामें। जब तक ज्वर और वेदना रहती है, तब तक इसके व्यवहारकी आवश्यकता होती है। इसके व्यवहारसे टिशुओं-का नष्ट होना रुक जाता है।

पहले ही कहा गया है कि शरीरमें लोहकी कमीके कारण आक्सीजनकी कमी ही मानव-शरीरके तापाधिक्य और अस्थिरताका वास्तविक कारण है। अतएव शरीरमें तापाधिक्य होनेसे ही यदि फेरम फॉसका व्यवहार किया जावे, तो रक्तमें आक्सीजन प्रविष्ट होकर रक्तके आवागमनकी क्रियाका ह्रास होकर शीघ्र शरीरका ताप या ज्वर घट जाता है। ज्वरके समय मस्तकमें रक्ताधिक्य, मुख और आँखें रक्तवर्ण, सर्वाङ्गमें मोच आ जानेकी भाँति दर्द, बेचैनी, प्यास इत्यादि लक्षण इस दवामें निर्दिष्ट हैं। ज्वरके समय खायी वस्तुका वमन होता है।

ज्वर दिन-रातमें किसी समय भी आ सकता है। लेकिन दोपहरको एक बजेसे दो बजेके अन्दर आ जाना फेरम फॉसमें निर्दिष्ट है। ज्वरमें शीत और थरथराहट रहती है। ज्वर बहुत तेजीसे आता है और शरीर का ताप बहुत प्रखर रहता है। नाडी बहुत तेज और निःश्वास परिश्रम युक्त होते हैं। रातमें पसीना होना। ज्वरका ताप घटानेमें इसकी तुलनामें अन्य और कोई दूसरी दवा नहीं है। शक्ति ६x, १२x।

रोगीका विवरण—१९६४ ई०। नेपालके राजा महेन्द्रके एक ४वर्षके भगना व १०-११ वर्षकी बहनके ज्वरकी चिकित्साके लिए बुलाया गया। उसी परिवारकी एक और बालिकाके ज्वरकी चिकित्साके लिये

एक एलोपैथिक चिकित्सकको बुलाया गया था। सबोंको वहुत तेज बुखार था—१०४-१०५ डिग्री ज्वर था। राजकुमारको वहुत तेज बुखार था। मामूली सर्दी, साधारण सिर-दर्द—इतने थोडे लक्षणोंपर दवाका चुनाव वहुत ही कठिन है। किन्तु आरोग्य होनेमें मामूली तौरपर भी विलम्ब होने पर इस श्रेणीके रोगी हाथसे निकल जाते हैं और काफी वदनामी भी हो जाती है। सायकालसे दूसरे दिन सायकालतक **फेरम-फॉस** १२x शक्तिकी २½ घण्टे अन्तरसे ८ मात्रा देनेकी व्यवस्था कर दी। दूसरे दिन अपराह्ण ५½ वजे खवर मिली कि ज्वर पहलेकी ही तरह है। अभी एक वार देखनेकी जरूरत है। मैं सायं ७ वजे जाकर देखा कि ज्वर छूट गया है। और ज्वर नहीं आया है। वादमें लक्षणानुसार अन्य २।१ दवाओंकी कई एक मात्रा वना दी थी।

(२) राजकुमारीका शरीर वहुत ही दुर्वल था। पतला शीर्ण वदन। एक दिनके ज्वरसे ही इतनी कमजोर हो पडी थी कि करवट वदल नहीं सकती थी। तेज ज्वरके साथ कानमें दर्द, कानके नीचेकी ग्रन्थिमें सूजन व दर्द था। सिर-दर्द, जीभपर मामूली सफेद लेप, सर्दी व खॉसी, कब्ज इत्यादि लक्षण थे। चुपचाप सोई पडी रहती व प्यास न थी। **फेरम फॉस** १२x और **केलि म्यूर** १२x पर्यायक्रमसे नित्य ३ मात्रा के हिसाबसे ६ मात्राकी व्यवस्थाकी गई। दूसरे दिनसे दशामें कुछ सुधार होने लगा। ज्वरके तापके साथ अन्यान्य उपसर्ग इसी समय घटते-घटते ४थे दिन सभी उपसर्ग दूर हो गये। किन्तु एलोपैथिक मतानुसार चिकित्सित अन्य रोगिणीका ज्वर खतम होनेमें थोडा-वहुत १० दिन लगे थे। इसके वाद राजकुमार व राजकुमारीके स्वास्थ्यकी उन्नति हेतु चिकित्साका भार उस समयसे (ये दो वर्ष) हमारे ऊपर सौंपा गया है। दोनोंका ही स्वास्थ्य अभी खूब अच्छा है और पहलेकी भाँति वार-वार सर्दी, खॉसी, ज्वर, कानमें दर्द, उदरामय इत्यादि और नहीं हुए। इस परिवारमें होमियोपैथिक या वायोकेमिक दवा इसके पहले और कभी व्यवहृत नहीं हुई थी। राजा महेन्द्र वहनकी चिकित्साका भार अर्पण करनेके दिन कहे थे कि वे लोग

होमियोपैथिक चिकित्सामें विश्वास नहीं करते। पर मयूरभजके महराजाकी चिकित्साका फल देखकर मेरे द्वारा कुछ दिनों तक चिकित्सा करानेका निर्णय किये हैं। अब किन्तु उनके लिये होमियोपैथिक व वायोकेमिक चिकित्सा वहुत अच्छी चिकित्सा है।

(३) २७ वीं जनवरी, १९७० ई०। रोगी श्रीमान्……… दास, आयु ८ वर्ष, पिता ए. जी वगालमें नौकरी करते हैं और दक्षिणी कलकत्तामें रहते हैं। भद्र महोदय सदा ही एलोपैथिक चिकित्साका आश्रय ग्रहण किया करते हैं। किन्तु इस लडकेकी मृगी कई महीनोंसे एलोपैथिक चिकित्सा कराकर असफल होनेपर मेरे द्वारा आरोग्य होनेके कारण और इस वार ज्वरमें भी उस चिकित्साके द्वारा फायदा न होनेपर मेरे पास चिकित्सार्थ आये हैं। प्रायः एक सप्ताहसे तेज वुखार है। ज्वर प्राय. १०४ ४° और १०१ ४°—१०२° डिग्रीसे नीचे नहीं उतरा है। एलोपैथिक मतानुसार चिकित्सा हो रही है। रक्तपरीक्षा, ई एस आर., पेशावकी परीक्षा व कल्चर इत्यादि करना सभी प्रकारकी परीक्षा की जा चुकी है। टाइफाइड इत्यादि रोगकी चिकित्सा कर फल न मिलने पर अब चिकित्सकगण वी कोलाइ हुआ है ऐसा कह रहे हैं। सात दिनोंके अन्दर भी ज्वरका ऊँचा ताप न घटनेपर फिर पहलेकी आरोग्य की हुई मृगीकी वीमारी लौट आनेके भयसे मेरे पास चिकित्सार्थ आये हैं।

पहले कहे हुए ज्वरके ऊँचे तापको छोडकर रोगीमें प्यास, सिर-दर्द, जीभपर सफेद लेप, ज्वरके समय विछावनपर चुपचाप पडा रहना, कब्ज, अत्यधिक कमजोरी इत्यादि लक्षण थे। वीच-वीचमें २-१ भूल वकता है, नित्यकर्मके विषयकी वात ही भूलमें वकता है। वहुत दिनोतक ज्वर रह जानेके कारण अव मस्तिष्कमें आक्रमण करनेके लक्षण दीख पड रहे हैं।

२७-१-७०—फेरम फॉस १२x व केलि फॉस १२x एक साथ ४ मात्रा और केलि म्यूर १२[illegible] ४ मात्रा। पर्यायक्रमसे दी गई।

२८-१-७०—[illegible] है कि आज प्रातःकाल ६ वजे

छूट गया है। फिर **फेरम-फॉस** १२x व **केलि फॉस** १२x की ५ मात्रा और **केलि म्यूर** १२x की ३ मात्रा दो दिनोंके लिये दी गई।

३०-१-७०—परसों दोपहरको कुछ समयके लिये ज्वर ९९ डिग्री तक चढ़ा था। नहीं तो आजतक और ज्वर नहीं हुआ है। रोगी हर तरफसे अच्छा ही है। अन्नका पथ्य दिया गया है। **केल्क फॉस** १२x की ८ मात्रा चार दिनोंके लिये दी गई।

मन्तव्य—इस प्रकारका एक कठिन रोगी इतने थोडे समयके अन्दर आरोग्य होना बायोकेमिक चिकित्साके लिये एक गौरवकी बात है इसमें सन्देह नहीं।

वृद्धि (aggravation)—सभी रोग शीतल वायुमें, पीनेकी चीजें गरम पीनेपर, दबानेसे, छूनेपर, सञ्चालनसे, रातमें, मांस और रोटी खानेसे, दूध पीनेसे एवं भोजन करते समय बढ़ते है। रोग बढनेका समय—सुबह ४ बजेसे ६ बजेके अन्दर। खुली हवामें खाँसीकी वृद्धि। ठण्डा लगकर बहुत प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

ह्रास (amelioration)—शीतल वायु बहना सहन न होनेपर भी ठण्डेके प्रयोगसे एव स्थिर भावसे रहनेपर रोगका ह्रास होना। ठण्डे जलसे दन्तशूलका घटना।

शक्ति (potency)—डॉ० शुसलर १२x शक्तिसे नीचेकी शक्तियोंका प्रयोग करना मना किये है। हमलोग ६x शक्ति भी यथेष्ट रूपमें व्यवहार करते हैं एवं उससे अति उत्तम फल भी प्राप्त करते हैं। रातमें विशेष आवश्यक न होनेपर १२x शक्तिसे नीचे व्यवहार करना उचित नहीं। ६x से २००x क्रम तक हमेशा व्यवहृत होता है। रक्तहीनता रोगमें ३x बहुत अच्छा फल देता है।

सम्बन्ध—क्लोरोसिस रोगमें केल्क फॉसके साथ, काली खाँसी, हृत्पिण्डका स्पन्दन, न्यूमोनिया व टाइफसमें केलि-म्यूरके साथ; हिप-जॉयण्ट या जंघा-सन्धिके प्रदाहमें केल्क सल्फके साथ; सिरदर्दमें नेट्रम

फॉसके साथ, बहुमूत्र व अतिमूत्रमें नेट्रम सल्फके साथ फेरम फॉसकी तुलना होती है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषध—प्रदाहकी प्रारम्भिक अवस्थामें स्राव निकलनेके पहले इसका व्यवहार होता है, इसलिये एकोनाइट के साथ इसकी समानता है। प्रदाहमें बेलेडोनाके लक्षणके साथ भी समता है। यह एको व जेल्सके बीचवाली अवस्थामें व्यवहृत होता है। क्योंकि एकोकी तरह बेतरह बेचैनी और जेल्सकी तरह अत्यधिक सुस्ती व तन्द्रालुता इस औषधमें नहीं है। श्वास-यन्त्रोंकी बीमारीमें फॉस्फोरसके साथ इसकी विशेष समता दीख पडती है। प्रादाहिक रोगमें आर्निका व हिपर सलफरके साथ तुलनाके योग्य है। सिरदर्दमें इस दवाके बाद या साथ प्रायः ही नेट फॉस, बहुमूत्रमें नेट सल्फ, बवासीरमें कैल्क फ्लोर, रक्तहीनतामें कैल्क फॉस और डिफ्थिरिया व प्रदाह इत्यादि नाना प्रकारके रोगोंमें केलि म्यूर व्यवहृत होता है। बायोकेमिक चिकित्सामें फेरम फॉसके साथ केलि म्यूर इतना अधिक व्यवहार होता है कि दोनोंको एक जोड का कहा जा सकता है।

केलि म्यूरियेटिकम
(Kali Muriaticum)

भिन्न नाम—केलि क्लोरेटम, केलि क्लोराइडम।

साधारण नाम—क्लोराइड ऑफ पोटाश।

संक्षिप्त नाम—केलि म्यूर (kali mur)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—पोटासियम क्लोराइडसे दूधकी चीनीके सहयोगसे विचूर्ण तैयार होता है।

क्रिया—अण्डलालकी भाँति पदार्थके साथ मिश्रित होकर यह शरीरस्थ फाइब्रिन (fibrin) नामक पदार्थकी सृष्टि किया करता है। रक्तमें यह फाइब्रिन यथेष्ट परिमाणमें मिलता है। रक्तमें इस लावणिक-पदार्थका अभाव होनेपर फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थ रक्तस्रोतसे निकलने-की चेष्टा करता है—कभी या तो स्थान विशेपके अनुसार अवरुद्ध हो जाता है। सब प्रकारके प्रादाहिक रोगोंमें घावके स्राव ही में इसका अस्तित्व दीख पड़ता है। रक्तके अन्दर जिस प्रकार यह पदार्थ मिला हुआ है—स्नायु, कोष, पेशी इत्यादिके अन्दरके तरल पदार्थ-समूहमें भी यह विद्यमान है। शरीरसे जब रस या रक्त निकलता है, उस समय वह तरल रूपमें रहता है एव फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थ उनमें द्रवीभूता-वस्थामें रहता है। किन्तु जम जानेपर उसमेसे छेना और अण्डलालावत पदार्थको विश्लेपण कर लेनेपर फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थ स्पष्ट रूपमें दीख पड़ता है। क्लोराइड आफ पोटाश आक्सिजनकी सहायतासे शरी-रस्थ अण्डलाला नामक पदार्थसे फाइब्रिन बनाया करता है। फेरमसे जिस तरह रक्तमें आक्सिजनके आवागमनकी क्रिया सम्पादित होती है एव इसका अभाव होनेपर शरीरमें आक्सिजनका अभाव होता है, उसी प्रकार उक्त फाइब्रिन निकल जानेपर भी आक्सिजनका अभाव हुआ करता है। फेरम फॉस और केलि म्यूरके अन्दर इस प्रकारका सादृश्य वर्त-मान रहनेके कारण सब प्रकारके रोगोंकी प्रादाहिक अवस्थामें बहुत बार

दोनों ही औषध पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेकी आवश्यकता होती है। **फेरम फॉस** जिस तरह प्रादाहिक रोगोंकी प्रथमावस्थामें उपयोगी है, केलि म्यूर भी उसी प्रकार प्रादाहिक रोगोंकी द्वितीयावस्थामें उपयोगी है।

राख या श्वेतवर्णकी मैली जीभ केलि म्यूरका अभाव-सूचक उत्कृष्ट लक्षण है। जिस किसी स्थानसे ही स्राव क्यों न निकले, अगर वह स्राव गाढ़ा, श्वेतवर्ण, लसदार एव फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थयुक्त हो, यह विशेष लाभदायक है। चमडेपर से मैदाकी भाँति भूकनीकी तरह पदार्थ निकलनेपर इस औषधको याद करना चाहिये। डिफ्थिरिया, आमाशय, उदरामय, सर्दी-खाँसी, न्यूमोनिया इत्यादि जिस किसी रोगमें उक्त प्रकारकी जीभ और स्राव निकलनेपर यह उपकारी है। नय प्रकारकी ग्रन्थिकी कोमल स्फीति और प्रदाहित स्थानमें रक्तसञ्चय हेतु स्फीति उत्पन्न होनेपर।

किसी स्थानपर उत्ताप लगनेसे फफोला पडता है, क्योंकि उत्तापसे सौत्रिक या फाइब्रिन पदार्थ नष्ट होता है। केलि म्यूर प्रयोग करनेपर नया फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थकी सृष्टि होकर फफोला पडना आरोग्य हो जाता है।

यकृतपर इस औषधकी तीव्र क्रिया दीख पडती है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—सब प्रकारके प्रादाहिक रोगोंकी द्वितीयावस्थामें जब प्रदाहित स्थान स्फीत हो एव निकले हुए स्रावका वर्ण घना श्वेत या लसदार एव फाइब्रिन या सौत्रिक पदार्थयुक्त हो, तब यह अत्युत्कृष्ट है।

२—जिन सब रोगोंमें जीभ श्वेत या राखके रंग ऐसे मैलसे आवृत रहे।

३—मस्तिष्कावरक-झिल्ली-प्रदाह (meningitis) एव मस्तिष्कमें जल सञ्चय (hydrocephalus) रोगमें प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें रस सञ्चय होनेके पहले प्रयोग हो जानेपर उस प्रकार जलसञ्चय नहीं होता, और जलसञ्चय हो जानेपर भी इस औषधके प्रयोगसे उसी प्रकार जल शोषित हो जाता है।

४—सब प्रकारके चक्षु-रोगमें १म लक्षणमें वर्णित स्राव रहनेपर। कार्नियामें फफोले पड़ते हैं।

५—कोमल मोतियाबिन्द और चोट लगनेके कारण उत्पन्न मोतिया-बिन्दमें यह उत्कृष्ट दवा है।

६—कानकी वेदनाके साथ कर्णमूल स्फीत एवं उसके साथ १म और २य लक्षणोंमें वर्णित लक्षण रहनेपर।

७—कानके बीचके हिस्से या इउस्टेसियन्-ट्यूबकी सर्दी और स्फीतिके कारण बधिरतामें यह औषध निर्दिष्ट है। इसीके साथ १म और २य लक्षणोंमें वर्णित लक्षण रहनेपर।

८—यह डिफ्थिरिया रोगकी प्रधान दवा है। टानसिल-प्रदाहमें भी यह उत्तम है। केलि म्यूरमें निर्दिष्ट जीभका वर्ण (२य लक्षण) रहनेपर फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे।

९—अजीर्ण रोगमें जीभके लक्षणोंके साथ सादृश्य रहनेपर। तैलाक्त द्रव्य और गुरुपाक भोजन सहन नहीं होता।

१०—सब प्रकारके यकृत रोगोंमें जीभके वर्णके साथ सादृश्य (२य लक्षण देखिये) रहनेपर। कोष्ठबद्धता एवं सफेद या फीका मल दीख पड़नेपर। पेशाबके साथ सफेद रंगकी तलछट निकलती है। यकृत-प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें। दाहिने कन्धेमें दर्द।

११—तैलाक्त या गुरुपाक द्रव्य भोजन करनेके कारण उत्पन्न उदरा-मय। पित्तस्रावकी अल्पता हेतु सफेद फीका कीचड़की तरह और पीलापन लिये तरल मल त्यागना।

१२—रक्तामाशय रोगकी प्रधान औषध है। उदरमें काटनेकी तरह तीव्र वेदना। बहुत कूथनके साथ बार-बार मल त्यागना। केवल रक्त अथवा श्वेतवर्णके श्लेष्माका दस्त होना।

१३—जो कोई भी रंग क्यों न हो, यदि वमनमें थक्का-थक्का काला रक्त या गाढ़ा श्वेतवर्णका श्लेष्मा निकले। जीभ श्वेत या राखके रंगवाला।

१४—छोटे-छोटे सफेद रगके सूतेकी तरह कृमि एव इमी कारणसे मलद्वारमें खुजलाहट (नेट्रम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)।

१५—यही प्रमेह-रोगकी प्रधान औपध है (नेट्रम फॉस)। १म लक्षणमें वर्णित लक्षण रहनेपर सभी मूत्र रोगमें व्यवहार्य है। प्रमेह रोगमें अचानक स्राव वन्द होकर अण्डकोष प्रदाहित होनेपर।

१६—सॉफ्ट-सँकर रोगकी प्रधान औपध है। १म लक्षणमें वर्णित लक्षण रहनेपर। वाघी कोमल और स्फीत होनेपर।

१७—सब प्रकारके ग्रन्थि-रोगमें जब तक ग्रन्थि-समूह पत्थरकी भाँति कडे न हों।

१८—अचानक ठण्डा लगना या जलमें भीगनेके कारण ऋतु वन्द हो जाना। ठण्डा लगकर कष्टरजः रोग। ऋतुका रक्त कालापन लिये लाल या काला थक्का-थक्का रक्त। अधिक विलम्बसे अथवा शीघ्र-शीघ्र ऋतुस्राव।

१९—श्वेत-प्रदरमें १म लक्षणमें वर्णित लक्षण रहनेपर।

२०—सूतिका-ज्वर और दुग्ध-ज्वरकी प्रधान औपध है। पहले ही से २।१ मात्रा करके व्यवहार करनेसे और कोई कुफल नहीं होता।

२१—स्फोटक, व्रण, कार्वङ्कल, एरिसिपेलस, गलका इत्यादि रोगोंमे प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें प्रदाहित स्थानमें रस जमकर स्फीत होता है।

२२—यही घुडी (croup) और हूपिंग खाँसीकी प्रधान दवा है (आक्षेपिक होनेपर मैग फॉस ही प्रधान औपध है)। इस औषधके प्रयोगसे गलेके अन्दर सूतेकी भाँति श्लेष्मा (कफ) जमा नही हो सकता।

२३—पाकस्थली या यकृतकी विकृतिके कारण दमा। जीभ श्वेत-वर्ण एव श्वेतवर्णका लसदार चटपट करनेवाला कफ वहुत कष्टसे खाँसकर निकालना पडता है।

२४—वायुनली और श्वासनली सम्वन्धित सभी खाँसियोकी द्वितीयावस्थामें १म लक्षणमें वर्णित श्लेष्मा निकलना एव २य लक्षणमें वर्णित जीभका रग रहनेपर। अत्यन्त कष्ट देनेवाली और सूखी खाँसी।

२५—हृद्‌पिण्डको आवृत करनेवाली झिल्लियोंके प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें यह अति उत्कृष्ट है।

२६—वात-ज्वरके साथ आक्रान्त स्थानमें रसादि सञ्चित होकर स्फीत और वेदनामय होनेपर। नयी बीमारियोंमें बहुत दर्द होनेपर। फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे। वाताक्रान्त स्थान सञ्चालनसे, रातमें और बिछावनकी गरमीसे वृद्धि होती है। गर्दनसे पैरकी ऍडी तक बिजली-सी वेदना।

२७—एक्‌जिमामें १म लक्षणमें वर्णित लक्षण रहनेपर यह उत्कृष्ट है। घाववाले स्थानसे मैदाकी भाँति बुकनी-सा सूखा श्वेतवर्णका चूर निकलता है। फफोलोंकी तरहका एक्‌जिमा।

२८—मुहाँसा (acne) में सफेद भातकी तरह पदार्थ निकलनेपर।

२९—खराब बीजके टीका देनेके कुफल हेतु जिस किसी प्रकारकी चर्मपीडा। फफोलेमय विसर्प (erysipelas)।

३०—प्लेगकी प्रधान औषध है, विशेषतः स्फीति वर्तमान रहनेपर।

३१—सब प्रकारके चेचक रोगकी प्रधान औषध है। प्रथमावस्थामें इस औषधका व्यवहार होनेपर किसी प्रकारका कुफल न होकर ही रोग आराम हो जाता है।

३२—कोदवा (measles) की द्वितीयावस्थामें यह प्रधान औषध है। कोदवाके पश्चात् कुफल हेतु सफेद और फीके रंगका उदरामय, बधिरता, खाँसी अथवा कोई ग्रन्थि स्फीति होनेपर।

३३—यकृत, मूत्रयन्त्र और हृद्‌पिण्डकी विकृति हेतु शोथ। शोथसे आक्रान्त स्थान उज्ज्वल श्वेतवर्ण। शोथके जल, जीभ और पेशाबका रंग सफेद होता है।

३४—किसी स्थानपर चोट लगना, मोच आ जाना अथवा कट जानेकी द्वितीयावस्थामें जब आक्रान्त स्थानमें रस और रक्तादि उत्पन्न होकर स्फीत होता है।

३५—किसी स्थानके जल जानेपर उसकी द्वितीयावस्थामे जब फफोले पडते हैं, उस समय यह उत्कृष्ट है।

३६—यह मृगी-रोगकी प्रायः अमोघ है। चर्मरोगादि बैठ जानेके फलस्वरूप पीडाकी उत्पत्ति। पुनराक्रमणको रोकनेके लिये आक्रमणके अन्तमें सेवनीय। लोकिया-स्राव बन्द होकर सूतिकावस्थामे धनुष्टङ्कार।

३७—टाइफॉयड ज्वरकी प्रधान दवा है (प्रथमावस्थामे फेरम फॉस के साथ पर्यायक्रमसे)। जीभ श्वेतवर्ण या कई रंगोंमें लेपावृत्त। पतला, पीला, फीका या सफेद रंगका मल निकलना।

३८—सब प्रकारके ज्वरकी द्वितीयावस्थामे जीभके लक्षण रहनेपर। प्रायः ही पुराने रोगियोंकी दशामें यकृतादिकी विकृति रहनेपर व्यवहृत होता है। नये ज्वरमें प्रायः आवश्यकता ही नहीं होती है। यही आरक्त-ज्वरकी प्रधान औषध है।

तैलाक्त और गुरुपाक द्रव्योंके खानेसे सभी प्रकारकी पेटकी बीमारियोंकी उत्पत्ति या वृद्धि होना। सब प्रकारके दर्द ही की सचालनसे वृद्धि। वात-व्याधि बिछावनकी गरमीमे भी बढती है।

विशेषत्व (peculiarity)—सब प्रकारके प्रादाहिक रोगोंकी द्वितीयावस्थामें जब प्रदाहित स्थान स्फीत होता है एव जिन सब श्लैष्मिक झिल्लियोंसे श्वेतवर्ण फाइब्रिन या सौत्रिक लसदार प्रकृतिका स्राव निकलता है, उनमें यह अव्यर्थ है। जीभ श्वेत या राखके रगके लेपसे आवृत्त रहना इसमें सुनिर्दिष्ट है। जिस रोगमें इस प्रकारकी जीभका लक्षण रहे, उसमें यह औषध प्रयोग करनेपर कभी निष्फल नहीं होती। चमडेपर फफोले पडना इसका और एक विशेषत्व है। सब प्रकारके रोगोंमें ही सचालनसे वृद्धि इसका प्रसिद्ध लक्षण है। यह संक्षिप्त विशेषत्व यत्नपूर्वक याद रखनेसे सभी रोगोंकी ही आसानीसे चिकित्सा की जा सकेगी।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—इस दवाका मानसिक लक्षण उल्लेखनीय नहीं है। लेकिन रोगीको भूखा रहनेका डर रहता है।

सिर-दर्द (headache)—यकृतकी क्रियामें असमता हेतु सिर दर्द एव इसके साथ क्षुधाहीनता और कोष्ठवद्धता रहती है। जीभ सफेद या राखके रगकी मैलेसे आवृत्त रहती है। श्वेतवर्णके श्लेष्माका वमन।

मस्तिष्कावरक-झिल्लीप्रदाह (meningitis)—प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें रस गिरनेके पहले प्रयोग होनेपर तव स्राव नहीं निकलता। आँखकी पुतली (pupil) फैल जानेपर मालूम होता है कि स्राव निकल रहा है। इस हालतमें केलि म्यूरके व्यवहारसे अच्छा फल मिलता है। पहले ही मे शरीरकी गरमी उच्च इत्यादि रहनेपर **फेरम फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर, अगर रस निकलनेके पहले हो तो रस उत्पन्न नहीं होता एव रस निकलना आरम्भ होनेपर भी इसके व्यवहारसे सब रस शोषित हो जाता है। जीभपर सफेद या राखके रगकी मैलका लेप चढ़ा।

मस्तिष्कमें जलसंचय (hydrocephalus)—सभी लक्षण पूर्ववर्णित मस्तिष्कावरक-झिल्लीप्रदाह की भाँति हैं।

चक्षुरोग-समूह (diseases of the eye)—बायोकेमिक मतसे सब प्रकारके आँखके रोगकी चिकित्सा एक ही प्रकारकी है, इसलिये एक ही साथ लिखा गया। जिस किसी प्रकारका भी आँखका रोग क्यो न हो, अगर आँखसे **गाढ़ी श्वेतवर्ण** या कुछ पीली पीव निकलती हो, तो यह अव्यर्थ है। पीलापन लिये हरी पीव निकलनेपर **केलि सल्फके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। पीले रगकी पीव केलि सल्फके अलावा इस औषधका भी लक्षण है। पलकोंमें सूत-सी लम्बी पीव जमी रहती है। आँखमें पहले फफोलोकी तरह घाव होते हैं एव बादमें ये फैले घावके रूपमें परिणत हो जाते है। कार्नियामें फफोले। मालूम होता है मानो आँखोंमें बालू गिर गयी हो (फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे); आइरिस और रेटिनाके प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें जब पूर्ववर्णित पीव निकलती हो। आँखके नाना प्रकारके रोगमें आँख लाल होनेका लक्षण इसमें दिखलाई नहीं देता। ग्रैन्यूलर आइ-लिड (granular eye-lid) रोगमें यह औषध उत्कृष्ट है। रोग बहुत पुराना होनेपर **कैल्क सल्फ** अच्छा है।

शक्ति—१२x, पुराना होनेपर २४x।

मोतियाबिन्द (cataract)—**कोमल मोतियाबिन्द और चोट लगनेके कारणवश मोतियाबिन्द उत्पन्न होनेपर यह विशेष उपयोगी है।** कैल्क फ्लारके व्यवहारके बाद अधिक कार्यकारी होता है।

कर्ण-रोग समूह (diseases of the ear)—कर्ण-वेदनाके साथ ग्रन्थिकी स्फीति एव उसके साथ जीभपर **श्वेतवर्ण या राखके रङ्गका लेप**। मध्य-कर्णमें या इयुस्टेसियन ट्यूवमें सर्दी और स्फीति। खाद्य-द्रव्य निगलने, नाक झाडने, जोरसे साँस लेने और छोडनेके समय कानके भीतर कडकड आवाज होती है। कर्णमूलकी स्फीति। कानमें नाना प्रकारके शब्दोंके साथ **सफेद, मैलापन लिये सफेद और पीले रङ्गका स्राव निकलना।** इयुस्टेसियन ट्यूवके ऊपर इस औषधकी कार्यकारिता बहुत अधिक है।

शक्ति—३x।

वधिरता (deafness)—मध्यकर्णकी पुरानी सर्दीके हेतु वधिरतामें यह औषध प्रायः बहुत कम ही विफल होती है। इयुस्टेसियन ट्यूवमें या मध्यकर्णके भीतर स्फीति होनेके कारण वधिरता। कानके वाहरकी स्फीतिके कारण वधिरता। गलरोगके कारण वधिरता। **गाढ़ा श्वेत वर्णके कानका स्राव** इसका निर्वाचक लक्षण है। जीभ श्वेत या राखके रगकी मैलसे आवृत्त। कर्णस्रावके आरम्भसे ही यह औषध व्यवहृत होनेपर वधिरता उत्पन्न नही हो सकती।

शक्ति—३x।

सर्दी (coryza)—सर्दीकी द्वितीयावस्थामें जब नाकसे **गाढा अस्वच्छ श्वेतवर्णके श्लेष्माका स्राव निकलता है। जीभ श्वेत या राखके रङ्गकी मैलसे आवृत रहती है।** मस्तक भारी, नाक बन्द, सूखी सर्दीके कारण नाकसे किसी प्रकारका स्राव ही नहीं निकलता। सूखा कडा श्लेष्मा होनेके कारण जोर-जोरसे नाक झाडना पडता है; क्योंकि वह तालुमें अटका रहता है।

मुखके घाव (aphthæ)—शिशुओंके जीभमें, ओठमें और मुखके अन्दर **श्वेतवर्णके छोटे-छोटे घावमें** यह अति उत्तम औषध है। लारका स्राव रहनेपर नेट्रम म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे। एफ्थस (aphthous), मेम्ब्रेनस् (membranous), पैरासाइटिक (parasitic) और अल्सरेटिव (ulcerative) नामक मुखके रोगोंमें केलि म्यूर ही प्रधान औषध है। इन रोगोंमें मुखके अन्दर सफेद रंगके घाव होते हैं। मसूढ़ा स्फीत होता है।

मसूढ़ोंके फोड़े (gum boil)—मसूढ़े स्फीत होनेसे ही इस दवा का प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि इस औषधसे स्फीति अति शीघ्र ही घट जाती है। मसूढ़ेकी स्फीतिके कारण दन्त-वेदना। मसूढ़ेकी स्फीतिमें पीव उत्पन्न होनेके पहले इसका प्रयोग होनेसे (फेरम फॉस) पीव उत्पन्न नहीं होती। किन्तु विलम्ब होनेपर अर्थात पीव उत्पन्न हो जानेपर **साइलिसिया**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है। जीभ श्वेत या राखके रंगकी मैलसे आवृत्त रहती है।

टान्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—नये या पुराने दोनों प्रकारके टान्सिल-प्रदाहमें यह व्यवहृत होता है। जब टान्सिल **स्फीत** होता है, उस समय यह एक अति उत्कृष्ट औषध है। जीभकी भाँति टान्सिलके ऊपर भी **श्वेत या राखके रंगका लेप** दीख पड़ता है। निगलनेमें बहुत कष्ट, तरल पदार्थसे भी बहुत तकलीफ माल्हम होती है। टान्सिल स्फीत होनेपर साँस लेने और छोड़नेमें भी कष्ट होता है। इससे पीवकी उत्पत्ति रुक जाती है। प्रदाह रहनेपर प्रथमसे ही **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर शीघ्र ही सभी तकलीफें दूर होती हैं।

रोगी-विवरण—(क) दिनाक ७-११-५२ को कलकत्तेके खिदिरपुर निवासी एक एस-बी० इन्स्पेक्टरके ७-८ वर्षकी उम्रके लड़केकी चिकित्सा आरम्भ की। प्राय. एक सप्ताह भोगनेके बाद रोगीको मेरी चिकित्सामें रखा गया। ज्वरका उत्ताप १०३ डिग्री (बगलमें), थोड़ा ही उतरता है, जीभ मोटे सफेद मैलसे ढॅकी, प्यास नहीं थी, कब्ज था, बेचैनी नहीं थी,

दोनों बगलका गला बहुत फूल गया था, टॉन्सिल दोनों इतने फूल गए थे कि दोनों टॉन्सिल मानो आपसमें मिल जाकर गलेके भीतर बिलकुल बन्द हो जानेकी दशा ला दी थी और इसके फलस्वरूप साँसमें काफी तकलीफ हो रही थी। दोनों छातीमें श्लेष्माका शब्द—ब्रॉङ्काइटिस, आँखें कुछ लाल रंगकी, किन्तु सिर-दर्द नहीं था। टॉन्सिल प्रदाहकी जो अवस्था देखी, उससे उसे तुरन्त घटानेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। क्योंकि अभीसे ही उसके फलस्वरूप श्वासकष्ट दीख पड रहा था। होमियोपैथिक मतसे ऐसी कोई दवा ध्यानमें नहीं आई जिसके प्रयोगसे तुरन्त उपसर्गोंमें कमी आए। मैंने **फेरम फॉस** ६x व **केलि म्यूर** ६x पर्यायक्रमसे तीन मात्राके हिसाबसे ६ मात्राका प्रयोग किया।

दिनाक ८-११-५२ को खबर मिली कि टॉन्सिल प्रायः आधा घट गया है, किन्तु अन्यान्य उपसर्ग पहलेकी ही तरह हैं। वे ही दवा पर्याय-क्रमसे दैनिक दो मात्राके हिसाबसे चार मात्रा दो दिनोंके लिए दी गई।

दिनाक १०-११-५२ को खबर मिली कि टॉन्सिल व गलेका फूलना प्रायः नहीं है। जीभपरका सफेद मैल बहुत घट गया है। पाखाना हुआ है और ज्वर भी कुछ घटा है। और तीन दिनोंके औषध सेवनसे रोगीके सभी उपसर्ग दूर हो गए। इतनी शीघ्रतासे आरोग्य होनेकी मुझे आशा न थी।

(ख) दिनाक ३१-८-५३ के सायकाल दक्षिण कलकत्तेके टालीगञ्ज अञ्चलके श्री नृत्यगोपाल घोषकी स्त्रीके चिकित्सार्थ मैं बुलाया गया। रोगिणीको उस दिन दोपहरसे कष्टदायक गलेके दर्दके साथ १०३ डिग्री ज्वर चढ गया था। किसी एक एलोपैथिक चिकित्सकको दिखाया था। वे दाहिने टॉन्सिलमें सेप्टिक हुआ है और पक जाकर उसके अन्दर पीव उत्पन्न हो गई है ऐसा कहे थे। रोगिणीके घरमें बराबर ही एलोपैथिक चिकित्सा चलते रहनेपर भी कई एक महीनेसे मैं उस परिवारमें चिकित्सा कर रहा था। होमियोपैथिक चिकित्सासे शीघ्र ही आरोग्य हो जायगा ऐसा विश्वास हो गया था। रोगिणी बहुत ही भयभीत हो पडी थी।

उन्होंने पूछा कि इतना बड़ा रोग होमियोपैथिक दवासे आरोग्य होगा कि नहीं? मैं उन्हें ढाढ़स देकर लक्षण संग्रह करनेमें उद्यत हो गया। किन्तु कोई उल्लेखनीय लक्षण प्राप्त नहीं हुआ। टॉन्सिल वास्तवमें पका नहीं दिखा। टॉन्सिल फूला और उसके चारों ओर सफेद लेप था। मुँहमें बदबू थी। रोगिणी कष्ट सह सक रही थी। चुपचाप पड़े रहना स्वभाव है। प्यास नहीं है। कई एक वर्ष पहलेसे ही दोनों टॉन्सिल बढ़े हुए थे। मैंने **मर्क प्रोटो आ० २००** एक मात्रा दी।

दिनाक १-६-५३—दर्द बहुत कम हो गया था। ज्वर ९८.४ डिग्री था। जीभ सफेद मैलसे ढँकी थी। मैंने कोई दवा नहीं दी।

दिनाक २-६-५३—पिछले दिनके सायकालसे ज्वर कुछ बढ़ा था और बाईं ओरका टॉन्सिल भी रोगग्रस्त हो गया था। किन्तु पहलेकी तरह अत्यधिक कष्टदायक नहीं था। मैंने निश्चित और उत्तम फलकी आशामें **फेरम फॉस** ६x व **केलि म्यूर** ६x हर दवा ३ मात्रा कर ६ मात्रा पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेके लिए कह दिया। दूसरे दिन हर विषय ही घटे दीख पड़े। वही दवा चार मात्रा कर और भी दो दिनोंके प्रयोगसे रोगिणी सम्पूर्ण रूपसे स्वस्थ हो गई। बादमें फिर और दवा देनी नहीं पड़ी।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—यह डिफ्थिरिया रोगकी प्रधान और एकमात्र दवा है। ज्वर रहनेपर आरम्भसे फेरम फॉसके साथ इस औषधका पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर प्राय. प्रत्येक रोगी ही आरोग्य हो जाता है। इसके व्यवहारसे सौत्रिक (fibrinous), कृत्रिम श्लेष्माखण्ड (false membrane) दूर हो जाता है। **गलेके विभिन्न स्थानोंमें श्वेतवर्णके घाव एवं जीभ, टॉन्सिल इत्यादिके ऊपर श्वेत या राखके रगका लेप पड़ता है।** टान्सिल-प्रदाह अध्याय भी देखना चाहिये। सेवनके संग-संग इस औषधका ३x चूर्ण आधा सेर गरम पानीके साथ मिलाकर कुल्ला करना चाहिए। शक्ति—३x।

सभी गलनलियोंके रोगमें जीभ और आक्रान्त स्थानपर श्वेतवर्णका

लेप इसके प्रयोगका लक्षण है। यह प्रदाहकी द्वितीयावस्थाकी औषधि है। बाहरी प्रयोग न कर ६x शक्तिके द्वारा उपरोक्त लक्षण देखकर ग्रन्थकार बहुत अवसरोंपर फेरम फॉस और केलि म्यूर पर्यायक्रमसे व्यवहार कर केवल कई एक घण्टोंके अन्दर ही अति आश्चर्यजनक फल प्राप्त किये हैं।

रोगी-विवरण—(१) सम्भवतः १६३३ ई० की घटना है। खड्आ ग्रामके श्री व्रजदासकी स्त्रीको डिफ्थिरिया हो गया एवं स्थानीय ऐलोपैथिक चिकित्सकोंने उसी दिन ही सन्ध्याके समय रोगिणीकी हालतको खतरनाक कहकर रोगिणीको छोड़ दिया। उन लोगोंने कहा कि या तो शहरसे किसी बड़े डाक्टरको लाया जाय या विजय बाबूके पास जाया जाय, क्योंकि सुनते हैं वे बहुत दुरारोग्य कठिन रोगियोंकी भी चिकित्सा किया करते हैं। किन्तु रातको मैं कहीं भी रोगी देखनेके लिये नहीं जाता हूं, इसलिये वे लोग निकटके गाँवके कई सज्जन पुरुषोंके यहाँसे अनुरोध-पत्र लाकर मुझे रोगिणीको देखने जानेके लिये विशेष रूपसे अनुरोध किये। रोगिणीकी हालत बहुत ही खराब सुनकर मैं जानेको तैयार हो गया। उस समय रातको ११ बजा था। मैं जाकर नीचे लिखे हुए लक्षणोंको संगृहीत किया।

रोगिणी प्रौढ़ा, ६-७ सन्तानोंकी माँ थी, किन्तु देखनेसे अल्पवयस्का मालूम पड़ती थी। पूरा मुखमण्डल अस्वाभाविक रूपमें स्फीत हुआ था, ओंठ फूल जानेके कारण जीभ देखना भी कठिन-सा हो गया था। निरन्तर लार गिर रहा था, मुखमें दुर्गन्ध व प्यास थी—किन्तु पीनेका कोई उपाय नहीं, बोलना पूर्णरूपसे बन्द था, श्वासकष्टके कारण बहुत बेचैनी थी और केवल पैर पकड़नेके लिये हाथोंको बढ़ा रही थी। शरीर अत्यधिक गरम, जीभ और टान्सिल इत्यादि श्वेतवर्णके घावोंसे आवृत्त एवं बीच-बीचमें आँखोंसे पानी ढुलका जा रहा था। सोनेमें असमर्थ थी।

मैं **केलि म्यूर** ६x और **फेरम फॉस** ६x एक-एक घण्टेके अन्तरसे पर्यायक्रमसे गरम पानीके साथ सेवन करानेका उपदेश देकर चला आया। कह दिया कि रोगिणीके सो जानेपर औषध पिलाना बन्द रहे।

दूसरे दिन प्रातःकाल रोगिणीकी हालत बहुत चिन्ताजनक हो पडने पर दूसरे-दूसरे चिकित्सकोंने कहा कि रोगिणीके जीवनकी आशा नहीं, एव पडोसके लोग आकर घर भर डाले। हर एक व्यक्ति ही एक सकटमय मुहूर्तकी आशका कर रहा था। चिकित्सकगण वायुनली (trachea or windpipe) में अस्त्रोपचार करनेके विषयपर आलोचना कर रहे थे। इसी बीच मेरी बुलाहट आनेपर मैं सुबह करीब ६ बजे वहाँ जा उपस्थित हुआ। मैंने देखा कि रोगिणीको बरामदेमें उतारा गया है एव सभी ऐसा सोच रहे हैं कि रोगिणीकी मृत्यु होनेमें ज्यादा देर नहीं है। मै भी रोगिणीकी परीक्षाकर हताश हो गया। नाडी अत्यन्त दुर्बल; किन्तु आशा हुई जब कि मैंने सुना कि मेरी दी हुई औषधि की २/१ मात्रा सेवन करते ही रोगिणीके जरा सो पडनेपर घरके सभी लोग सो पडे। रोगिणीके जग उठनेपर भी वे लोग नहीं जगे एव उसके बाद ही से इनकी ऐसी हालत देख रहे है। अब औषध सेवन करानेका कोई उपाय नहीं है, क्योंकि मुख और जीभ इतने फूल गये हैं कि मुखमें औषध डालना असम्भव है। ऐसी अवस्थामें रोगिणीके स्वामीने रोगिणीको अनावश्यक कष्ट देकर औषध सेवन करानेमें आपत्ति की। मै जब तक साँस तब तक आश यह महावाक्य सभी को सुनाकर पर्यायक्रमसे **केलि म्यूर** ६x और **फेरम फॉस** ६x प्रथम एक घण्टेके अन्दर दो बार एव बादमें हर-एक घण्टेके अन्तरसे चम्मचकी मुठियाके ऊपर रखकर जीभके ऊपर रखने और ६/७ घण्टेके बाद मुझे खबर देनेके लिये कह दिया। आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। दो मात्रा औषध सेवन करानेके बाद ही रोगिणी स्वय अपने ही औषध खानेमें समर्थ हुई थी एव तीसरे पहर ३ बजे पान खा सकती हैं या नहीं, पुछवा भेजी थी। और २/१ **केलि म्यूर** भिजवा दिया एव रोगिणी सम्पूर्ण स्वस्थ हुई।

दूसरे दिन मुझे ले जानेके लिये आदमी आया। रोगिणी अच्छी हो जानेके कारण मैंने जानसे इन्कार कर दिया। किन्तु वह आदमी बहुत ही जिद्द करने लगा—जाना ही पडा। घरपर जानेसे रोगिणीके स्वामी ने

कहा कि उनकी स्त्रीके जीवनकी रक्षा होनेके कारण वे मुझे कुछ धन देना चाहते हैं। क्योंकि स्त्रीकी मृत्यु होनेपर पाँच लड़के-लड़कियोंको लेकर गृहस्थी सम्हालना उनके लिए बिलकुल ही निराशाजनक हो पड़ता। अतएव मेरी माँग कुछ अधिक होनेपर भी वे कुछ जमीन बेंचकर भी उस माँगको पूरा करेंगे। मैंने अपने निश्चित पारिश्रमिक (फीस) के अलावा और कुछ लेनेसे इन्कार कर दिया। चिकित्सक-जीवनका धर्म ही है रोगीकी सेवा। रोगीके आरोग्य होनेकी खबरसे ही मैं बहुत ही आनन्दित होता हूँ और यही मेरा पुरस्कार है। श्री भगवान् ही वास्तवमें आरोग्य करनेके अधिकारी हैं। कृपाकर वे मुझे उपलक्ष बनाकर जो आश्चर्यजनक आरोग्य-क्रिया सम्पन्न किये हैं, उसके लिए मेरे प्रति उनकी असीम कृपा ही सूचित हुई है। इससे अधिक और कुछकी आशा मैं नहीं करता। इसके बाद घरके लिए रवाना हो गया।

(२) यह भी एक सामयिक घटना है। दिलपामार (एक जगहका नाम है) के वृद्ध जानकी हालदार मारात्मक डिफ्थिरियासे आक्रान्त हुए। पहले ही से उच्च ज्वरके साथ जीभ, गला इत्यादि सफेद पर्दोंसे ढँक गये। इसके साथ श्वासकष्ट, गलेमें वेदना, प्यास, लार गिरना, वाक्-रोध, तन्द्रा, प्रलाप, कोष्ठबद्धता प्रभृति लक्षण थे। रातमें हालत इतनी चिन्ताजनक हो पड़ी कि स्वयं अपनी मृत्यु निश्चित समझकर अपने सगे-सम्बन्धियोंको यथा-उचित कहना-सुनना कर चुके। सुबह मैंने परीक्षाकर उनकी हालत बहुत ही खराब पायी।

जो कुछ भी हो, **फेरम फॉस** ६x एवं **केलि म्यूर** ६x पर्यायक्रमसे व्यवहारकर रोगी दो दिनोंके अन्दर ही स्वस्थ हो गया। फेरम फॉस एक मात्रा एवं केलि म्यूर दो मात्रा इसी प्रकारसे इस रोगीको दवा सेवन कराया गया था। अवसन्नावस्थाके लिये २/१ मात्रा **केलि फॉस** ६x क्रम दिया गया था।

कहावत है, "राखै हरि मारै कौन, मारै हरि तो राखै कौन", अर्थात् अदृष्टमें जो कुछ लिखा है उसे कोई भी नहीं मिटा सकता, पर कर्मके

द्वारा इस लेखको परिवर्तित किया जा सकता है या नहीं—यह आलोचना योग्य विषय है। अतएव यहाँ इसकी कोई आवश्यकता नहीं। रोगीको पथ्य दिया गया एव रोगी चलने-फिरनेमें समर्थ हो गया। किन्तु कितने आश्चर्यकी बात है कि रोग-भोगके समयसे रोगीकी तरबूज और दही खानेकी इच्छा किसी तरहसे नहीं गई, तदुपरान्त प्राकृतिक नियमसे वह इच्छा धीरे-धीरे बढ़कर रोगीको इच्छा निवृत्तिके लिए पागल-सा बना दिया। यद्यपि मैंने उनको विशेष रूपसे चेतावनी देकर कह दिया था कि सम्भव है वह इच्छा ही उनकी मृत्युके लिये कारण बने। क्योंकि डिफ्थिरिया आरोग्य होनेके कुछ समय बाद ही खट्टे और ठण्डे खाद्यद्रव्योंसे प्राय. ही म्यूकस-झिल्लियाँ पुनः आक्रान्त हो जाया करती है। वासना (इच्छा) ही कर्मफलका जनक है। प्रत्येक नयी वासना ही बीजाकार रूपमें मन-समुद्रकी सतहमें रहकर प्राकृतिक नियमानुसार पहले बुदबुदाना और बादमें प्रबल बवण्डरकी सृष्टि कर मनको चचल बना देती है। चचलता ही से अशान्ति भोगना पडता है एव वही कर्मफलका स्रस्टा है। जो यौगिक उपायसे या प्रबल आत्मसयमके द्वारा इस अशान्त चित्तको वशीभूत करनेमें समर्थ हुए हैं, वे ही सभी वासनाओंकी जडमें कुठाराघात किये हैं। जो कुछ हो, पासके ही एक पडोसके यहाँ श्राद्धके निमन्त्रणमें दिल भरकर दही और तरबूज खाकर ६।७ घण्टेके बाद ही वह रोगी फिर बीमार हो पडा एव रात ही के अन्दर पहलेसे भी प्रबल रूपमें डिफ्थिरियाकी बीमारीसे आक्रान्त हो बेहोश हो गया। दूसरे दिन रोगी देखनेके लिए बुलावेमें जाकर रोगीके सगे-सम्बन्धियोंको अन्तिम मुहूर्तके लिये तैयारी करनेको कहकर मैं लौट आया। इस हालतमें भगवानका नाम ही जीवके लिये अन्तिम औषध है। कई एक घण्टेके बाद ही रोगीकी मृत्यु हो गई।

(३) पिछले १६४७ सालके २३ दिसम्बरको खुलनासे बहुत ही तडके स्टीमरसे चालना पहुँचा और वहाँसे नावके जरिए चूनकुडी नामक गाँवमें एक रोगी देखने गया। खुलना शहरसे मेरे गन्तव्य स्थानकी दूरी प्रायः १५ मील थी। रोगीका नाम—श्री सुधांशु कुमार राय, उमर २२-२४ वर्ष,

४ दिनोंसे गलेके अन्दर कुछ हुआ था। इसके लिए असहनीय कष्ट, मुख बिलकुल बन्द हो गया था—हाँ नहीं किया जाता, गला फूल गया था, उसके साथ ऊँचा शरीरका ताप, ज्वर किसी समय भी नहीं छूटता, रोगी अस्वाभाविक रूपमें कमजोर हो पड़ा था, करवट लेनेकी भी शक्ति नहीं थी, कष्टके कारण रातको नींद नहीं होती। दो चिकित्सक होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा कर रहे थे। दिन-रात नियमित रूपसे और बहुत बार कर एकोनाइट, बेलेडोना, हिपर सलफर, मर्क सल्फ इत्यादि औषधियाँ दी गई थीं, किन्तु रोगीकी हालत नित्य ही तेजीसे खराबीकी ओर बढ़ रही थी। रोगी पितृहीन और वंशमें एकलौता लड़का होनेके कारण सभीने बहुत ही घबड़ा कर मुझे बुलाया था।

बड़े कष्टसे गलेकी परीक्षा कर रोगकी उग्रता समझ सका। तप्पी लगानेके आकारमें फैला सफेद घाव गलेके दाहिनी ओर आक्रमण कर तेजीसे क्षय होता जा रहा है, गलेके बाईं ओर भी आक्रमण किया है। पासमें इधर-उधर और भी २-४ सफेद घाव देखा। सभी मानो डर-से गए हैं, इससे डिफ्थिरिया न कहकर एक प्रकार क्षयकारक घाव कहकर रोगका नामकरण किया। पहलेके चिकित्सकोंमें किसीने रोगीको हाँ कराकर रोगकी परीक्षा नहीं कर पाये थे। मैंने कौशलसे इस कार्यको सम्पन्न किया।

औषध—केलि म्यूर ६x, ८ मात्रा और फेरम फॉस ६x, ४ मात्रा। तीन दिनोंके लिए व्यवस्था की गई। पहले दिन ६ मात्रा, उसके बादके दिन ४ मात्रा और तीसरे दिन २ मात्रा। रोगीके सगे-सम्बन्धियोंने रोज ही एक बार खबर लेने-देनेकी व्यवस्था करनी चाही, किन्तु मैंने कहा—इसकी जरूरत नहीं है।

चौथे दिन खबर मिली कि रोगीको आश्चर्यजनक फायदा दीख पड़ा है। तीन दिनोंके अन्दर ही रोगी सम्पूर्ण आरोग्य हो गया है, चल-फिर सकता है, घाववाले स्थानपर केवल लाल दागके सिवाय और कोई दूसरा उपसर्ग ही मौजूद नहीं है। रोगीको अन्नका पथ्य देनेकी व्यवस्था की गई। औषध फेरम फॉस १२x व कैल्क फॉस ६x कई एक मात्रा दी गई। रोगीके सम्पूर्ण

स्वस्थ हो जानेके कारण इस रोगके लिए और किसी दवाकी आवश्यकता न हुई।

मन्तव्य—इस प्रकारके एक भयानक प्राणघातक रोगकी चिकित्सा इतने, कल्पनासे वाहर, बहुत थोडे समयमें अन्य किसी चिकित्सासे क्या सम्भव है ? दूसरे मतकी चिकित्सामें कितने रुपए खर्च होते यह भी विचार करना आवश्यक है।

स्वरभग (hoarseness)—ठण्डा लगनेके कारण स्वरभग। रोग की द्वितीयावस्थामें जब खाँसनेपर श्वेतवर्णका कफ निकलता है। जीभ पर सफेद रंगकी मैल। कोष्ठवद्धता। उक्त लक्षण रहनेपर, रोग पुराना होनेपर भी यह व्यवहृत होता है।

केलि सल्फ—केलि म्यूरके लक्षण रहनेपर भी जब उससे कुछ उपकार नहीं होता, उस समय इस औषधसे उपकार होना सम्भव है।

अजीर्ण (dyspepsia)—अजीर्णताके साथ **जीभ श्वेत या राखके रंगके लेपसे आवृत रहना। तैलाक्त-द्रव्य खाना सहन नहीं होता—**—खाने ही से तैलाक्त द्रव्योंके डकार उठते हैं और जी मिचलता है। पेठा इत्यादि गुरुपाक खाद्य खाना सहन नहीं होता। उन सब चीजोंके खानेसे पाक-स्थलीमें वेदना और जलन उत्पन्न हो जाती है। समय-समयपर वमन होता है और उस वमनमें तैलाक्त-द्रव्य, अस्वच्छ और श्वेतवर्णका श्लेष्मामय पदार्थ दीख पडते हैं। पेट फूल जाता है और पेटमें वायु उत्पन्न होती है। गरम जल या दूध पान करनेके कारण आमाशय-प्रदाह (फेरम फॉस)। अच्छी भूख नहीं लगती एव अत्यन्त कोष्टवद्धता रहती है। मुखसे पानी निकलता है। मुखका स्वाद तीता।

कवल या कामला (jaundice)—कवल रोगकी चिकित्सामें केलि म्यूर ही सर्व प्रधान दवा है। कवल रोगमें जब सफेद-सा मल, सफेद जीभ व पीले रंगका पेशाव दीख पडता है, तो उस समय केलि म्यूर अति उत्तम औषध है। कब्ज या उदरामय जो भी क्यों न रहे, मलका रग व जीभपरका लेप पहले कहे हुए प्रकारके होनेसे ही हुआ, यह दवा निःसन्देह

फलदायक होगी। दवाकी शक्ति—६x, कभी १२x शक्ति मुख्यतः व्यवहृत होती है।

कवलके अन्यान्य औषध—फेरम फॉस, केलि म्यू, केलि सल्फ, नेट्रम म्यू, नेट्रम फॉस, नेट्रम सल्फ लक्षणानुसार व्यवहृत होते हैं।

नेट्रम सल्फ—पीले रगकी त्वचा, पित्तके निःसरणको नियन्त्रित करनेके लिये नेट्रम-स० रोगकी प्रधान दवा केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है। पित्तजनित शूलके साथ तिक्त श्लेष्माका वमन होनेपर। क्रोध या विरक्तिके बाद।

नेट्रम म्यूर—कोष्ठवद्धता, लार निकलना, जल-सा वमन, उदरामय रहनेपर यह दवा व्यवहृत होती है। निद्रालुता। क्विनाइन व्यवहारके बाद।

नेट्रम फॉस—खट्टी गधमय उदरामय। हरा या सफेद मल।

यकृतके रोग (diseases of the liver)—यकृत प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें जब कि यकृतके अन्दर जलसचय होकर यकृत बढ गया हो। दाहिने कन्धेमें वेदना और भार बोध होना। जीभका स्वाद तीता। जीभ सफेद या राखके रगकी मैलसे ढकी हुई। कोष्ठवद्धता अथवा फीके या सफेद रगका मल। मैलेरिया ज्वरके बाद यकृतकी वृद्धि। पेशावके साथ सफेद रगकी तलछट दीख पडती है। वमनमें कभी-कभी काला थक्का-थक्का रक्त निकलता है। यकृतकी क्रियामें विलक्षणता हेतु उदरी-रोगकी प्रधान दवा है। सब प्रकारके यकृत-रोगके पूर्ववर्णित अजीर्ण अध्याय देखिये। यकृतके रोगमें निम्नलिखित उदरामय शीर्षक विषय भी देखिये। शक्ति—१२x।

उदरामय (diarrhœa)—पित्तस्रावमें कमी होनेके कारण सफेद, फीका, कीचड़की भाँति और पीलापन लिए पतला मल त्यागना। सफेद रंगका अजीर्ण मल भी निकलता है। उदर स्फीत और वेदनामय, विशेषतः दाहिनी ओरका उदर। दाहिने कन्धेमें वेदना मालूम होती है। जीभ श्वेत अथवा राखके रंगकी मैलमे आवृत्त रहती है। तैलाक्त या गुरुपाक

द्रव्य खानेके बाद अतिसार। टाइफॉयड ज्वरके साथ पूर्व वर्णित प्रकार मलस्राव।

रोगी-विवरण—एक ग्रन्थकार साधारणतः दैनिक जितना दूध पीया करते हैं, उससे प्रायः अढ़ाई सेर करके अधिक दूध पीने लग गये। फलस्वरूप कई-एक दिनोंके अन्दर ही पेटकी गड़बड़ी दिखाई दी एवं पेटमें वायु उत्पन्न होने लगा। एक दिन प्रातःकाल देखा कि सफेद रंगका मल निकला है। दूधके परिमाणको घटाकर एक मात्रा **केलि म्यूर** ३x सेवन करनेके बाद मलका रंग बदल गया। आश्चर्यका विषय तो यह है कि फिर द्वितीय मात्रा औषधका व्यवहार करना ही नहीं पड़ा।

हिचकी (hiccough)—हिचकीके साथ यकृतकी विशृंखलता एवं जीभ सफेद रंगकी मैलेसे आवृत्त और कोष्ठबद्धता रहनेपर।

आमाशय (dysentery)—यही इस बीमारीकी प्रधान दवा है। पेटमें काटनेकी भाँति तीव्र वेदना। बार-बार मल त्यागनेकी इच्छाके साथ अल्प मात्रामें मल त्यागना। मल त्यागनेके समय बहुत कूथन देना पड़ता है, इसलिये मलद्वारमें अत्यन्त वेदना। इस वेदनाकी अधिकता हो पड़नेपर रोगी कभी-कभी रो पड़ता है। श्वेतवर्णके श्लेष्माका अथवा केवल रक्तका दस्त या श्लेष्मा-मिश्रित दस्त। मल काईकी तरह अथवा पीवसे भरा हुआ पिच्छिल मल। जीभका रंग सफेद अथवा राखके रंगका। प्रथमावस्थामें यह औषध **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर प्रायः अति शीघ्र रोग आराम हो जाता है। किन्तु यदि वेदना आक्षेपिक हो एवं बार-बार अल्प परिमाणमें श्लेष्माका दस्त हो, तो **मैग फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

कोष्ठबद्धता (constipation)—यकृतकी क्रिया-विकृतिके हेतु कोष्ठबद्धता। जीभ सफेद या राखके रंगकी मैलसे आवृत्त। मल फीका सफेद-सा और कीचड़के रंगका। अच्छी भूख नहीं लगती। गुरुपाक और तैलाक्त द्रव्य खानेके कारण कोष्ठबद्धता।

वमन (vomiting)—काला थक्का-थक्का रक्त वमन जिस किसी

रोगमें दीप्त पड़े, उतने ही यह उपयोगी है। गाढ़ा श्वेतवर्णका श्लेष्मा
वमन। जीभपर सफेद या राखके रंगकी मैल। यकृत विकृत रहनेपर।

अर्श (बवासीर—piles)—अर्शसे काला थक्का-थक्का रक्त निकलने
पर यह विशेष उपयोगी है। कैल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे
व्यवहार्य है।

कृमि (worm)—छोटे-छोटे सफेद रंगके सूतेकी तरह कृमि अथवा
उस प्रकारके कृमिके कारण मलद्वार खुजलानेपर **नेट्रम फॉसके** साथ
पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।

प्रमेह (gonorrhœa)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है
(नेट्रम फॉस)। **स्फीतका रहना एवं गाढ़े सफेद रंगके पिच्छिल
श्लेष्माके स्रावका होना इसका निर्दिष्ट लक्षण है।** मूत्रयन्त्रके
प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें। शक्ति—३x। स्फीतिके रहनेपर ३x शक्ति
१५ ग्रेन एक आउन्स जलके साथ मिश्रितकर जलपट्टी देनी चाहिये।
पुराने ग्लीटकी अवस्थामें (chronic stage of gleet) स्फीति न रहनेपर
नेट्रम फॉस ही प्रधान दवा है।

अण्डकोषके रोग (diseases of the scrotum)—प्रमेह रोगमें
अचानक स्राव बन्द होकर अण्डकोष प्रदाहित और स्फीत होनेपर यह
उत्तम औषध है। नये अण्डकोष-प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें एव पुराने
अण्डकोष-प्रदाहमें उपयोगी है।

मूत्र सम्बन्धीय रोग-समूह (diseases of the urinary system)—
सभी प्रकारके मूत्रयन्त्रके रोगोंमें प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें जब स्फीतिकी
उपस्थितिके साथ सफेद रंगका गाढ़ा श्लेष्मा स्राव होता है। पुराने
मूत्राशय-प्रदाह (chronic cystitis)। पेशाबमें यूरिक एसिडकी
तलछट पड़ती है एव पेशाब धुमैले रंगका होता है।

उपदंश (syphilis)—यही संकर (chancre) की सर्व प्रधान
औषध है। जब आक्रान्त स्थान स्फीत एव उसमेंसे सफेद रंगकी पीव
निकलती है। पुराने उपदंशके साथ सफेद रंगके रसका स्राव। जीभ

सफेद रगकी मैलसे आवृत्त रहती है। उपदश रोगकी द्वितीयावस्थामें जब शरीरके चमडेपर गोल-गोल दाग उत्पन्न होते हैं। ३x शक्ति घावके ऊपर छिडक देने और दैनिक ४-५ मात्रा करके सेवन करनेसे प्रायः ३-४ दिनोके अन्दर ही उपदश आरोग्य हो जाता है। पहले ३x चूर्णके व्यवहारसे उपकार होकर यदि वह उपकार होना रुक जाय, तब ६x और १२x शक्तियोका प्रयोग करना पडता है।

बाघी (bubo)—बाघी कोमल एव स्फीत होनेपर यह अति उत्कृष्ट औषध है।

ग्रन्थि-रोग समूह (diseases of the glands)—सब प्रकारके ग्रन्थि-रोगकी यही प्रधान औषध है। ग्रन्थि पत्थरकी भाँति कडी न होने तक यही प्रधान दवा है। पत्थरकी तरह कडी हो जानेपर भी यह **कैल्क फ्लोर**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। स्फीत रहनेसे **फेरम फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे। बाहरी प्रयोगकी भी आवश्यता होती है।

स्वल्परजः (amenorrhœa)—अचानक ठण्डा लगकर या अधिक समयतक पानीमें रहनेके कारण ऋतु वन्द होनेपर यह उपयोगी है। सर्दी लगनेके कारण भी ऋतु वन्द हो सकता है। सफेद रगकी मैल चढी जीभ। यकृत और ग्रन्थिकी क्रिया विकृतिके कारण रोग।

कष्टरजः (dysmenorrhœa)—अगर ठण्डा लगकर कष्टरज. रोग उत्पन्न हो एव उसके साथ ही यदि निकला हुआ रक्त काला या कालिमा लिये लाल रगका अथवा थक्का-थक्का काला रक्त रहे, तो यह उपयोगी है। जीभका रंग सफेद।

ऋतुस्राव (menstruation)—इस औषधमें अधिक विलम्बसे ऋतुस्राव होनेका लक्षण (केलि फॉस) जिस तरह है, उसी प्रकार शीघ्र-शीघ्र ऋतुस्राव होनेका लक्षण भी है (कैल्क फॉस)। ऋतुका रक्त थक्का-थक्का या लसदार काला, अलकतरा-सा काला (केलि फॉस) ऋतुस्राव।

श्वेत-प्रदर (leucorrhœa)—**दूधकी भाँति सफेद रङ्ग, गाढ़ा**

और अप्रदाहिक श्लेष्मा-स्रावी श्वेत-प्रदर। जरायु मुखके घावसे भी उसी प्रकार स्राव निकलनेपर यह व्यवहार्य है।

जरायु-प्रदाह (metritis, endometritis)—जरायुमें रक्ताधिक्य होनेपर पुराने या नये रोगकी द्वितीयावस्थामें। जरायुकी वृद्धिको घटानेके लिये प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें। जरायु स्फीत, बढी हुई और तलपेटमें भार मालूम होनेपर। जीभपर सफेद रंगकी मैल रहनेपर तो कोई बात ही नहीं।

ओवरीके प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें। आरम्भसे ही प्रयोग करनेपर पीवका उत्पन्न होना रुक जाता है (केल्क सल्फ)।

दुग्ध-ज्वर (milk-fever)—यही प्रधान औषध है। स्तन स्फीत, वेदनायुक्त और जीभपर सफेद मेल रहनेपर। प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे। पहले ही से इस औषधका व्यवहार होनेसे स्तन-ग्रन्थि कडी नहीं हो पाती और उनमें पीव भी उत्पन्न नहीं हो सकती। प्रसवके बादसे दो-एक मात्रा करके फेरम फॉस और केलि म्यूरका सेवन करानेसे यह ज्वर नहीं हो सकता। इस औषधसे ही स्तनमें दूध जम जाना बन्द हो जाता है।

सूतिका ज्वर (puerperal fever)—यही सूतिका-ज्वरकी प्रधान औषध है (फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)। सूतिका-ज्वरके विषसे मस्तिष्क-विकृतिके ज्वरमें **केलि फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है।

स्फोटक (abscess)—स्फोटक, व्रण, गलका, कार्बंकल, एरिसि-पेलस, हिप्‌जयेन्ट इत्यादि रोगोंमें प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें जब प्रदाहित स्थानमें रस जमकर स्फीत होता है। इस औषधके व्यवहारसे **सञ्चित** रस शोषित होकर स्फीति घट जाती है एवं पीवका उत्पन्न होना रुक जाता है। प्रदाहित स्थान अत्यन्त वेदनायुक्त एव ललाई (reddish) रहनेपर इस औषधके साथ पर्यायक्रमसे **फेरम फॉस** व्यवहार करना चाहिये। स्त्रियोंके स्तनग्रन्थि-प्रदाहमें यह अतिशय फलप्रद महौषध है। बाहरी और भीतरी दोनों प्रयोग करनेके लिये ३x शक्ति।

घुड़ी खाँसी (croup)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है ; किन्तु आक्षेपिक जातीय होनेसे **मैग फॉस** ही प्रधान औषध है। इसके प्रयोगसे गलेके अन्दर सूतेकी तरह श्लेष्मा सञ्चित नहीं हो सकता। ज्वर, श्वासकष्टादि रहनेपर फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे।

शक्ति—३x बार-बार। ३x शक्तिके व्यवहारसे फल न मिलनेपर १२x शक्ति व्यवहार्य है।

दमा (asthma)—पाकस्थलीकी विशृंखलताके कारण या यकृत की क्रिया-विकृतिके कारण दमा रोग। कोष्ठबद्धता। जीभ श्वेत लेपावृत्त। गाढ़ा, श्वेतवर्ण, दुश्छेद्य श्लेष्मा बहुत कष्टसे निकालना पडता है। खाँसनेके समय ऐसा मालूम होता है मानो आँखें निकल आवेंगी। श्वासकष्टके लिये "केलि फॉस" के साथ पर्यायक्रमसे।

हूपिंग या कुकुर-खाँसी (whooping cough)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है। जीभ श्वेतवर्णकी मैलसे आवृत। छातीमें घडघड और साँय-साँय आवाज होती है। आक्षेपिक खाँसीके लिये मैग फॉस के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। दवा गरम पानीके साथ सेवन करनेसे अधिक फल मिलता है।

रोगी विवरण—१९५५ ई० की बात है। एक दिन रातको दक्षिणी कलकत्ताके एक एडवोकेटने आकर कहाकि उनकी छोटी लडकी कुकुर-खाँसी से कष्ट पा रही है। खाँसीका आक्रमण बार-बार हो रहा है और खाँसीका आक्रमण इतना भयावह है कि खाँसीका आक्रमण होनेपर वह घरमें चारों तरफ दौड-धूप कर घूमने-फिरने लगती है। मालूम पडता है कि तुरन्त साँस रुक जाकर मर जायेगी। खाँसीके आक्रमणके समय साँस नही ले सकती है। जीभ पर सफेद रंगका लेप चढा हुआ है। कफ बहुत ही कम निकलता है। मामूली-सा सफेद रंगका श्लेष्मा निकलता है। भद्र पुरुषने कहा कि तुरन्त खाँसीके आक्रमणकी तीव्रताको न घटानेसे रोगिणीकी साँस रुक जाकर मृत्यु हो सकती है।

औषध—**मैग फॉस** ६x व **केलि-म्यूर** ६x को १० मिनटोके अन्तर

पर्यायक्रमसे गरम जलके साथ दिया गया। आक्रमणकी तीव्रता घट जानेपर लम्बे समयके अन्तरसे।

दूसरे दिन सवेरे खबर मिली कि औषधसे आश्चर्यजनक फायदा हुआ है। केवल चार ही मात्राके सेवन करनेके बाद रोगिणी सो पडी। रातको फिर खाँसीका आक्रमण नहीं हुआ। सवेरे खाँसीका आक्रमण धीमा हुआ और कफ निकल रहा है। उक्त दवाको ही लम्बे समयके अन्तरसे देनेकी व्यवस्था करने पर रोगिणी बहुत थोडे समयके अन्दर स्वस्थ हो पडी। इस रोगिणीमें बायोकेमिक दवा इतनी शीघ्रतासे खाँसीके आक्रमणकी तीव्रताको घटा दी कि मैं स्वय ही आश्चर्य हो पडा था।

कुकुर-खाँसीमें साधारणतः निम्नलिखित औषधियाँ व्यवहृत होती हैं:—

कैल्क फॉ, फेरम फॉ, केलि म्यू, केलि-फॉ, केलि-स, मैग-फॉ, नेट्रम-म्यू, साइलि।

फेरम फॉस—प्रारम्भिक दशामें ज्वर रहनेपर फेरम-फॉ और तन्तुमय (fibrinous) कफ निकलना रहनेपर **केलि म्यूर** पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए। **सफेद लेप चढा जीभ और सफेद रगका कफ निकलना** केलि म्यूरके अति उत्तम लक्षण हैं।

खाँसीका आक्रमण हूप शब्दसे शेष होनेपर **मैग-फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे केलि-म्यूर व्यवहार करना चाहिए।

कुकुर-खाँसीकी तरह आक्षेपिक खाँसी हो, किन्तु हूप शब्द नहीं रहता—केलि-म्यूर।

मैग-फॉस—आक्षेपिक खाँसीकी प्रारम्भिक दशामें व्यवहृत होनेपर खाँसी और बढनेकी ओर नहीं जा सकती। आक्षेपिक खाँसीकी सभी दशाओंमें ही यह दवा बहुत ही फलदायक है। रातको व सोनेपर श्वास कष्टकी वृद्धि।

केलि फॉस—खाँसीका वेग इतना तीव्रकी खाँसते समय मुँह नीला या काले रंगका हो जाता है और मुँह फूला दीख पडने पर यह अत्यन्त ही फलदायक

है और इस प्रकारके लक्षणमें इस दवाके साथ मैग-फॉस हर घण्टेपर पर्याय-क्रमसे व्यवहार करना पडता है। ३-४ मात्रा औपध प्रयोग करनेके वाद रोगीका कष्ट वहुत अशोंमें घट जाता हैं और लम्वे समयके अन्तरसे कई एक दिनो तक व्यवहार करनेपर रोगी आरोग्य हो जाता है। अत्यधिक स्नायविक व अवसादग्रस्त रोगी।

केलि-सल्फ—रोगके शेपकी तरफकी दशायें। ओठ व मुँहमें छाले पडते हैं। काला, पतला व वदवूदार मल। शरीरका दुवलापन। निम्न भागके उदरका कडापन व फूला। अपराह्न व सायंकाल वृद्धि। पीले रगका कफ निकलता है।

नेट्रम-म्यूर—खाँसते समय आँखोसे काफी मात्रामें आँसू वहनेपर यह दवा उत्तम है। काफी मात्रामें जल-सा, स्वच्छ, थूककी भाँति, फेनादार कफ निकलना।

कैल्क-फॉस—दाँत निकलते समयकी कुकुर-खाँसी। कैल्क फॉस अध्यायमें हूपिंग खॉसी द्रष्टव्य। अण्डेके अन्दरके सफेदवाले अशकी तरहका कफ निकलता है। कुकुर-खाँसीकी पुरानी दशामें दुवलापन।

शक्ति—सभी दवाओंकी ६x शक्ति अत्यधिक फलदायक है। केलि-म्यूर व मैग-फॉस औपधोकी ३x शक्ति भी फलदायक है। वार-वार औपधका व्यवहार करनेके लिये कई एक मात्रा दवा गरम जलमें मिलाकर उसमेंसे एक-एक चम्मचकी मात्रामें व्यवहार करना अच्छा है। जल कुनकुना गरम, कभी भी अत्यधिक गरम न हो।

सब प्रकारकी खाँसी (all kinds of cough)—न्यूमोनिया, ब्रॉङ्काइटिस, प्लुरिसी, यक्ष्मा, साधारण खाँसी एव श्वासनली और वायु-नली सम्वन्धीय सभी रोगोंकी ही द्वितीयावस्थामें निम्नलिखित लक्षण रहनेपर यह उपयोगी है।

प्रदाहकी द्वितीयावस्थामे जव गाढ़ा, दुश्छेद्य, श्वेतवर्ण या दूधकी भाँति कफ निकले। जीभ सफेद या राखके रंगकी मैलसे आवृत। छातीमें घड-घड या साँय-साँय आवाजके साथ वहुत कष्टसे श्लेष्मा निकलता

है। वायुनलियोंके अन्दर लसदार कफ सञ्चित रहता है, इसलिये उनके भीतरसे वायु प्रविष्ट होनेके समय उस प्रकारकी आवाज होती है।

खाँसी कष्टकर सूखी होनेपर **फेरम फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे। लड़के खाँसनेके समय कष्टको घटानेके लिये गलेको पकड़नेके लिये वाध्य होते हैं। कष्टकर खाँसीके समय ऐसा मालूम होता है मानो आँखें निकल आवेंगी। खाँसीके साथ स्वरभंग। ठण्डा लगकर स्वरभग होनेपर **केलि सल्फके** साथ पर्यायक्रमसे। प्लुरिसी रोगमें प्लुरासे मधुकी तरह रस निकलनेपर। शक्ति—१२x।

हृद्‌पिण्डके रोग (diseases of the heart)—हृद्‌पिण्डके आवरक-झिल्ली प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें अकसर इस औषधसे आरोग्य होता है (फेरम फॉसके साथ)। **हृद्‌पिण्डमें अधिक रक्त सञ्चित होकर हृद्‌पिण्डका स्पन्दन,** विवर्द्धन या क्रिया बन्द होनेकी हालत होनेपर। हृद्‌पिण्डमें अधिक रक्त सञ्चित होनेके कारण रक्तका थक्का बन जाता है या इसकी सम्भावना होनेपर।

वात (rheumatism)—**वात-ज्वरके साथ आक्रान्त स्थानमें रसादि संचित होकर स्फीत** और वेदनामय होनेपर। **जीभ श्वेत लेपावृत।** पुराने रियुमेटिक और गाउट नामक वातके रोग जब सञ्चालनसे बढ़ते हैं। पैरोंकी वेदनाहीन पुरानी स्फीति, किन्तु उसमें खुजलाहट रहती है। लिखते-लिखते हाथ कड़ा (stiff) हो जानेपर। नये वात-रोगमें आक्रान्त स्थान वेदना-युक्त होनेपर फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे। स्फीत स्थान कड़ा होनेपर कैल्क फ्लोर पर्यायक्रमसे। **वात-वेदना रातमें एव बिछावनकी गरमीसे बढ़ती है। मलद्वार या गर्दनसे पैरकी एँड़ी तक बिजली-सी वेदना**—अर्थात् मालूम होता है कि शरीरके भीतर बिजली-सी कोई चीज दौड़ गयी (lightning like sensation)। कमर और हाथ-पैर इत्यादिकी पेशियाँ हिलने डोलनेके समय दर्द करती हैं।

एक्‌जिमा (eczema)—एक्जिमा या खुजलीसे जब **मैदाकी**

भाँति सूखी सफेद रूसीकी तरह बुकनी सदृश पदार्थ अथवा श्वेतवर्ण लसदार स्राव निकलता है। फफोलोंकी तरह एक्जिमा होनेपर। खुजलाहट बहुत कष्टकर होनेपर कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे। जरायु या पाकस्थलीकी क्रियाकी गडबडीके कारण अथवा जरायुसे स्राव निकलना बन्द होकर एक्जिमा रोग होनेपर। इसके साथ जीभ श्वेतवर्णके लेपसे आवृत रहनेपर और अधिक उपयोगी है। शक्ति १२x, बाद में २४x।

टीकाजनित कुफल (bad effects from vaccination)—खराब बीजसे टीका देनेके कारण जो सब चर्मरोग होते हैं, उनमें यह अति उत्कृष्ट है। टीका देनेके बाद विविध रोगोंमें साइलिसिया भी विशेष उपयोगी है।

मुँहासा (acne)—युवक-युवतियोंके मुख या गर्दन इत्यादि स्थानोंमें व्रण एवं उनमेंसे जब सफेद भातकी तरह पदार्थ (ब्रील) निकलता है। शक्ति ६x।

अन्याय चर्मरोग-समूह (other skin diseases)—साइकोसिस (sycosis) रोगकी प्रधान औषध है। इरिथिमा रोगमें स्फीति रहनेपर फेरम फॉसके बाद फलप्रद है। हार्पिस रोग (नेट्रम म्यूर) और लुपस रोग (नेट्रम फॉस)। सब प्रकारके चर्मरोगोंमें घावके ऊपर श्वेतवर्णका तन्तुमय पदार्थ उत्पन्न होने एवं घाववाले स्थानसे श्वेतवर्ण, घना लसदार स्राव निकलनेपर अथवा मैदाकी तरह सफेद बुकनी सदृश रूसी निकलनेपर यह अत्युत्कृष्ट है।

विसर्प (erysipelas)—फफोलोंमय विसर्पमें यही प्रधान औषध है (ज्वर रहनेपर फेरम फॉसके साथ)।

प्लेग (plague)—यही प्लेगकी प्रधान औषध है, विशेषतः कोई स्थान स्फीत होनेपर—फेफडेमें रक्तसञ्चय होकर श्वेतवर्णका श्लेष्मा निकलना। ग्रन्थिकी स्फीति, श्वेतवर्णके लेपसे आवृत जीभ, क्षुधाहीनता, कोष्ठबद्धता अथवा राख या सफेद रंगका दस्त प्रभृति लक्षण इसमें हैं।

चेचक (pox)—सब प्रकारके चेचक रोगकी यही प्रधान औषध

है। प्रथमावस्थामें इस औषधके प्रयोगसे चेचककी गोटियोकी तीव्रता घट जाती है एवं पीब उत्पन्न न होकर शीघ्र ही सूख जाती है। इसके व्यवहारसे बादके बुरे लक्षण-समूह नहीं आ सकते। प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य हैं। जीभ श्वेतवर्णके लेपसे आवृत्त। पनताहा चेचककी द्वितीयावस्थामें जब दाना समूह निकलते रहते हैं, उस समय यह अत्यावश्यक है। उसके साथ जीभ सफेद रंगकी हो या न हो।

कोदवा (measles)—कोदवाकी द्वितीयावस्थामें यही प्रधान औषध है। रोगके दाने निकलनेपर, कोई ग्रन्थि स्फीत होनेपर एवं जीभ पर सफेद प्रलेप रहनेपर यह व्यवहार्य है। कोदवाके कुफलके कारण बधिरता, किसी ग्रन्थिकी स्फीति, सफेद या फीके रंगका उदरामय होनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है। स्वरभंगयुक्त खाँसीके साथ सफेद लसदार श्लेष्मा निकलता है।

शोथ (dropsy)—**नेट्रम सल्फ** ही शोथकी प्रधान औषध है, किन्तु यकृत, हृद्‌पिण्ड या मूत्रयन्त्र (kidney) की गडबडीके कारण शोथ उत्पन्न होनेपर इस औषधके साथ कुछ भी सादृश्य रहनेपर यह अति उत्कृष्ट है। शोथके साथ हृद्‌पिण्डका स्पन्दन। हृद्‌पिण्डकी दुर्बलता हेतु शोथ-रोगमें **केलि फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। शोथका जल, जीभका रंग और पेशाबका रंग सफेद होनेपर। शोथाक्रान्त स्थान उज्ज्वल श्वेतवर्णका होता है।

क्षत (ulcers)—जिस किसी स्थानमें ही क्षत क्यों न हो, **यदि क्षत स्थानसे श्वेतवर्णका अस्वच्छ सौत्रिक स्राव निकलता हो।** स्रावकी अनुपदाहिता। स्राव अत्यन्त घना या मध्यरूपका घना। जीभ सफेद रंगकी मैलसे आवृत रहनेपर अधिकतर उपयोगी है। घाव बहुत गहरा भी हो सकता है या थोडा ही गहरा हो सकता है।

चोट लगना (wounds, sprains, bruises)—कोई स्थान कटकर, मोच खाकर या चोट लगकर वेदनामय होनेपर प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस** व्यवहृत होता है, किन्तु यदि प्रथमावस्थामें चिकित्सा न

हुई हो अथवा प्रथमावस्था बीतकर द्वितीयावस्थामें आनेपर चोट लगे स्थानमें रस और रक्तादि सञ्चित होकर स्फीत हो, तो केलि म्यूरके बाहरी और भीतरी दोनो प्रयोगसे रसादि शोषित होते हैं और पीब उत्पन्न नहीं हो पाती।

जल जाना (burns)—जिस किसी प्रकारसे ही हो, कोई स्थान जल जानेपर फेरम फॉस प्राथमिक अवस्थामें अवश्य प्रयोग करना चाहिये, यह विषय फेरम फॉस अध्यायमें विशदरूपसे वर्णित हुआ है। इसके साथ ज्वर रहनेपर फेरम फॉस और अधिक उपयोगी है। किन्तु प्राथमिक उत्तेजना घट जानेपर खासकर **जले स्थानपर फफोले पड़नेपर केलि म्यूर ही प्रधान औषध है।** औषध सेवनके साथ-साथ इसके तीव्रलोशनमें साफ मोटे कपडेके टुकडेको भिगाकर सर्वदा क्षत स्थानपर रखे रहना चाहिये—किसी समय भी कपडेको खोल रखना नही चाहिये। ३x शक्तिका ३० ग्रेन एक आउन्स पानीमें मिलाकर लोशन तैयार करना पड़ता है। फफोले पड़कर चमडे उठ जानेपर केलि म्यूरकी ६x शक्ति घावके ऊपर छिडक देना पडता है। वैसलिनके साथ भी दवाका प्रयोग किया जा सकता है। जिससे क्षत स्थानमें हवा न घुस पाये इसकी व्यवस्था करनी चाहिये।

मृगी (epilepsy)—**यह मृगी रोगकी प्रायः अव्यर्थ दवा है। चर्मरोगादि बैठ जानेके फलस्वरूप रोगोका उत्पन्न होना।** पुनराक्रमण रोकनेके लिए आक्रमणके अन्तमें सेवन कराना चाहिये। आक्षेपके समय **मैग फॉस** सेवन कराना चाहिये। इससे भी चिहुंक इत्यादि (convulsions) का आक्षेप दूर तो हो जाता है सही, किन्तु मैग फॉस ही प्रधान दवा है एव पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है।

धनुष्टङ्कार (tetanus)—**मैग फॉस** ही इस रोगकी प्रधान औषध है; किन्तु लोकिया स्राव वन्द होकर सूतिकावस्थामें यह बीमारी होनेपर मेग फॉसके साथ यह दवा पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेसे लोकिया फिरसे निकलने लगता है। स्त्री-जननेन्द्रियसे दुर्गन्धमय स्राव निलनेपर

केलि फॉस देना चाहिये। केलि फॉसके लोशनसे जननेन्द्रियको धोनेसे शीघ्र ही उपकार होता है।

ऐपेण्डिसाइटिस (appendicitis)—रोगकी पुरानी अवस्थामें यही प्रधान औषध है। प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें इसकी उपयोगिता दीख पड़नेपर भी नये रोगकी प्रथमावस्थासे ही इसकी **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता मालूम पड़ती है। प्रदाहके बाद रसादि सञ्चित होकर उदर स्फीत होनेपर, कोष्ठबद्धता रहनेपर, जीभ सफेद या राखके रंगकी दीख पड़नेपर।

प्लीहाके रोग (diseases of the spleen)—प्लीहा-प्रदाहकी द्वितीयावस्थामें जब प्लीहामें रसादि सञ्चित होकर बढ जाता है एव इस हेतु उदरमें खिंचाव मालूम होता है। जीभ श्वेतवर्ण, कोष्ठबद्धता और यकृतकी विकृति रहनेपर। दूसरी किसी आवश्यकीय दवाके साथ पर्यायक्रमसे।

शक्ति—६x, १२x।

रक्तस्राव (hæmorrhage)—जिस किसी स्थानसे ही रक्तस्राव क्यों न हो, अगर रक्तका रग काला थक्का-थक्का या कभी अलकतरेकी तरह (केलि फॉस) हो, तो यह दवा विशेष उपयोगी है।

केलि फॉस—केलि म्यूरकी तरह इसमें भी अलकतरेकी भाँति काला रक्तस्राव है, किन्तु पानीकी तरह पतला और बहुत दुर्गन्धयुक्त स्राव ही केलि फॉसका विशेषत्व है। केलि म्यूरका स्राव थक्का बाँधता है एवं उसमें विशेष कोई दुर्गन्ध नही रहती।

सन्निपातिक ज्वर (typhoid fever)—सन्निपातिक या टाइफायड ज्वरकी यही प्रधान दवा है। जीभपर सफेद या भूरे रगका लेप एव पीलापन लिये पतला मल निकलना। उदरस्थ ग्रन्थियोंकी स्फीति और वेदना। प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे।

शक्ति—६x।

रोगी विवरण—अंगरेजी १९६० साल। डी० भी० सी०के कोई एक उच्च पदाधिकारी इञ्जीनियरके १२-१४ वर्षकी उमरके लडकेके

टाइफॉयड ज्वरकी चिकित्सा करनेके लिये बुलाया गया। लड़का हृष्ट-पुष्ट और देखनेमें बलिष्ठ था। बीच-बीचमें इसे ज्वर होता था। ज्वरका ताप ३-४ डिग्री होता था, किन्तु ४-५ सप्ताहके पहले किसी बार भी लड़का स्वस्थ नहीं होता। कलकत्तेके सुप्रसिद्ध एलोपैथिक चिकित्सकों द्वारा ही साधारणतः चिकित्सा हुआ करती थी। उन्होंने अपने किसी विशेष सम्बन्धीसे सुनकर मेरे द्वारा चिकित्सा कराना स्थिर किया।

आज ज्वरका तीसरा दिन था। एलोपैथिक मिक्सचर और बोतलमें भरे फलका रस, नाना प्रकारके ताजे फल, हॉरलिक्स, दूध, सन्देश (छेनेसे बनी एक मिठाई) इत्यादि खिलाये जा रहे थे। अधसिझा अण्डा, मछली या मांसका जूस खाया जा सकता है कि नहीं पूछा। ज्वरका कोई उपसर्ग नहीं था। ज्वरके ऊँचे तापके समय रोगी सोया रहता था और थोड़े ज्वरके समय उठकर बैठता था। किन्तु कोई कष्ट नहीं था। कब्ज, जीभपर मामूली सफेद लेप और ऊँचे ज्वरके तापके समय सिर मामूली भारी हो जाता था। **फेरम फॉस** ६x व **केलि म्यूर** ६x पर्यायक्रमसे दैनिक हर दवा दो मात्राके हिसाबसे ४ मात्रा कर तीन दिन देनेसे ही ज्वर छूट गया। और भी २ दिन वे ही दवा दो मात्रा करके दी गई। इतना शीघ्र किसी बार भी उसका ज्वर नहीं छूटा था।

(२) अंगरेजी १९६४ साल। मयूरभज राजमहलमें ४ पेरा टाइफॉयडके रोगी थे। महाराजकी दो नतनियाँ, गिधायुर राज्यकी दो राजकुमारियाँ और राज्यशाली भदायुरकी राजमाता मेरी चिकित्सामें रहीं और महाराजके नाती गिधायुरके एकमात्र राजकुमार कलकत्ताके विख्यात चिकित्सक डॉ० सेनगुप्तके चिकित्साधीन रहे। भदायुरकी राजमाताको ब्रायोनिया ३० देनेके ४ दिनोंके अन्दर स्वस्थ हो गई और उन्हें अन्नका पथ्य दे दिया गया। किन्तु राजकुमारी दोनोंके लक्षण और राजकुमारके लक्षण सभी एक ही तरहके थे और वे सभी एक ही बड़े कमरेमें पड़े विभिन्न बिछावनपर सोया करते हैं। ज्वरका ताप केवल घटा-बढा करता है, किन्तु कष्टदायक कोई लक्षण या औषध प्रयोग योग्य कोई सांकेतिक

लक्षण ही किसीमें कोई नहीं है। पाखाना, सर्दी-खाँसी, प्यास, सिर दर्द इत्यादिकी ओरसे कोई लक्षण ही प्राप्त नहीं होता। एक सप्ताह बीत गया। ज्वरका ताप सभीको थोडा या बहुत १०३ डिग्री चढ रहा है। डॉ० सेनगुप्त क्लोरोमाइसेटिन और नाना तरहकी ओषधियाँ दे रहे हैं। साधारण लोगोंकी धारणा है कि क्लोरोमाइसेटिन टिकिया देनेसे निश्चित ज्वरका ताप शीघ्रतासे स्वाभाविक हो जायगा। ऐलोपैथिक चिकित्सासे यदि अचानक ज्वर बन्द हो जाय, तो व्यक्तिगत अयोग्यताके अलावे एक चिकित्सापद्धतिकी भी अयोग्यता प्रमाणित होगी। मर्यादाकी एक लडाई-की भाँति उपस्थित हुई यह परिस्थिति थी—एक परेशानीवाली दशा।

राजकुमारियोंकी जीभपर मामूली सफेद लेप और उसके साथ कुछ कब्ज रहनेके लक्षणोंको पाया। और कोई लक्षण नहीं थे। इसके पहले ब्रायोनिया ३० के देनेसे कोई फायदा नहीं हुआ है। मैंने दोनोंको ही केलि-म्यूर ६x नित्य चार मात्रा कर देनेकी व्यवस्था कर दी। आश्चर्यकी बात है कि दो दिनोंके अन्दर ही दोनोंका ही ज्वर छूट गया। किन्तु ऐलोपैथिक चिकित्सासे दो सप्ताहोंके बाद राजकुमारका ज्वर छूटा। ज्वर छूटते ही राजकुमारको हमारी चिकित्सामें रखा गया। आज कई वर्षोंसे राजपरिवारके प्रायः सभी रोगियोंकी चिकित्सा करते आ रहा हूँ। इस चार बायोकेमिक औषधसे ही मेरे मान-गौरव व मर्यादा सभीकी रक्षा हुई।

मयूरभजकी महारानी व गिधायुरकी महारानी अच्छी हिन्दीकी जानकार होनेके कारण उन लोगोंको पढनेके लिये मेरी हिन्दीमें लिखी हुई बायोकेमिक कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिका व थेराप्यूटिक्स पुस्तकको दिया। महाराजाको पढनेके लिये केण्टकी मेटिरिया मेडिका, केण्टका दर्शन व हैनिमैनके ऑर्गाननकी व्यवस्था की।

मन्तव्य—कलकत्ते और नगरोंमें इस जातिका थोडे लक्षणवाला ज्वरका रोगी प्रायः ही देखनेमें आता है। लक्षणोंके अभावमें इन सब हालतोंमें चिकित्सा करना बहुत कठिन है। किन्तु बायोकेमिक मतसे **केलि म्यूर** ६x व **फेरम फॉस** ६x या १२x पर्यायक्रमसे दैनिक ४ मात्रा कर

व्यवहार करनेसे उत्तम फल होता है। कब्जके साथ जीभ सफेद रहनेके कारण केलि म्यूर ही अच्छी दवा है। इसके साथ प्रायः ही थोडी या वहुत सूखी या ढीली खाँसी रहती है और इसमें केलि म्यूर अधिकतर उपयोगी होता है। ऐसी दशामें होमियोपैथिक मतसे वेप्टीसियाकी निम्नशक्तिसे मैं आश्चर्यजनक फल पाया करता हूँ। केवल २-१ क्षेत्रोंमें व्रायोनियाकी जरूरत पडती है। चिकित्सकगण इन सब ज्वरोंको पैरा-टाइफॉयड कहकर पुकारते हैं।

ज्वर (fever)—सब प्रकारके प्रादाहिक-ज्वरकी द्वितीयावस्थामें : यह दवा नये ज्वरमें अधिक व्यवहृत नहीं होती, किन्तु नये ज्वरके साथ यदि यकृतकी क्रिया-विकृतिके हेतु जीभ सफेद रगकी मैलसे आवृत और कोष्ठवद्धता रहे, तो इससे विशेष उपकार होता है। पुराने ज्वरमें प्लीहा और यकृतके वढ़नेपर।

शक्ति—६x ; पुराने रोगमें १२x, ३०x।

आरक्त ज्वर (scarlet fever)—स्कार्लेट फीवर या आरक्त-ज्वरकी यही प्रधान दवा है। रोग साधारणरूपमें होनेपर इस दवासे ही आराम हो जाता है। इसके अभावके कारण ही यह रोग हुआ करता है। इस औषधके व्यवहारसे वेकार सौत्रिक-पदार्थ (fibrin) सशोधित होकर कार्य्योपयोगी होते हैं। **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे। शक्ति—६x।

जीभ (tongue)—**जीभ राख या श्वेतवर्णके मैलसे आवृत्त।** जीभके प्रदाहके वाद वह स्फीत और वेदनामय (फेरम फॉस)। इस औषधके जीभके लक्षण वहुत मूल्यवान हैं—वहुतसे रोग केवल जीभके लक्षणोंको देखकर ही औषध प्रयोग करनेपर आराम हो जाते हैं।

निद्रा (sleep)—चौंकमय निद्रा ; थोडी-सी आवाजसे ही निद्रावस्थामें चौंक उठता है।

वृद्धि (aggravation)—घृत, तैलाक्त खाद्य एव अन्यान्य गुरुपाक द्रव्योंका भोजन करनेसे पेटके रोगकी उत्पत्ति या वृद्धि। संचालनसे

वेदनाकी वृद्धि। वातकी व्याधि—सञ्चालनसे और विछावनकी गरमीसे वृद्धि।

औषधकी क्रियाहीनता—इस औषधके सेवनसे अन्यान्य औषधोंकी क्रियाकी वृद्धि होती है। इसलिये बीच-बीचमें इस औषधका प्रयोग करना पडता है। इस औषधका कार्य अत्यन्त दृढ़ और स्थायी है एवं रोगके गहरे स्तर तकमें कार्य किया करती है। **कैल्क फॉसमें** भी यह गुण सबसे अधिक है; इसलिये उसके विषयमें भी सोचा जाना चाहिये।

कार्यपूरक औषध (complementary medicine)—केलि म्यूरके व्यवहारके बाद बहुत बार रोग सम्पूर्णरूपसे आराम नहीं होता, अतः रोगीके अवशिष्ट लक्षण दूर करनेके लिये केलि सल्फकी आवश्यकता होती है। प्रादाहिक रोगमें प्रायः सभी क्षेत्रोंमें ही फेरम फॉसके बाद केलि म्यूरकी आवश्यकता होती है।

शक्ति (potency)—३x और ६x शक्ति हमेशा ही व्यवहृत होती है। १२x, २४x, ३०x और २००x शक्तियाँ पुराने रोगोंमें व्यवहृत होती हैं।

सम्बन्ध—साधारण रूपमें नेट्रम-म्यूर व साइलिसियाके साथ, गॉनोरियामें नेट्रम फॉसके साथ केलि-म्यूरकी तुलना होती है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषधियाँ—प्रादाहिक रोगकी दूसरी अवस्थामें केलि म्यूरकी तरह ब्रायो, मर्क, पल्स, सल्फ इत्यादि औषधियाँ व्यवहृत होती हैं। केलि म्यूरके बहुत-से लक्षण ब्रायोनियामें दीख पडते हैं। किन्तु ब्रायोकी अपेक्षा केलि म्यूर बहुत गहरी क्रियाशील दवा है। सिफिलिस रोगमें केलि म्यूरके बाद केलि सल्फ व साइसिलिया व्यवहृत होती है। प्रायः ही केलि म्यूरके बाद कैल्क सल्फ व्यवहृत होता है, और केलि म्यूरके पहले प्रायः ही फेरम फॉसका प्रयोग होता है।

केलि फॉस्फोरिकम
(kalı phosphorıcum)
एण्टि-सोरिक और एण्टि ट्यूवक्युंलर

भिन्न नाम—पोटासियम फॉसफेट ।

साधारण नाम—फॉसफेट ऑफ पोटास ।

संक्षिप्त नाम—केलि फॉस (kalı phos) ।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—कार्वनेट ऑफ पोटास अथवा पोटास हाइड्रेटके साथ फॉस्फोरिक एसिडका जलीय-द्रव्य मिश्रित करनेपर जव क्षार सदृश द्रव्य वन जाता है, उसी समय उत्ताप द्वारा जलीय भाग सुखा लेना पडता है । यद्यपि परिस्रुत सुरामे यह घुलनशील नहीं, किन्तु जलमें यह वहुत आसानीसे घुल जाता है । मूल औषधसे दुग्ध-शर्कराके सहयोगसे इसका चूर्ण तैयार करना पडता है । पहले जलके साथ मिश्रितकर वादमें एलकोहलके सहयोगसे इसका डाइल्यूशन भी वनाया जाता है । किन्तु वायोकेमिक चिकित्सकगण इस पुस्तकमें वर्णित सभी दवाओंकी टिकिया (tablet) या चूर्ण रूपमें व्यवहार करते है ।

क्रिया—जीवन-शक्तिको ठीक रखनेके लिये जिन-जिन उपादानोंकी आवश्यकता होती है, उन सव उपादानोंमें प्रत्येकके अन्दर ही फॉस्फेट ऑफ लाइम है । मस्तिष्क, पेशी और रक्तकणिकाओंके अन्दर यह पदार्थ काफी मात्रामें रहनेपर भी शारीरिक सव प्रकारके रस और विधानतन्तुओं (tıssues) के अन्दर यह थोडे या अधिक परिमाणमें विद्यमान है। इससे ही टिशू और अन्यान्य पदार्थोंकी दृढता सम्पादित होती है । इस पदार्थका अभाव होनेपर मानव अधिक दिनो तक जीवित नही रह सकता । यह आक्सिजन प्रदान करनेमें मदद भी किया करता है । यह सडनेसे रोकता है, इस हेतु टाइफस, टाइफॉयड इत्यादि निस्तेज अवस्था आ नही सकती । अण्डलालाके साथ मिश्रित होकर यह मस्तिष्कके राखके रगके पदार्थ (gray matter) को वनाता है । उक्त राखके रगका पदार्थ मस्तिष्क और स्नायुका

प्रधान उपादान है। केलि फॉसका अभाव होनेपर मानसिक अवसाद-जनित विविध लक्षण और स्नायविक दुर्बलता, यहाँ तक कि स्नायुका पक्षाघात भी प्रकट होता है। मानसिक अवसाद, चित्त-विभ्रम, यहाँ तक कि उन्माद भी इस दवासे अच्छा हो जाता है। इस औषधके गुणसे मुग्ध होकर कोई एक विख्यात चिकित्सक कह गये हैं कि जब जनसाधारण और चिकित्सकगण इस दवाके गुणको समानरूपसे समझेंगे, उस समय इस संसारमें पागलखानोंकी आवश्यकता न रह जायगी। इस वाक्यमें जो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है, वह हमलोग चिकित्सा कार्य में रत रहकर असंख्य रोगियोंकी हालतोंसे क्रमशः समझ रहे हैं। सब प्रकारके रोगियोंकी चिकित्सामें ही अतिरिक्त दुर्बलता और ध्वस होना दीख पड़नेपर केलि फॉसको ही प्रधान औषधके रूपमें माना जाता है। सब प्रकारके स्रावमें ही अस्वाभाविक दुर्गन्ध रहना इसका अभाव-सूचक प्रधान लक्षण है। यह हैजा रोगकी प्रधान औषध है। किसी स्थानसे अलकतरेकी भाँति काला रक्तस्राव इसका एक और उल्लेखनीय अभाव-सूचक लक्षण है।

चिन्ता करनेके कोषोंमें केलि फॉसका अभाव होनेपर उत्साहहीनता, भीत-चित्तता, उद्विग्नता, स्मरणशक्तिकी अल्पता, क्रन्दन-स्वभाव, सामान्य कारणसे ही विरक्ति, सन्दिग्ध-चित्तता इत्यादि विविध लक्षण प्रकट होते हैं।

श्वासक-स्नायुमें इसका अभाव होनेपर पहले नाड़ी क्षुद्र और तेज होकर बादमें बन्द हो जाती है। बोधक-स्नायु में (feeling nerves) इसका अभाव होनेपर स्पर्शानुभूति नष्ट होकर पक्षाघात आ उपस्थित होता है। केलि फॉस स्नायुके ऊपर तीव्र क्रिया प्रकट करता है; इसलिये सभी स्नायु सम्बन्धी रोगोंमें ही केलि फॉस प्रधान और एकमात्र औषध है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—सामान्य कारणसे ही विरक्त होना, उद्विग्न और अकारण ही भीत होना, सभी विषयोंमें ही दुर्भावना, बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव, उत्साह-

हीनता, साधारण कार्यको भी बहुत कठिन समझना, नाना प्रकारके मिथ्या कल्पनाओंका उदय होना, रहनेवाला घर छोडनेके भयमे भीत होना, हर-एक विपत्तके बुरेकी ही तरफ सोचना, हमेशा विचारोंका बदलता रहना इत्यादि मानसिक लक्षण विशेष उल्लेख योग्य है।

२—बहुत थकावटपन, स्फूर्तिहीनता और बेचैनी।

३—स्मरणशक्तिका ह्रास। अत्यन्त मानसिक परिश्रमके हेतु मस्तिष्ककी थकावट।

४—बेहोशी, बडबडाते हुए प्रलाप बकना (नेट्रम म्यूर), उच्च प्रलाप भी रहता है (फेरम फॉस), मस्तिष्ककी कोमलता, डिलिरियम ट्रिमेन्स।

५—नाना प्रकारकी मानसिक विकृति एव सर्वप्रकारके उन्मादकी प्रधान औषध है।

६—दिन-रात दीर्घ नि:श्वास त्यागना, हिस्टिरिया रोगमें पर्याय-क्रमसे रोना और हँसना। हिस्टिरिया रोगमें एक गेंद (ball) या गोल पदार्थकी भाँति कोई वस्तु गलेके पास उठ रहा है ऐसा मालूम होता है।

७—शोक, दु:ख या मानसिक विकृतिके कारण पैदा हुई कोई भी बीमारी।

८—मामूली कारणसे ही रो पडना।

९—स्नायुमण्डलकी अवसन्नता और दुर्बलतावश सिर-दर्द। अति-रिक्त मानसिक और शारीरिक परिश्रमके कारण सिर-दर्द। सिर-दर्दके साथ बहुत भूख लगना, निद्राहीनता, चिन्ता करनेकी क्षमता न रहना, माथेमें भार मालूम होना इत्यादि विविध लक्षण प्रकट होते हैं। अकेले रहनेपर, मामूली आवाजसे, सोनेपर और मानसिक परिश्रमसे वृद्धि एव थोडा-सा मस्तक हिलानेपर और स्फूर्तिदायक कामसे घट जाना।

१०—यह अधकपारीकी प्रधान औषध है।

११—सब प्रकारके और सभी स्थानोंके पक्षाघातकी यही प्रधान दवा है।

१२—जिस किसी स्थानसे ही क्यों न हो, अगर अलकतरेकी तरह काला, कालापन लिये लाल, तरल तथा जमता नहीं और शीघ्र ही सड़ने वाला रक्तस्राव हो, तो यह दवा विशेष फलदायक है। दुर्बल और शिथिल प्रकृतिके व्यक्तियोंको सहज ही में रक्तस्राव होना।

१३—केलि फॉसके सब प्रकारके स्रावोंमें ही अत्यन्त बदबू रहती है। पीबमें, मलमें, लारमें, वमनमें, रक्तमें, कान, नाक और जननेन्द्रियसे निकले स्रावोंमें असहनीय बदबू रहती है।

१४—डिफ्थिरिया रोगकी अवसन्नावस्थामें यह अत्यन्त कार्यकारी है। डिफ्थिरिया रोगके बादके विविध कुफलोंको हटानेमें यह विशेष फलप्रद है।

१५—अतिरिक्त मानसिक परिश्रम और स्नायविक दुर्बलता हेतु अजीर्ण-रोग। अत्यधिक भूखका लगना। पेट फूलना। भोजनके बाद वमन या तन्द्रा। विनिगर या पीनेवाली ठण्डी वस्तुओंकी उत्कट इच्छा।

१६—अत्यन्त दुर्गन्धमय कीचड़की तरह तरल मल। दुर्गन्धयुक्त जिस किसी रंगका मल। उदरामयके साथ अतिशय दुर्बलता और अवसन्नता। मलका वेग होते ही शीघ्रतासे मल त्यागने जाना पड़ता है। मलद्वारमें पक्षाघात और लाखी-बवासीरके मसे निकल आना।

१७—हैजामें चावल धोये हुए पानीके रंग-सा दुर्गन्धमय दस्त ही इसका विशेषत्व है। पतनावस्थामें जब आँख और मुँह बैठ जाते हैं, नाडी धीमी हो जाती है, सर्वाङ्ग शीतल, बहुत पसीना इत्यादि दुर्लक्षण प्रकट होते है, उस समय यह अत्युत्कृष्ट है। अतिसारिक हैजेमें यह अमोघ है।

१८—मूत्रस्थलीकी मुखरोधक-पेशियोंके पक्षाघातके कारण अनजानमें पेशाब हो जाना। पेशाबके वेगको रोकनेमें असमर्थ होना। बालकोंके शय्यामूत्र (बिछावनपर पेशाब कर देना) में यह उत्कृष्ट है (फेरम फॉसके साथ, कृमि-जनित होनेपर नेट्रम फॉसके साथ)।

१९—हस्तमैथुन, अत्यधिक स्त्री-सहवास अथवा अन्य किसी कारणसे अधिक वीर्यक्षय होनेके कारण स्नायविक दुर्बलतामें यह औषध विशेष

लाभदायक है। विलकुल ही वीर्यक्षय न होनेके कारण जो सब वीमारियाँ पैदा होती हैं।

२०—विना उत्तेजनाके ही स्वप्नदोष या वहुत ही कष्टदायक स्वप्न-दोष। ध्वजभग रोग।

२१—शारीरिक और मानसिक दुर्वलताके कारण क्षीणागी रमिणियोंके मासिक ऋतुस्रावमें विलम्व होना। रोगिणीका स्वभाव चिडचिडा और सहज हीमें रो पडनेवाली और वेचैन। ऋतुस्राव अल्प परिमाणमें होता है। दुर्गन्धमय कालापन लिये एव आसानीसे जमता नही इस प्रकारका तरल रक्तस्राव ही इसका विशेषत्व है। हिलने डोलने और पेटके वल सोनेपर तकलीफ घटती है।

२२—श्वेत-प्रदरका स्राव तीव्र, जलनमय और घाव उत्पन्नकर देनेवाला (नेट्रम म्यूर) एव दुर्गन्धमय।

२३—प्रसव-वेदना अनियमित, दुर्वल और निष्फल। रोगिणी वहुत ही उत्तेजित, सहज हीमें रो पडनेवाली, भीत एवं हताशचित्त। इसके सेवनसे जरायुकी शक्तिको वढ़ाकर सरलतापूर्वक प्रसव करा देता है।

२४—वक्षसे सम्वन्धित रोगोमें शीघ्र-शीघ्र प्रश्वास रहनेसे यह अत्युत्कृष्ट है। थोडा कुछ भोजन करनेके वाद, परिश्रम करने और हिलने-डोलनेपर रोगोंकी वृद्धि। रोगी अतिशय दुर्वल और अवसन्न। गाढा, पीले रगका और लवणाक्त स्वादयुक्त दुर्गन्धमय श्लेष्मा।

२५—हृद्‌पिण्डके किसी प्रकारके रोगमें जव हृद्‌पिण्डका स्पन्दन अनियमित, नाडी दुर्वल, अनिद्रा और स्नायविक उत्तेजना दीख पडती है।

२६—वातसे आक्रान्त स्थान कडा, चेतनाहीन और खींच रखनेकी तरह होनेपर ; वेदना विश्राम करने और अधिक सचालनसे घट जाती है। इसके साथ स्नायविक लक्षण रहनेपर यह अधिकतर उपयोगी है।

२७—यह अनिद्रा रोगकी महौषध है।

२८—स्नायविक दुर्वलताकी इससे अधिक उत्कृष्ट औषध और दूसरी नहीं है।

२९—ज्वरमें जब उत्ताप अत्यधिक बढ जाता है। सब प्रकारके मृदु, अनिष्टकर, भयकर और अवसाद लानेवाले ज्वरमें यह अतिशय फलदायक है। मल अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त एवं जीभ सूखी और बासी पीसी हुई सरसोंकी तरह लेप चढी। प्रलाप रहनेपर। नाक और मलद्वारसे रक्तस्राव होना।

३०—सब प्रकारके लक्षणोंकी ही प्रातःकाल, अधिक सचालनसे, शब्दसे, गोलमालमें, विश्रामसे और अकेले रहनेपर वृद्धि और थोडेसे संचालनसे, बहुत लोगोंके साथ रहनेपर और मानसिक प्रफुल्लतासे घटते हैं।

विशेपत्व (peculiarity)—केलि फॉसका नाम याद पडनेपर ही स्नायुमण्डलके ऊपर इसकी असाधारण क्रियाका विषय ही सबसे पहले याद आता है। वास्तवमें स्नायुकी उत्तेजना या क्षय हेतु जो सब रोग उत्पन्न होते हैं, उनमें दूसरी किसी भी दवाके लक्षण क्यों न रहें, यही सर्व-प्रधान एव अत्याव्य औषध है। प्रथमावस्थाकी अपेक्षा शेपावस्थाके रोगोंमें ही यह अधिकतर उपयोगी है। क्योंकि शेषावस्थामें रोगीकी शारीरिक और मानसिक थकावट, उत्तेजित और चिडचिडा स्वभाव एवं नाना प्रकारकी टाइफॉयड या भयानक अवस्थायें प्रकट होती हैं। मल, कफ, पसीना, ऋतुस्राव, क्षत स्थानसे निकली पीब इत्यादि सब प्रकारके स्राव हीमें असहनीय बदबू रहती है। दुर्गन्ध और सडन रोकनेके लिये यह अद्वितीय है। जिस किसी स्थानमें पक्षाघात या जिस किसी प्रकारकी भी मस्तिष्क-विकृति ही क्यों न हो, यही सर्वप्रधान औषध है। मनोविकार-जनित सभी रोगोंमें ही इसका विस्तृत और निश्चित अधिकार है। केवल यही नहीं, इस औषधका व्यवहार मालूम होनेपर ससारसे पागलोंकी संख्या अस्वाभाविक रूपमें घट जायगी। श्वासकष्ट दूर करनेमें इसकी विशेष शक्ति दीख पडती है। सब प्रकारकी दुर्बलतामें **कैल्क फॉस** ही प्रधान औषध है, किन्तु स्नायविक दुर्बलतामें केलि फॉस ही प्रधान औषध है। प्रात.काल, गोलमालमें, निर्जनतामें, रोशनीमें, स्थिर

रहनेपर एव अधिक सचालनसे सभी प्रकारके रोगोंकी वृद्धि, किन्तु थोड़े-से सचालनसे या मानसिक आनन्दमे घटते हे।

चेतावनी—६x और इससे निम्न शक्तियाँ लगातार बहुत दिनोंतक व्यवहार करना उचित नहीं।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—केलि फॉसके मानसिक लक्षणोंके वर्णनके समय सभीको अनुभव हुआ होगा कि यह स्नायविक धातु (nervous temperament) का यथावत प्रतिरूप है। **सामान्य कारण हीसे विरक्त होना** इस औषधका एक विशेष लक्षण है। थोडा-सा भी गोलमाल करनेपर **असहिष्णु** हो पडता है और उसके काममें गडबडी हो जाती है। **बहुत ही चिड़चिड़ा स्वभाव**, वयस्कोंमें जिस तरह इस प्रकारके लक्षण दीख पडते हैं, वैसे ही बालकोंमें भी। बच्चे केवल घें-घें पिन-पिन किया करते हैं, थोडे हीमें क्रोधित हो जाते हैं और केवल गोदी हीमें रहना तथा एक घरसे दूसरे घरमें आना-जाना पसन्द करते हैं।

उद्विग्न, सन्दिग्धचित्त (suspicious), **बिना कारणसे ही भय, सभी विषयोंमे दुश्चिन्ता, पहले ही से भविष्यके विपदके विषयमे निश्चित कर लेता है, जीवनके बुरे दिन ही देखता है, उत्साहहीन और हतबुद्धि-सा,** सामान्य कार्यको अति कष्टसाध्य रूप सोचता है। **सर्वदा विचारोंमे परिवर्तन होता रहता है।** भविष्यके विषयमें स्वप्न देखकर जिस प्रकार भयभीत और उद्विग्न होता है, बीते हुए विषयोंके सम्बन्धमें भी वैसा ही होता है। निरर्थक ही रहनेके घरको छोडनेके भयसे डरता है (home sickness), इस तरह नाना प्रकारकी मिथ्या धारणाओंके वशीभूत हो कष्ट भोगता है।

स्मरण-शक्तिकी कमी (loss of memory) होनेपर कैल्क फॉस के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। लिखते समय लोगोंके नाम, ग्रामका नाम अथवा अन्य किसी विषयका नाम प्राय. ही गलती कर बैठता है; हिज्जे करनेमें भूल करता है अथवा कोई शब्द ही याद नहीं आता। किसी-

किसी समय बहुत चेष्टासे थोड़ा-थोड़ा करके सभी विषय ही स्मरणमें
लानेपर याद होने लगते हैं।

अतिशय मानसिक परिश्रम हेतु मस्तिष्ककी क्लान्ति (brain fag
due to over-work)। थोड़ा-सा मानसिक परिश्रम करनेपर
भी बहुत थकावट मालूम होती है। उत्साहहीनता और अवसन्नताका
भाव बहुत अधिक दीख पड़ता है। सभी विषयोंके बुरे नतीजे ही ध्यानमें
आता है। डॉ० केण्टका कहना है कि यह शारीरिक और मानसिक
जड़त्वकी श्रेष्ठ औषध है।

चेतनाहीन, बड़बड़ाते हुए प्रलाप बकना (stupor and low
delirium)। ज्वरादिके साथ प्रलाप (नेट्रम म्यूर, फेरम फॉस)।
वालाक्षेप, मदात्यय या मद्यपान-जनित प्रलाप (delirium tremens,
नेट्रम म्यूर)। काल्पनिक वस्तु देखकर उसे पकड़नेकी चेष्टा करना,
(grasping at imaginary things), मस्तिष्ककी कोमलता
(softening of the brain), अपने आप या शरीर स्पर्श करते ही
चौंक (startling) उठता है।

चित्तोन्माद, पागलपन (insanity), सूतिकोन्माद (puerperal
mania) और नाना प्रकारकी मानसिक विकृति (mental deran-
gements)। जाग्रतावस्थामें भी अनमेल बातें कहता है।

सर्वदा दीर्घश्वास (sighing) लिया करता है। हिस्टिरिया
के दौरमें कभी हँसता है और कभी रोता है। अचानक मनमें किसी
प्रकारका दुःख पाकर या मानसिक उत्तेजनाके कारण हिस्टिरिया।
शोकसे उत्पन्न कोई भी रोग (effects of grief)। किसीके साथ
बात करना नहीं चाहता एवं अन्य कोई उसके साथ बात करे, यह भी वह
पसन्द नहीं करता। अतिरिक्त स्त्री-संगम और हस्तमैथुनके कारण
स्नायविक अवसन्नतामें यह उत्कृष्ट औषध है।

बच्चे निद्रामें अकस्मात् भय खाकर चिल्ला उठते हैं। लड़के निद्रा-
वस्थामें भ्रमण करते हैं। सहज ही में बालकोंकी नींद टूट जाती है।

कृमिके कारण भी लड़के निद्रितावस्थामें चिल्ला उठते हैं (नेट्रम फॉस)। **भयसे, स्पर्श और गोलमालसे सहज ही में चौंक पड़ते हैं।**

अकेला रहना या स्वातन्त्र्यभाव, केवल दूसरोके दोषको खोज निकालनेकी चेष्टा करता है।

रातमे विना किसी कारण भयमय और लज्जित होता है, किसी काल्पनिक चित्रादि देखकर भयभीत होता है। सर्वदा डर-डरकर रह, सुख जो क्या चीज है उसे समझ नही पाता। रोगका, निर्जनताका और सन्ध्याका भय।

अपना स्वास्थ्य ठीक नही है, किसी प्रकारके रोगसे ग्रसित होकर ही स्वास्थ्यकी अवनति हो रही है—इस प्रकारकी चिन्ता ही उसे अवसन्न कर देती है (hypochondriac mood)।

स्त्रियाँ स्वामी और पुत्र-कन्यादिके प्रति निष्ठुर भावापन्न होती हैं। वे (स्त्रियाँ) अपने परिवारवर्गके प्रति और अन्यान्य सभी विषयोसे भी उदासीनता दिखलाती हैं। वह (स्त्री) परिवार वर्गके साथ झगडती है।

उपरोक्त उन सभी लक्षणोकी प्रातःकाल, सन्ध्या समय, ऋतुकालमें, सिर-दर्दके समय, सहवासके वाद, कुछ भी वोलनेके वाद एव नीद टूटनेके वाद वृद्धि होती है।

सिर-दर्द (headache)—स्नायुकी अवसन्नता ओर दुर्बलता हेतु सिर-दर्द। वायु-प्रधान व्यक्तिोका सिर-दर्द। **अतिरिक्त मानसिक परिश्रम-जनित सिर-दर्दमे** यह अति उत्कृष्ट है। विद्यालयके छात्र, वकील, जज, डाक्टर और वैषयिक व्यक्तियोके अत्यधिक अध्ययन या मानसिक परिश्रम-जनित सिर-दर्द। अतिशय दुर्वलता हेतु सिर-दर्द। स्नायविक सिर-दर्दके कारण कानमें गुनगुनाहट। मस्तकके पीछेकी तरह भारी और दर्द मालूम होता है। दर्द सामने आँखो तक फैल जाता है। दर्द भोजनके समय तथा सामान्य सचालनसे व किसी प्रकारके स्फूर्तिदायक कामसे घट जाता है। मस्तिष्कमें रक्तहीनताके कारण स्नायविक दुर्वलता और इस हेतु सिर-दर्द।

दर्द बायीं ओर अधिक रहना है। बायीं ओरकी आँखसे मस्तक तक दर्द। निद्राके बाद भी आराम नहीं मालूम होता।

मस्तककी दाहिनी ओर दर्द, मस्तकमें खुजलाहट एवं प्रातःकाल उसकी वृद्धि। दाहिनी आँखमें चुभनेकी तरह दर्द (stitching pain)।

पीछेके मस्तकमें दर्द, दर्द रात भर रहता है। दर्दके कारण रातमें बार-बार नींद टूट जाती है, किन्तु बिछावन छोड़नेके बाद उसका घट जाना। दर्द दबानेसे बढ़ना है।

सिर-दर्दके साथ जोरोंकी भूखका लगना। स्नायविक सिर-दर्दके साथ चिन्ता करनेमें असमर्थता, दुर्बलता और निद्राहीनता दीख पड़ती है। श्वास-प्रश्वास दुर्गन्धयुक्त। जिह्वा घुले हुए बासी सरसोंकी तरह सफेद रङ्गके लेपसे आवृत। रोगी अकेला रहनेपर तकलीफ मालूम करता है, रोगकी वृद्धि हो जाती है और रोता है।

सामान्य शब्दसे, गोलमालसे, सोनेपर, सोकर उठनेपर, बैठनेसे, ऊपरकी ओर देखनेसे, खड़ा होनेपर, रोशनीकी ओर ताकनेसे, मानसिक परिश्रमसे और अकेले रहनेपर सिर-दर्दकी वृद्धि होती है। धीरे-धीरे मस्तकके सञ्चालनसे, आनन्ददायक कामसे, मस्तकपर जल ढालनेसे, उत्तापसे और भोजन करनेके समय घट जाता है।

सिर-दर्दके कारण अनिद्राके हेतु सिर-दर्द।

अधकपारी (hemicrania)—यही प्रधान औषध है। यह उत्तेजित या पक्षाघातग्रस्त स्नायुको स्वाभाविक और सबल कर सिर-दर्दको घटा दिया करता है।

मस्तिष्कावरक-झिल्ली प्रदाह—(meningitis)—उक्त पीड़ाके साथ स्नायविक लक्षण रहनेपर, दूसरी दवाके लक्षण रहनेपर उसके साथ पर्यायक्रमसे। निद्रितावस्थामें अचानक चिल्ला उठना (sudden shrill, piercing screams) अथवा नींदके समय बीच-बीचमें चौंक पड़ना (startling)। सहज ही में उत्तेजित और भयभीत होता है।

संन्यास (apoplexy)—रोगके पहले या उसके वाद पक्षाघात का कोई लक्षण दिखाई देनेपर यह दवा विशेष उपयोगी है। स्नायविक लक्षणोंकी अधिकता अथवा किसी मानसिक कष्ट या शोकसे उत्पन्न होनेपर यह उत्कृष्ट है। फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे।

स्नायुशूल (neuralgia)—स्नायुशूलकी प्रधान औषध मेग फॉस है। जो लोग वहुत चिडचिडे, कमजोर, अवसादग्रस्त, सहज ही में उत्तेजित होना और अनिद्रा-रोगमे पीडित रहते हैं उनके लिये केलि फॉस विशेष उपयोगी है। **वेदना थोड़े-से सञ्चालनसे या स्फूर्तिदायक काम करनेसे घट जाती है और अधिक हिलने-डोलनेपर और अकेले रहनेपर रोगकी वृद्धि इस दवाका निर्देशक लक्षण है।**

मस्तिष्क शून्यता (brain fag)—लुप्त स्नायविक शक्ति को पुनः लानेके लिये यह उत्कृष्ट है। सव प्रकारकी स्नायविक दुर्वलता ही इससे आरोग्य हो जाते हैं। शक्ति—६x।

उन्माद (insanity)—सव प्रकारके उन्माद रोगमें केलि फॉस ही प्रधान और एकमात्र औषध है। **अतिरिक्त अध्ययन या मानसिक परिश्रम-जनित रोगमे यह अति उत्कृष्ट है। सामान्य कारणसे विरक्त होना, बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव। उद्विग्न, सन्दिग्धचित्त, विना कारण ही डरना, सभी विषयोंमें दुश्चिन्ता एव सभी कामोंके असार-भागको ही देखता है। उत्साहहीनता और हतबुद्धि-सा एवं सर्वदा ही विचारोंमें परिवर्तन होता रहता है।** कभी हॅसता है, कभी रोता है, कभी आनन्दित और कभी दुःखित होना। नाना प्रकारकी मिथ्या धारणाओंका उदय होता है। घर छोडनेके भयसे व्यर्थ भयभीत होता है (लेकिन घर जाना पसन्द करना कैल्क फॉस में है), रोगी किसीके साथ वात-चीत करना पसन्द नहीं करता एव कोई उसके साथ वात करे यह भी वह नही चाहता। हिलना-डोलना उसको अच्छा नहीं लगता, इसलिये वह चुपचाप वैठ रहना पसन्द करता है

(बहुत बेचैनीका भाव कैल्क फॉसमें दिखाई देता है)। नाना प्रकारकी अनमेल बातें बोलता है। शोक या दुःखसे उत्पन्न रोग।

मदात्यय या शराब पीनेके कारण रोग (delirium tremens)—नेट्रम म्यूर ही इसमें प्रधान औषध है। अनिद्रा, भीत-चित्त, अस्थिरता, सन्दिग्धचित्त, अनमेल वाक्य कहना, एक विषयका प्रलाप बकते-बकते दूसरे विषयके सम्बन्धमें प्रलाप बकना, कल्पित वस्तुको देखना इत्यादि इस दवाके प्रयोग लक्षण हैं। बड़बड़ाते हुए प्रलाप बकना रहनेपर **नेट्रम म्यूर**के साथ एवं ज्वरके साथ उच्च प्रलाप रहनेपर **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए।

पक्षाघात (paralysis)—सब प्रकारके पक्षाघातकी यही सर्व-प्रधान औषध है। पक्षाघात धीरे-धीरे ही हो या अचानक बड़ी शीघ्रतासे ही हो, प्रायः ही इस दवाका प्रयोग करना आवश्यक होता है। स्वर-यन्त्रके पक्षाघातके कारण स्वरभंग होनेपर भी इसका व्यवहार करना चाहिये। दुर्गन्धयुक्त मल निकलता है।

चक्षु-रोग समूह (diseases of the eye)—हमेशा इस औषधकी आवश्यकता नहीं होती। साधारण रोगकी जटिल अवस्थामें इसका प्रयोग होता है। किसी कठिन बीमारीके बाद बहुत अधिक दुर्बलता हेतु दृष्टिशक्तिका घट जाना। ऑप्टिक नर्वका आंशिक पक्षाघात अथवा क्षयके कारण दृष्टिशक्तिका घटना या नष्ट हो जाना। किसी रोगके समय आँखकी पुतली फैली और रोगी उत्तेजित होकर देखता रहता है। पलकोंकी पेशियोंकी दुर्बलताके कारण पलकें झूल पड़ती हैं (drooping of the eyelids)। चक्षुमध्यस्थ पेशी समूहकी दुर्बलताके कारण ऐंची आँख या दृष्टि, विशेषतः डिफ्थिरिया रोगके बाद। पलकें और चक्षुगोलक वेदनायुक्त। आँखोंके भीतर जलन एवं तीव्र वेदना मालूम होती है। आँखोंके सामने काले-काले पदार्थ दीख पड़ते हैं। नींद टूटनेके बाद सूर्यकी रोशनीमें और पढ़नेके समय तकलीफ बढ़ती है। सहवासके बाद अस्पष्ट दृष्टि।

कर्ण-रोगसमूह (diseases of the ear)—स्नायविक दुर्बलता हेतु श्रवणशक्तिका घट जाना एवं इसके साथ कानमें नाना प्रकारके शब्द। मस्तकके भीतर भी शब्द और गोलमाल मालूम होते हैं। कानके भीतर वेदना, खुजलाहट एवं घाव होकर उससे पतली, दुर्गन्धयुक्त और सफेद पीब निकलती है। कभी-कभी पूर्वोक्त पीबके साथ रक्त भी मिश्रित रहता है। वृद्ध व्यक्तियोंके कानोंकी शीर्णता और मछलीकी चोइयोंकी भाँति चमड़ेका उठना, थोड़े-से शब्दसे ही कर्णवेदना असह्य मालूम पड़ती है। पीब जिस स्थानपर लगती है घाव हो जाता है।

नाककी सर्दी (coryza)—ओजिना-रोगमें दुर्गन्धजनक स्राव निकलनेपर (साइलि)। **दीर्घकाल स्थायी पीले रंगकी गाढ़ी सर्दी निकलना अथवा नाक छिड़कनेपर पीले रंगकी पपड़ी निकलती है।** प्रात:काल ही इसकी वृद्धि होनेपर उच्चशक्ति व्यवहार्य है (३०x शक्तिके नीचे नहीं)। केलि फॉसके सभी प्रकारके स्राव ही में असहनीय बदबू रहती है।

मामूली ठण्डा लगनेपर ही छींक आती है। अधिक समय तक छींकनेकी इच्छा होती है, किन्तु छींक नहीं आती।

नाक से रक्तस्राव (epistaxis or bleeding from the nose)—दुर्बल व्यक्तियोंके नाकसे रक्त गिरना। नाकसे पुन:-पुन: रक्त गिरनेसे फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे सेवन करानेसे रक्त गिरनेका दोष दूर हो जाता है। नाकसे जो रक्त निकलता है, वह तरल, काला-सा, कालापन लिये लाल एवं सहजमें जमता नहीं। रक्त दुर्गन्धयुक्त।

तालुमूल-प्रदाह (गलेकी गिल्टियोंकी सूजन—tonsillitis)—टान्सिलाइटिस-रोगमें जब टान्सिल सड़ना आरम्भ होता है या टाइफॉयड इत्यादि भयानक अवस्था प्रकट होती है एवं रोगी अत्यन्त दुर्बल, अवसन्न और उद्वेगपूर्ण होता है, उस समय अन्य आवश्यकीय औषधके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। टान्सिल बढ़ी और वेदना युक्त एवं डिफ्थिरियाके मेम्ब्रेनकी भाँति श्वेतवर्ण श्लैष्मिक झिल्लीसे आवृत हो जाती है, विशेषतः प्रात:कालके समय।

गलक्षत (sore throat)—तालुमूल प्रदाह अध्यायमें वर्णित लक्षण समूह देखिये।

दन्त-वेदना (toothache)—दुर्वल स्नायु और वायुप्रधान व्यक्तियों के दाँतका दर्द (मैग फास)। निद्राहीनता और मानसिक परिश्रम हेतु दाँतका दर्द, मसूढ़े स्फीत और वेदनायुक्त। **स्नायविक कारणोंसे जाडेके दिनोंके अलावा भी जाडेके दिनोंकी ही तरह दाँत कटकटाती है** (कृमिके कारण नहीं)। **कीड़े लगे दाँतमे तीव्र वेदना**। दाँत-दर्दके साथ लार गिरना (नेट्रम म्यूर)। सहज हीमें दाँतसे रक्त निकलता है। **दाँतका दर्द छिन्नकर प्रकृतिका**।

थोडी भी ठण्ड लगनेपर, अपराह्नमें, रातमें, मानसिक परिश्रमके वाद और निद्राहीनताके पश्चात् दन्त वेदनाकी वृद्धि एव स्फूर्तिदायक कामसे, थोडा दवानेपर और सामान्य सचालनसे ह्रास।

मसूढ़ेका रक्तस्राव (hæmorrhage of the teeth)—मसूढ़ोंके रक्तस्रावमें यही प्रधान औपध है। **जिन लोगोंको सहज ही में मसूढेसे रक्तस्राव होता है, उनके लिये यह विशेप उपयोगी है**। रक्तका वर्ण नीचे रक्तस्राव अध्यायमें देखिये।

रक्तस्राव (hæmorrhage)—दुर्वल और शिथिल प्रकृतिके व्यक्तियोंको दुर्वलता हेतु रक्तस्राव, रक्तहीन व्यक्तियोंके रक्तस्रावकी प्रवणतामें केल्क फॉस और फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। रक्तका रंग अलकतरा-सा काला, कालापन लिये लाल, पतला और जमता नहीं। रक्त सड जाता है।

स्वरभंग (hoarseness)—अत्यधिक दुर्वलता या स्नायविक अवसाद हेतु रोग। गलेके अन्दर वहुत थकावट मालूम होती है। स्वर यत्रके पक्षाघातमें (प्रथमावस्थामें फेरम फॉस) उत्कृष्ट है। गलेकी आवाज वैठ जाती है।

वमन (vomiting)—कॉफीके चूर-से पदार्थका वमन। भोजनके वाद कड़ुआ स्वादयुक्त पित्त वमन। वमनसे आराम मालूम होना।

काला-सा रक्त वमन। स्नायविक कम्पन हेतु वमन। अम्लपित्त और कड़वी डकार उठना।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—रोगकी किसी भी हालतमें अवसन्नता, अतिरिक्त दुर्बलता, नाड़ी लुप्त, सारा शरीर ठण्डा इत्यादि भयानक अवस्थाएँ दीख पड़नेपर। रोगके वादके नाना प्रकारके कुफल, जैसे—दृष्टिशक्ति, घ्राणशक्ति, श्रवणशक्ति और वाक्शक्तिकी कमी या ह्रास होनेपर यह उपयोगी है। जीभ अचैतन्य या पक्षाघात, यहाँ तक कि नाकसे वात करना रहनेपर भी यह फलप्रद है। इनके सभी प्रकार के स्रावमें अत्यन्त वदवू रहती है।

पाकस्थलीके रोग (diseases of the stomach)—पाकाशयका नया या पुराना गेस्ट्राइटिस (acute or chronic catarrhal gastritis), पाकाशयका क्षत (ulcers), पाकाशयके कैन्सर (cancer) इत्यादि रोगोंमें जब अधिक विलम्बसे रोगी चिकित्साके लिये आता है, उस समय वह अतिशय दुर्वल और अवसादग्रस्त रहता है। मानसिक कष्ट, शोक और दुःखसे उत्पन्न पाकस्थलीका दर्द।

अजीर्ण (dyspepsia)—अतिरिक्त मानसिक परिश्रम अथवा स्नायविक दुर्बलता हेतु अजीर्ण रोग। अस्वाभाविक भूख। हमेशा खाते रहना ही चाहता है (कृमि हेतु होनेपर नेट्रम फॉस) और कभी-कभी इसके विपरीत भाव भी दिखाई देता है। खूब भूख लगती है, किन्तु थोड़ेसे भोजन ही से तृप्त हो जाता है और भूख भी मिट जाती है। पेट फूलता है और उसी वायुका दवाव हृद्पिण्ड में लगकर हृद्स्पन्दन या हृद्पिण्डमें दर्द होता है। डकार उठता है तथा गले और छातीमें जलन होती है। भोजन के वाद पाकस्थलीमे वेदना। भोजनके पश्चात् मिचली; वमनमें कड़ुआ स्वादयुक्त खाद्य-द्रव्य और कभी रक्त भी निकलता है। भोजनके वाद तन्द्रा आना। डकारमें वहुत वदवू रहती है। उदर खाली मालूम पड़ता है। मीठे द्रव्य, वरफ-सा ठण्डा पानीय, खट्टा और वासी जल पीनेकी स्पृहा रहती है। मास और रोटी खानेकी अप्रवृत्ति,

उदर भरा मालूम होता है। उदरमें सूई गडनेकी तरह वेदना। दुर्गन्धयुक्त अधोवायु निकलती है एव उससे रोगीको आराम मालूम होता है।

उदरामय (diarrhœa)—अतिशय दुर्वलता और अवसादके साथ वेदना-विहीन जलके दस्त होना। **मलमें वहुत सड़ी हुई वदवू रहती है।** मलका रंग कीचडकी तरह। मलमें वहुत अधिक दुर्गन्ध रहनेपर जिस किसी रगका ही मल क्यो न हो, इस दवाका प्रयोग करना होगा। केलि फॉसमें दुर्गन्ध नष्ट करनेकी असाधारण शक्ति है। वहुत दिनो तक उदरामयसे भोगते-भोगते अत्यधिक दुर्वल हो पडनेपर, दूसरी किसी दवाके लक्षण रहनेपर पर्यायक्रमसे इस औषधका व्यवहार करना चाहिए। शब्दके साथ दुर्गन्धपूर्ण वायु निकलती है। मालूम होता है कि पायखानेमें वैठनेपर दस्त होगा, किन्तु नहीं होता (कैल्क फॉस, मैग फॉस)।

दोपहरको भोजनके पूर्व प्रायः ही अतिशय दुर्गन्धयुक्त पानी-सा या कीचड-सा दस्त होता है। मलका वेग होते ही वहुत शीघ्र पायखाना जाना पडता है, नही तो कपडा खराव हो जाता है। भोजनके करनेके समय भी मल त्यागनेकी इच्छा होती है। वहुत तड़के वेदनाहीन दुर्गन्ध-युक्त तरल दस्त होता है। प्रातःकालके समय मल त्यागना और भी कई एक दवाओमें है। उनमें प्रभेद नीचे दिखलाया गया है।

नेट्रम सल्फ—प्रातःकाल रोगकी वृद्धि नेट्रम सल्फकी विशेषता है। निद्रा भङ्गके वाद कुछ समय तक टहलनेपर तव मलका वेग होता है। केलि फॉसकी तरह नेट्रम सल्फमें मलका वेग होते ही जल्दीसे पाखानामें दौडनेका लक्षण नही है। केलि फॉसकी भाँति नेट्रम सल्फके मलमें इस प्रकार सडी गन्ध भी नहीं है। नेट्रम सल्फमें उदरमें वायु इकट्ठी होकर स्फीत होता है और इसलिये उदरके दाहिनी तरफ वेदना होती है, किन्तु केलि फॉसमें उदरकी स्फीतिके कारण उदरकी वाँयी तरफ वेदना होती है। केलि फॉसमें अपराह्नमें पेटके अन्दर हड-हड गड-गड आवाज होती है, किन्तु नेट्रम सल्फमें सर्वदा ही उदरमें वायु इकट्ठी होकर हड-हड गड-गड आवाज होती है।

मैग फॉस—सुवहमे जलपान करनेके वाद प्रायः ८-६ वजे अचानक वार-वार पतला मल त्यागना। मल पहले सफेद, वादमें फीका, सादा और जल-सा पतला एव अन्तमें रक्त मिश्रित होता है। दूसरे दिन उसी एक ही समयपर मल त्यागना, किन्तु वेग पहले दिनसे कम।

फेरम फॉस—दस्त होना जव रातको वारह वजनेके वादसे प्रातः-काल तक वृद्धि होती है। मल हरे रङ्गका होता है।

रक्तामाशय (dysentery)—दुर्गन्धयुक्त मल त्यागना। उदर स्फीत, वायु निकलनेपर उसमे वहुत वदवू रहती है एवं शरीरमें भी सडी-सी गन्ध रहती है। रक्त मिश्रित या केवल रक्तका ही दस्त होना। पक्षाघात और उसका वाहर निकलना। मलद्वारमें जलन और वेदना।

हैजा (cholera)—अतिशय दुर्गन्धयुक्त चावलके धोवनकी भॉतिके रंगका तरल मल त्यागनेपर यह अति उत्कृष्ट औषध है। इस रोगमें स्नायुमण्डलके राखके रङ्गके पदार्थ (gray matter) का क्षय होता है। इस हेतु अत्यधिक दुर्वलता उत्पन्न होती है। इस दुर्वलताको दूर करनेमें केलि फॉस विशेष शक्तिशाली है। पतनावस्था (collapse stage) में जव चक्षु, मुख और नाडी वैठ जाती है अथवा सूले-सी हो जाती है, मुखमण्डल विवर्ण, स्वरभग और बहुत पमीना दिखाई देता है, उस समय केलि फॉस वहुत ही लाभप्रद है। मुखमें अतिशय दुर्गन्ध और दॉतमें मैल (sordes) जमती है। कालापन लिये रक्तका दस्त होनेपर भी यह उपयोगी है। हैजेके वादकी विकारावस्थामें भी यह व्यवहृत होता है। वडवडाकर प्रलाप वकना रहनेपर **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे एव उच्च प्रलापमें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। वेदनायुक्त और वेदनाहीन दोनों ही प्रकारके हैजेमे केलि फॉस व्यवहृत होता है। दस्त और वमनके कारण चुपचाप पडे रहनेपर भी यह जैसे उपयोगी है, वार-वार **दुर्गन्धयुक्त** मल त्यागके साथ दुर्वलता और चचलता रहनेपर भी यह उसी प्रकार उपयोगी है। प्रथमावस्थामें कभी या तो फेरम फॉस या कभी केलि सल्फके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता

होती है। अतिसारिक हैजा (diarrhoeic cholera) इसे अमोघ कहनेपर अत्युक्ति न होगी। आर—४, ६x।

रोगी विवरण—गत २०-८-३६ को आखिरी रातमें दिव्याशागरके पान्टआन्टरक माना श्री नरेन्द्रनाथ घोषको हैजा होनेके कारण चिकित्सार्थ मैं बुलाया गया। रोगीकी उमर ३५-३६ साल की होगी। रातको १२ बजेसे दस्त और वमन हो रहा था। दोपहरको चूड़ा दही खाया था। वमन शायद दो बार हो चुका था एवं पहले दो बारके दस्तमें केवल चूड़ा इत्यादि गिरा था। इसके बादसे सिर्फ चावल-धोवनके जल-सा दस्त बहुत परिमाणमें हड़हड़ाके नल सरीखा गिरता था। इतना जो पानी-सा अत्यधिक दस्त होता था, तब भी रोगीको दो तीन बारमें कुछ कुथन दे रह-रहकर होता था। पूछनेपर मालूम हुआ कि बहुत वेगसे ही उसे दस्त साफ नहीं होता एवं थोड़ा-थोड़ा करके दो-तीन बार दस्त होता है। दस्तमें इतनी बदबू रहती है कि बाहर भी नहीं रहा जाता एवं दस्त होनेके बाद दूसरे दस्त होने तक रोगी सो पड़ता है। प्रत्येक १५ मिनटके अन्तर दस्त हो रहा था। मैंने केलि फॉस ६x एक मात्रा प्रयोग करनेको दिया। इसके बादके मलमें बदबू न थी और परिमाणमें भी बहुत कम था और दो मात्रा प्रयोग करनेपर रोगी गाढ़ी नींदमें सो गया। फिर किसी दवाकी आवश्यकता न हुई। केवल दस्तकी विशेषतापर निर्भर कर इस प्रकारके बहुतसे रोगी थोड़े ही समयमें हम लोगोंके हाथों आराम हुए हैं।

कोष्ठवद्धता (constipation)—सरलान्त्र और मलद्वारके पक्षाघातके कारण कोष्ठबद्धता। जो लोग बैठे-बैठे समय बिताते हैं, उनकी कोष्ठवद्धता। हिस्टिरिया रोगग्रस्त लोगोंकी कोष्ठबद्धता। घोर बादामी या सफेद रंगके रक्तयुक्त और पीलापन लिये हरे रंगका श्लेष्मा मिश्रित मल। बहुत कड़ा, बड़े-बड़े गाँठयुक्त मल। मल त्यागनेमें बहुत कष्ट होता है।

शूलवेदना (colic)—पाकाशयमें गैस इकट्ठी होकर उदर स्फीत हो जाता है। ऊपरी उदरमें शूल-वेदनाके साथ बार-बार निष्फल

मल त्यागेच्छा। सामनेकी ओर झुककर बैठनेपर दर्दका घटना। वेदना-स्थल सुन्न-सा मालूम होता है। रक्तहीन, दुर्बल और स्नायविक व्यक्तियोंकी वेदना। सामान्य सञ्चालनसे और आनन्ददायक कार्योंसे घटना एव अधिक सञ्चालनसे वृद्धि।

मूत्रयन्त्रके रोग (diseases of the urinary organs)—ब्लाडरके स्फिङ्कटर-पेशी, अर्थात् मूत्रस्थलीके मुखपर पेशाव रोकनेवाली **पेशीके पक्षाघात हेतु अनजानमे पेशाब हो जाता है। बालकोंके शय्यामूत्रमें** यह अति उत्कृष्ट है (फेरम फॉस, कृमिके कारण होनेपर नेट्रम फॉस)। स्नायविक दुर्बलता हेतु **पेशाबके वेगको रोकनेमें असमर्थता।** पेशावका वेग होते ही शीघ्रतासे पेशाव करने जाना पडता है, नही तो कपडा खराब हो जाता है। पुनः-पुन. अधिक परिमाणमें पेशाव होना और पेशाव करते समय मूत्रनली और मूत्रद्वारमें जलन मालूम होती है। बहुमूत्र-रोगमें स्नायविक दुर्बलता एव अति क्षुधा रहनेपर दूसरी दवाके साथ २।१ मात्रा करेके व्यवहार करना चाहिये। ब्राइट्स पीडा (bright's disease) में यह उपकारी है। मूत्रद्वारसे रक्तस्राव होता है। पेशावमें लाल रगकी बालू-सी तलछट (sediment) पडती है। **पेशाव उज्ज्वल पीले रंगका।** पेशाव करनेके बादभी बूँद-बूँद पेशाव गिरता है। पेशावमें चीनी (sugar) रहती है एव आपेक्षिक गुरुत्व (specific gravity) बढ जाता है।

प्रमेह (gonorrhœa)—मूत्रनलीसे रक्तस्राव होनेपर यह व्यवहार्य है। मूत्रनलीके मुखमें ही जलन। लिंगमुण्डके अथवा उसके आवरक पर्देके प्रदाह और स्फीतिमें व्यवहृत होता है। मूत्रनलीमें सूई गडने-सा दर्द।

ब्राइट्स डिजीज (bright's disease)—कैल्क फॉस ही प्रधान औषध है। स्नायविक दुर्बलतामें केलि फॉस व्यवहृत होता है।

धातुस्खलन (spermatorrhœa)—हस्तमैथुनके कारण ही हो या दूसरे किसी भी कारणसे हो, अतिरिक्त वीर्यक्षय हेतु स्नायविक दुर्बलता, उत्साहहीनता, अनिद्रा, किसी काममें भी दिल न लगना इत्यादि

लक्षणोंमें फलप्रद है। प्रात:काल जननेन्द्रिय वहुत उत्तेजित होती है एव
सहवासकी इच्छा अत्यन्त प्रवल होती है। सहवास करनेके वाद ही वहुत
सुस्तीपन। विना उत्तेजनाके ही वीर्यस्खलन। **ध्वजभग-रोग**। उत्तेजना
दो कारणोंसे होती है—(१) अतिरिक्त इन्द्रिय परिचालना हेतु, (२)
उत्तेजना दमन करनेके हेतु। लिंगोद्रेकके साथ सदा ही शुक्र-नि:सरण।
सगमकी प्रवृत्ति लुप्त हो जाती है।

उपदंश (syphilis)—फैजेडेनिक सैंकर (phagedenic chancre)
अर्थात् जिस उपदंशका क्षत सडता है एव शीघ्र-शीघ्र वढता है, उसमें
यह विशेष उपयोगी है। इसके साथ क्षतमें सडी वदवू रहनेपर यह और
भी उपयोगी है।

स्वल्परज: (amenorrhœa)—शारीरिक और मानसिक दुर्वलता
या अवसाद, उत्साहहीनता, आलस्य मालूम होना, मुखमें दुर्गन्धका अनुभव
होनेके साथ मासिक ऋतु-स्रावमें विलम्ब। रोगिणीका स्वभाव चिडचिडा,
चचल और सहज ही में क्रन्दनशील। वासी पीसी सरसोंकी-सी लेपयुक्त
जीभ।

ऋतुस्राव अधिक विलम्बसे होना, **अल्पकाल स्थायी** एव **अल्प परि-
माणमें** होता है। ऋतुस्रावके समय प्रसव-वेदना-सी वेदना होती है।
वायी ओरके तलपेटमें, वायी ओवरीमें और वाऍ पैरमें वेदना। हिलने-
डोलनेपर और पेटके वल सोनेपर उपशम मालूम होता है। स्रावका रंग
घोर लाल, कालापन लिये लाल (dark red), पतला रक्त, सहजमें
जमता नहीं एव दुर्गन्धमय। ऋतुस्रावके वाद ४।५ दिनों तक सहवासकी
इच्छा अत्यन्त प्रवल होती है। गलेके निकट मानो कुछ गोलेकी भाँति
चढ़ रहा है, ऐसा मालूम होता है। डिम्बकोपमें गडनेकी-सी वेदना।

शक्ति—६x।

कष्टरज: या वाधक-वेदना (dysmenorrhœa)—ऊपर स्वल्प-
रज: अध्यायमें विस्तारपूर्वक वर्णित हुआ है, अत: पुन: उल्लिखित न हुआ।
वहुत वार **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है।

जरायुकी अन्यान्य पीडाओंमें भी उपरोक्त लक्षण देखें।

शक्ति—३x, ६x।

रक्तप्रदर (menorrhagia)—रक्तस्राव अध्याय देखिये। अतिरिक्त रक्तस्राव हेतु अवसन्नता।

श्वेत-प्रदर (leucorrhœa)—शारीरिक और मानसिक अवसन्नताके कारण पीडा उत्पन्न होनेपर। स्राव उत्तेजक और वह जिस स्थानपर लगता है, उसी जगह ही फफोलोंकी तरह घाव हो जाते हैं (नेट्रम म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे)। श्वेत-प्रदरका स्राव पीलापन लिये हरे रंगका होता है। प्रदर जलनदायक, अम्लात्मक और दुर्गन्धयुक्त होता है।

प्रसव-वेदना (labour pain)—सुप्रसव करानेके लिये इससे उत्कृष्ट दवा और दूसरी कोई आविष्कृत नहीं हुई है। प्रसवके एक माह पहले ही से यह दवा बीच-बीचमें २-१ मात्रा करके व्यवहार करानेसे बडी सरलतासे और बिना किसी विघ्नके सुप्रसव हुआ करता है। प्रसव-वेदना अच्छी तरह नहीं आती, अर्थात् वेदना जोरोंसे नहीं होती, कुछ देर तक वेदना आकर फिर ठण्डी पड जाती है या घट जाती है। वेदना कभी कम, कभी ज्यादा। दुर्बलता हेतु अत्यन्त कष्टकर प्रसव-वेदना। जो सब प्रसूति सहज ही में उत्तेजित हो जाती हैं अथवा थोडे ही में रो पडती है। अकार्यकारी दुर्बल और कृत्रिम प्रसव-वेदनामें यह दवा शुष्काकारमें जीभपर दे देनेसे अतिशीघ्र ही जरायुका बल बढकर प्रसव-वेदना उत्तेजित हो बडी शीघ्रतासे सुप्रसव होता है। लेखक हजारों रोगिणियोंपर इस दवाकी परीक्षा कर कभी भी निष्फल नहीं हुए हैं। २-३ मात्रासे अधिक दवाका कभी भी प्रयोग करना नहीं पडा है। प्रत्येक १५ मिनटके अन्तरसे एक-एक मात्रा दवाका प्रयोग करना पडता है। शक्ति—४x, कोई-कोई ३x देनेको कहते हैं।

रोगी-विवरण—(१) एक १६ या १७ वर्षकी युवती तीन दिनोंसे प्रसव-वेदनासे तकलीफ पा रही थी। दो दिनोंसे भ्रूणका मस्तक प्रसव-

द्वारमें आया मालूम पडता था, किन्तु वेदना न रहनेके कारण प्रसव नहीं
हो रहा था। शायद एलोपैथिक चिकित्साके द्वारा ऐसा हुआ रहा होगा।
एलोपैथिक औषध और इंजेक्शन प्रयोग करनेपर भी कोई प्रभाव नहीं होता।
तीसरे दिन अपराह्नमें बुलावेमें जाकर देखा कि रोगिणी अत्यन्त भयभीत हो
जडकी भाँति निश्चल पडी है। उसको देखनेपर यद्यपि मालूम होता था
कि उसको कुछ भी ज्ञान नहीं है, किन्तु वास्तवमें पहली वार गर्भवती होनेके
कारण माता-पिता और अन्यान्य परिवारवर्गके लोगोंकी भयभीतावस्थाको
देखकर ही वह इस प्रकार निश्चलभावसे पडी हुई थी। प्रसव-वेदना
विलकुल ही नहीं थी। रोगिणीकी माताको आशा व भरोसा देनेके वाद
मेरे एकमात्र केलि फॉस ४x प्रयोग करनेके ७-८ मिनटके पश्चात् ही
वेदना हुई एवं और दो मात्रा औषधका प्रयोग करते ही सुप्रसव हुआ, किन्तु
दीर्घ समय तक अवरुद्ध रहनेके कारण लडका मृतवत् मालूम पडता था।
तुरन्त ही पर्यायक्रमसे उष्ण और शीतल जलका प्रयोग एवं कृत्रिम श्वास-
प्रश्वास क्रियाका अवलम्बन करनेके हेतु उस नवजात शिशुके प्राणकी रक्षा
हुई। इन दोनों कार्योंको सम्पन्न करनेमें केवल एक घण्टेका समय लगा था।

रोगिणी एक उपाधिकारी एलोपैथिक डाक्टरकी कन्या थी। मैं जब
रोगिणीके घरपर उपस्थित हुआ, उस समय वहाँ पर २-३ एलोपैथिक
चिकित्सक और पडोसकी वहुत-सी स्त्रियाँ थीं। चिकित्सकोंने
फॉरसेपकी सहायतासे प्रसव करानेका काम पूरा करनेका निश्चय किया
था, किन्तु रोगिणीकी माता और पडोसियोंके वार-वार होमियोपैथिक
चिकित्सककी सहायता लेनेके लिए कहनेपर मुझे वुलाया गया। डाक्टर
साहव लडकीके लिये पागल-सा दौड-धूपकर जहाँपर सहयोगी भाइयोंकी
सहायता लेकर भी कुछ न कर सके थे, वहाँ ३ ग्रेन धूलि-मत्रसे कई एक
मिनटोंमें ही वह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

(२) ग्रन्थ लेखक द्वारा और एक स्त्रीके गर्भसे एक मृत सन्तानको
भी उसी तीन मात्रा औषधसे वाहर निकाला गया था। किन्तु इसमें
८-१० घण्टेका समय लगा था।

गर्भस्राव (miscarriage)—जिनको प्रायः ही गर्भस्राव होता है, उनको गर्भ रहनेके वाद ही से इस औषधका सेवन कराना चाहिये। गर्भस्राव होनेके पहले ही किसी लक्षणसे मालूम होनेपर इस दवाका सेवन कराना वहुत ही आवश्यक है। प्रधान औषध **कंल्क फ्लोरके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है। सहवासमें अप्रवृत्ति। रोगिणी स्नायविक धातुकी होनेपर और भी उत्कृष्ट है।

सूतिका-ज्वर (puerperal fever)—सूतिका-ज्वरमे, गर्भावस्थामे या प्रसवके वादकी उन्मत्ततामे एव सव प्रकारकी मानसिक विकृतिमे यह अत्युत्कृष्ट है।

स्तन-प्रदाह (mastitis)—स्तन-प्रदाहमें दुर्गन्धयुक्त पीली पीव निकलती है।

घुड़ी खाँसी (croup)—**केलि म्यूर** ही इस पीडाकी प्रधान औषध है; किन्तु जव रोगी अधिक देर कर आता है एव अतिशय दुर्वलता और थकावट रहनेपर केलि म्यूरके साथ यह दवा पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। शक्ति—३x।

दमा (asthma)—**श्वास-प्रश्वास शीघ्र-शीघ्र लेते रहनेपर** इसका प्रयोग शायद ही कभी व्यर्थ होता है। श्वास-प्रश्वासमें अत्यधिक कष्ट होता है। थोड़ा भी कुछ भोजन करनेके वाद, हिलने-डोलनेपर एवं परिश्रमसे पीडाकी वृद्धि। अतिशय दुर्वलता। इस पीडामें ३x शक्ति वार-वार व्यवहार करनेपर अति शीघ्र ही फल मिलता है। उपरोक्त लक्षणोंमें इस दवाका व्यवहार कर हमलोग कभी विफल नहीं हुए हैं।

फुसफुस-प्रदाह (pneumonia)—टाइफॉयड या सान्निपातिक अवस्था। स्नायुमण्डलकी अवसन्नता, रोगी अतिशय दुर्वल और अवसादग्रस्त, श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, नाड़ी दुर्वल, सूत्रवत, दुर्गन्धयुक्त मल, गाढ़ा पीले रंगका नमकीन कफ, छातीमें वेदना, रक्तात्क श्लेष्मा, तन्द्रा, प्रलाप, विकार इत्यादि रहनेपर वहुत ही फलदायक है। सामान्य सचालनसे ही श्वास-कष्टकी वृद्धि।

यक्ष्मा (consumption)—श्वास-प्रश्वासमें कष्ट, सड़ा दुर्गन्धयुक्त श्लेष्मा निकलना, अतिशय दुर्वलता तथा शीर्णता और हृद्‌पिण्डकी क्रिया अनियमित रहनेपर यह प्रधान औषध है। रातके अन्तिम भागमें जो खाँसी होती है, उसके साथ श्लेष्मा नही निकलता।

खाँसी (cough)—ऊपरमें घुडी खाँसी, दमा, फुसफुस-प्रदाह और यक्ष्माके विषयमें जो कुछ वर्णित हुआ है, उन्हें ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेपर सव प्रकारकी खाँसीकी चिकित्सामें इस दवाके व्यवहार करनेकी प्रणाली मालूम हो जायगी। सव प्रकारकी खाँसीमें ही श्वास-प्रश्वासमें कष्ट दिखाई देता है एव रोगी भी अत्यधिक दुर्वलता अनुभव करता है। गाढा पीले रगका, मीठा, सड़ा हुआ और लवणाक्त स्वादयुक्त कफ। छातीमें वेदना। ट्रेकियाकी उत्तेजनाके कारण खाँसी। शक्ति—१२x।

हृद्‌पिण्डकी पीड़ाएँ (diseases of the heart)—हृद्‌पिण्डके सव प्रकार प्रदाहकी प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस** उपयोगी है। किन्तु जव रोगी अतिशय दुर्वल हो जाता है, हृद्‌पिण्डकी क्रिया अनियमित अर्थात् कभी-कभी हृद्‌पिण्डका स्पन्दन रुक-रुककर होता है, नाडी दुर्वल, अस्थिरता, अनिद्रा, थोडेमें ही उत्तेजित होना इत्यादि लक्षण होनेपर यही उस समय प्रधान औषध है। इस दवाका प्रयोग करनेपर हृद्‌पिण्ड सवल और कलेजेकी धड़कन घट जाती है। नाना प्रकारके मानसिक कष्टोंको भोगनेके हेतु यह पीडा होनेपर यही एकमात्र दवा है। सीढियोंसे ऊपर चढ़ते समय छाती धड़कने लगती है और श्वासकष्ट वढ़ जाता है एव रोगी अत्यन्त दुर्वलताका अनुभव करता है। हृद्‌शूलमें इसकी ६x शक्ति मैग फॉस ३x शक्तिके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये।

रोगी-विवरण—पिछले साल ई० १९५२ की गरमियोंमें दक्षिणी कलकत्तेके वेलतला रोडके एक दुवले-पतले प्रौढ भद्रपुरुष दुर्वल हृद्‌पिण्ड व सिर चकरानेकी चिकित्सा करानेके लिये मेरे पास आए तथा विशेष व्याकुलता प्रकट किये। रोगीमें निम्नलिखित लक्षण थे —

वीच-वीचमें छातीमें न जाने कैसा होता है, वहुत कमजोर, जोरसे

चलने या परिश्रम करनेसे छाती धड़कती है, सिरमें चक्कर आता है, उदासी, काम-काजमें उत्साह न होना, निद्रालु, धूपमें न जा सकना—इससे बहुत कष्ट होता है। बहुत कमजोर और काम-काज न कर सकने पर चुपचाप सोये रहना भी अच्छा नहीं लगता।

केलि फॉस ६x पहले तीन मात्रा कर कई एक दिन, घटनेपर और कई एक दिनों तक देनेपर दो सप्ताहके अन्दर ही रोगी सम्पूर्ण आरोग्य हो गये। जिस किसी चिकित्सा-शास्त्रमें इस प्रकारसे आरोग्य होनेको बहुत शीघ्र कहा जा सकता है।

बहुमूत्र (diabetes)—मूत्रयन्त्रके रोग देखिये। नेट्रम सल्फ ही इस रोगकी प्रधान दवा है, किन्तु अत्यधिक दुर्बलता, स्नायविक अवसन्नता, शीघ्र-शीघ्र भूख लगना, अस्थिर इत्यादि रहनेपर यह व्यवहार्य है।

प्लेग (plague)—इस पीड़ामें शरीर अत्यन्त दुर्बल हो पड़ता है, अत. रोगके आरम्भसे ही २-१ मात्रा करके इस दवाका व्यवहार करना चाहिये। ज्वरमें शरीरका उच्च तापक्रम, अस्थिरता अथवा अवसन्नता, विकारमें प्रलाप, नाड़ी दुर्बल और अनियमित, श्वास-कष्ट इत्यादि लक्षण रहनेपर यह उत्कृष्ट दवा है। जीभ सूखी और पीसी हुई वासी सरसोंके लेपकी भाँति लेपयुक्त। इस औषधके सभी स्राव ही अत्यन्त दुर्गन्धयुक्त होते हैं। मल, मूत्र, कफ, रक्त और पसीना इत्यादि जो कोई स्राव ही क्यों न निकले, उसीमें अत्यधिक बदबू रहती है। शरीरका रक्त दूषित होनेसे ही इस प्रकारकी अवस्था हो जाती है। शक्ति—६x।

कैन्सर (cancer)—जिस किसी स्थानका ही कैन्सर क्यों न हो अगर क्षत स्थानसे दुर्गन्धयुक्त स्राव निकलता हो, तो यह बहुत आवश्यक है। इस दवासे कैन्सरकी वेदना भी घट जाती है। शारीरिक और मानसिक दुर्बलता।

प्लीहा, यकृतके रोग (diseases of the spleen and liver)—

सभी प्रकारकी पीडाओंमें जब स्नायविक अवसन्नता दीख पडती है। मानसिक क्लेश हेतु यकृत-पीडा (नेट्रम सल्फ सह पर्यायक्रमसे)। प्लीहा और यकृतमें सुई गडने-सी वेदना इसका उल्लेखनीय लक्षण है। वायीं करवट सोनेपर वेदनाकी वृद्धि।

स्फोटक (abscess)—क्षत स्थान सडना आरम्भ करनेपर एवं जब क्षतसे रक्त या रक्तमिश्रित दुर्गन्धयुक्त पीव निकलती हो, उस समय यह विशेष उपकारी है। जैसे ही यह मालूम हो जाये कि शारीरिक रक्त दूषित हो गया है, उसी समय इसका प्रयोग करना चाहिये। शक्ति—६x।

वात (rheumatism)—नये और पुराने दोनों प्रकारके वात रोगमें ही जब आक्रान्त स्थान कडा, चेतनाहीन और खिंचावकी तरह मालूम हो और वह वेदना यदि एक ही स्थानपर रहे अथवा अधिक सचालनसे बढ़ जाये—लेकिन सामान्य सचालनसे घटती हो, तो यह औषध अत्युत्कृष्ट है। इसके साथ स्नायविक लक्षण रहनेपर यह और भी अधिक उपयोगी है। प्रातःकाल, बैठे हुएसे उठनेपर एव स्थिरसे बैठे रहनेपर भी वेदनाकी वृद्धि होती है। प्रातःकाल वेदना इतनी बढ जाती है कि बिछावनसे उठकर बैठ नहीं सकता—एक तरफसे दूसरी तरफ पलट देना पडता है। प्रातःकालकी वेदना कभी-कभी ६-१० बजे के समय नहीं रहती। जिस किसी स्थानमें ही वेदना क्यो न हो, उपरोक्त लक्षण रहनेपर उपयोगी है। पैरके तलवोंमें जलन रहती है और खुजलाता है। नाना स्थानोंमें फटनेकी भाँति या सूई गडने-सी वेदना। अगोंके विभिन्न स्थानोंमें **पक्षाघात,** प्रायः ही **एक तरफका पक्षाघात।**

हिस्टिरिया (hysteria)—यही प्रधान औषध है। स्नायविक व्यक्तियोकी पीडा। कभी हँसना, कभी रोना या कभी चिल्लाना, अस्थिरता, उद्वेग और उदासीपन, शोक, दुःख और हताश-सूचक भाव इत्यादि लक्षण रहनेपर विशेष उपयोगी है। मालूम होता है कि एक

गेंद (ball), पोटली या गोल-सी कोई चीज गलनलीसे होकर ऊपरकी ओर चढती है।

शक्ति—१२x और ३०x।

अनिद्रा (insomnia)—साधारणतः जो सब अनिद्रा-रोगके रोगी दिखाई पडते हैं, वे सभी इस दवाके अन्तर्गत हैं। हम लोगोने भी इस औषधसे बहुतसे अनिद्राके रोगियोंको आरोग्य किया है। जो लोग अत्यधिक पढते हैं, दिन-रात काम-धन्धेमें लगे रहते है; उन लोगोंके किसी प्रकारके शोक, दुःख, मानसिक विकृति, शारीरिक थकावट इत्यादि कारणोसे अनिद्रा होनेपर यह दवा कभी विफल नही होती। किन्तु मस्तिष्कमें रक्ताधिक्य हेतु अनिद्रा रोगमें पर्यायक्रमसे इसके साथ फेरम फॉस व्यवहार करना चाहिये। बहुत दिनो तक रात जगकर रोगीकी सेवा-शुश्रुषाकर अवसन्न हो पडनेपर इसकी एक मात्रा सेवन कर थोडा-सा उष्ण जलपान करनेसे अति शीघ्र ही नवजीवन प्राप्त किया जा सकता है। रात जागनेके कारण विविध कुफल। शक्ति—६x, उपकार न होनेपर ३०x एव प्रयोजन होनेपर यह दवा और भी उच्च शक्तिकी प्रयोग की जा सकती है। फेरम फॉस १२x शक्तिके नीचे व्यवहार न करना ही ठीक है।

ऊपरमें अनिद्रा-रोगके विषयमें वर्णन किया गया है, किन्तु इस औषधके निद्राकालीन और भी बहुतसे लक्षणोको जान लेनेकी आवश्यकता है। रोगी निद्रावस्थामें टहलता है; शिशु नीदमें डरकर चौंक उठते है, रोते हैं और चिल्लाते हैं। स्त्रियोंसे सम्बन्धित विषयोका स्वप्न देखता है, स्त्री-सहवास करनेका स्वप्न देख वीर्यपात हो जाता है। रातके अन्तिम भागोमें फिर अच्छी नीद नही होती। निद्रा गाढी नही होती—सहज ही में टूट जाती है। साधारणत. चोर, भूत, खुद गिरा जा रहा है, इसी प्रकारके स्वप्न देखता है एवं अत्यन्त भयभीत होता है। अस्थिर निद्रा, निद्रामें दाँत पीसता है और बात करता है। हाथ-पैर या अगुलियाँ

स्पन्दित होती है। निद्रालु आँखें—किसी तरह भी खोलनेकी इच्छा नहीं होती।

चर्मपीड़ा-समूह (diseases of the skin)—एक्जिमा-पीडाके साथ चिडचिडापन और सहज ही में उत्तेजित हो जानेका स्वभाव। स्नायविक उत्तेजनाके लक्षण रहनेपर। क्षतस्थानसे जो स्राव निकलता है, उसमें अतिशय बदबू रहती है एव जिस स्थानपर लग जाता है, उसी स्थानमें जलन होती है और घाव-सा हो जाता है। क्षत-स्थानमें चीटी चलनेकी तरह मालूम होता है। वेदना सामान्य रूपमें घसनेपर घटती है, किन्तु बहुत जोरसे खुजलानेपर घावकी भाँति मालूम पडता है। पपडी पडती है। चर्ममें डक मारनेकी तरह वेदना।

रातके अन्तिम भागमें खुजलाहटकी वृद्धि। पूरे शरीरभरमें फफोले हो जाते हैं। उन फफोलोंसे रक्त और जल-मिश्रित पीव निकलती है। इस दवाके निर्देशक सभी स्राव ही दुर्गन्धयुक्त होते हैं। वेदनाकी अधिकताके कारण आक्रान्त स्थान छूने नही देता। शक्ति—६x, उपकार न होनेपर उच्चक्रम।

दुर्वलता (debility)—किसी पीडाकी चिकित्साके समयकी दुर्वलतामें, आरोग्य होनेके वादकी दुर्वलतामें एव अजीर्णादि पीडाके हेतु दुर्वलतामें **कैल्क फॉस** ही जो प्रधान दवा है, यह वात कैल्क फॉसके अध्यायमे वर्णित हो चुकी है। यहाँ तक कि उस प्रकारकी दुर्वलतामें दूसरी किसी दवाकी आवश्यकता ही नही होती। किन्तु दुर्वलता यदि स्नायुमण्डलके क्षय हेतु हो तो केलि फॉस ही प्रधान औषध है। **केलि फॉस स्नायुमण्डलके क्षयको रोकनेमे अद्वितीय है**। मानसिक अवसादग्रस्त, उत्साहहीन, आलसी, चिडचिडा, सामान्य कारणसे ही उत्तेजीत होना, दुःखित, साधारण कार्यको भी बहुत कठिन समझना, मामूली-सी वेदनासे ही अस्थिर होना इत्यादि इसके लक्षण हैं। नाना प्रकारकी चिन्ता, अतिरिक्त अध्ययन एव अत्यधिक शुक्रक्षय हेतु जो दुर्वलता होती है, वह वास्तवमें स्नायविक दुर्वलता है, अतः यह दवा ही एकमात्र अवलम्वन

है। युवकोके हस्तमैथुनकी प्रवृत्ति एवं जननेन्द्रियकी दुर्वलता दूर करनेमें यद्यपि **कैल्क फॉस** ही प्रधान दवा है, किन्तु स्नायविक लक्षणोकी अधिकता रहनेपर केलि फॉस ही प्रधान औषध है। समय-समयपर दोनो ही दवाओं का पर्यायक्रमसे व्यवहार करना आवश्यक होता है। शक्ति—६x, १२x।

सान्निपातिक-ज्वर (typhoid and typhus fever)—सव प्रकारके अनिष्टकर, मृदु प्रकृतिके जिन सव ज्वरोंमें शरीर अतिशय अवसन्न अथवा विविध भयानक लक्षण प्रकट होते हैं, उनमें यह विशेष उपयोगी है।

टाइफॉयड और टाइफस दोनो ही प्रकारके ज्वरोकी प्रथमावस्थामें फेरम फॉस उपयोगी है। टाइफॉयड ज्वरकी प्रधान औषध जिस तरह केलि म्यूर है, वैसे ही केलि फॉस भी टाइफस ज्वरकी प्रधान दवा है और दोनो ही प्रकारके ज्वरोकी ही विल्कुल भयानक अवस्थामे केलि फॉस अतिशय उपयोगी है। जव ज्वरके साथ अतिशय दुर्वलता, अवसन्नता, अनिद्रा, अस्थिरता, दुर्गन्धमय मल, दॉत और जीभपर लेप या सार्डिस (sordes), जिह्वा शुष्क और भूरे रगकी, पेट फूला हुआ, मुखमें दुर्गन्ध, हृद्पिण्डकी दुर्वलता इत्यादि लक्षण रहनेपर यह उत्कृष्ट दवा है। जिस किसी भी प्रकारका प्रलाप क्यो न हो, इस दवाका प्रयोग विल्कुल आवश्यक है। उच्च प्रलाप रहनेपर **फेरम फॉस**के साथ और वडवडाते हुए प्रलाप वकनेपर **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है। नाकसे रक्तस्राव एव मलके साथ रक्त निकलता है। शक्ति—६x, फल न होनेपर १२x और ३०x।

सविराम ज्वर (intermittent fever)—नये और पुराने दोनो ही प्रकारके ज्वरोंमें ही यह फलप्रद है। सविराम ज्वरमें जव अतिशय प्रवल तापक्रम होता है, उस समय यह व्यवहार्य है। सविराम ज्वर जव दो दिनोके अन्तरसे आता है। पुराना ज्वर दिनमें दो वार करके वढने पर भी उपयोगी है। ज्वरके प्रवल प्रलापमें, अर्थात जिस प्रलापमें रोगी भयानक अत्याचार करता है, **फेरम फॉस**के साथ एव वडवडाते हुए प्रलाप रहनेपर **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए। अतिशय

दुर्गन्धयुक्त एवं दुर्वल कर देनेवाला पसीना होनेपर। दिन-रात ही शीत-शीत मालूम होता है। ज्वर छूटनेके समय अतिशय दुर्गन्धयुक्त पसीना होता हे। रोगी अति दुर्वल एवं स्नायविक धातुका, जीभ भूरे रंगकी मैलसे लेपावृत। शक्ति—६x, फल न मिलनेपर १२x और ३०x।

स्वल्पविराम-ज्वर (remittent fever)—स्वल्पविराम ज्वरमें स्नायुमण्डलके अत्यधिक क्षय होनेपर यह औषध विशेष लाभदायक है। इसके अन्यान्य लक्षण सान्निपातिक ज्वर एव सविराम ज्वर अध्यायमें देखिये। अत्यधिक प्रखर उत्तापयुक्त ज्वरमें इस दवाका प्रयोग करनेपर प्रत्येक घण्टे ज्वरका वेग घटता जाता है। शक्ति—६x सर्वदा व्यवहृत होती है, फल न मिलनेपर १२x और ३०x।

रक्ताल्पता (anæmia)—रक्ताल्पता-रोगमें **कैल्क फॉस** ही प्रधान औषध है। **फेरम फॉस** एव **नेट्रम म्यूर** भी अनेक स्थलोंमें व्यवहृत होते हैं। किन्तु ब्रहुत दिनोंसे शोक, दुःख शारीरिक या मानसिक दुर्वलता हेतु रक्ताल्पता-रोग होनेपर यही प्रधान औषध है। लेकिन आवश्यकतानुसार दूसरी दवाके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार किया जा सकता है।

जिह्वा (tongue)—**पीसी हुई बासी सरसोंकी तरह लेपसे लेपावृत्त जीभ।** जीभ स्वेतवर्णकी लसीली अथवा कुछ हरी आभा लिये पीले रंगकी लेपयुक्त भी हो सकती है। मुखसे वडी **वदबू** निकलती है। प्रातःकाल जीभ इतनी सूखी मालूम पडती है कि मानो जीभ तालुमें अटकी रहेगी। जीभके प्रदाहमें जीभका अत्यधिक सूखापन और अवसन्नता (नेट्रम म्यूर)। मुखसे लार निकलना (लवणाक्त स्रावमें—नेट्रम म्यूर)। जीभका स्वाद तिक्त, **सड़ा-सा**, पानी-सा और अम्लाक्त। रक्तपातयुक्त जीभ। जीभ किनारे आरक्तमय।

वृद्धि (aggravation)—प्रातःकाल, सन्ध्या समय, रातमें, क्रमागत अधिक सचालनसे, गोलमालसे, आवाजसे, ऋतु होनेके पहले, निद्राके समय और उसके वाद स्थिर भावसे रहनेके वाद एव अकेले रहनेपर

सव प्रकारके रोग-लक्षणोकी ही वृद्धि होती है। अधिकाश रोग ही विश्राम करते समय वढ जाते है। साधारणतः शीतल वायुमें, जाडेमें, ठण्डे स्थानमें रहनेके कारण, सीड-भरी जलवायुमें, सहवासके वाद एव भोजनके वाद वढ़ जाते है। **रोगी शीतसे डरता है**—हमेशा ही उसे शीत-सा मालूम होता है।

ह्रास (amelioration)—ऋतुस्राव आरम्भ होनेके वाद, उत्तापसे, सामान्य सचालनसे, मानसिक प्रफुल्लतासे, वहुत-से आदमियोंके साथ एकत्र रहनेपर, झुकनेपर शूल-वेदना एव वैठनेपर कमर-वेदनाका घटना।

सम्बन्ध (relation)—इस औपधके साथ मेंग फॉस, नेट्रम म्यूर, फेरम फॉस और केलि म्यूरका विशेप सम्वन्ध दीख पडता है। शूल-वेदना एव मूत्रस्थलीकी पीडामें वेदना आक्षेपिक होनेपर मैग फॉस एव पाक्षाघातिक होनेपर या स्नायविक लक्षणोकी अधिकता रहनेपर केलि फॉस व्यवहृत होता है। वडवडाकर प्रलाप वकनेपर एव रक्तस्रावमें नेट्रम म्यूरके साथ इस औपधका पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है। उच्च प्रलापमें फेरम फॉसके साथ एव सूतिका-ज्वरमें केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है। अनेक पीडाओंमें कैल्क फॉसके साथ इस औपधके प्रयोगकी आवश्यकता होती है।

नाड़ीमण्डल (nervous system)—के रोगमें साइलिसियाके साथ **केलि फॉसकी** तुलना होती है।

शक्ति (potency)—३x, ४x, ६x, १२x, ३०x और २००x व्यवहार होता है। प्रायः सव प्रकारके रोगोंमें ही इसका ६x व्यवहृत होता है। लेकिन यक्ष्मा और हैजेमें ३x एव प्रसवके समय ४x शक्ति व्यवहृत होती है। अधिक दिनोतक इस दवाके व्यवहारकी आवश्यकता होनेपर १२x शक्तिसे नीचे व्यवहार करना ठीक नही। डॉ० केण्टने कहा है कि उच्च और सर्वोच्च क्रमोंसे ही अधिक फायदा होता है और उसकी एक मात्रा व्यवहार करना ही उचित है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषधियाँ—फॉस, फाइटो व रस टक्सके साथ इसके बहुतसे लक्षणोंकी समता है। मानसिक लक्षणोंके साथ पल्सेटिला, स्नायविक लक्षणोके साथ कॉफिया, कैमोमिला, इग्नेशिया व हायोसियामस ओर किड्नीकी तकलीफमें मैग फॉसके साथ तुलनाकी जा सकती है।

केलि सल्फ्यूरिकम

(Kali Sulphuricum)

* एण्टिसोरिक और एण्टिट्यूवक्युंलर

भिन्न नाम—पोटासियम सल्फेट, केलि सल्फस ।

साधारण नाम—सल्फेट ऑफ पोटास ।

संक्षिप्त नाम—केलि सल्फ (kali sulph.) ।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—यह ज्वालामुखी पहाडपर उत्पन्न होता है। इसके चार या छः कोण होते हैं एव यह क्षुद्र-क्षुद्र दानामय तथा वर्णहीन और कडा होता है। इसका मूल-औषध विचूर्ण-पद्धतिके अनुसार औषध रूपमें तैयार होता है। यह एलकोहलमें घुलनशील नहीं, केवल १० भाग शीतल जल और ३ भाग उष्ण जलमें घुलता है। किसी-किसीका कहना है कि १६ भाग ठण्डे जलके साथ ३ भाग उष्ण जल मिश्रितकर उस मिश्रित पानीमें केलि सल्फ छोडनेपर पिघल जाता है। इसीलिये इसे ट्राइट्युरेशन रूपमें तैयार करना ही उचित है। इसका स्वाद लवणाक्त, तिक्त और तीव्र झॉजमय होता है ।

क्रिया—यह पदार्थ शरीरस्थ एपिडर्मिस या चमडेके ऊपरके पतले आवरण और एपिथिलियमके ऊपर क्रिया करता है। शरीरके प्रत्येक कोष एव जीवनी शक्तिकी गतिको ठीक रखनेमें ऑक्सिजन ही प्रधान कार्यशाली है। रक्तस्थ लोहमय पदार्थके साथ केलि सल्फेट मिश्रित होकर शरीरके सभी स्थानोंमें ऑक्सिजनको प्रेरित करता रहता है। कोष, कोषमध्यस्थ रस, पेशी, स्नायु, रक्त कणिका इत्यादि शरीरके सभी स्थानोंमें केलि सल्फका काम है। शरीरस्थ तैलाक्त पदार्थके ऊपर इसका विशेष प्रभाव है। शरीरमें यथोचित परिमाणमें तैलाक्त पदार्थ रहनेसे चर्मको मसृण, नम और साफ रखता है, चर्म मसृण और अच्छे रूपमें साफ रहनेपर लोमकूप समूह भी साफ रहते हैं और लोमकूप समूह साफ रहनेपर शरीरस्थ निरर्थक दूषित पदार्थ लोमकूपके रास्ते निकल

जाते हैं एवं वाहरी वायुसे ऑक्सिजन नामक गैस रक्तके अन्दर प्रविष्ट होकर रक्तको साफ रखता है। किन्तु चर्म इत्यादि स्थानोमें जब केलि सल्फका अभाव होता है, तब लोमकूप समूह सकुचित हो जाते हैं और इसलिये लोमकूपके रास्ते तैलाक्त पदार्थ समूह न निकल सकनेके कारण चर्म शुष्क, रूखडा और गन्दा रहता है। चमडेपर सेंहुआ निकलनेसे केलि सल्फका अभाव सूचित होता है। केवल जो तैलाक्त पदार्थ और विविध निरर्थक पदार्थ शरीरसे न निकल सकनेके कारण चमडेपर सेंहुआ निकलता है ऐसी वात नहीं, वल्कि वे सव पदार्थ लोमकूपके रास्ते पुनः लौटकर रक्त-स्रोतमें मिल जानेसे रक्त दूषित होता है। दूसरी ओर चमडेकी अच्छी हालतमें वाहरी वायु द्वारा ऑक्सिजन लोमकूपके रास्ते शरीरके अन्दर प्रविष्ट होकर रक्तको शोधित करता है, किन्तु केलि सल्फके अभाव हेतु लोमकूप सकुचित हो जाते हैं, इसलिये वाहरसे ऑक्सिजन शरीरके अन्दर प्रविष्ट न होनेके कारण उपयुक्त परिमाणमें ऑक्सिजनके अभावसे फुसफुसको ऑक्सिजनके लिये अधिक परिश्रम करना पडता है। फुसफुसके इस शीघ्रतासे परिश्रम करनेके कारण ही श्वास-प्रश्वास शीघ्र-शीघ्र होते हैं एव रोगी भी अस्थिरतापूर्वक शीतल वायु प्राप्त करनेकी इच्छा प्रकट करता है।

तैलाक्त पदार्थके ऊपर इसका जो असाधारण प्रभाव है, वह पहले ही वर्णन किया गया है। शरीरमें केलि सल्फकी कमी होनेपर यह किसी भी द्वारसे निकल ही जायगा। **इसके अभाव-सूचक सव प्रकारके स्राव ही पिच्छिल और लसीला या चटचटा एव स्रावका रंग पीला या हरा होता है।** इसका अभाव होनेसे ही जीभके ऊपर पीले रंगकी पिच्छिल मैल उत्पन्न होती है।

यह चर्मके ऊपर तीव्र क्रिया प्रकट करता है, इसलिये चेचक, कोदवा इत्यादि चर्मपीडा आराम होनेके वाद चमडेसे केंचुलीकी तरह निकलना और उसकी अमसृणता केलि सल्फके व्यवहारसे दूर हो जाती है। चमडेके ऊपर क्रिया रहनेके कारण ही चेचक, कोदवा इत्यादि पीडाओंके

दाने किसी तरहसे दव जानेपर इसके व्यवहारसे वे पुनः निकल आते हैं। न्यूमोनिया, ज्वर, सर्दी इत्यादि रोगमें पसीना न होनेपर **फेरम फॉसके** साथ इस औषधका व्यवहार करनेसे अति शीघ्र ही पसीना निकलकर रोग घट जाता है। जव कोई रोग सन्ध्या समय और उत्तापसे वढ जाता हो एव मध्य रातसे और शीतलतासे घटता हो, तो इसके अभाव-जनित क्रियाका स्पष्ट उदाहरण मिलता है। सव प्रकारके प्रदाहकी तृतीयावस्थामें यह दवा व्यवहृत होती है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—इस औषधके अधिकारमें आनेवाले सभी रोगोंके लक्षण ही अपराह्नमें, उत्तप्त वन्द घरमें, तैलाक्त द्रव्य खानेसे वृद्धि एव मध्य रातके वाद, शीतल और खुली हवामें एवं ठण्डे स्थानमें घटते हैं।

२—किसी भी रोगमें किसी भी स्थानसे ही स्राव क्यों न निकले, यदि वह पिच्छिल, पीला या हरे रगका हो, तो यह दवा विशेष उपयोगी है। जीभपर भी पिच्छिल पीले रंगका लेप रहता है।

३—श्वासनलीके सभी रोगोंमे पूर्वोक्त प्रकारका कफ और ह्रास-वृद्धिके लक्षण रहनेपर। छातीमें घड-घड आवाज होती है। खाँसते-खाँसते वहुत तकलीफसे दुश्छेद्य पीले रगका श्लेष्मा गलेमें आकर पुनः भीतर चला जाता है। कभी या तो वहुत आसानीसे काफी श्लेष्मा निकलता है।

४—स्नायुशूल, वात अथवा जिस किसी भी प्रकारकी वेदना क्यों न हो, अगर वेदना स्थल वदलती रहती हो।

५—चेचक और कोदवामें जव दाने वैठ जाते हैं अथवा किसी कारणसे निकलते नहीं।

६—चर्म-रोग किसी मलहमसे वैठ जानेके वाद कोई रोग होनेपर इससे लुप्त चर्म-रोग पुनः प्रकट होता है।

७—सव प्रकारके ज्वरमें ह्रास-वृद्धिके लक्षण (१म लक्षण देखें) ही

है इस औषधका प्रयोग होता है। अतिशय अस्थिरता और शीतलतासे उसका घटना। चर्म शुष्क और रूखा। पुराना ज्वर अपराह्नमें हाथ-पैर और मुँहमें जलन देकर बढता है।

८—हैजाकी प्रथमावस्थामें। हैजामें जब रोगी अत्यन्त बेचैनी जाहिर करता है एवं आराम पानेकी आशामें केवल ठण्डे स्थानमें रहना चाहता है और ठण्डा जल पीता है, तब यह अति सुन्दर औषध है।

विशेषत्व (peculiarity)—स्त्री-जननेन्द्रिय, पुरुष-जननेन्द्रिय, मलद्वार, फोडा, कार्बङ्कल, श्वासनलीकी बीमारी इत्यादि जो भी क्यों न हो, यदि उनमेंसे बहता हुआ स्राव या कफ पीले या हरे रंगका चिकना हो, तो यह औषध सबसे उत्तम है। इसकी जीभमें पीले रंगका चिकना लेप चढ़ा रहता है। सायकाल, गरम बन्द कमरेमें रोग लक्षणोकी वृद्धि और खुली ठण्डी हवामें, आधी रातके बाद और हर प्रकारके ठण्डकसे रोग लक्षणोंका घटना इस दवाके प्रधान प्रयोग करनेके लक्षण हैं। दबे हुए चर्म-रोगको बाहर निकालनेकी शक्ति इस दवामें विशेष रूपसे मौजूद है। इस दवाका स्राव, रोग-लक्षणोका घटना-बढना, दबे हुए उद्भेदोको निकालनेकी शक्ति, सूखे व रूखे चमडेको मुलायम करनेकी शक्ति और दर्दकी प्रकृति ये पाँच विषय याद रहनेपर इस दवाके अन्तर्गतके सभी रोगोंकी ही चिकित्सा बहुत सहज हो जायगी।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—रोगी सहज हीमें क्रुद्ध हो जाता है, चिडचिडा और जिद्दी। परिश्रम करने और लोगोंके साथमें रहनेकी चाह नहीं। निरानन्द भाव, उत्कण्ठा, भय इत्यादिका सन्ध्याकालमें वृद्धि। निद्रामें चलना, चौंक पड़ना, चिल्लाना और बात करना। रोगीको गिर पड़नेका भय रहता है। परिवर्तनशील मानसिक अवस्था।

सिर-दर्द (headache)—सिरमें बहुत चक्कर आना, चक्कर आकर गिर पडता है—विशेषतः लेटे हुएसे उठ बैठनेपर, बैठे हुएसे उठ खडा होनेपर, ऊपरकी ओर या किसी चीजकी तरफ देखनेपर। गिर पडनेके

डरसे घरसे निकलना नहीं चाहता। सिर-दर्द सन्ध्या समय, बन्द घरमें और उत्तापसे बढ़ जाता है तथा शीतल वायुसे और आधी रातके बाद घट जाता है। आँखके ऊपर, मस्तकके पीछे और दोनों बगल सूई गड़नेकी-सी वेदना होती है।

सिरमें रूसी (dandruff on the head)—यह रूसीकी प्रधान दवा है। इसकी रूसीका रंग पीला एवं रूसी खुजलानेपर उससे जो रस निकलता है, वह लसीला और पीले रंगका होता है। सिरमें दाद होने पर उससे भी पीले रंगका रस-स्राव होता है। सिरके केश गिर पड़ते हैं।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—चक्षु-प्रदाहकी तृतीया-वस्थामें। आँख या पलकोंकी श्लैष्मिक-झिल्लियोंसे जब पीला या हरे रंगका लसीला—अथवा पानी-सा स्राव निकलता है।

पलकोंमें पीले रंगकी पपड़ी पड़नेपर। शिशुओंके आँख आनेपर पूर्वोक्त प्रकारका स्राव रहनेपर (नेट्रम म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे)। मोति-याबिन्द और आँखकी पुतली अस्वच्छ रहनेपर (नेट्रम म्यूर)।

कर्णपीड़ा समूह (diseases of the ear)—कानके नीचे तीव्र वेदना। कर्ण-वेदनाके साथ पीली या हरे रंगकी पतली पीव निकलनेपर (पीव घनी होनेसे कैल्क सल्फ)। कानके अन्दर स्फीतिके कारण बहरापन। कानके अन्दर पॉलिपस (polypus) से कानोंके छिद्र बन्द हो जाते हैं। पीवमें बदबू भी रहती है। गरम बन्द घरमें वेदनाकी वृद्धि, खुली हवामें जानेपर घट जाती है। कानके अन्दर विविध प्रकारके शब्द होते हैं। कानमें खुजली होना।

मुखके रोग (diseases of the mouth)—ओठोंका कैन्सर एवं इस औषधका प्रकृतिगत स्राव निकलना। निचला ओठ स्फीत, बड़े-बड़े सूखे छाल उठना एवं मुखमें जलन।

सर्दी (coryza)—सर्दीकी तृतीयावस्थामें उपयोगी है। हर जगह के स्रावकी तरह नाकका स्राव भी हरा और पीले रंगका—अधिक पतला भी नहीं और घना भी नहीं इस प्रकारका स्राव। स्रावमें बदबू रहती है।

कभी-कभी या तो स्राव पानीकी तरह होता है। नाक वन्द रहती है, लेकिन वन्द नाकसे भी उसी प्रकारका स्राव निकलता है। नाक वन्द रहनेके कारण स्वाद नहीं मिलता है। सर्दीकी प्रथमावस्थामें जव चर्म सूखा और रूखडा रहता है, **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे सेवन करानेसे अतिशीघ्र ही पसीना होकर प्रथमावस्थामें ही रोग आराम हो जाता है। रोगीको ठण्डी हवा अच्छी लगती है—गरम या वन्द घरमें रोगीके सभी तकलीफोकी वृद्धि होती है।

स्नायुशूल (neuralgia)—मैग फॉस ही सव प्रकारके स्नायुशूलकी प्रधान औषध है। किन्तु जव वेदना स्थान परिवर्तनशील होती है, अर्थात् वेदना कभी इस स्थानमें या कभी उस स्थानमे घूमती रहती है और वह वेदना अगर ग्रीष्मकालमें, उत्तप्त या वन्द घरमें और सन्ध्या समय वढ़ती हो एव शीतल खुली हवामें घटती हो, तव तो जिस स्थानका भी स्नायुशूल क्यो न हो, यह अत्युत्कृष्ट है।

दन्तशूल (toothache)—दन्तशूलकी वेदना सन्ध्या समय और उत्तप्त वन्द घरमें वढ़ जाती है एव शीतल खुली हवामें घटती है।

अजीर्ण (dyspepsia)—अजीर्ण रोगके साथ जीभ पीली और लसीली मैलसे आवृत्त। पाकस्थली भारी, खींची हुई और भरी मालूम पडती है। मालूम होता है मानो पाकस्थली अत्यन्त भरी पडी है। रोगी गरम पानी पीना नहीं चाहता और उसे प्यास भी प्रायः नहीं ही रहती है। पेटके दर्द और शूलवेदनामें मैग फॉससे उपकार न होनेपर इस औषधसे आरोग्य होता है। गैस्ट्रिक-ज्वरमें (gastric fever) जव चर्म सूखा और रूखड़ा होता है एव अपराह्नमें और उत्तप्त वन्द घरमें वढ जाता है, तव उस समय **फेरम फॉस**के साथ व्यवहार करनेसे अति शीघ्र ही पसीना होकर ज्वरका वेग घट जाता है। पाकस्थलीमें जलन, वेदना और मुखसे पानी गिरना **नेट्रम म्यूर**से अच्छा न होनेपर।

नाभिके चारो ओर उदरकी दाहिनी तरफ वेदना। अपराह्नमें छातीमें जलन, पेट-भार इत्यादि अजीर्ण-जनित लक्षणोंकी वृद्धि होनेपर

विशेष फलदायक नहीं। थोड़ा-सा भोजन करनेपर भी पूर्णताका अनुभव होना। भोजन करनेके बाद पेट फूलता है। तरकारी, गरम भोजन, रोटी, अन्न और मांसमें अरुचि। मट्ठा, मिठाई, अम्ल भोजन और पेयमें रुचि।

उदरामय (diarrhoea)—सब प्रकारकी पेटकी बीमारीमें इस औषधकी प्रकृतिगत पीले रंगका पिच्छिल लेपयुक्त जिह्वा एवं पीले या हरे रंगका पिच्छिल मल रहनेपर उत्कृष्ट है। पानी-सा, पीबकी भाँति एवं अति दुर्गन्धयुक्त काले रंगका मल। उदरमें मरोड़-सी वेदना, उदर फूला और तना-सा मालूम पड़ना। गर्मीके बाद एकाएक ठण्ड गिरनेके कारण उदरमें शूलवेदना-सा दर्द। वायुत्यागमें गन्धककी तरह तीव्र गन्ध रहना। प्रत्येक बार हीके मलका रंग परिवर्तित होता है। पुराने उदरामयमें विशेष फलदायक है।

कोष्ठबद्धता (constipation)—अत्यन्त दुर्दमनीय कोष्ठबद्धता, मल कड़ा, थोड़ा, सरलान्त्रकी शक्तिहीनताके कारण कोष्ठबद्धता। मल सूखा, गाँठ-गाँठ-सा, मल भेंड़के लेंड़की तरह। मलमें पित्तकी कमी।

शूल-वेदना (colic)—मैग फॉसके लक्षण रहते हुए भी जब उससे उपकार नहीं होता। उदर स्फीत होकर शूलवेदना होती है। उदर स्पर्श करनेपर ठण्डा मालूम पड़ता है। ऋतु अर्थात् गर्मीसे अचानक ठण्ड गिरनेपर शूल-वेदनाकी उत्पत्ति। उत्ताप या उत्तेजना हेतु शूल-वेदना, पेटसे वायु निकलनेपर उसमें गन्धक-सी तीव्र बदबू रहती है।

अर्श (piles)—मलद्वारमें असहनीय खुजली। मल त्यागनेके समय और बादमें जलन। मलद्वारमें सूई गड़ने-सी वेदना। कैल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे।

प्रमेह (gonorrhoea)—प्रमेह रोगमें पीला या हरे रंगका पिच्छिल स्राव निकलनेपर। ग्लीट और बैलानाइटिसमें उक्त प्रकारका स्राव निकलनेपर। प्रमेह-रोगमें अचानक स्राव बन्द होकर अण्डकोष-प्रदाह होना। मूत्रनलीसे रक्तस्राव। पेशाब करते समय जलन

होना। काटते रहने या सूई गडनेकी तरह वेदना। मूत्र दुर्गन्धयुक्त, प्रचुर अथवा अल्प।

मूत्राशय-प्रदाह (cystitis)—मूत्रस्थलीके प्रदाहमें जब मूत्रनली से पूर्वोक्त प्रकारका स्राव निकलता है, स्रावके लिए प्रमेह अध्याय देखें। प्रदाहकी तृतीयावस्थामें।

उपदंश (syphilis)—प्रमेह अध्यायमें वर्णित स्रावकी तरह स्राव। लक्षण-समूह जब अपराह्नमें बढ़ जाते हैं।

ऋतुस्राव (menstruation)—ऋतु बन्द, देरसे होना या शीघ्र ही हो जाता है। स्राव प्रचुर या स्वल्प। ऋतुकालमें प्रसव-वेदना-सी वेदना और जननेन्द्रियमें जलन।

प्रचुर, काला काला और अतिशीघ्र ऋतु होना भी इस औषधमें है। ऋतुकालमें जरायुका वाहर निकलनेकी तरह मालूम होना। जरायुका वाहर निकलना। ऋतुकालमें जरायुमें वेदना। जननेन्द्रिय और जरायु-मुखपर घाव। कभी या तो ऋतुस्राव लुप्त हो जाता है।

स्वल्परजः (amenorrhœa)—ऋतु वन्द अथवा स्वल्प ऋतुस्रावके साथ उदर पूर्ण और भारी मालूम होनेपर यह व्यवहृत होता है।

जीभपर पीले रंगका पिच्छिल लेप। जरायुसे अधिक रक्तस्राव होना भी इस औषधमें दीख पडता है। इसके साथ सिर-दर्द भी रहता है।

श्वेत-प्रदर (leucorrhoea)—स्राव पीला या हरे रगका पतला अथवा पीवकी तरह लसीला होता है। जलन और घाव पैदा करनेवाला स्राव।

सूतिका-ज्वर (puerperal fever)—कभी-कभी इस औषधकी आवश्यकता हुआ करती है। विशेषतः जब चमडा वहुत शुष्क, रूखडा और पसीनाहीन होता है। इस औषधका व्यवहार करनेके फलस्वरूप शीघ्र पसीना निकलकर रोगका विष निकल जाता है।

श्वास-यन्त्रका प्रदाह (diseases of the respiratory organ)—साधारण खाँसी, न्यूमोनिया, दमा, हूपिंग-खाँसी, ब्रॉङ्काइटिस, यक्ष्माकी खाँसी इत्यादि सब प्रकारके खाँसियोंकी तृतीयावस्थामें यह व्यवहृत होता

है। किन्तु न्यूमोनिया, ब्रॉङ्काइटिस इत्यादि रोगोंमें ज्वर रहनेपर—विशेषतः पसीना आदि रुककर रोग होनेसे, प्रथमावस्थामें फेरम फॉसके साथ पर्याय-क्रमसे व्यवहार करनेपर अति शीघ्र ही पसीना निकलकर रोग प्रथमावस्थामें ही आराम हो जाता है। **सब प्रकारकी खाँसियोंका कफ ढसदार, पीला, हरा या पानी-सा प्रचुर श्लेष्मा निकलता है।** खाँसनेके समय एवं श्वास-प्रश्वास छोड़ने और लेनेके समय गलेके अन्दर घड़घड़ाहटकी आवाज होती है। खाँसते-खाँसते **बहुत कष्टसे** पीले रंगका दुश्छेद्य कफ निकलता है, लेकिन बाहर निकलते हुए उसे निगल लेता है। किसी-किसी समय छातीके अन्दर घड़घड़ाहटकी आवाज होनेपर भी खाँसनेसे कुछ निकलता नहीं, या तो कभी खाँसनेपर जल-सा पतला कफ निकलता है। इस औषधके सभी प्रकारकी खाँसियोंमें ही गलेके अन्दर **घड़घड़ाहटकी आवाज रहती है।** ब्रॉङ्काइटिस, न्यूमोनिया, विशेषतः यक्ष्मामें **सन्ध्या समय ज्वरकी वृद्धि** इसके प्रयोगका अति उत्कृष्ट लक्षण है। **खाँसी भी सन्ध्या समय या उत्तप्त बन्द घरमें वृद्धि एवं ठण्डी खुली हवामें घटती है।** दमाकी खाँसी ग्रीष्मकालमें बढ़ती है। गरममें बहुत तकलीफ मालूम होती है, मालूम होता है मानो श्वास बन्द हो जाएगा, इसीलिए रोगी ठण्डी खुली हवामें जाना चाहता है। कभी-कभी खाँसनेपर बड़ी सरलतासे ही पीले रंगका गाढ़ा कफ अधिक परिमाणमें निकलता है। वक्षःस्थलमें सूई गड़नेकी तरह वेदना। अगर रोगी अत्यधिक उत्तप्त हो जाता है, तो वह बगैर सर्दीसे पीड़ित हुए ठण्डा नहीं हो सकता। इस औषधसे अनेक यक्ष्माके रोगी अच्छे हो गये हैं। शक्ति ६x, १२x।

प्रभेद (अन्तर)

कैल्क सल्फ	केलि सल्फ
१—पीड़ाकी तृतीयावस्थामें व्यवहृत होता है, किन्तु स्फोटकको बैठानेके लिये प्रथमावस्थामें फेरम	१—रोगकी तृतीयास्वथामें व्यवहृत होता है, किन्तु ज्वरादि प्रादाहिक रोगोंमें पसीना निका-

कैल्क सल्फ	केलि सल्फ
फॉसके साथ एव द्वितीयावस्था में केलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।	लनेके लिये प्रथमावस्थामें फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।
२—रोगी खुली हवा पसन्द करता है, लेकिन केवल श्वास-यन्त्रके रोगमें एवं सिर दर्दमें, नहीं तो वह साधारणतः उत्तापसे ही आराम पाता है।	२—खुली हवा चाहता है एव सभी रोगोंमें ऐसी ही इच्छा रहती है और उससे घटता भी है।
३—वायु-प्रवाहसे अनुभूति रहती है। सामान्य कारणसे ही ठण्ड लग जाती है। शीतल, नम जलवायुमें एव उत्ताप और ठण्डा दोनो ही में अनुभूति-विशिष्ट होता है। वह शुष्क खुली हवा पसन्द करता है और उससे उसको आराम मिलता है।	३—सब प्रकारकी शीतलता ही रोगीके लिये बहुत ही आराम-दायक है एव इसीलिये वह शीतल वायु, शीतल पेय, शीतल स्थान इत्यादिकी खोज रखता है।
४—सन्ध्याकालीन ज्वर, किन्तु ज्वरमें पसीना होता है, यहाँ तक कि कभी-कभी काफी पसीना निकलता है।	४—सन्ध्याकालीन ज्वर, किन्तु ज्वरमें पसीना नहीं रहता, यहाँ तक कि ज्वर ताकि पसीना देकर छोड दे, इसके लिये इस दवाका व्यवहार करना पडता है।
५—निकला हुआ कफ गाढा पीला या हरे रंगका एव उसके साथ बहुत बार थोड़ा रक्त मिला रहता है	५—निकला हुआ कफ गाढा, पीला या हरा एव वह कफ बहुत लसीला या पिच्छिल होता है।
६—प्रायः ही दीर्घकालसे स्राव निकलते रहनेका इतिहास रहता है।	६—बहुत दिनोंसे स्राव होते रहनेका इतिहास नहीं भी रह सकता है।

कैल्क सल्फ	केलि सल्फ
७—अत्यन्त कष्टदायक सूखी खाँसी। सरलतासे कफ नहीं निकलना चाहता, केवल प्रातःकाल ही अत्यधिक कफ निकलता है। कभी-कभी घड़घड़ाहटमय आवाजके साथ खाँसी भी रहती है।	७—खाँसनेपर गला घड़घड़ करता है और सरलतासे ही कफ निकल आता है, किन्तु श्लेष्मा दुश्छेद्य या छातीकी दुर्बलताके कारण प्रायः ही उसको निगल जाता है।

रोगी-विवरण—ई० १६५० साल। श्रीयुक्त . ... भट्टाचार्य, हृष्ट-पुष्ट। उमर ५५-५६ वर्ष, पहली दृष्टिमें शरीर निरोग ही प्रतीत पड़ता था, शान्त व सात्त्विक प्रकृति, किन्तु मेरुदण्ड सीधा नहीं था, कुछ धनुषकी तरह टेढ़ा था। पाकिस्तानके खुलनाके निवासी थे। कई एक वर्ष पहलेसे ही वीच-वीचमें मेरे कहे अनुसार औषध सेवन करते थे। नियमित रूपसे कभी दवाका व्यवहार नहीं किया था।

रोगीका पारिवारिक इतिहास उल्लेखनीय नहीं है। रोगीमें कोई यौनव्याधि या अन्य कोई जटिल रोगका कोई इतिहास नहीं था। साधारण स्वास्थ्य अच्छा ही कहा जा सकता था। किन्तु वहुत वर्षोंसे १२ हो महीने नाकमें घनी पकी पीले रंगकी सर्दी वनी रहती थी। उसमें कोई वदबू नहीं थी। मुँहमें बुरी वदबू थी। किन्तु दाँतकी कोई वीमारी नहीं थी। धातुके विषयमें कोई उल्लेखनीय लक्षण नहीं था। पर खुली हवा खूब पसन्द करते थे। मुख्य वात है—वर्षमें २-३-४ वार गलेसे चमकीले लाल रंगका खून निकलता था, २-३-४ दिन वार-वार वहुत परिमाणमें, और वीच-वीचमें कई एक दिन थूक या खाँसीके साथ रक्त की रेखाकी तरह निकलती थी। अधिक रक्त गिरनेपर रोगी कई एक वार एलोपैथिक चिकित्सा करा कर अच्छे हुए थे।

होमियोपैथिक मतसे दवाकी व्यवस्था करनेके लिये दवा सेवन करने के वाद रोगीकी रिपोर्ट न पानेसे दूसरी वार व्यवस्था करना सम्भव नहीं। साधारण रोगीकी दशामें २-४ मात्रा होमियोपैथिक दवाकी व्यवस्था करना

सम्भव होनेपर भी हर जगह यह व्यवस्था नहीं चल सकती। किन्तु बायोकेमिक दवा ऐसी हालतमें हमलोगोंके मर्यादाकी रक्षा किया करती है। अन्य चिकित्सापन्थी जिस जगह याचित या अयाचित दशामें साथ-साथ मुँहे-मुँह दवाकी व्यवस्था कर देते हैं, ऐसी दशामें मेरे दार्शनिक भाषणसे साधारण लोगोंको सन्तोष न होगा। जो हो मैंने **फेरम-फॉस** २००x व **केलि सलफ** २००x, पहली दवाको सप्ताहमें एक मात्रा और दूसरी दवाको दूसरे सप्ताहमें एक मात्रा, तीसरे सप्ताहमें फिर पहली एक मात्रा—इस प्रकार पर्यायक्रमसे कुछ दिनों तक दवा सेवन करनेकी सलाह दी। नाककी सर्दी कुछ घटी दीख पड़नेपर दवा कुछ समयके लिये वन्द रखनी पड़ी। घटना रुक जाने या फिर बढ़नेपर फिर दवाका सेवन करना होगा। इस व्यवस्थाके द्वारा भद्र पुरुष अच्छे ही रहे।

स्वरभग (hoarseness)—**केलि म्यूर**के लक्षण रहते हुए भी उससे जब उपकार नहीं होता, उस समय इस औषधका व्यवहार करना चाहिए। पुराने स्वरभंगमें अथवा स्वरभग-रोगकी तृतीयावस्थामें यह दवा व्यवहृत होती है। पसीना वन्द होनेके कारण रोग होनेपर अथवा प्रथमावस्थामें ज्वरादि वर्तमान रहनेपर (फेरम फॉसके साथ)।

हैजा (cholera)– कालराकी प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे इस औषधका व्यवहार करनेसे प्रथमावस्थामें ही पसीना होकर अतिरिक्त जलीयाश निकलकर द्वितीयावस्था नहीं आने पाती। वमन और दस्तका रंग पीलापन लिये जल-सा एवं जीभपर भी पीले रंगका लेप रहता है। उदरमें जलन और मरोड। अपराह्नमें या सन्ध्या समय और ग्रीष्मकालमें रोगका आरम्भ होना। वेचैनी—रोगी तकलीफके घट जानेकी आशासे केवल ठण्डे स्थानमें लेटना और ठण्डा पानी पीना चाहता है। श्वास-प्रश्वासमें कष्टके कारण रोगी दरवाजो तथा खिडकियोको खोल देना चाहता है, किसी भी तरह वन्द स्थानमें रहना नहीं चाहता।

हृद्स्पन्दन (palpitation of the heart)—नाड़ी तेज, धप-धप करनेवाली, धीर—अथवा वड़ी कठिनाईसे नाडी मिलती है। हृद्-

पिण्डके रोग-जनित शोथ। चर्म शुष्क, उत्तप्त और रूखड़ा। सन्ध्या समय शरीरके तापक्रमकी वृद्धि। हृत्पिण्डमें सूई गड़नेकी-सी वेदना।

वात (rheumatism)—हाथ, पैर, कन्धा, पीठ अथवा जिस किसी स्थानमें ही वात-वेदना क्यों न हो, यदि वह वेदना स्थान परिवर्त्तनशील होती है—अर्थात् दर्द डोलकर एक बार इस जगह और एक बार उस जगह घूमता रहता है, तो उस हालतमें यह अति उत्कृष्ट औषध है। सन्ध्या समय, उत्तप्त बन्द घरमें रोगकी वृद्धि एवं खुली ठण्डी जगहमें रोगका घटना। डॉ० केण्टका कहना है कि वातकी वेदनामें और दूसरे-दूसरे बहुतसे रोगोंमें सूई गड़नेकी-सी वेदना, इस दवाका एक खास लक्षण है। पैरके तलवे ठण्डे। चारों तरफ घूमने-फिरनेपर दर्दका घटना-बैठनेपर बढ़ जाता है।

कैल्क फॉस—केलि सल्फ की तरह इस दवामें भी स्थान परिवर्तनशील (अर्थात् एक बार यहाँ और एक बार वहाँ घूमनेवाली) वात-वेदना है, किन्तु केलि सल्फमें शीतलतासे और खुली हवामें रोगका घटना और कैल्क फॉसमें उत्तापसे और हिलने-डोलनेपर रोगका घटना।

चेचक (pox)—चेचक-रोगमें जब दाने बैठ जाते हैं अथवा निकलते ही नहीं, उस समय इस औषधके प्रयोगसे विशेष उपकार होता है। यदि किसी कारणसे चेचकके दाने बैठ गये हों, तो, इस औषधके व्यवहारसे वे पुनः निकल आते हैं। दानोंका सूखना आरम्भ होनेपर इस औषधके प्रयोगसे अति शीघ्र ही सूखे चमडे झडकर नये चमडे उत्पन्न हो चमडे मुलायम होते हैं और दाग भी नहीं पडते। इसके साथ ज्वर रहनेपर, विशेषकर चमडे सूखे, उत्तप्त और रूखडे होनेसे प्रथमावस्थामें फेरम फॉस के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। शक्ति—६x।

कोदवा (measles)—चेचक अध्याय देखें।

चर्मपीड़ा-समूह (diseases of the skin)—किसी प्रकारके चर्मरोगके बैठ जानेके कारण कोई रोग उत्पन्न होनेपर। चर्मरोग बैठकर चमडा सूखा और रूखडा होनेपर। इससे लुप्त चर्मरोग पुनः निकल

आता है । एक्जिमा प्रभृति सब प्रकारके चर्मरोगोसे ही पीले रगका तरल या लसदार दुर्गन्धमय स्राव निकलता है । पपडीका रंग भी पीला । मस्तक और अन्यान्य स्थानोसे जो रूसी निकलती है, उसका रंग भी पीला होता है । फोडा, कार्वङ्कल, कैन्सर और एरिसिपेलससे पूर्वोक्त प्रकारका स्राव निकलना । नख बढ नहीं सकते (साइलिसिया प्रधान औषध है) । अत्यन्त खुजलाहट और जलन रहती है । **चमडेके ऊपरसे मछलीकी चोइयोंकी तरहकी परत उठनेपर** । शक्ति १२x, २४x ।

आगसे जल जाना (burns and scalds)—केलि म्यूरके व्यवहार के बाद अथवा इसके प्रयोगकी अवस्था उतीर्ण हो जानेपर जब क्षतसे स्वेत या पीले रंगका रक्तस्राव होता है, उस समय यह प्रधान औषध है । शक्ति—६x ।

ज्वर (fever)—सब प्रकारके ज्वर ही सन्ध्या ५-६ बजेसे रात ६-१० बजे तक बढ़ जाते हैं एव क्रमशः वेग घटते हुए आधी रातके बाद ज्वर छूट जाता है या घट जाता है । ज्वरके साथ चमडा सूखा और रूखडा रहनेपर प्रथमावस्थामें फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर अति शीघ्र ही पसीना होकर छूट जाता है । पुराने ज्वरमें जब कि आँख, मुख, हाथ और पैरोमे जलन देकर ज्वर आता है एव रोगी ठण्डा पसन्द करता है, उस समय यह विशेष उपकारी है । रोगी बहुत बेचैन होता है, बगल बदला करता है और आराम मिलनेकी आशामें केवल ठण्डा स्थान खोजता है । ठण्डा जल पान करनेकी उत्कट इच्छा—कभी भी गरम जल पीना नहीं चाहता । जीभ पीले रंगके पिच्छिल लेपयुक्त, मैली । शक्ति—६x, पुराना होनेपर १२x ।

निद्रा (sleep)—अस्थिर, उत्कण्ठापूर्ण और भीतिप्रद स्वप्न देखता है । नाना प्रकारकी चिन्ताओंके कारण अनिद्रा । पीव-जनित ज्वरके साथ सदा आलस्य और निद्रा । आधी रातके पूर्व एव रातमे ३ बजेके बाद अनिद्रा ।

जिह्वा (tongue)—पीले रगका पिच्छिल लेपावृत जीभ । जीभके किनारे सफेद लेप ।

वृद्धि (aggravation)—अपराह्न ५ वजेसे रातको १० वजे तक, उत्तप्त वन्द घरमें, विश्रामसे, तैलाक्त चीजोंके भोजनसे, तम्बाकू और खट्टे फल खानेसे रोग-लक्षणोंकी वृद्धि होती है।

ह्रास (amelioration)—आधी रातके वाद, सञ्चालनसे, खुली ठण्डी हवामें, ठण्डे पेयसे, ठण्ड स्थानमें और सव प्रकारकी शीतलतासे रोग-लक्षणोंका घटना। वेदनामय स्थानको दवाकर सोनेसे आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध (relation)—ज्वर और प्रादाहिक रोगोंमें फेरम फॉसके साथ एव शूल वेदनामें मेग फॉसके वाद इस दवाकी क्रिया अच्छी होती है।

सर्दी व श्वास-प्रश्वास क्रिया सम्बन्धी यन्त्रोंकी वीमारीमें केलि-म्यूर व नेट्रम म्यूरके साथ और वहरापन, वक्षका मोटा घडघड शब्द व पाकस्थलीके दर्दमें नेट्रम म्यूरके साथ प्रभेद निर्णय करना आवश्यक है। साधारण रूपमें साइलिसिया इसकी उपयोगी दवा है। खुजली व चर्म लाल रंगका होनेपर साइलिसियाके साथ केलि सल्फकी तुलनाकी जा सकती है।

शक्ति (potency)—६x शक्ति सर्वदा ही व्यवहृत होती है। १२x और २४x शक्ति भी वहुत वार होती है, विशेषकर रोगकी पुरानी अवस्थामें इससे उच्च शक्तियोंका व्यवहार कम होता है।

तुलनात्मक होमियोपैथिक औषधियाँ—पल्सेटिलाके साथ इसके वहुतसे लक्षणोंकी समता है। घटना-वढ़ना और स्रावकी प्रकृति दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है। किन्तु पल्सेटिलाकी मानसिक अवस्थाके साथ केलि सल्फका दयनीय अन्तर है। केलि सल्फका मिजाज चिडचिडा होता है, और पल्सका शान्त व धीर। केलि सल्फकी क्रिया पल्सकी अपेक्षा वहुत गहरी और स्थायी होती है। पल्स देनेपर फायदा न हो तो वहुतेरे रोगियोंको केलि सल्फ देकर हमलोगोंने आश्चर्यजनक फल प्राप्त किया है। केलि म्यूरके वाद प्रायः ही केलि सल्फका व्यवहार होता है।

———

मैग्नेशिया फॉस्फोरिकम

(Magnesia Phosphoricum)

एण्टिसाइकोटिक

भिन्न नाम—फॉस्फेट ऑफ मैग्नेशिया।

साधारण नाम—मैग्नेशिया फॉस्फोरिकम।

सक्षिप्त नाम—मैग फॉस (mag phos)

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—फॉस्फेट ऑफ सोडा और सल्फेट ऑफ मैग्नेशिया एक साथ मिलाकर यह तैयार होता है। दूधकी चीनीके साथ इसका विचूर्ण तैयार होता है। जलमें यह आशिक रूपमें घुलता है, किन्तु उत्तापसे वह पुनः जम जाता है।

क्रिया—शरीरके अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकारके स्नायु (nerve) और पेशी (muscle) हैं एव विभिन्न रंगके तन्तुमय (fibrinous) पदार्थोंसे निर्मित हैं। और प्रत्येक रंगका सूत्र भिन्न-भिन्न प्रकारके पार्थिव-लवणों (inorganic salt) से सचालित होता है और प्रत्येक प्रकारके सूत्रका कार्य भी स्वतन्त्र रूपका होता है। शरीरस्थ अण्डलालिक (albuminous) पदार्थके साथ यह पदार्थ मिश्रित होकर स्नायु और पेशियोंके श्वेतवर्णके सूत्र-समूह (white fibres) निर्मित हुआ करते हैं। पेशी और स्नायुके श्वेत-सूत्र-समूहमें प्रधानतः यही मैग्नेशिया फॉस ही दिखाई देता है। इस हेतु जब पेशी और स्नायु-समूहके श्वेतवर्ण-पदार्थमें मैग्नेशिया फॉसकी कमी होती है, तभी उक्त श्वेत-सूत्र-समूह सिकुडते हैं और यह सिकुडन ही आक्षेप, चिहुँक (spasm, convulsion) प्रभृति विविध नामोंसे पुकारे जाते हैं। इसलिये किसी पेशी और स्नायुके सिकुडनके कारण कोई रोग उत्पन्न होनेपर शक्तिकृत मैग्नेशिया फॉस ही देना चाहिये और इससे आश्चर्यजनक फल मिलता है।

श्वेत-सूत्रमें मैग्नेशिया फॉसकी कमी होनेसे सिकुडन उत्पन्न होता है। यह बात पहले ही कही जा चुकी है और उस सिकुडनके कारण

बोधक-स्नायु (sensory nerve) पर दबाव (pressure) पड़ता है। उस दबावके फलस्वरूप टूट जाना, डंक मारना, सुई या तीर चुभने अथवा बिजली घुसने-सी और स्थान परिवर्तनशील वेदना अचानक आती है और अचानक चली जाती है। ऐसी ही विविध प्रकारकी वेदनायें या उपस्थित हो जाती है। वे सब वेदनायें थोड़े स्पर्शसे बढ़ जाती हैं, किन्तु दबाव डालनेसे घट जाती है। ठण्डेमें वृद्धि—गरमसे घटना। सभी प्रकारके आक्षेप ही इस दवाकी क्रियाके अन्तर्गत हैं।

पाकस्थलीकी पेशियोंमें इस पदार्थकी कमी होनेपर पाकस्थलीके श्वेत-सूत्र सिकुड़ते हैं एवं इस सिकुड़नके फलस्वरूप ही पाकस्थलीका गह्वर (cavity) भी सिकुड़ जाता है। किन्तु प्रकृति उस क्रमशः बढ़ती हुई सिकुड़न शक्तिको रोकनेके लिये उदरके अन्दर एक प्रकारकी गैसकी उत्पत्ति होनेपर वह गैस ही पाकस्थलीको स्फीत कर रखती है। इसीलिये उदरमें वायुसञ्चयके साथ शूल-वेदना या पेटका दर्द मैग्नेशिया फॉससे आरोग्य होता है।

मैग्नेशिया फॉसके साथ **कैल्केरिया फॉस**की क्रियामें बहुत सादृश्य है। इसीलिये शरीरमें मैग्नेशिया फॉसका अभाव होनेपर प्रकृति (nature) **कैल्केरिया फॉस**से कुछ अंश ग्रहणकर उसके अभावकी पूर्ति करती है। इसी कारणसे मैग्नेशिया फॉसके लक्षण रहते हुए भी जब उससे उपकार नहीं होता, तब **कैल्केरिया फॉस**का प्रयोग करनेसे ही सभी लक्षण दूर हो जाते हैं। क्योंकि मैग्नेशिया फॉसका अभाव तो पहले ही **कैल्केरिया फॉस**से पूरा हो चुका है। अब **कैल्केरिया फॉस**का अभाव रहनेके कारण ही उसका प्रयोग होते ही बीमारी अच्छी हो गई।

पाकस्थलीकी बायीं ओरकी स्फीतिके कारण जब हृद्‌पिण्डका कोई रोग उत्पन्न होता है, उस समय यह विशेष उपयोगी है।

यह कोरिया-रोगकी प्रधान औषध है। आक्षेपयुक्त सभी प्रकारके रोगोंमें यह शायद ही विफल होता है। शरीरके दाहिनी ओर ही इस औषधिकी अधिक क्रिया दिखाई देती है।

वायुप्रधान लोगोके किसी-किसी रोगमें यह दवा बहुत कारगर होती है। मोटे मनुष्योंकी अपेक्षा दुबले-पतले लोगोंके शरीरमें इसकी क्रिया अधिक दीख पड़ती है।

डॉ० शुसलरकी अपनी वायोकेमिक चिकित्सामें इस दवाका अत्यधिक प्रचलन करनेपर इस दवाको होमियोपैथिक चिकित्सामें स्थान मिला है, किन्तु वायोकेमिककी भाँति इतने विस्तृत रूपमें नहीं।

विशेषत्व (peculiarity)—मैग फॉसकी बात स्मरण होनेसे ही इसके आक्षेप दूर करनेकी अद्भुत शक्तिका विषय याद हो आता है। जिस किसी रोगमें ही, चाहे व हैजा हो, शिशुओंके दाँत निकलनेके समय रोग इत्यादि ही क्यों न हो, यदि आक्षेप रहे, तो इस औषधकी सहायता लेनी ही पड़ेगी। हैजेमें रोगी जव सभी कष्टोंकी अपेक्षा हाथ-पैर इत्यादिकी गतिशून्यताको रोकनेके लिये वार वार करुण स्वरसे अनुनय विनय करता रहता है, उस समय मैग फॉस ही उसका एकमात्र मित्र है। माननेसे शूल-वेदनाकी यही एकमात्र दवा है। इस औषधमें वेदनाकी प्रकृति विविध है। वेदना ही हो या दूसरा कोई रोग ही क्यों न हो, इसके सब प्रकारके दर्द ही गरमसे घटते हैं और ठण्डेसे वृद्धि होती है। इसके सब प्रकारके दर्द ही उत्तापसे, दवानेसे और सामनेकी तरफ झुकनेपर घट जाते हैं। यह हिचकीकी प्रधान औषध है, क्योंकि हिचकी आक्षेपिक है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—रोगी दर्दके लिये हमेशा दुःख प्रकट करता है और रोता है। दुःखके कारण दीर्घ निःश्वास भी छोड़ता है।

२—यही सब प्रकारके शूल वेदनाका महौषध है। वेदना आक्षेपिक अथवा स्नायविक हो। शिशु शूल-वेदनामें पैरोंको बटोरे रहते हैं। उदर-की स्फीतिके कारण शूल। पेटमें दर्द। वेदना तेज छूरी भोंकनेकी भाँति, स्थान परिवर्तनशील वेदना, विजली-सी वेदना आती है और फिर अचानक चली जाती है। इसके सब प्रकारके दर्द ही उत्तापसे, दवानेसे और

सामनेकी तरफ झुकनेपर घटना एवं ठण्डसे बढ़ता है। रोगका आक्रमण दाहिनी ओर ही अधिक होता है।

३—अत्यधिक तकलीफ देनेवाला सिर-दर्द। रोगी स्नायविक सिर-दर्दके साथ बिजली-सी रोशनी देखता है। इसके दर्दका घटना-बढ़ना एवं प्रकृति द्वितीय संख्यक लक्षणकी तरह है।

४—आँखोंका स्नायु-शूल एवं आक्षेपिक स्पन्दन (कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर)। द्वित्व दृष्टि।

५—दन्त-वेदनामें द्वितीय लक्षण देखना चाहिये।

६—पाकस्थलीमें आक्षेपिक वेदना हेतु वमन। वमनमें पित्त, श्लेष्मा, जमा दूध एवं अजीर्ण पदार्थ भी निकलता है। वेदनाकी प्रकृति और ह्रास-वृद्धिके लिये द्वितीय लक्षण देखें।

७—उदरामयमें जल-सा तरल मल पिचकारीकी तरह वेगसे निकलता है (नेट्रम सल्फ)। उदरामयके साथ-पैरके जोड़ोंमें दर्द या गतिशून्यता। शिशुओंके उदरमें वायु जमकर शूल-वेदना एवं इस हेतु रोना।

८—रक्तामाशयमें अतिशय पेटमें दर्द एवं कूथन रहनेपर कोलि म्यूरके साथ पर्यायक्रमसे।

९—हिचकीकी प्रधान औषध है।

१०—लेखकों और पियानो बजानेवालोंकी अंगुलियोंका आक्षेप।

११—मूत्राशय और उसके ग्रीवा-स्थानमें आक्षेपिक वेदना, पेशाब करते समय कूथन, जलन और मूत्ररोध। मूत्र-पथरी निकलनेके समय असहनीय वेदना।

१२—कष्टरजः रोगकी वेदना दूर करनेमें यह उत्कृष्ट दवा है। ऋतुस्रावके साथ असहनीय वेदना। स्राव होना आरम्भ होते ही वेदनाका घट जाना। ऋतुका रक्त काला, जमा हुआ-सा और प्रतीत होता है मानो जरायु बाहर निकल आवेगा।

१३—आक्षेपिक प्रसव-वेदना, सूतिका-आक्षेप, धनुष्टङ्कार, कोरिया रोगमें नाना स्थानोंके स्पन्दनमें, आक्षेपिक पक्षाघातमें (कोलि फॉस),

हृद्‌शूल, अतिरिक्त हस्तमैथुन हेतु मृगी-रोग, आक्षेप, हृद्‌स्पन्दन प्रभृति सव प्रकारके आक्षेपिक और स्नायविक वेदनामें इसे ही एकमात्र औषध कहनेपर भी अत्युक्ति न होगी।

१४—क्रूप, दमा, क्षय-रोग इत्यादि सव प्रकारकी खाँसी आक्षेपिक होनेपर। खाँसी अत्यन्त कष्टदायक, सूखी एव रह-रहकर होती है। सोते समय खाँसीकी वृद्धि। श्वास प्रश्वासोंमें कष्ट। यक्ष्मा-रोगमें जव दाना गलता है।

१५—वात वेदनाकी प्रकृति और ह्रास-वृद्धिके लिये द्वितीय लक्षण देखें। सोनेसे, रातमें और सचालनसे वृद्धि—प्रातःकाल निद्रा भग होनेके वाद टहलनेसे घटती हे।

मानसिक लक्षण-समूह (mental symptoms)—रोगीके मन और बुद्धिकी गडवडी होना। दु.ख करके दीर्घ नि.श्वास छोडता है और उसी समय जॅभाई उठती है। वेदनाके लिये सदा दुःख प्रगट करता है और रोता है।

मानसिक परिश्रम करनेमें अनिच्छुक एव मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति भी उसको नही रहती। मन मानो थक गया हो। पुस्तक पढनेसे भी अनिच्छुक और पढ़नेकी चेष्टा करनेपर भी निद्रित हो जाता है। रोगी ज्यादा वात भी कर सकता है और पत्थरकी मूर्तिकी तरह चुपकी लगाकर वैठे भी रह सकता है। विचार करनेकी शक्ति घट जाती है।

सिर-दर्द (headache)—अत्यन्त कष्ट देनेवाला सिर-दर्द। पिछले भागके सिरमें अतिशय तीव्र वेदना एव वह वेदना पूरे सिरमें फैल जाती है। मस्तकके अन्यान्य स्थानोंमें भी वेदना हो सकती है। स्नायविक सिर-दर्दके साथ आँखोंके सामने विजली-सी रोशनी देखता है। सव प्रकारके **सिर-दर्द उत्तापसे घटते है एवं ठण्डसे वृद्धि होती है**। दवानेसे एवं स्थिर भावसे रहनेपर भी वेदना घटी-सी मालूम होती है। फाड डालनेकी तरह, तीर धॅसनेकी भाँति, आक्षेपिक, अस्त्राघात स्वरूप, स्नायवीय एव विजलीकी गति-सी वेदना उपस्थित हो अचानक दर्द चले जानेवाला प्रकृतिमय सिर-दर्द। रक्तसंचय हेतु टपकमय सिर-दर्द।

उत्तापसे और दबानेसे घटनेपर यही उत्तम औषध है। रोगी सिरमें कपड़ेकी पट्टी बाँधकर अन्धेरे कमरेमें सो रहना पसन्द करता है

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—आँखकी स्नायविक वेदना और वह गरम पसीनेसे घटना। पलकोंका आक्षेपिक स्पन्दन (कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर)। पलकोंका गिर पड़ना (केलि फॉस)। आँखकी पुतली सकुचित होती है (नेट्रम म्यूर) एव रोगी रोशनी बिलकुल ही नही सह सकता (कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, साइलि)। आँखके सामने नाना प्रकारके रग देखता है—आँखके सामने बिजली-सी, इन्द्रधनुषकी तरह, या तो कभी ऐसा मालूम होता है मानो काले रगका कोई पदार्थ उड रहा है। द्वित्व दृष्टि अर्थात् एक पदार्थको दो देखना इस औषधका ही लक्षण है। पलकोंका शीघ्रतासे उठना और गिरना, चक्षु-वेदना और आँखसे पानी गिरता है (पानी गिरना रहनेपर नेट्रम म्यूर प्रधान औषध है)। आँखकी स्नायुशूल-वेदना।

कर्णपीड़ा-समूह (diseases of the ear)—कानके आडिटरी नामक स्नायुकी दुर्बलता हेतु बधिरता या श्रवण-शक्तिका घट जाना। स्नायविक या आक्षेपिक कारणवश कर्ण-शूल। सब प्रकारकी वेदनाओंका ही उत्तापसे घटना एव ठण्डसे वृद्धि होना।

केलि फॉस—लक्षणाक्रान्त रोगीको केलि फॉससे फायदा न होनेपर इस औषधमें उपकार होता है। कानके अन्दरकी सभी पीडाओंपर ही इसका अधिकार है।

सर्दी (coryza)—सर्दीमें जब घ्राणशक्तिका लोप होता है। सर्दीके अलावा भी घ्राणशक्तिका लोप हो सकता है। पर्यायक्रमसे नाक सूखा रहना और नाकसे पानी गिरना। कभी नाक सूखा या कभी उसमेंसे सफेद तरल श्लेष्मा निकलता है।

दन्तवेदना (toothache)—वेदनाकी प्राकृतिके लिये शूल-वेदनाके लक्षण देखना चाहिये। दाँतका दर्द मेग फॉससे न घटनेपर कैल्क फॉस अवश्य ही देना चाहिये।

आक्षेपिक दन्तवेदना। वेदना सविराम, भयानक, काटनेकी भाँति, तीर घॅसनेकी तरह एव वात-वेदना-सी वेदना। स्थान परिवर्तनशील वेदना अर्थात् कभी एक दॉतमें तो कभी दूसरे दाँतमें (केलि सल्फ)। शीतल जलसे, शीतल वायुसे एव सव प्रकारकी शीतलतासे वेदनाकी वृद्धि (शीतलतासे घटनेपर फेरम फॉस) एव गरम जलकी कुल्ली, उत्तापके प्रयोगसे और सव प्रकारकी उष्णतासे घटा मालूम होता है।

केलि सल्फ—मैग फॉमकी तरह इस औषधमें भी स्थान परिवर्तनशील वेदना है ; किन्तु दोनोंमें विशेष प्रभेद यही है कि मैग फॉसकी वेदना उत्तापसे घट जाती है और ठण्डसे वढती है। और केलि सल्फमें ठण्डसे घटती है एव उत्तापसे वढ़ती है।

फेरम फॉस—केलि सल्फकी भॉति फेरम फॉसकी वेदना भी ठण्डसे कम होती है, किन्तु केलि सल्फकी तरह स्थान परिवर्त्तनशील वेदना इस दवामें नहीं है और मुख्य वात तो यह है कि फेरम फॉसमें मसूढेके अन्यत्र स्नायु-प्रदाहके कारण दन्त-वेदना होना। मसूढा लालवर्णका एव दाँतके स्फोटककी प्रथमावस्थामे।

टान्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—टान्सिल-प्रदाहके साथ आक्षेपिक खाँसी और खाँसते समय गलेके अन्दर एक प्रकारका तीव्र शब्द होता है। गलेके अन्दर सकुचनका अनुभव होना।

गलक्षत (sore throat)—गलेके अन्दर आक्षेपिक, इस हेतु कुछ निकलनेमें या पीनेमें गलनली संकुचित होती है। मालूम होता है मानो गलनली वन्द हो गयी है। गलेके भीतर लालवर्ण और घावकी तरह मालूम होता है, विशेषकर गलेके दाहिनी ओर। कुछ भी भोजन करते और पीते समय गलेको हाथसे दवा रखना पडता है। गलेके भीतर स्फीतिके साथ शीतानुभव होना। गलनलीसे अचानक तीखी आवाज निकलती है।

अजीर्णता (dyspepsia)—अजीर्णके साथ जीभ साफ रहना (फेरम फॉस, कैल्क फॉस) एव पाकस्थलीमें आक्षेपिक वेदना। वेदना शूलवत्, तेज, काटनेकी भॉति, तीर विंधनेकी तरह, कसने या खीच रखनेकी

मरोडना, नोचना, ऐंठन इत्यादि जिस किसी प्रकारकी भी वेदना क्यों न हो, वह उत्तापसे, दबानेसे, रगडनेसे और झुके रहनेपर एवं पेटके बल सोनेसे घटना एव ठण्डसे वृद्धि होती है।

सब प्रकारके अन्त्र-प्रदाहमें अन्त्रके भीतर बार-बार गरम पानीकी पिचकारी देनी चाहिये। इससे अनिष्टकर द्रव्यादि निकलकर अति शीघ्र ही रोग आराम हो जाता है।

रक्तामाशय (dysentery)—इस पीडामें यद्यपि **केलि म्यूर** प्रधान औषध है, किन्तु पेटके दर्दसे रोगी जब अस्थिर हो पडता है, उस समय यही प्रधान दवा है। पेटकी शूल-वेदना टीपनेसे, दबानेसे, गरम सेंक देनेमे आराम मालूम होता है। अतिशय कूथनके साथ पुनः-पुनः मल त्यागनेकी इच्छा—मल त्यागनेके लिए जाता है—किन्तु मल निकलता नहीं—केवल कूथन ही देना पडता है। इसके साथ बार-बार मूत्र त्यागेच्छा भी रहती है। मल त्यागनेके बाद मलद्वारमें दर्द और जलन भी होती है। **केलि म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

अर्श (piles)—अर्शमें काटने या फाडनेकी तरह वेदना। गरमसे घटना। गरम पानी का लोशन देना पडता है। कैल्क फ्लोरके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

हैजा (cholera)—अकडन या गतिशून्यताको दूर करनेके लिये इससे अच्छी और दूसरी दवा नहीं है। अन्यान्य लक्षण उदरामय अध्यायमें देखना चाहिये।

हिचकी (hiccough)—यही हिचकीकी प्रधान औषध है। निम्नक्रमकी औषध गरम पानीके साथ बार-बार सेवन करना चाहिये।

रोगीका विवरण—दिलपशारके वृद्ध मुकुन्द हालदारको हिचकी प्रायः एक सालसे होती आ रही थी। रोगी बहुत ही गरीब था, अच्छी तरहसे अपनी कोई चिकित्सा भी नहीं करा सकता था, लेकिन जडी-बूटी एव देहातके वैद्योंकी दवा उसने सेवन की थी। किन्तु दु.खकी बात है कि वह उससे कुछ भी फल न पाया। हिचकी घटती-बढती न

थी। लेकिन भोजनके समय पेटके अन्दर तीव्र वेदना मालूम होती थी, इसलिये रोगी भोजन भी नहीं कर पाता था, अरुचि भी रहती थी। वृद्ध अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण हो पडा था। ज्यादे कोई लक्षण भी नहीं मिला। डायफ्राम-पेशीकी अकडनके कारण हिचकी आ रही थी, समझकर **मैग फॉस** ३x शक्ति ३ दिनोके लिये ३ मात्राके हिसावसे ९ मात्रा गरम जलके साथ सेवन करनेके लिये दे दी। तीन दिनके वाद वृद्धने मेरे पास आकर कहा कि अव दिन-रातमें २-१ वारके अलावा हिचकी नही आती। भोजन करते समयकी तीव्र वेदना अभी भी थी। और भी दो दिन वही औषध देते ही रोगी स्वस्थ हो गया। यह घटना ७-८ वर्षोके पहलेकी है, अतः तारीख ठीकसे न वतला सका।

कोष्ठवद्धता (constipation)—शिशुओकी कोष्ठवद्धता, मल-त्यागते समयकी अकडनमय वेदनाके कारण मल त्यागने पर ही चिल्लाता है।

शूलवेदना (colic)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है। विशेपतः वेदना अकडनशील होनेपर। शिशुओंके शूल-रोगमें जव वे पैरोंको वटोरे रहते हैं। वायुसञ्चय होनेके हेतु उदर स्फीत एव इसलिये शूल; वह शूल-वेदना उत्तापसे, हाथ सहलाने से और डकार आनेपर घटती है। वेदना सविराम अर्थात् कुछ देर तक अच्छी रहती है फिर वेदना होने लगती है। इस औपधके सव प्रकारकी शूल-वेदना ही **दवानेसे, उत्तापसे** और सामनेकी तरफ झुकनेपर आराम मालूम होता है।

इस दवामें जलनमय वेदना नही है। इस औपधमें वेदनाकी प्रकृति असख्य प्रकारकी है। दूसरी किसी दवामें इतने असंख्य प्रकृतिकी वेदनाके लक्षण नहीं हैं। जिस किसी स्नायुमें ही तीव्र वेदना हो सकती है। वेदना असहनीय—पागल वना देनेवाली। तेज छूरा भोकनेकी तरह, तीर विंधनेकी भाँति, सूई गडनेकी तरह, कसकर पकडनेकी भाँति, स्थान परिवर्त्तनशील, विजली-सी वेदना अचानक आती है व अचानक ही चली भी जाती है, अकडनशील इत्यादि नाना प्रकारकी वेदनायें। जिस किसी

प्रकारकी असहनीय वेदना ही क्यों न हो, यह औषध वार-वार गरम पानीके साथ प्रयोग करनेपर शीघ्र घट जाती है। शक्ति ३x, ६x, १२x।

रोगीका विवरण—१९३५ ई० के आरम्भमें दिलपशारके वलराम हालदारकी स्त्रीको देखनेके लिये वुलाया गया। जाकर मैंने देखा कि घरमें वहुतसे लोग इकट्ठे हो चुके थे। रोगिणीकी अवस्था २३-२४ वर्षकी रही होगी। हृष्ट-पुष्ट, वर्ण साफ, पहले दिन कुछ ज्वर हुआ था पर उस दिन उस समय १०० डिग्रीसे अधिक ज्वर न था—लेकिन रोगिणीको ज्ञान न था। दो आदमी रोगिणीको जोरसे पकड रखे थे, नहीं तो विछावन छोडकर भागना चाहती थी। और पकड रखनेपर भी जिसको पाती थी उसीको काटनेकी चेष्टा करती थी। मस्तक गरम और आँखें लाल न थीं, शरीर नाममात्र उत्तप्त था, ज्वर भी ज्यादा न था—तो भी रोगिणीको इस प्रकार उन्मत्तावस्था क्यों थी पहले मैं समझ न सका था। पुकारनेपर कोई जवाव नहीं देती, अपने भी कुछ नहीं वोलती, लेकिन वीच-वीचमें पैरमें हाथ लगानेकी चेष्टा कर रही थी ऐसा प्रतीत होता था। आँख और चेहरेके हाव-भावको देखकर मालूम हुआ कि उस समय उसे कोई कष्ट हो रहा था। रोगिणीके लक्षणोंको देखकर कोई औषध ही न चुन सका। सभी मेरे मुँहकी तरफ नजर डाले वडी उद्विग्नतासे वैठे हुए थे। सोचा कि रोगिणीके पैरकी तरफ हाथ वढानेकी चेष्टाको अगर दोनों पैरोंके भीतरी शिरा-समूहकी अकडनके संकेतस्वरूप मान लिया जाय, तो हानि ही क्या है? ऐसा ही सोचकर मैंने तुरन्त एक मात्रा मैग फॉस ३x गरम जलके साथ रोगिणीके मुखमें डाल दिया। फल भी अति आश्चर्यजनक हुआ। कई-एक सेकेण्डोंके अन्दर ही रोगिणी गाढ़ी निद्रामें सो गई। दिनको प्रायः तीन वजेसे लेकर प्रातः कालतकमें केवल एक वार कुछ समयके लिये जग पडी थी। दूसरे ही दिन रोगिणी विलकुल स्वस्थ और स्वाभाविक हो गई।

अकड़न (writer's cramp)—जो लोग अत्यधिक लिखनेका काम किया करते हैं, उन लोगोंके लिये लिखते-लिखते अंगुलियोंसे कलम

छूट जानेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है। किसी यन्त्रका अत्यधिक समयतक व्यवहार करनेके कारण गतिशून्यता होनेपर।

सारगी या पियानो वजानेवालों और लेखकोंके अंगुलियोंकी अकडन। केवल ऐसी ही हालतमें ही नहीं, अधिक दिनोंतक परिश्रम करनेके फलस्वरूप किसी स्नायुके सुन्नपन या चेतनाहीनताके कारण कोई भी रोग। मजदूरोंके हाथोंमें भी कभी-कभी अकडन हो जाती है और हाथतक भी वेकार हो जाते हैं।

मूत्र-पथरी (stone in the bladder)—पत्थर निकलते समय असहनीय वेदना होनेपर (नेट्रम सल्फ) यह अति उत्कृष्ट दवा है। शक्ति—३x, ६x।

प्रास्टेट-ग्रन्थिकी वृद्धि (enlargement of the prostate gland)—प्रास्टेट-ग्रन्थिकी वृद्धि हेतु रोगमें वार-वार पेशाव करना या पेशाव वन्द हो जानेपर नेट्रम सल्फके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। शक्ति—६x व्यवहार्य है।

मूत्रस्थलीकी अकड़न (spasm of the bladder)—अकडनमय मूत्र-रोध (फेरम फॉस पर्यायक्रमसे)। **मूत्रस्थलीमें और उसके ग्रीवा स्थलमें अकड़नमय वेदना, पेशाव करते समयकी जलन और कूथन।** कैथिटर प्रवेश करानेके वाद मूत्रस्थलीकी शूल वेदना अथवा ऐसा मालूम होता है मानो मूत्रस्थली अव सकुचित नहीं हो रही है। स्नायविक उत्तेजना हेतु रातमें अधिक पेशाव होना इस दवाका लक्षण है। पेशाव इतना अधिक होता है कि रातको नींदमें भी वाधा पहुँचती है।

कष्टरजः (dysmenorrhœa)—दर्द दूर करनेके लिये प्रधान औपध है, विशेषतः वेदना अकडनमय होनेपर। स्रावके साथ अथवा पहलेसे ही वेदना। वेदना सविराम और दाहिनी तरफ अधिक। स्राव निकलना शुरू होनेपर वेदना घट जाती है। स्राव खण्ड-खण्ड कफकी भाँति। मालूम होता है मानो जरायु वाहर निकलती आ रही है (bearing down sensation)। अन्यान्य लक्षण शूल-वेदना अध्यायमें देखें। शक्ति—३x, ६x।

ऋतुस्राव (menstruation)—ऋतुस्रावके साथ असहनीय वेदनामें यह सबसे उत्कृष्ट दवा है। जब तक ऋतुस्राव नहीं होता, तब तक असहनीय-वेदना होती है, किन्तु ऋतुस्राव होते ही वेदना घट जाती है। स्नायुशूल (neuralgia) प्रकृतिकी वेदनामें उत्कृष्ट है। ऋतु—रक्त काला, सूतकी भाँति एव शीघ्र-शीघ्र होता है। जननेन्द्रियकी अकडन (फेरम फॉस)। इसकी वेदना भी पहलेकी भाँति उत्तापसे, दबानेसे या झुकनेपर घटती है।

प्रसव-वेदना (labour pain)—अकडनमय प्रसव-वेदनाके साथ हाथ-पैरकी अकडन। प्रसव-वेदना अत्यधिक अथवा अल्प।

सूतिका-आक्षेप (puerperal eclampsia)—आक्षेप रोकनेके लिये यही प्रधान औषध है। गरम पानीके साथ बार-बार सेवन करना चाहिये।

आक्षेपिक क्रूप (spasmodic croup)—क्रूपकी प्रधान औषध **केलि म्यूर** है, किन्तु आक्षेपिक होनेसे यही प्रधान और अद्वितीय औषध है। इसमें श्वासकष्ट विद्यमान है। नीचे खाँसीके लक्षण देखना चाहिये।

दमा (asthma)—दमाके साथ उदर स्फीत, वक्षकी सिकुडनके कारण मालूम होता है मानो वक्षःस्थल कसता जा रहा है। ऐसा मालूम होता है कि खाँसते-खाँसते साँस बन्द हो जायगी। निम्नोक्त खाँसीके लक्षण देखना चाहिये। शक्ति—३x।

यक्ष्मा (phthisis)—प्रथमावस्थामें नेट्रम फॉस ही प्रधान औषध है, किन्तु दानोका गलना आरम्भ होनेसे यही प्रधान औषध है। क्षय-रोगमें जब खाँसी अत्यन्त आक्षेपिक और कष्टकर होती है, उस समय इससे तकलीफ घट जाती है। नीचे दिये खाँसीके लक्षण देखें।

खाँसी (cough)—सब प्रकारकी खाँसीमें ही निम्नलिखित लक्षण-समूह दीख पडनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है। आक्षेपिक खाँसी ही इस औषधके निर्वाचनका प्रधान लक्षण है। **खाँसी अत्यन्त कष्ट-**

हृद्शूल (angina pectoris)—इस पीडामें यही प्रधान औषध है। गरम पानीके साथ वार-वार सेवन करना चाहिये। शक्ति—६x।

वात (rheumatism)—वेदना अत्यन्त तीव्र, सुई गडनेकी भाँति और बिजली-सी। वात-वेदनाके कारण रातमें नींद नहीं आती। रातको सोनेपर और सचालनसे वेदनाकी वृद्धि होती है। उत्तापसे, प्रातःकाल, दिनमें और सुबह नींद टूटनेके वाद टहलनेपर आराम मालूम होता है। वेदना एक स्थानसे दूसरे स्थानको घूमती है (कैल्क फॉस, केलि सल्फ)। नाना स्थानोंकी अकडन। दूसरी दवाके साथ पर्यायक्रमसे। सायटिका।

पक्षाघात (paralysis)—आक्षेपिक लक्षणयुक्त पक्षाघातमें केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे। हाथ, पैर और मस्तकका कम्पन।

स्नायुशूल (neuralgia)—यही स्नायुशूल रोगकी प्रधान दवा है। रातमें वृद्धि। विभिन्न स्थानोंमें स्पन्दन। मुखमण्डलका स्नायु-शूल-रोग इस औषधसे वहुत आराम हुआ है। दाहिना हिस्सा ही अधिक आक्रान्त होता है। अन्यान्य लक्षण शूल-वेदनामें देखना चाहिये।

नेट्रम म्यूर—मैग फॉसकी तरह इसमें भी रह-रहकर वेदनाका होना, कोंचने या तीर विंधनेकी तरह दर्द होनेका लक्षण है। लेकिन **लार या आँसू** निकलनेके लक्षणकी विद्यमानताके द्वारा ही यह औषध निर्देशित होती है। समुद्रके किनारे रहनेके कारण स्नायुशूल।

मृगी (epilepsy)—अतिरिक्त हस्तमैथुनके हेतु या बुरे ख्यालोंके कारण मृगी। दाँत वैठ जानेपर या अकडनको रोकनेके लिये गरम पानीके साथ वार-वार प्रयोग करना चाहिये। शक्ति—६x।

गरम जलके साथ औषध प्रयोग करना सम्भव न होनेपर ग्लिसरिन के साथ गण्डस्थलपर मालिश करनेसे फल मिलता है। शक्ति—३x।

कोरिया (chorea)—अकडन, मुख, आँख, हाथ, पैर इत्यादिका अनिच्छाकृत कम्पन, **वात करते समय वात लटपटा जाना** इत्यादि लक्षणोंमें मैग फॉस ही प्रधान दवा है। मैग फॉससे उपकार न होनेपर **कैल्क सल्फ**का प्रयोग करना चाहिये।

चिहुँक, अकड़न इत्यादि (spasm, convulsion etc.)—शरीरके जिस किसी स्थानमें और जिस किसी प्रकारकी भी अकड़न क्यों न हो, यही प्रधान औषध है। हाथ-पैर इत्यादिका ऐंठन, बेहोशी (fit) का दौरा आना, दाँती लगना, खींच लगना, आक्षेपिक थुनथुनाहट, हाथ और पैरोंकी अकड़न, दाँत निकलनेके समयकी चिहुँक इत्यादिमें उत्कृष्ट है। उपकार न होनेपर **कैल्क फॉस** भी मुफीद निकलता है।

रोगीका विवरण—ई० १९४९ सालके अन्तमें एक दिन सायंकाल एक सुप्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सकके चिकित्सालयमें बैठा था। उसी समय एक धनी मारवाड़ी व्यवसायी किसी एक स्त्रीके बार-बार मूर्च्छित हो पड़नेके कारण दवा लेने आए। एक होमियोपैथिक चिकित्सकने तीन सप्ताहसे अधिक चिकित्सा की, किन्तु कोई लाभ न हुआ। एक अनुभवी वैद्यने भी प्रायः एक महीना चिकित्सा की, किन्तु उससे भी कोई लाभ न हुआ। उसके बाद मुझे दिखलानेके लिए उक्त वैद्य महोदय तथा और किसी-किसीने सुझाव दिया। किन्तु दुःखकी बात है मैं नया ही आया था इसलिए मुझे न बुलाकर उक्त सुप्रसिद्ध वृद्ध उच्च-पदवीधारी होमियोपैथको दिखलाया गया। वे रोगिणीको देखकर तुरन्त ही आये थे और कौन-सी दवा दी जाय यही सोच रहे थे; किन्तु किसी निश्चित दवापर स्थिर नहीं हो सके। रोगिणीकी दशामें निर्वाचन करने योग्य किसी विशेष लक्षणका नाम भी नहीं बतला सके। तब मैंने स्वतःस्फूर्त होकर **मैग फॉस** ३x शक्ति बार-बार प्रयोग करनेके लिये सुझाव दिया। कहा कि होमियोपैथिक दवाके व्यवहारसे लाभ न होनेपर रोगिणी हाथसे निकल जायगी और होमियोपैथीकी भी बदनामी होगी। और मेरे सुझावको मान लेनेसे निश्चित ही रोगिणीको फायदा होगा और आपको भी निश्चिन्त रूपसे सोचनेका सुअवसर मिलेगा। चिकित्सक महोदयने उसी समय **मैग फॉस** ३x दिया। दूसरे दिन खबर मिली कि कई एक मात्रा दवा खानेके बाद फिर और मूर्च्छा नहीं आई है। बादमें फिर खबर लेना आवश्यक नहीं समझा।

धनुष्टङ्कार (tetanus)—यही प्रधान औषध है। जवडा अटका हुआ। वार-वार गरम पानीके साथ सेवन करना चाहिये। शक्ति—३x, उपकार न होनेपर उच्चक्रम। वाहरी मालिश करनेपर और भी शीघ्र फल मिलता है।

रोगीका विवरण—पिछले दिनाक २४-८-४८ को सायकालके थोडा पहले खुलनाके रेलवे S. I. O W. मौलवी अब्दुल रसीद साहवके मकानपर उनकी हालकी उत्पन्न कन्याके धनुष्टङ्कारकी चिकित्सा करनेके लिए वुलाया गया। कन्याकी उमर केवल ४ दिनकी थी। जन्मके वाद से ही जवडा अटका हुआ था। माताका दूध एक वूँद भी नही पी थी। वार-वार अकडन पहले थी, किन्तु उसके वादसे निश्चल पडी हुई थी, आँखें विलकुल वन्द थी, श्वास-प्रश्वासका धीरे-धीरे चलना, रोना-गाना विलकुल नही था और जवडा अटका हुआ था—मुँहको हॉ नही कराया जाता। आगेके दिन शहरके एक एलोपैथिक चिकित्सकको दिखलाया गया था, उन्होंने २४ घण्टे चिकित्सा करनेके वाद आशा नही है कहकर रोगीको छोड़ दिया। हालके उत्पन्न वच्चेको धनुष्टङ्कार हो जानेपर एक भी वच्चा जो नहीं वचता (शायद ही वच जाय) यह मुझे भी मालूम था, विशेपकर रोगी भी वहुत देरकर आया था।

जो हो मैंने रातके लिये **मैग फॉस** ३x दो मात्रा और **कैल्क फॉस** ६x दो मात्रा—हर दो घण्टे अन्तर पर्यायक्रमसे सेवन करनेके लिए दे दी।

सवेरे खवर मिली कि आज आँखें खोलकर ताक रही है, २-१ वार रो भी रही है और एकवार माँ के स्तनको मुँहमें लेकर खीची भी थी। यह आशा से भी अधिक उन्नतिकी वात है इसमें सन्देह नही। मैने और भी दो-तीन दिन उसी औषधको दिया और उसीसे लड़कीके जीवनकी आश्चर्यजनक रूपमें रक्षा हुई। अव लडकी मुँहमें स्तन लेकर खीच सकती थी, किन्तु माँके स्तनमें विलकुल दूध नही था। यही उनकी प्रथम सन्तान थी, माँ की उमर १७-१८ वर्पकी होगी। पहले दिन पेटमें दर्द आदिके कारण माताको **आर्निका** २०० एक मात्रा दी और २ दिन वाद

पलसेटिला २०० दो मात्रा लगातार दो दिन सवेरे सेवन करनेके लिये देनेपर नियमित स्तनमें दूध होने लगा। किन्तु दुःखकी बात है, स्वस्थ होनेके ६-७ दिन बाद बच्चेको अचानक बार-बार हिचकी उठने लगी। उस समय **मैग फॉस** १२x कई-एक मात्रा देनेपर वह बन्द हो गई। और भी ४-५ दिन बाद सारे मुखमें, जीभपर, ओठपर अत्यधिक दर्दमय सफेद रंगके घाव भर गए जिससे स्तनपान करना व दूध पीना बन्द हो गया। इसके लिए **केलि म्यूर** ६x, १२x और अन्तमें दो मात्रा बोरेक्स ३० देनी पड़ी। उपस्थित माँ व सन्तान दोनों ही स्वस्थ हो गई। इस प्रकार एक अन्तिम अवस्थाके धनुष्टङ्कारका रोगी अच्छा हो जानेसे बायोकेमिक चिकित्साका गौरव जो बढ़ा इसमें सन्देह नहीं। इस प्रकारके एक निराश रोगीके अच्छा हो जानेसे उस अंचलमें एक आलोडन पड़ गया।

चर्मपीड़ा समूह (diseases of the skin)—छूरेके दोषसे बाल बनाये गये स्थानमें खुजली। हर्पेटिक खुजलीमें सफेद पपड़ी। व्रण।

ज्वर (fever)—सब प्रकारके ज्वरमें ही दण्डन रोकनेके लिये यह व्यवहृत होता है। ज्वर आनेके पहले जँभाई लेना एवं ज्वरके समय हाथ-पैर इत्यादिमें दर्द होता है। दर्द शरीर दबवानेसे घटता है। रोगी दोनों पैरोंको बटोरकर सोना पसन्द करता है। ज्वरके समय कँपकँपी और उसके साथ दाँत कड़कड़ाता है (केलि फॉस)। रोगीको बहुत कम्प होता है एवं वह सरलतापूर्वक दूर होना नहीं चाहता। सुबह सात या नौ बजे उस प्रकारके कम्पके साथ ज्वर आना। **शीत और कम्प मानो मेरुदण्डके भीतरसे ऊपर और नीचे चढ़ता-उतरता है।** प्यास नहीं रहती। शिशुओंके दाँत निकलते समयके ज्वरके साथ चिहुँकनें (फेरम फॉस, केल्क फॉस) व्यवहार्य है।

ज्वरके बाद बहुत बार अधिक पसीना भी दिखाई देता है। शरीर अत्यधिक दुर्बल मालूम होनेपर इसके साथ दूसरी कोई दवा भी प्रयोग की जा सकती है।

जिह्वा (tongue)—पाकस्थलीकी किसी बीमारीके साथ जीभ गीली, लाल अथवा साधारण-सी सफेद रंगकी मैलसे आवृत्त रहती है। जलन और कष्ट मालूम होना।

स्वाद (taste)—खट्टी रोटीकी तरह स्वाद या स्वादहीन। स्वादहीनताके कारण किसी भी खाद्य वस्तुका स्वाद नहीं मिलता।

निद्रा (sleep)—स्नायविक उत्तेजना हेतु अनिद्रा एवं उसके साथ मस्तकमें कसकर पकडनेकी तरह मालूम होनेपर यह उत्कृष्ट औषध है। जॅभाई उठना। कभी-कभी जँभाई लेनेके कारण जबडे (jaw) अपनी जगहसे हट जाते हैं, इसलिए रोगी मुख बन्द नहीं कर सकता है—मुख खुला ही रहता है।

वृद्धि (aggravation)—सभी रोगोंका ही आक्रमण दाहिनी तरफ अधिक होता है, सभी लक्षण शीतल वायुसे या पानीसे, सामान्य स्पर्शसे, चित होकर सोनेसे, कैथिटरके प्रयोगके बाद एवं खुली हवामें बढते हैं।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, दबानेसे, रगडनेपर, सामने की तरफ झुके रहनेपर सभी लक्षण घटे मालूम होते हैं। उदरकी वेदनामें उठकर टहलनेके लिये बाध्य होता है और उससे उसको आराम मालूम होता है।

सम्बन्ध (relation)—मैग फॉसके साथ कैल्क फॉसका विशेष सम्बन्ध दिखाई देता है एवं मैग फॉसका प्रयोग करनेपर भी बाकी कोई रोगलक्षण रह जानेपर कैल्क फॉससे पूर्णरूपमें आराम हो जाता है। इसलिए कैल्क फॉस मैग फॉसका परिपूरक (complementary) औषध है।

यह प्रदाहजनित शूल वेदनामें **फेरम फॉस**, पित्तशूलमें **नेट्रम सल्फ**, अम्लशूलमें **नेट्रम फॉस** एवं मूत्राशयके शूलमें (renal colic) **कैल्क फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।

शूलके दर्दमें कैल्क-फॉसके साथ (कैल्क-फॉसमें दर्दके साथ सुन्नपन है), मृगी रोगमें कैल्क-फॉस, केलि-म्यूर व साइलिसियाके साथ; सिर-दर्दमें

दर्द मस्तकके पिछले भागमे आँख तक फैलनेपर और गरम प्रयोगसे घटनेपर साइलिसियाके साथ और उदरामयमें, ओठमें छाले व फटनेपर नेट्रम म्यूरके साथ **मैग-फॉस**का प्रभेद निर्णय करना आवश्यक है। स्थान परिवर्तनशील व तेजीसे परिवर्तनशील दर्दमे मैग-फॉसके साथ केलि सल्फकी तुलनाकी जा सकती है। किन्तु केलि सल्फका रोगी ठण्डेसे आराम पाता है।

शक्ति (potency)—३x, ६x, १२x, ३०x एवं कभी-कभी २००x शक्ति भी व्यवहृत होती है। निम्नक्रमसे फल न मिलनेपर उच्चक्रमसे फल मिलता है। लेकिन शूल-वेदनामें पहले ही निम्नक्रम, यहाँ तक कि १x, २x शक्ति को भी व्यवहार करना पडता है।

तुलनात्मक होमियोपैथिक औषधियाँ—स्नायविक लक्षणोमें मैग फॉस व केलि फॉस दोनो ही अद्वितीय हैं। किन्तु मैग फॉसमें जैसे अकडनके लक्षणसे ओर गरमसे घटना है—केलि फॉस उसी तरह उसके विपरीत लक्षणोमें कार्यसाधक है। शूलके दर्दमें यह कॉलोसिन्थ और वायु सचयजनित शूलके दर्दमें यह डायस्कोरियाका प्रतियोगी है। आक्षेपमें वेलेडोनाके वाद प्रायः ही व्यवहृत होता है। ऋतुशूलमें व प्रसवके दर्दमें पल्स, सिमिसि व वाइवर्नमके समतुल्य औपध है। किन्तु मैग फॉसमें घटना गरम प्रयोगसे, और दूसरे दोनो दवाओमें घटना ठण्डसे है। श्लैष्मिक वाधक-दर्दमें वोरेक्सके साथ तुलना योग्य है। स्नायविक दर्दमें आर्सका प्रतियोगी है। दोनों दवाओमें गरम प्रयोगसे घटना है।

विषघ्न (antidote)—जेल्स व लैके।

नेट्रम म्यूरियेटिकम
Natrum Muriaticum

* * एण्टिसोरिक * * एण्टिसाइकोटिक और एण्टिसिफिलिटिक

भिन्न नाम—सोडियम क्लोराइड।

साधारण नाम—लवण।

संक्षिप्त नाम—नैट म्यूर (nat mur)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—साधारण लवण पानीमें मिलाकर उत्ताप का प्रयोग करनेसे इनके दाने तैयार होते हैं। ठण्डे जलकी अपेक्षा गरम जलमें ही इसका अधिक भाग घुलता है। यह परिस्रुत सुरामें नहीं घुलता। मूल द्रव्यके साथ दूधकी चीनीसे इसका विचूर्ण तैयार करना पड़ता है।

होमियोपैथिक और बायोकेमिक दोनों ही सम्प्रदायके चिकित्सकगण नेट्रम म्यूरको एक बहुमूल्य औषध समझते हैं। भोजनके साथ नित्य हमलोग यथेष्ट परिमाणमें लवण खा रहे हैं; किन्तु इससे कोई भेषज-क्रिया ही प्रकट नहीं होती, पर जब उस मूल द्रव्यकी अन्तर्निहित भेषज-शक्ति प्रकट हुई, तब उससे अति विचित्र ही फल प्राप्त होने लगे। विरुद्ध-वादी चिकित्सकगण शक्तिकृत नेट्रम म्यूरको स्थूल लवण समझकर, उसकी कोई क्रिया ही मानव-शरीरमें नहीं हो सकती, ऐसा कह वे अपनी स्थूल-बुद्धिका ही परिचय देते हैं।

क्रिया—मानव-शरीरके अन्दर धातव लवणों (inorganic salt) में कैलसियम फॉसफेट या फॉस्फेट ऑफ लाइमको छोड़कर उपरोक्त लवणका ही भाग अधिक है। मनुष्य-शरीरमें सैकड़े ६० भाग जलीयांश वर्तमान है एवं वह सोडियम क्लोराइडकी सहायताके बिना आवश्यकता-नुसार शरीरके सभी स्थानोंमें प्रवाहित नहीं हो सकता। खाद्य पदार्थ और पीनेवाली वस्तुओंसे जलीयांश शोषणपूर्वक यह शरीरके कोषोंमें पहुँचाकर उनको तर रखता है। यह शरीरसे अनिष्टकर पदार्थोंको

निकाल देता है, क्योंकि जलीय पदार्थके साथ बिना मिले किसी प्रकार की भी मैल शरीरसे नहीं निकल सकती।

यदि किसी भी कारणसे शरीरमें नेट्रम म्यूरका अभाव होता है, अर्थात् सोडियम क्लोराइड तैयार न हो, तो जलीयांश शोषित न हो पाकर वह शरीरके कोषोंमें ही सचित होता रहता है। इसके फलस्वरूप नाना प्रकारके दुर्लक्षण दिखाई देते हैं। सर्दी-गर्मी रोगमें सोडियम क्लोराइडका अभाव होनेपर, शरीरके दूसरे-दूसरे स्थान—विशेषकर ग्रीवा-पृष्ठसे जलीयांश शोषित होकर मस्तिष्कके निचले भागमें संचित होता है एवं जलीयांश बढ़कर मस्तिष्कमें दबाव डालता है। इसी समय विविध दुर्लक्षण प्रकट होते हैं। और सूक्ष्म मात्रामें नेट्रम म्यूर (६x या ३x) प्रयोग करनेके फलस्वरूप अति शीघ्र ही वह साम्यभाव प्राप्त कर लेता है। हमारे देशमें ग्रीष्मकालमें साधारणतः यह बीमारी दिखाई देती है। ग्रामके बहुत लोग अब भी कच्चे आमको जलाकर लवणके शरबतके रूपमें पिया करते हैं। आमके अम्लरसके साथ लवण उत्तम रीतिसे मिल जाता है इसलिये ऐसी अवस्था है। यहाँपर भी उस लवणका ही व्यवहार होता है। किन्तु स्थूल मात्रामें लवणके व्यवहारसे कोई फल नहीं मिलता। डिलिरियम ट्रिमेन्स-रोग भी इसकी कमीके कारण ही होता है और सूक्ष्म मात्रामें इस औषधके प्रयोगसे आश्चर्यजनक फल प्राप्त होता है।

इस पदार्थका अभाव होनेपर शोषण होनेके अभाव हेतु शरीरमें जलीयांश बढ़ जाता है यह तो पहले ही कहा जा चुका है। जलीयांश-की वृद्धि होनेसे ही शरीरका वर्ण पीला, आँख और मुख छलछलाना। आँख और नाकसे पानी गिरना, क्लान्ति, तन्द्रा, शोथ इत्यादि विविध लक्षण प्रकट होते हैं। अस्वस्थ रोगी लवण खानेकी इच्छा प्रकट करने पर नेट्रम म्यूरका ही अभाव निःसन्देह रूपसे ज्ञात होता है। इस हालतमें अभावकी पूर्ति करनेके लिये रोगी यदि अधिक परिमाणमें नमक खाये तो भी उससे उसको कुछ उपकार ही नहीं होता, क्योंकि शरीरके कोष-समूह सूक्ष्म होनेके कारण उस रूपमें स्थूल लवण ग्रहण करनेमें समर्थ

नहीं होते। इस हालतमें सूक्ष्म मात्रामें (उच्च शक्तिमें) लवणके व्यवहारकी आवश्यकता होती है।

आँखकी टीयर या अश्रु-ग्रन्थि एव लारकी ग्रन्थियोंमें इसका अभाव होनेपर आँखसे जल एव मुखसे लार गिरता है। इसका अभाव होनेपर जल-सा तरल उदरामय उत्पन्न होता है एव उसके साथ श्लैष्मिक-झिल्लीकी उत्तेजना रहनेपर उसके साथ उज्ज्वल साफ कफ निकलता है। इस लावणिक पदार्थके अभावके कारण किसी-किसी स्थानमें जलीयाशकी वृद्धि और किसी-किसी स्थानमें जलीयाशकी कमी दीख पडती है। जिस प्रकार पाकस्थलीकी सर्दीके कारण जलीय पदार्थका वमन, नाककी सर्दीके कारण जल-सा कफ निकलना, नाना स्थानके चमडोपर जलमय फफोले, यंत्रकी श्लैष्मिक-झिलीमें जलीयाशका अभाव होनेसे कठिन कोष्ठबद्धता इत्यादि उत्पन्न होते हैं।

सोडियम क्लोराइड शरीरके टिशुओपर क्रिया प्रकट कर यूरिया नामक पदार्थको निकाल देता है। इसलिये चर्म और ग्रन्थि-रोग इत्यादि में इसका व्यवहार होता है। यह केवल श्लैष्मिक-झिल्लियोपर ही नहीं— रस, रक्त, प्लीहा, यकृत इत्यादि विभिन्न यन्त्रोके ऊपर क्रिया प्रकट किया करता है। इसलिये इसके अभावसे उन सब यन्त्रोमें गडबडी होती है। उज्ज्वल साफ जीभके ऊपर जलीय पदार्थ या थूककी भाँती कोई पदार्थ दीख पडनेपर इसकी कमीके विषयमें और कोई सन्देह ही नहीं रह जाता। इसके अभावसे रक्ताल्पता, शीर्णता, दुर्बलता इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

जो लोग किसी भी बीमारीकी हालतमें ज्यादा नमक खाते हैं, उनकी चिकित्सा करते समय अधिक नमकके व्यवहारको मानकर सूक्ष्म मात्रामें नेट्रम म्यूर देना चाहिये। स्थूल लवण शरीरके किसी भी काममें नही आता, इसके उपरान्त वह स्नायुमण्डलीको उत्तेजित कर सूक्ष्म मात्रामें लवण ग्रहण करने देनेमें बाधा डाला करता है। नेट्रम म्यूरके रोगीको भोजनके साथ काफी मात्रामें नमक खाने देनेसे वह उसे पचा नही सकता, क्योंकि वह मलके साथ निकल जाता है।

सोडियम क्लोराइडके अभावसे शरीरस्थ जलीयांश आकर्षित न होनेके कारण उदरी इत्यादि रोग पैदा होते हैं। इस हालतमें नमक और लवण मिश्रित भोजन बिलकुल बन्द कर देना पड़ता है; क्योंकि लवण-विहीन भोजनसे शरीरमें जो नेट्रम म्यूरका अभाव हुआ था, उदरीके जलीय भागसे पहलेके निकले हुए नेट्रम म्यूर पुनः रक्तमें मिश्रित होनेका सुअवसर पा पहलेके अभावको दूर करता है एवं पाखानेसे उदरीका जल पेशाब इत्यादि द्वारा निकलकर रोग अच्छा हो जाता है। अत्यधिक लवण खानेसे जिस प्रकार शरीरमें विविध पीड़ाओंकी उत्पत्ति होती है, बहुत कम परिमाणमें नमक खानेसे भी उसी प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। लेकिन मछली, मांस इत्यादि द्रव्य त्याग कर केवल हविष्यान्न भोजन कर सकनेपर नमकको त्याग देनेसे भी चल सकता है, मेरी यह विशेष धारणा है।

नेट्रम म्यूर गम्भीर रूपसे और दीर्घकाल तक क्रिया करनेवाली एक औषध है। यह समस्त शरीर-विधानको वशमें लाकर स्थायी रूपसे आरोग्य करता है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—अकेला रहना पसन्द करता है। किसीके साथ बात करना नहीं चाहता। मानसिक अवसाद, उदासीन भाव, सहजमें ही रो पड़ने का स्वभाव (weeping tendency), सान्त्वना देनेपर और भी विरक्त होता है।

२—स्मरणशक्तिकी कमी। सभी विषयोंमें भ्रम होता है।

३—उत्तम भोजन इत्यादि करनेपर भी शिशुओंको शीर्णता-रोगका होना, विशेषकर ग्रीवा-स्थलकी शीर्णता।

४—प्रातःकाल नींद टूटनेके बाद प्रबल वेगसे सिर-दर्द होना। सूर्योदयसे सूर्यास्त तक सिर-दर्दकी वृद्धि। मालूम होता है मानो मस्तक फट जायगा। ऐसा मालूम होता है मानो हजारों हथौड़ियाँ मस्तकपर

पीटी जा रही हैं। सिर-दर्दके साथ निद्रालुता। सोनेपर, शान्तभावसे रहनेपर और पसीना निकलनेपर घटना।

५—विद्यालयकी छात्राओंका सिर-दर्द (कैल्क-फॉस)।

६—सर्दी-गर्मीकी यही प्रधान औषध है।

७—विकारमें रोगी बडबडाकर प्रलाप बकता है (केलि फॉस)।

८—जिह्वा साफ, लसीले, बुल्लोमय थूकको भाँति, मानचित्र-सा (mapped)।

६—जिस किसी भी रोगके साथ अनिवार्य रूपमें निद्राकी प्रवृत्ति रहती है। तन्द्रालुता।

१०—अत्यधिक लवण खानेकी उत्कट इच्छा (desire for salt) एवं रोटी खानेकी अनिच्छा।

११—आँखके सब प्रकारके रोगोंमें ही आँखसे काफी मात्रामें घाव पैदा करनेवाला आँसू निकलनेपर यह उत्कृष्ट है। आँखोंमे जलन रहती है। एक ही चीज दो दीख पडती हैं (double vision), एवं किसी वस्तुका केवल आधा हिस्सा ही दिखाई देता है (hemiopia), पढते समय मालूम होता है कि अक्षर सब चल-फिर रहे ह। रोशनी सही नहीं जाती। प्रातःकाल रोगकी वृद्धि होती है।

१२—सामान्य ठण्ड लगनेसे ही सर्दी हो जाती है। नाकसे पानी गिरता है और बीच-बीचमें छींक आती है। स्रावसे नाकके कोनोंमें घाव हो जाता है।

१३—अत्यधिक मात्रामें लारका स्राव अथवा जलीय वमनके साथ पाकस्थलीका कोई भी रोग। आहारके बाद दुर्बलता और आलस्य मालूम होना एवं पाकस्थली और यकृतके स्थानमें एक प्रकारकी अव्यक्त वेदना होती है। बहुत जोरोंकी भूख लगती है, किन्तु भोजन करनेके बाद ही पेट भारी हो जाता है।

१४—विविध रोगोंके साथ आँसूका गिरना, लारका स्राव एवं बहुत अधिक प्यास इस औषधका उत्तम निर्वाचक लक्षण है।

१५—अतिशय कोष्ठवद्धता और सिर-दर्द। मानसिक अवसाद और उदासीनता।

१६—अनजानमें ही मल निकल जाता है; वायु निकालते समय मल या वायु निकलेगा समझ नहीं पाता। स्वभाव वहुत चिड़चिड़ा। तिक्त और लवणाक्त द्रव्योंके खानेकी उत्कट इच्छा। मल जल-सा, काला और उसके साथ वेदना, चरांया हुआ और घावकी भाँति मालूम होता है। मल फेनकी तरह, थूकमें भरा, चमकदार सफेद श्लेष्मा, वार-वार कूथन रहता है। मल जिस स्थानपर लगता है वहीं घाव हो जाता है।

१७—उदरी-रोगकी उत्तम औषध है, विशेषकर मैलेरिया और क्विनीनका अपव्यवहार होनेमे। अतिशय प्यास, किन्तु पेशाव कम। कोष्ठवद्धता।

१८—सूतेकी भाँति कृमिके साथ मुखसे पानी निकलना।

१९—वहुमूत्र-रोगमें शर्कराविहीन, जल-सा अत्यधिक मूत्र त्यागना एवं उसके साथ वहुत अधिक प्यास, मुखसे पानी निकलना, शरीर शीर्ण और मानसिक कष्ट। पेशाव करनेके वाद जलन। पेशावके वेगको रोक नहीं रख सकता।

२०—प्रमेह-रोगकी पुरानी ग्लीट अवस्थामें जल-सा स्राव। पेशाव करनेके वाद जलन। नई हालतमें अत्यन्त जलन रहनेपर।

२१—एकशिरासे साफ जल-सा स्राव होना।

२२—नाना प्रकारके अनियमित ऋतु-स्राव इस औषधमें दिखाई देते हैं। ऋतु-स्राव कभी वन्द, कभी देरसे, कभी अल्प मात्रामें, कभी या तो वहुत दिनों तक स्थायी होता है एवं जो स्राव होता है, वह जल-सा तरल और जलनमय होता है। इसके साथ १म लक्षणमें वर्णित मानसिक लक्षण रहनेपर।

२३—योनिके अन्दर सूखा रहनेके कारण रतिक्रियामें कष्ट।

२४—प्रत्येक दिन प्रातःकाल योनि-स्थानमें भार मालूम होना एवं योनिके अन्दरसे सव-कुछ निकल आवेगा ऐसा मालूम होना।

२५—श्वेत-प्रदरमें जननेन्द्रियसे जलन उत्पन्न करनेवाला तरल स्वच्छ स्रावका निकलना एव वह जिस स्थानमे लगता है वहाँ घाव-सा हो जाता है। स्रावके बाद जलन और चरांना नेट्रमकी विशेषता है।

२६—स्वच्छ जलकी भाँति अथवा फेन-सा श्लेष्मायुक्त वमन। कभी दुर्गन्धमय अथवा लवणाक्त जल मुखमे निकलता है।

२७—सब प्रकारकी खाँसीमें जब स्वच्छ तरल और फेन-सा कफ निकलता है। गला सुरसुराकर खाँसी (फेरम फॉस)। खाँसते समय मुख, नाक, विशेषकर आँखोंसे अत्यधिक आँसूका गिरना एव पेशाब निकल जाता है (फेरम फॉस)। समुद्रके किनारे या किसी लवणाक्त स्थानमें रहनेके कारण खाँसीकी वृद्धि। अतिशय प्यास। जीभ साफ और थूकसे आवृत्त रहती है।

२८—क्रोध ; रोटी, अम्ल-द्रव्यका भोजन करना, क्विनीनका अप-व्यवहार, कास्टिकसे किसी स्थानको जला देना, शोक, दुःख, भय, रोग भोगने इत्यादि कारणोंसे रोगकी उत्पत्ति।

२९—मुखमण्डल तेल लगाये गयेकी तरह चमकीला दिखाई देता है। रोगीका चेहरा शीर्ण, विवर्ण, रक्तहीन पीला एवं अत्यन्त दुर्बल।

३०—हृद्‌पिण्डके स्पन्दनसे सारे शरीर ही में उसका झटका मालूम होता है। हिलने-डोलनेपर, विशेषकर बायीं करवट सोनेसे उसकी वृद्धि।

३१—सब प्रकारके चर्म-रोगमें जब जल-सा तरल स्वच्छ स्राव निकलता है, उस समय यह उत्कृष्ट है।

३२—बिच्छू, भँवरा और बर्रे इत्यादि काटनेपर बाहरी और भीतरी प्रयोग करना चाहिए।

३३—पनसाहा चेचककी प्रधान औषध है। आँख और नाकसे पानी गिरता है एव तन्द्रा और बड़बड़ाता हुआ प्रलाप रहता है। जीभ सूखी और प्यास। इस प्रकारके लक्षणयुक्त कोदवा (measles)

३४—रक्ताल्पता या एनिमिया रोगकी उत्कृष्ट औषध है (कैल्क फॉस)। शरीरसे रक्त, रस, स्त्रियोंकी ऋतुसम्बन्धीय एव पुरुषोंकी रेत-

पात-जनित पीडाओंके कारण रक्तहीनता होनेपर। इसके साथ पूर्व-वर्णित मानसिक लक्षणके साथ शरीरकी शीर्णता, सिर-दर्द, कोष्ठवद्धता, अनियमित ऋतु-स्राव, हृद्स्पन्दन, कमरका दर्द, जरायुकी स्थानच्युति इत्यादि लक्षण रहते है।

३५—सविराम ज्वरमें शीतावस्था ही प्रवल होती है। सव प्रकारके ज्वरोंका ही दिनमें १०-११ वजे आना निर्दिष्ट है। जिस किसी प्रकार का ज्वर क्यों न हो, अगर उसके साथ अतिशय निद्रा और तन्द्रालुता, सिर-दर्दमे अज्ञानावस्था, अत्यन्त प्यास, जलीय वमन और आँखोंसे पानी गिरता रहे, नेट्रम म्यूर निर्दिष्ट है। क्विनीनके अपव्यवहार और नाना प्रकारकी कुचिकित्सा-जनित ज्वरमे। ज्वरमें ओठपर मोतीझराके दाने निकलते हैं। जीभके लिये ८वाँ लक्षण देखना चाहिये। पसीना होकर धीरे-धीरे सिर-दर्दका घटना।

३६—दिनको १०-११ वजेके समय, समुद्रके किनारे, लवणाक्त स्थानमें रहनेपर, धूप लगनेसे, उत्तापसे, हिलने-डोलने और क्विनीनके अपव्यवहारके कारण विविध रोग।

३७—खुली हवामें, ठण्डे जलसे धोनेपर और वायीं करवट होकर सोनेसे रोगके लक्षणोंका घटना।

विशेषत्व (peculiarity)—अनेक प्रकारके रोगोंमें, विशेषतः सिर-दर्द और ज्वरमें अज्ञान अचैतन्य होनेपर यह विशेष लाभदायक है। वहुत-से रोगोंमें ही अनिवार्यरूपसे निद्राकी स्पृहा दिखाई देती है। मुखसे जल-सा लारका स्राव एव जीभ साफ, सरस या सूखी एव थूकसे भरी होना इसका साधारण लक्षण है। किसी स्थानकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी शुष्कता (कोष्ठवद्धता इत्यादि), या तो किसी स्थानसे जल-सा स्राव निकलना (आँख, मुख, नाक इत्यादि स्थानोंसे) इसका सफल लक्षण है। मानसिक अवसाद, दुःख, उदासीनता एवं सहज हीमें रो पडनेवाली स्त्रियोंके ऋतुकी विविध अनियमित अवस्थाएँ एव अन्य नानाविध पीडाएँ आराम होती हैं। उत्कृष्ट आहारादि करनेपर भी वालकोंका शीर्णता-रोग,

विशेषकर ग्रीवा ही अधिकतर शीर्ण होना एव उसके साथ विविध रोग। वायाँ करवट सोनेपर हृद्स्पन्दन, नाडी अनियमित एव वक्षस्थलके स्पन्दनके साथ समस्त शरीर ही कम्पित होना इसका एक उत्कृष्ट निर्वाचक लक्षण है। इसके रोग-लक्षणोकी प्रात.काल, १०-११ वजनेके समय, उत्तापसे और लवणाक्त स्थानमें वृद्धि होती है। ओठपर मोतीझरेके दानोंकी तरहके दानोको देखकर इस औषधका निर्वाचन करना अनेक रोगोंमें ही सहज हो पडता है। लवण खानेकी उत्कट इच्छा सुन पडनेपर ही इस दवाका नाम याद हो आता है।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—रोगी अकेलेमें रहना पसन्द करता हे (कैल्क फॉस), वात तक भी करना नहीं चाहता, मानो किसीसे उसका कोई सम्वन्ध ही नहीं—वह अपने ही स्वतन्त्र है। अकेलेमें रहनेपर भी उसको रुलाई आती है, क्यो ऐसा होता हे वह खुद ही नही कह सकता। और भी आश्चर्यका विषय तो यह हे कि रोगी जव मानसिक विविध दुश्चिन्ताओ और शोक-तापके कारण रोता है, उस समय उसको सान्त्वना देनेपर वह और विरक्त और क्रुद्ध होता है। सान्त्वनासे उसका रोना भी पहलेसे और वट जाता है। जीवनको वह अत्यन्त भार स्वरूप और वडा ही निरानन्दमय समझता है। इस रोनेके समय उसको हृद्स्पन्दन भी होता है (इसके विषयमें आलोचनाकी जायगी)।

मानसिक अवसादके साथ वहुत वार उत्तेजनाका लक्षण भी दिखाई देता है। सामान्य कारणसे ही रोगी क्रुद्ध हो जाता है। दिनमें हो तो किसी कारणसे क्रुद्ध हुआ था, इसलिये रातमें निद्राके समय दिलका धडकना और दिलमें उस विपयको यादकर वहुत दुःखी होता है। पहले कोई यदि किसी प्रकारकी गलती किया करता है, तो उसको देखने तककी इच्छा नही करता। वहुत अधिक क्रोधित होनेके वाद हो तो फिर हॅसता रहता है। इतना अधिक हँसता है कि हॅसते समय उसकी आँखोसे आँसू निकल पडता है, ऐसा मालूम होता है, मानो वह रो रहा हो। अच्छी वातें कहनेपर भी क्रुद्ध हो जाता है।

हिस्टिरिया-रोगमें पर्यायक्रमसे हॅसना ओर रोना। इस समय हो तो रोगी वहुत दुःखित है, किन्तु दूसरे ही मुहूर्तमें वहुत आनन्दित, मानो उसके आनन्दकी सीमा ही न हो। अधिक आनन्दित होनेके वाद निरुत्साहिताका लक्षण दिखाई देता है।

स्मरणशक्ति अत्यन्त घट जाती है। वातचीत करते और लिखते समय भी भ्रम होता है, मतिभ्रम भी होता है—वह एक विषयके सम्वन्धमें वोलते-वोलते दूसरे विषयका उल्लेख करने लग जाता है। सभी विषयोंमें ही मानो उसको भ्रम होता है। किस समय वह क्या वोलेगा यह भी निर्णय नही कर पाता। सामान्य मानसिक परिश्रम करनेके वाद भी दुर्वलताका अनुभव करता है। मस्तिष्कके अन्दर मानो कुछ भी नही है—विलकुल खाली मालूम पडता है। मन मानो निराशाके समुद्रमें हिलोरें लगा रहा है। आशा-भरोसाहीन पुरुष।

प्रेमसे तुष्ट न होनेके कारण वहुत प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

ऋतुकालमें मन वहुत दुःखित होता है और प्रातःकाल ही इस भावनाकी वृद्धि दीख पडती है।

फेनमय या सूखी जीभके साथ रोगीका मृदु या वडवडाते हुए प्रलाप बकना।

वुरा समझते हुए भी रोगिणीका प्रेम किसी विवाहित पुरुषपर रहना या किसी नौकरपर आकृष्ट होती है। स्वयं चेष्टा करके भी अपनेको वशमें नहीं ला सकती। नेट्रम-म्यूरसे इस प्रकारकी मनोवृत्तिका अन्त होता है और वादमें रोगिणी इस प्रकारकी घटना कैसे घटी थी यह सोचकर आश्चर्यचकित होती है (डॉ० केण्ट)।

सिर-दर्द (headache)—प्रातःकाल नीद टूटनेके वाद वडे वेगसे सिर-दर्द आ उपस्थित होता है। ललाट वहुत टपटपाता है—**मालूम पड़ता है मानो कोई हथौड़ीसे पीट रहा है**। यह वेदना कभी-कभी इतनी अधिक हो जाती है, मानो रोगी उसकी तकलीफसे पागल हो जायगा। सिर-दर्दमें मालूम होता है मानो सिर फटकर दो हिस्से हो जायेंगे। आँखके

अत्यधिक व्यवहारसे सिर-दर्द । सिर-दर्दके साथ अत्यधिक अवसन्नता । मस्तिष्कमें गड़बडी मालूम होना । विद्यालयकी छात्राओंका सिर-दर्द नेट्रम म्यूरसे आराम न होनेपर कैल्क फॉस व्यवहार्य है । **यौवन-कालमें प्रविष्ट होनेवाली वालिकाओंका सिर-दर्द । सिर-दर्दके साथ निद्रालुता ।** मालूम होता है मानो मस्तकके अन्दर कुछ उवल रहा है । आँखको घुमानेपर आँखकी पुतलीमें दर्द अनुभव करता है । सिर-दर्दके साथ किसी स्थानकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी स्राव-शीलता, और किसी स्थानकी या तो शुष्कता भी दीख पडती है । सिर-दर्दके साथ आँखसे पानी गिरना एव जलवत् वमनसे श्लैष्मिक-झिल्लीकी स्रावशीलता, और कोष्ठवद्धता इत्यादिसे शुष्कता मालूम पडती है । सिर-दर्दके साथ मालूम होता है मानो जीभ सूख गयी है—किन्तु जीभ दिखानेके लिये वाहर निकालनेपर वह सूखी तो नहीं ही मालूम पडती, तदुपरान्त थूकसे भरी तर (moist) दिखाई देती है । इसके साथ प्यास रहना और नाडीकी गति सविराम दिखाई देती है । सिर-दर्दके आरम्भमें आँखोंसे कुछ दिखाई नहीं देता । आँख वन्द करनेके लिये वाध्य होता है । विना ज्वरके ही सुवह १० वजे सिर-दर्द हो सकता है । ऊपर और नीचेके ओठोंका फटा रहना इसका अति आवश्यकीय लक्षण है । इस लक्षणका ही अवलम्बन करनेसे वहुत रोगी अच्छे हो गये हैं ।

सोनेसे, शान्तभावसे रहनेपर, पसीनेके वाद और ठण्डके प्रयोगसे सिर-दर्द घटता है एव उत्तापसे, सचालनसे, मानसिक परिश्रमसे, प्रातःकाल और नींद टूटनेके वाद वृद्धि होती है ।

सूर्याघात या सर्दी-गर्मी (sunstroke)—यही सर्वप्रधान औषध है । इससे शरीरका जलीयाश सर्वत्र समभावसे परिचालित होता है । अत्यन्त अवसन्नता एव विकारादि मस्तिष्कके लक्षण-समूहके प्रकट होनेकी सम्भावना रहनेपर केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है ।

मदात्यय (delirium tremens)—यही इस रोगकी सर्वप्रधान औषध है । इस औषधके व्यवहारसे शरीरस्थ जल सर्वत्र समभावसे

सचालित होकर रोग आराम हो जाता है। जब रोगी बड़बड़ाते हुए प्रलाप बकता है, विषयसे विषयान्तरका प्रलाप, हाथ और पैरोंकी अस्थिरता एवं जीभमें थूक-सा लार रहता है, उस समय यह बिना किसी द्विविधाके प्रयोग करना चाहिये। स्नायविक दुर्बलता रहनेपर इसके साथ २-१ मात्रा केलि फॉसका व्यवहार करना पडता है।

उन्माद (insanity)—मतिभ्रम, बात करते समय बहुत गलती करता है, क्या कहेगा यही निर्णय नहीं कर पाता। रोगी अकेला ही रहना पसन्द करता है। पर्यायक्रमसे आनन्दित और दुःखी होना, अवसन्न, कोष्ठबद्धता और हाइपोकॉन्ड्रिया स्वभावका व्यक्ति। प्रायः प्रधान औषध केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेकी आवश्यकता होती है।

संन्यास (apoplexy)—अधिक समय तक धूपमें टहलना अथवा मद्यपानके कारण मस्तिष्कमें अत्यधिक रक्तस्राव हेतु रोगमें यह उपकारी है।

मस्तिष्क-झिल्लीका प्रदाह (tubercular meningitis)—तन्द्रा, बडबडाकर प्रलाप बकना, आँख और मुखसे पानी गिरना, कोष्ठबद्धता इत्यादि लक्षणोंमें व्यवहार्य है।

मस्तिष्क-शून्यता (brain fag)—निद्राहीनताके साथ भविष्यमें अमगल होनेकी बात कहता है। निराशामय, बात करते-करते क्लान्ति एव वाक्योच्चारणमें असमर्थता। अवसन्नता।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—अत्यधिक आँसू गिरनेके कारण आँखकी कोई भी बीमारी। तरल चक्षु-स्राव जिस स्थानमें लगता है वही घाव-सा हो जाता है। आँख और मुँहके कोने फटे। आँखके स्नायुशूल रोगमें आँखोंसे पानी गिरता है (मेग फॉस)। अक्षिपुटकी स्नायविक वेदना या सिलियरी न्यूरैलजिया यदि सूर्योदयसे आरम्भ हो और सूर्यास्तके समय छूटे। स्क्राफ्यूलस धातुके बालकोंके लिये, विशेषकर उनके आँखके रोगमें यदि अधिक मात्रामें कास्टिक लोशन व्यवहृत हुआ रहे, तब तो यह और भी अधिक उपयोगी है। इस प्रकारके

चक्षु-रोगमें आँखमें अत्यन्त जलन और दर्द रहता है। रोगीको मालूम होता है मानो उसकी आँखोंमें बालू गिर गई हो। पलकें बन्द हो जाती हैं, यहाँ तक कि उनको खोलनेमें रोगीको विशेष कष्ट होता है। पढनेके समय अक्षर मानो हिलते-डोलते हैं। किसी द्रव्यका केवल अर्द्धांश दिखाई देता है (hemiopia), और कभी-कभी एक ही चीजको दो देखता है (diplopia or double vision)। कार्नियाके फफोले, प्रातःकाल आँखें जुडी रहती हैं। रोग-वृद्धिका भी समय वही प्रातःकाल है। आँख हिलानेसे ही दर्द होना। पलकोंके प्रदाहके कारण पलकोंका लाल होना, जलन होती है, पलकें खुजलाती हैं और आँखसे पानी गिरता है। रोशनी नहीं सह सकता। आँखकी अस्पष्ट दृष्टि, सोचता है मानो किसी पर्देके अन्दरसे देख रहा हूँ। आँखोंके सामने मानो कोई काली चीज उड रही है, ऐसा दीख पडता है, जुगनूकी तरह—अथवा आग-सा उज्ज्वल पदार्थ दीख पडता है।

कोरिया (chorea)—रोग पुराना होनेपर। किसी चर्मरोगके वैठ जानेके फलस्वरूप रोग। हाथ-पैरोंका काँपना। इस औषधका अन्य कोई लक्षण रहनेपर।

कर्णपीड़ा-समूह (diseases of the ear)—कानमें स्फीतिके हेतु वधिरता (केलि म्यूर, केलि सल्फ)। कानसे जल-सा स्राव निकलना। स्राव जलनमय और कान खुजलाता है। कानमे तीव्र वेदना, टपकमय वेदना, मानो नाडी स्पन्दित हो रही है। कानके अन्दर विभिन्न प्रकारकी आवाजोंका होना। क्विनीन सेवन-जनित वधिरता एवं नाना प्रकारके शब्द।

सर्दी (coryza)—**सर्दीमें नाक और मुखसे पानी गिरता है एवं उसके साथ वीच-वीचमें छींक आती है।** कफ थूककी भाँति अथवा लवणाक्त पतला जलकी तरह। पर्यायक्रमसे सूखी और तरल सर्दी। मामूली-सी ठण्ड लगते ही सर्दी हो जाती है। सर्दीमें नाकके कोन और किनारे घाव-से हो जाते हैं। इसकी सर्दीकी एक और विशेषता यह है

कि रोगी नाकसे कोई गन्ध नहीं पाता। ठण्डासे और प्रातःकालके समय वृद्धि। जल-सा तरल रक्त निकलता है (फेरम फॉस)।

इन्फ्लुएञ्जा (influenza)—**बार-बार छींक आनेके साथ आँख और मुखसे जल गिरना रहनेपर यह उत्कृष्ट दवा है।** प्यास, घ्राण-शक्तिका लोप हो जाना और गलेकी शुष्कता। प्रातःकालके समय वृद्धि।

टॉन्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—नये और पुराने टॉन्सिल-प्रदाहमे जब मुखसे लारका स्राव होता है। टॉन्सिल बढी हुई या शिथिल।

गलेका घाव (sore throat)—गलेके भीतर घाव और प्रदाहके साथ गले या मुखकी शुष्कता अथवा अत्यधिक परिमाणमें लारका गिरना। पुराने रोगमें गलेके अन्दर ढेले-सा मालूम पडना। कोई भी चीज निगलते समय मालूम होता है, मानो गला बन्द हो जायगा। बहुत प्यास मालूम होती है, जीभ साफ एव बुलबुलामय थूककी भाँति लेपसे आवृत। पतला कफ निकलता है, उसका स्वाद लवणाक्त होता है।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—डिफ्थिरिया रोगके साथ जब मुख फूला-फूला-सा और रक्तहीन पीला रहता है एवं उसके साथ तन्द्रा, मुखसे लालास्राव, जलीय वमन, जल-सा दस्त इत्यादि लक्षण रहते हैं, उस समय यह अति उत्कृष्ट औषधि है। श्वास-प्रश्वासमें कष्ट होता है। गलेके मध्यकी पेशियोंके पक्षाघातके कारण कोई भी खाद्य-पदार्थ गलनलीमें पहुँचनेपर वह विपथमें जाता है।

गलगण्ड (goitre)—इस रोगके साथ किसी प्रकारका जलीय लक्षण विद्यमान रहनेपर व्यवहार्य है।

मुखके अन्दरकी पीड़ाएं (diseases of the mouth)—**सब प्रकारके मुखकी पीड़ाओंमे ही मुखसे लार निकलता है।** पारा सेवनके कारण लारका स्राव होनेपर भी उत्कृष्ट है। बालकोंके मुखके अन्दरके सफेद रंगके घावोंसे (aphthæ) लार निकलना (केलि म्यूरके साथ), ओठमें, मुखके कोनोंमें और जीभपर फफोले पडते हैं। ओठ शुष्क, फटा-फटा-सा एव ओठमे मोतीझरेके दानोंकी तरह, विशेषकर उसके साथ ज्वर

रहनेपर। मुख और गलनलीकी स्फीतिके साथ जल-सा स्वच्छ थूक निकलना। हमेशा मुखसे पानी निकला करता है—स्वाद लवणाक्त।

मुखमण्डल—इस औषधके मुखमण्डलका वर्ण विशेष उल्लेखनीय है। क्योंकि बहुत बार मुखमण्डलकी दशा देखकर ही यह औषध याद आ जाती है। मुखका वर्ण—पीला, नीला, मिट्टी-सा और फीका, किन्तु चमकदार—तेल या चर्बी लगी हुई-सी मालूम होती है, मानो मुखमण्डलमें रक्त नहीं है। मुखमण्डलके स्नायुशूलके साथ आँख या मुखसे पानी निकलना। मूँछके केश झड जाते हैं।

दन्तशूल (toothache)—दन्तशूलके साथ आँखसे आँसू निकलता है। शीतल वायुसे या किसी प्रकारकी ठण्ड लगनेसे ही दन्तशूलकी वृद्धि होती है। छूरा भोंकने-सी तीव्र वेदनासे बहुत कष्ट मालूम होता है। रातमें वृद्धि होती है।

दन्तक्षय (caries of the teeth)—पूर्वोक्त दन्तशूलके लक्षणके साथ दन्तक्षत। दाँतके घाववाले स्थानमें नाडीके स्पन्दन-सा मालूम होता है। क्षतस्थानसे सहज ही मे रक्त गिरता है। दाँतकी जड शिथिल। शिथिलतासे वृद्धि।

मेरुदण्डकी पीड़ाएँ (diseases of the spine)—मेरुदण्डकी वेदना और दर्द उल्लेखनीय हैं। हिलने-डोलनेसे, हँसने और खाँसनेपर वेदनाकी वृद्धि। बहुतसे रोगोंके साथ, विशेषकर स्त्रियोंके ऋतु-सम्बन्धी विषयोंमें ऐसी हालत दिखाई देती है। पीठके नीचे कोई कडी चीज रखकर चित सोनेसे आराम मालूम होता है।

अजीर्णता (indigestion, dyspepsia)—**अत्यधिक लारका स्राव अथवा जल-सा वमनके साथ पाकस्थलीकी कोई भी बीमारी।** अजीर्ण रोगके साथ पेटमें वेदना, जल सा वमन और मुखसे पानी निकलना रहनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है। जो रोगी कभी रोटी खाना बहुत पसन्द करता था, पर अब उसे खाना नहीं चाहता या रोटी खानेपर भी वह हजम नहीं कर सकता, ऐसी हालतमें नेट्रम म्यूर विशेष उपयोगी है।

फल खाना भी रोगी नहीं सह सकता। तिक्त द्रव्य, लवण, लवणाक्त द्रव्य और झींगामछली खानेकी उत्कृष्ट इच्छा होती है। **लवण खानेकी उत्कट इच्छामें** नेट्रमकी अति उच्च शक्तिका प्रयोग करना चाहिए। बहुत अधिक प्यास इसका एक विशेष लक्षण है। रोगी भोजन करनेके बाद दुर्बल और आलस्य बोध करता है एव पाकस्थली और यकृतके स्थानोंमें एक प्रकारकी अव्यक्त वेदना अनुभव करता है। वेदनाके कारण पेटके कपड़ेको ढीलाकर देनेके लिए बाध्य होता है। रोगी अत्यन्त क्षुधार्त होता है और इसलिए शीघ्रतासे भोजन करता है ; लेकिन थोडे ही समयके बाद पेट भारी, वेदना और नाना प्रकारके कष्ट सहता है ; किन्तु परिपाकका होना आरम्भ होते ही सभी कष्ट घटते रहते हैं एवं अन्तमें रोगी अपनेको स्वस्थ अनुभव करता है, इसके साथ रोगीको कोष्ठबद्धता रहती है। पेटमें वायु पैदा होती है।

इसके सिर-दर्द, मुखका स्वाद खराब इत्यादि लक्षणोंको भी इसके साथ ही याद रखना चाहिये। भोजन करनेके बाद आलस्यके कारण रोगी निद्रित हो पडता है।

कोष्ठबद्धता (constipation)—सरलान्त्रकी दुर्बलता और अन्त्रकी श्लैष्मिक-झिल्लीकी शुष्कता हेतु कोष्ठकाठिन्यता। इसके साथ जल-सा वमन, मुखसे पानी निकलना और आँसू गिरना रहनेपर इस औषधका प्रयोग जोर-जबर्दस्ती भी किया जा सकता है। इसपर भी यदि मस्तकमें प्रबल सिर-दर्द रहे, तब तो कोई बात ही नहीं—नेट्रम म्यूर ही एकमात्र-दवा है। बहुत दिनोंसे कोष्ठबद्धता या कई एक दिनों तक पाखाना न होना, जब होता है तब भी आसानी से नहीं निकलता है। बडे-बडे लेंड निकलते हैं और निकलते समय मलद्वार फटकर रक्त निकलता है और मलद्वारमें वेदना व जलन होती है। जो कुछ दस्त होता है उससे तृप्ति नहीं होती। बहुत बार तो मल टुकडे-टुकडे होकर निकलता है। रेक्टमकी गतिहीनताके कारण कोष्ठबद्धता। इसके साथ मन भी बहुत विषादपूर्ण दिखाई देता है ; किन्तु दस्त हो जानेके बाद विषादका घट जाना।

कैल्क फ्लोरकी कोष्ठवद्धताके साथ इस औषधका वहुतांशमें सादृश्य दिखाई देता है। दोनोंके प्रभेदका निर्णय करनेके लिये कैल्क फ्लोर अध्यायमें कोष्ठवद्धता देखें।

उदरामय (diarrhœa)—मल जल-सा, काला, उसके साथ वेदना, चरांना और मलद्वारमें घाव-सा मालूम होता है ; मल फेन-फेन या थूक-सहित **अण्डेके श्वेतांशकी तरह उज्ज्वल श्लेष्मा,** कुछ भी मल नहीं रहता एव वार-वार कूथन रहता है। अधिक परिमाणमें क्विनीन सेवन करनेके कारण पूर्वोक्त प्रकारका उदरामय। मलमें रक्त मिला रहता है, मल परिमाणमें अधिक और जोरसे निकलता है (profuse and gushing), अनजानमें निकल जाता है (involuntary), जिस स्थानपर लग जाता है वहाँ घाव-सा हो जाता है (corrosive), पर्यायक्रमसे कोष्ठवद्धता और उदरामय। वालकोंके पुराने उदरामयके साथ **गलेकी शीर्णता,** पेट मोटा, रक्तहीन—किन्तु **चेहरेपर चमकीलापन-सा तेल पुता हुआ-सा एव लवण और तिक्त द्रव्य खानेकी उत्कट इच्छा रहनेपर विशेष उपयोगी।** वेदनाहीन उदरामय।

मल त्यागनेके पहले (before stool)—पेट गडगडाना एव वायु निकालनेकी इच्छा होती है, किन्तु वायु या मल निकलेगा रोगी यह नहीं समझ पाता।

मल त्यागनेके वाद (after stool)—अत्यधिक दुर्वलता अनुभव करता है। हमेशा ही मन दुःखी रहता है। जीभ थूकसे भरी और मुख सूखा रहता है।

पाखानेके सहवर्ती लक्षण (accompaniments) **हमेशा ही मन दुःखी रहना। किसी समय भी मन खुशी नहीं होता, सान्त्वना देनेसे ही क्रुद्ध हो उठता है।** शिशु और पूर्ण व्यस्क दोनो ही में मानसिक उत्तेजना दिखाई देती है। **लवण, लवणाक्त और तिक्त द्रव्यको छोड़कर और कुछ भी खानेकी इच्छा नहीं होती, जिह्वा मानो स्वादहीन। प्यास,** सिर-दर्द, **मुखके चारो तरफ फफोले** इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। जीभ

कामला रोग (jaundice)—केलि म्यूर ही इस पीड़ाकी प्रधान दवा है। क्विनीन सेवनके बाद रोग होनेपर यह औषध विशेष उपकारी है। इसके साथ अन्यान्य लक्षणोंका भी सादृश्य रहना आवश्यक है।

यकृतपीड़ा-समूह (affections of the liver)—मेलेरिया ज्वरके बाद अथवा अतिरिक्त क्विनीन सेवन करनेके बाद यकृतादिकी वृद्धि। प्लीहा और यकृत्के स्थानोंमें वेदना और उनकी वृद्धि। इसके साथ कोष्ठबद्धता और पेटको खींच रखना और नोंचनेकी-सी वेदना।

बहुमूत्र (diabetes)—शर्कराविहीन जल-सा प्रचुर मूत्रके साथ अतिशय प्यास, मुखमें पानी गिरना, शरीर शीर्ण और मानसिक दुःख। पेशाब करनेके बाद पेशाबके रास्तेसे श्लेष्मा निकलता है। **पेशाब करनेके बाद मूत्रमार्गमें जलन**, वेदना और खुजलाहट। पेशाबके वेगको रोक नहीं रख सकता, हँसने, खाँसने, छींकनेपर और चलनेके समय अनजानमें ही पेशाब निकल आता है। पेशाब अत्यन्त शीघ्र-शीघ्र होता है, यहाँतक कि एक घण्टेके अन्दर कई बार हो जाता है। दिन रात इस प्रकार बार-बार पेशाब होता है, किन्तु रातमें ही सबसे अधिक होता है। पेशाब बहुत साफ, किन्तु ईंटके चूरकी भाँति तलछट जमती है। कभी-कभी पेशाबका रंग काला-सा होता है। कोई नजदीक रहनेपर पेशाब नहीं होना चाहता, यहाँतक कि बहुत देरतक बैठे रहनेके बाद पेशाब होता है। इसके साथ नेट्रम म्यूरका मानसिक लक्षण विपन्नता उल्लेखनीय है। डॉ० बाकर, कैरो प्रभृति चिकित्सक इसके साथ २-३ फॉसफेटोंको एक साथ प्रयोग करनेका उपदेश देते हैं।

प्रमेह (gonorrhœa)—पुराने प्रमेह रोगोंमें ही इस औषधसे विशेष उपकार होता है। नयी बीमारीमें इसकी विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती, लेकिन बहुत अधिक जलन रहनेपर व्यवहृत होता है। यह जलन किन्तु पेशाब करनेके पहले और करते समय नहीं होती, करनेके बादमें होती है। प्राचीन ग्लीटकी अवस्थामें स्राव जल-सा साफ, कभी-

कभी या तो पीला-सा। केवल पेशावके पश्चात् ही जलन होती है। अधिक जलन रहनेपर नयी अवस्थामें भी व्यवहृत होता है। कोई नजदीकमे रहनेपर सरलतासे पेशाव नहीं होना चाहता। कास्टिक लोशनका अपव्यवहार होनेके वाद उपयोगी है।

धातुदौर्वल्य (spermatorrhœa)—किसी स्त्रीके साथ वात करनेपर, देखनेसे अथवा उनके विषय नाटक-नावेल इत्यादिमें पढनेसे पुरुषाग उत्तेजित न होकर भी तरल धातु निकल जाता है। इसको प्रास्टेट-ग्रन्थिसे रस निकलना कहते हैं। मल त्यागनेके समय अथवा अन्य समयमें कूथनसे पतला स्राव निकलता है। धातुमें किसी प्रकारकी गन्ध नहीं रहती एव वह देखनेमें जलकी तरह होता है। पुरुषाग वार-वार उत्तेजित होकर भी तरल धातु निकलता है। सहवासकी इच्छा नहीं रहती। सहवासके वाद भी स्वप्नदोष होता है। श्वेत-प्रदर और ऋतु-स्रावयुक्ता स्त्रीके साथ सहवास करनेके वाद पुरुषागमें जलन। स्त्री-सहवासके समय लिंग सवल न होनेके कारण स्त्री-सम्भोग नहीं होता एव वीर्य-स्खलन भी नहीं होता, वीर्य इकट्ठा रहकर उत्तेजना पैदा करता है एव इसलिये रातमें स्वप्नदोष होता है। इस प्रकारसे वार-वार वीर्यपात होनेके कारण कमरमें वेदना होती है और रातमें पसीना होता है एव रोगीके दोनो पैर वहुत ही दुर्वल हो जाते है।

उपदंश (syphilis)—पुराने और नये उपदशमें तरल स्राव रहनेपर व्यवहृत होता है। इस औषधके अन्यान्य लक्षणोका रहना आवश्यक है।

अण्डकोष-प्रदाह (orchitis)—अण्डकोषमें जलसचय। अण्ड-कोष खुजलाता है, खुजलानेपर तरल स्राव निकलता है और जलन होती है। रातमें खुजलीकी वृद्धि होती है।

एकशिरा (अण्डकोष वृद्धि—hydrocele)—एकशिरासे जो स्राव निकलता है वह जल-सा साफ होता है। पुरानी वीमारीमें २००x शक्तिका प्रयोग करना चाहिये।

स्वल्परजः, कष्टरजः इत्यादि (amenorrhœa)—ऋतुस्राव पतला, जल-सा, ऋतु विलम्बसे होता है, अतिशीघ्र होता है, अल्प परिमाणमें होता है, अधिक मात्रामें होता है, ऋतु बन्द रहता है, बहुत विलम्बसे होता है, बहुत दिनोंतक स्थायी होता है, अनियमित ऋतु होता है, बहुत विलम्बसे थोडे परिमाणमें होता है अथवा ऋतुस्रावके बदले तरल साफ श्लेष्माका स्राव होता है। अतः देखनेमें आता है कि नेट्रम म्यूरमें विविध प्रकृतिके ऋतुस्राव हैं। किन्तु इसके साथ किस प्रकारका लक्षण रहनेपर ठीक-ठीक इस औषधका प्रयोग किया जा सके, यह मालूम कर लेना चाहिये।

ऋतुस्रावके पहले—रोगिणी अतिशय विपन्ना या उत्साहहीना, उत्तेजिता, दुःखिता और थोडेसे कारण हीसे क्रुद्धा होती है; किन्तु सान्त्वना देनेपर भी शान्त नहीं होती। अगर कोई किसी कारणसे उसका अप्रिय हो जाता है, तो बगैर उसका कुछ नुकसान किये नही छोडती, वह इतनी क्रुद्ध स्वभावकी होती है।

सामान्य कारणसे ही शीत लगना और पसीना होना, विशेषकर बगल और पीठमें। ये सब स्त्रियाँ प्रायः ही रक्तहीना और शीर्णा होती हैं एव उनके मुख सूखे दीख पडते हे। छातीका धडकना, उत्साह और उद्यमहीनता दिखाई देती है।

इसके साथ प्रबल सिर-दर्द रहता है। सिर-दर्दमें मालूम होता है मानो मस्तक विदीर्ण होकर दो हिस्सोंमें अलग हो जायगा। हिलने-डोलनेपर सिर-दर्द बहुत बढ जाता है—इसलिये रोगिणी चुपचाप रहना पसन्द करती है। नेट्रमकी श्लैष्मिक-झिल्लीमें (mucous membrane) अत्यन्त जलन और शुष्कता दीख पडती है। पलक, जिह्वा, शरीर और मलद्वार इत्यादि स्थानोंमें जलन और शुष्कता दिखाई देती है, अतिशय जलन और शुष्कता हेतु उन सब स्थानोंमें घाव होते हे, विशेषकर जिह्वा और ओंठमें। अतिशय कोष्ठबद्धता रहती है।

ऋतुस्रावके समय—ऋतुस्रावके पहलेका मानसिक लक्षण और सिर-दर्द देखना चाहिये। ऋतुस्राव आरम्भ होनेपर भी जो मानसिक

प्रफुल्लता दीख पडती है ऐसी बात नहीं, बल्कि और भी विपन्ना और दुःखिता हो जाती है। पेटमें भी वेदना होती है। ऋतुस्रावके साथ जननेन्द्रियमें जलन होती है और खुजलाता है एव उन स्थानके लोम उड जाते हैं।

ऋतुस्रावके बाद—सिर-दर्द और मानसिक लक्षण पहलेकी ही भाँति रहते हैं। पेशावके बाद और स्रावके पश्चात् योनिके अन्दर अत्यन्त जलन, खुजलाहट और टपक एव कमरमें वेदना होती है। प्रात.-काल ही लक्षणोंकी वृद्धि दिखाई देती है।

इसी समय रोगिणीके जरायुकी स्थानच्युति भी अधिक होती है, विशेषकर प्रात.कालके समय। इसके विषयमें बादमें लिखा गया है।

नेट्रम म्यूरमें योनिके अन्दरकी शुष्कता हेतु रतिक्रियामें कष्ट एव उसके साथ ओवरीमें डक मारने-सी वेदना रहती है। योनिके गात्रमें काँटा गडनेकी-सी वेदना। शक्ति—१२x।

प्रसवान्तिक रोग (diseases after delivery)—प्रसवके बाद माताके स्वास्थ्यकी उन्नति नहीं होती। उसका शरीर शीर्ण और मानसिक उत्तेजना दीख पडती है। लोकिया-स्राव बहुत दिनोंसे होते रहना एव अत्यधिक परिमाणमें होता है। स्तनमें दूध नहीं होता और होनेपर भी उससे सन्तानके शरीरकी पुष्टि नहीं होती। जननेन्द्रिय और मस्तकके केश झड जाते हैं। इनके साथ खाद्यकी चाहका विषय और ह्रास-वृद्धिका विषय अन्यत्र देखें। इस हालतमें नेट्रम म्यूरसे वाञ्छित फल मिलता है। जरायुकी अनियमित सकुचनके फलस्वरूप प्रसवके बादका दर्द (after pain)।

जरायुकी स्थानच्युति (prolapsus of the uterus)—प्रसव-वेदना-सी वेदना। प्रत्येक दिन प्रातःकालके समय जरायु निकल आनेकी चेष्टा करता है एव इसलिये रोगिणी पैर-पर-पैर रख सिमटकर बैठनेके लिये बाध्य होती है (cross her legs and sit close to keep something from coming out through the vagina)। इसके

साथ कोष्ठबद्धता रहनेपर तो बात ही नहीं, नेट्रमसे अवश्य ही उपकार होगा। जरायुकी स्थानच्युतिके साथ कमरमें वेदना और चित हो लेटनेसे वह घटी-सी मालूम होती है। इसके साथ पूर्वोक्त सिर-दर्द। रोगिणी धीरे-धीरे दुर्बल और शीर्ण हो जाती है और सामान्य कारणसे ही उसकी आँखोंसे पानी गिरता है। बीच-बीचमें जल-सा स्राव होता है एवं स्रावमें और पेशाब करनेके बाद या पेशाब करते समय जलन होती है।

श्वेतप्रदर (leucorrhœa)—जननेन्द्रियसे तरल स्वच्छ स्राव निकलनेके साथ जलन और वह स्राव जिस स्थानमें लग जाता है, वहाँ घाव-सा हो जाता है। श्वेतप्रदरके साथ योनिकी शुष्कता, टपक और पेशाब करनेके बाद जलन अनुभव होना। तरल स्वच्छ स्राव नेट्रमकी विशेषता होनेपर भी बहुत परिमाणमें सफेद, गाढा और हरी आभा लिये तरल स्राव भी होता है, किन्तु उसमें पूर्वोक्त प्रकारके निकलनेवाले स्थानमें जलन और घाव-सा हो जाता है, परन्तु यह जलन और घाव-सा हो जाना इसकी एक और विशेषता है। रोगिणीको मानसिक लक्षण भी थोड़ा-बहुत रहता है।

वमन (vomiting)—स्वच्छ जल-सा और फेनकी भाँति श्लेष्मा वमन होता है। कभी या तो मुखसे दुर्गन्धपूर्ण जल निकलता है। उस जलका स्वाद लवणाक्त अथवा विस्वादयुक्त, किन्तु अम्ल स्वादयुक्त नहीं।

गर्भावस्थामें वमन (morning sickness and vomiting)—ऊपर वमन अध्यायमें वर्णित लक्षणकी भाँति।

खाँसी (cough)—जिस किसी प्रकारकी खाँसी ही क्यो न हो, अगर कफ **स्वच्छ, तरल और फेन-सा हो**, तो इसी औषधको ही निर्देशित करता है। गला सुरसुराकर खाँसी आना **फेरम फॉस**से अच्छा न होनेपर एव अलिजिह्वाकी वृद्धि हेतु ऐसी खाँसी होनेपर **कैल्क फ्लोर**-के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। **लवणाक्त श्लेष्मा स्राव**। खाँसते समय आँख, नाक और मुखसे पानी गिरता है एव मूत्र भी निकल जाता

है (फेरम फॉस)। पुरानी खाँसी—समुद्रके किनारे अथवा जिस किसी लवणाक्त स्थानमें वृद्धि। स्वरयंत्रमें, नाकके भीतर और गलेके अन्दर श्लेष्मा इकठ्ठा होकर खाँसी एव उसके साथ स्वरभंग भी रहता है। पाकस्थलीकी उत्तेजना हेतु दिन-रात गला सुरसुराकर सूखी खाँसी और छातीमें जब कफ एकत्रित होकर घडघड शब्द होता है, उस समय भी खाँसनेपर कफ अच्छी तरहसे नही निकलता। छातीमें वेदना, खाँसते समय और दीर्घ श्वास लेनेके समय छातीमें सूई गडनेकी भाँति वेदना।

शक्ति—१२x।

ब्रॉङ्काइटिस (bronchitis)—खाँसी अध्यायमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर; किन्तु रोग पुराना होनेपर कफ स्वच्छ और लसीला होता है एव गलेका स्वर भी दुर्वल होता है। ऐसा होनेपर बीच-बीचमें **कैल्क फॉस** प्रयोग करना चाहिये। पुरानी हालतमें दोनो ही दवाओंकी ३०x शक्तिका प्रयोग करना पडता है।

न्यूमोनिया (pneumonia)—न्यूमोनिया या फुसफुस प्रदाहमें प्रथमावस्थाके अन्तमें इस औपधकी आवश्यकता होती है। खाँसी अध्यायमें वर्णित लक्षण रहनेपर। अत्यधिक प्यास दिखाई देती है। जीभ साफ और थूकसे आवृत। पर्यायक्रमसे **फेरम फॉस**का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

यक्ष्मा-रोग (phthisis)—खाँसी अध्यायमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर यह उत्कृष्ट है। खाँसीके साथ रक्त निकलता है। रक्तहीन दुर्वल और अतिशय शीर्ण शरीर। यक्ष्मा-रोगसे पीडित रोगी स्वास्थ्य परिवर्त्तनके उद्देश्यसे पूरी, वालटियर प्रभृति समुद्रके किनारेवाले स्थानों को जाता है। उमसे उनके स्वास्थ्यकी उन्नति भी होती है। किन्तु उन सब लवणाक्त या समुद्रके किनारेवाले स्थानोंमें रहनेके कारण रोगकी वृद्धि होनेपर नेट्रम म्यूर ही उसकी उत्कृष्ट औषध है।

फुसफुसके अन्यान्य रोगोंमें एव सब प्रकारकी खाँसियोंमें खाँसी अध्यायमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर यह अवश्य ही व्यवहार्य है।

रोगीका विवरण—रोगीका नाम श्री ...., बी० ए० है। निवास स्थान जलपाईगुडी जिलाके किसी गाँवमें, उमर ४० के लगभग, चेहरा पतला व मध्यकाय और मुँहका चेहरा रोगियल व कमजोर। पिछले दिनांक ६-६-५० तालमें मेरे चिकित्साधीनमें आये और मैंने निम्नोक्त लक्षणोंको लिख रखा।

पहलेका इतिहास—बचपनमें प्रायः ज्वर हुआ करता था। ज्वर छूटनेके बाद प्रायः ही पेटकी बीमारी हुआ करती और अभी भी वह है। ७-८ वर्ष पहले अचानक एक दिन बरसातमें गलेसे रक्त निकलता रहा, बादवाले वर्षमें भी गरमीमें तथा और दो वर्ष बाद ठण्डेमें गलेसे रक्त निकला। रक्त निकलनेके समय सर्दी, खाँसी, ज्वर इत्यादि कोई भी उपसर्ग नहीं था। ४-५ वर्ष तक एलोपैथिक चिकित्सा और दो वर्षो तक वैद्यकी चिकित्सा हुई है। कोई फायदा नहीं हुआ है। बहुत दिनो तक कैलसियम और कैलसियम ग्लुकोनेटका इञ्जेकशन लिए हैं। एक्स-रेकी परीक्षामें दोनो छातीपर ही आक्रमण हुआ है तथा यक्ष्माकी प्रारम्भवाली अवस्था कहकर निर्णय किया गया है।

वर्तमान लक्षणावली—पेटकी बीमारी विशेषकर आँवकी बीमारी लगी ही रहती थी। नित्य मलके साथ सफेद चर्बीकी तरह एक प्रकारकी चीज लगी रहती थी। २-१ दिन बाद-बाद सफेद कफकी तरह आँवका गिरना। २-१ दिन तलपेटमें दर्द होता था। कुछ दिनों बाद-बाद मल त्यागनेके बाद रक्त गिरता था और रक्तामाशय दीख पडता था। बीच-बीचमें मलके साथ कफ मिला रक्त दीख पडता था और कभी-कभी खूब अधिक दीख पडता था। किसी-किसी समय वायुकी तरह एक पदार्थ भीतरसे गलेके पास आकर गायब हो जाता है। उस समय मनमें भय होता था, अभी मानो गलेसे रक्त निकला और हृत्पिण्डमें धक्का लगकर सारा शरीर झुनझुना जाता था किन्तु मुखसे थूकके अलावा और कुछ नहीं निकलता।

मिजाज थोडा चिडचिड़ा, रोगके कारण मन उदास। खाली ऐसा

ही मालूम होता कि मानो अभी मुँहसे रक्त निकला। संगी साथी पसन्द नही करते। स्मरणशक्ति लडकपनसे ही कमजोर थी। चुपचाप रहनेकी इच्छा होती थी। अत्यधिक मानसिक परिश्रम व शोकके कारण रोगकी उत्पत्ति हुई है रोगीकी ऐसी धारणा थी।

रोगी जल व नमक अधिक खाते-पीते थे। ऐसा न होनेसे खाना-पीना ठीक नही होता। अण्डा, मास इत्यादि भारी चीजें सहन नही होती।

मैथुनेच्छा कुछ अधिक। बीच-बीचमें स्वप्नदोष होता था। विवाहित, दो सन्तानोंके पिता थे। वशका इतिहास कोई उल्लेखनीय नही था।

मलद्वारसे बीच-बीचमें रक्त गिरता था, किन्तु मलद्वारमें कोई मसा नही था। कब्ज था। बीच-बीचमें पेटमें वायुका होना।

सर्दी, खाँसी बहुत कम, पर सवेरेके समय छींक आती थी। अचानक ठण्ड लगनेपर सर्दी हो जाती थी।

खुली हवा अच्छी लगती थी। जाडेका दिन पसन्द था। जाडेमें अधिक कपडे व कुर्तोका व्यवहार करना पडता था। हर ऋतुमें ही स्नान करते थे, बगैर स्नान किये नही रह सकते। स्नान सहाता था।

टीका ५-६ बार ली जा चुकी थी। चर्मरोगका कोई इतिहास नही मिला था।

रोगीके लिखे लक्षणोंको अच्छी तरहसे पढकर मैं रोगीको नेट्रम म्यूर १००० देनेका निश्चय किया। किन्तु रोगी मेरे पास होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा करानेके लिए तैयार नही है, खबर भेजी। अच्छा हों या न हों पर वे मुझसे बायोकेमिक मतसे चिकित्सा करायेंगे यह दृढ़तापूर्वक सूचित कर दिया। जो हो, मैं तदनुसार ६-९-५० तारीखको **नेट्रम म्यूर** २००x सप्ताहमें दो मात्रा करके चार सप्ताहके लिए दवा दे दी। डाकसे चिकित्सा चलती रही।

३-१०-५०—पेटके अन्दरसे वायुकी तरह गोलेकी भाँति जो पदार्थ गलेमें उठता था, औषध सेवनसे पहले कुछ बढनेपर भी वह चला गया है। पाखाना अच्छा हो रहा है, पर मलमें सफेद आँव है। **नेट्रम म्यूर**

२००x सप्ताहमें एक मात्रा और केलि म्यूर ३०x सप्ताहमें तीन मात्राके हिसाबसे दिया।

२-१-५१—सफेद श्लेष्माकी भाँति आँवका गिरना बन्द है। काला-पन लिए लाल, कच्ची चर्बीकी तरह और किसी-किसी समय मोतीके रंगकी चर्बीकी तरह मलमें दीख पड़ता है। नेट्रम म्यूर २००x सप्ताहमें एक मात्राके हिसाबसे चार सप्ताह और केलि फॉस ३०x और केल्क फॉस ३०x सप्ताहमें २ बार करके चार सप्ताह। चार सप्ताह औषध सेवन करनेके बाद तीन सप्ताह औषध बन्द रहेगी और उसके बाद खबर दें।

२४-३-५१—काफी फायदा हुआ है। मानसिक हालत व रक्त गिरनेका डर बहुत घट गया है। दवा पहलेकी भाँति।

२५-८-५१—लम्बे पाँच महीने बाद खबर मिली। मन व शरीर पूरा स्वस्थ रहनेके कारण इतने दिनोंतक रोगीने खबर देनेकी आवश्यकता नहीं समझी ऐसा लिखा है। मैंने रोगीको निर्देश-पत्र भेज दिया और उसमें दिये निर्देशानुसार जब रोगी आवश्यक समझें दवा खायेंगे। आवश्यक होनेपर मुझे सूचित करेंगे। जैसे सफेद आँवके साथ रक्तामाशय दीख पड़नेपर फेरम फॉस व केलि म्यूर पर्यायक्रमसे, अचानक मुखसे रक्त निकलनेपर फेरम फॉस ६x बार-बार रक्त बन्द न होने तक देना चाहिये। आवश्यक होनेपर पहलेकी व्यवस्थानुसार और भी कई एक सप्ताह। पहलेके कोई-कोई लक्षण दीख पड़नेपर फिर पहलेकी व्यवस्था की गई और पूरा स्वस्थ न होनेके कारण २७-९-५१ तारीखको और भी तीन सप्ताहके लिए वही व्यवस्था की गई। रोगीको इसके बाद और भी किसी दवाकी आवश्यकता नहीं हुई। रोगी रोगी-हिसाबसे निर्दोष रूपमें आरोग्य होनेके लिए पिछले १९५२ सालके मार्च महीनेसे मेरी चिकित्साके अधीन है।

केवल नई बीमारियोंकी ही जो बायोकेमिक मतसे चिकित्सा होती है ऐसी बात नहीं। बहुत दिनोंकी जटिल पुरानी बीमारीकी भी बायो-केमिक मतसे चिकित्सा होती है, इसका प्रमाण सदा ही मिलता है।

दमा (asthma)—खाँसी अध्यायमें वर्णित श्लेष्माका लक्षण रहनेपर यह उत्कृष्ट दवा है। जिन व्यक्तियोंका दमा जाड़ेमें बढ़ता है। श्वासकष्टके लिये केलि फॉसके निम्नक्रम (२x, ३x) के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। शक्ति १२x।

हृद्‌पिण्डकी पीड़ाएँ (diseases of the heart)—रक्तहीन व्यक्तिके हृद्‌पिण्डका स्पन्दन (कैल्क फॉस, केलि फॉस)। हृद्‌पिण्डका स्पन्दन इतना बढ जाता है कि सारे शरीरमें ही उस स्पन्दनका झटका मालूम होता है। हिलने-डोलनेपर विशेषकर बायीं करवट लेटनेसे वृद्धि होती है। हृद्‌पिण्डकी वृद्धि। नाडीकी गति सविराम और तेज। रक्त सचालनकी क्रिया ठीकसे न होनेके कारण हाथ-पैर ठण्डे। छातीके अन्दर शीतलताका अनुभव होना और मनमें ऐसा मालूम होता है मानो स्तनकी जगह गोली (bullet) घुस गयी है। रक्तहीन, शोकसे दुःखित, दुर्वल और शोथयुक्त रोगीके लिये उत्कृष्ट है। मानसिक परिश्रमसे वृद्धि। रोगीका मन दुःखित रहनेपर यह दवा और भी लाभदायक है।

वात (rheumatism)—विविध स्थानोंमें खींच रखनेकी भाँति तथा तीक्ष्ण वेदना होती है। कमरकी वेदनामें यह अति उत्कृष्ट औषध है। कडे बिछावनपर सोनेसे वेदना घटी-सी मालूम होती है। जो लोग सदा बैठे-बैठे सिर झुकाकर काम करते हैं, उन लोगोंके कमरके दर्दमें यह उत्तम दवा है। किसी प्रकारका जलीय लक्षण रहनेपर। शक्ति—१२x।

पक्षाघात (paralysis)—किसी प्रकारके मानसिक उच्छ्वासके बाद पक्षाघात ; जैसे अचानक क्रोधित होनेके बाद पैरोंमें बल नही रहता, हो तो एक हाथमें पक्षाघातकी तरह हो गया। हाथ और पैर भारी मालूम होते हैं और रोगी उनको हिला नही सकता। हाथ और निम्नाग दुर्बल और काँपता है। लगातार चलते-फिरते रहनेके बाद घटना। हाथ पैरमें जलन। इस रोगकी प्रधान औषध केलि फॉस है। सविराम ज्वरके बाद पक्षाघात।

स्नायुशूल (neuralgia)—इस रोगकी प्रधान औषध **मैग फॉस** है। इसकी वेदना भी **मैग फॉस**की तरह है, लेकिन इसके साथ जलीय लक्षण भी रहता है।

वेदनाके समय आँख और मुखसे जलीय स्राव निकलना। निर्दिष्ट समयपर रोगका आक्रमण (मैग फॉस)। सविराम वेदना अर्थात् कभी कम और कभी ज्यादा। समुद्रके किनारे या लवणाक्त स्थानमें रहनेके कारण रोगकी वृद्धि या उत्पत्ति। रातमें स्नायुका स्पन्दन (केलि फॉस)। प्रातःकालके समय और ऋतुमें वृद्धि।

शोथ (dropsy)—**नेट्रम सल्फ** शोथकी सर्वप्रधान औषध होनेपर भी, यह भी एक उल्लेखनीय औषध है। मलेरिया ज्वरके बाद, क्विनीन सेवनके बाद और रक्ताल्पताके पश्चात् शोथ होनेपर यह लाभदायक है। स्थानीय और सर्वदैहिक दोनों प्रकारके शोथमें ही यह विशेष उपयोगी है। शोथके साथ कोष्ठबद्धता तथा जीभ साफ और थूकसे भरी। पसीना होनेपर उसका स्वाद लवणाक्त होता है। **नेट्रम सल्फ**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर अति शीघ्र उपकार पाया जाता है।

चर्मपीड़ा-समूह (diseases of the skin)—सब प्रकारके **चर्मरोगमें जब जल-सा तरल स्वच्छ पदार्थ निकलता है**, उस समय अति उत्कृष्ट है। दाने सब जल-से तरल स्वच्छ पदार्थोंसे भरे रहते हैं। बहुत दिनों तकके किसी चर्म-रोगमें चर्म स्वच्छ मोमकी भाँति—मानो शोथग्रस्त हुआ है। चमड़ा चमकीला दिखाई देता है। चमड़े या किसी श्लैष्मिक-झिल्लीके प्रदाहके बाद उससे पूर्वोक्त प्रकारका जलीय स्राव निकलता है। किसी स्थानमें जल भरे फफोले एवं उसके निकलनेके पहले उस स्थानमें जलन होती है। चर्म शुष्क।

एक्जिमा (eczema)—अतिरिक्त लवण खानेकी वजहसे एक्जिमा। एक्जिमामें सफेद पपड़ी पड़ती है। रसयुक्त एक्जिमा एवं उससे पीब निकलकर केश सट जाते हैं। कानके पीछे एक्जिमा। एक्जिमामें खाल उठ जाती है।

आमवात (urticaria)—अत्यन्त खुजलाहट। सन्धि स्थान, विशेषकर पैरके सन्धिस्थानमें होनेसे यह और भी उपयोगी होता है। शरीरके स्थान-स्थानपर चकत्ते-चकत्ते ऐसे दाग एवं उनमें अत्यधिक खुजलाहट रहती है। सविराम ज्वरके साथ चमड़ेपर उस प्रकारका दाग होनेसे। अतिरिक्त लवण खानेसे अथवा समुद्रके किनारे या लवणाक्त स्थानमें रहनेके कारण आमवात होनेपर। सामान्य परिश्रमके बाद अथवा धूपमें घूमनेके पश्चात् चर्ममें अत्यधिक खुजलाहट होनेपर।

फटना—शरीरके विभिन्न स्थान, मुखमण्डल, हाथ और पैर, ओठके कोने इत्यादि स्थानोंका फटना। नख फटा-फटा-सा।

दंशन—बर्रे, भँवरा, विच्छू अथवा जिस किसी प्रकारके दंशनमें बाहरी और भीतरी प्रयोग करना चाहिये।

कीटादिके काटनेपर नेट्रम म्यूर ३x काटे हुए स्थान पर मलनेपर और खानेके लिये ६x या १२x शक्तिका प्रयोग करनेपर बड़ी शीघ्रतासे कष्ट-दायक उपसर्ग आदि दूर हो जाते हैं।

मक्खी व मसोंके काटनेके कुफलमें भी नेट्रम-म्यूर उत्कृष्ट फलदायक औषध है।

कुत्ताके काटने व हाइड्रोफोबिया रोगमें केलि-फॉ अति उत्कृष्ट दवा है। इसमें मैग फॉस भी समय-समय पर व्यवहृत होता है।

मस्से (warts)—हथेलीमें मस्से होते हैं।

दाद—शरीरके विभिन्न स्थानोंमें दादका होना।

नेट्रम सल्फ—दाद साधारणतः वर्षाके दिनोंमें बढ़ता है और इसीलिये यह दवा अत्यधिक फलदायक है। दाद गरमीके दिनोंमें बढ़नेपर **नेट्रम म्यूर** अत्यधिक उपयोगी है। नेट्रम म्यूर व नेट्रम सल्फ दोनों ही दवाओंके रोगी ही गरमीसे घबड़ाते हैं। **नेट्रम म्यूर**के रोगी नमकके अत्यधिक भक्त और प्यासा होते हैं। और **नेट्रम सल्फ**के रोगीमें पित्तजनित लक्षण और वात जनित लक्षण रहनेपर अधिकतर उपयोगी होता है।

केलि सल्फ—बीच-बीचमें व्यवहृत होता है। उसके सभी लक्षण ही गरममें व सायंकाल बढ़ते हैं और ठण्डमें घटते हैं।

नेट्रम फॉस—अम्ल व कृमिके लक्षण रहनेपर।

शक्ति—सभी औषधियोंके ही १२x, ३०x व २००x।

रूसी (Jandruff)—मस्तकमें श्वेतवर्णकी रूसी (केलि सल्फ प्रधान औषध है)।

क्षत (ulcer)—जिह्वा और जरायुमुखका क्षत या केन्सर। क्षत स्थानसे रक्त मिश्रित जलीय स्राव। दुर्बल रक्तहीन व्यक्तिका क्षत। मैलेरिया ज्वरके बाद ऐसा घाव होनेपर।

चेचक (pox)—प्रथमावस्थामें ज्वरादिके साथ आँख और नाकसे पानी गिरता है। मुख और जिह्वा शुष्क एव अतिशय प्यास रहती है। तन्द्रा और बड़बड़ाकर प्रलाप बकना। पनसाहा चेचककी यह प्रधान औषध है।

कोढ़वा (measles)—पूर्वोक्त चेचक अध्यायमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर। बार-बार छींक आती है। जिह्वा सरस, शुष्क या फेनयुक्त।

रक्ताल्पता (anæmia)—कैल्क फॉस एनिमियाकी प्रधान औषध है; किन्तु यह भी एनिमियाकी एक उत्तम दवा है। शरीरसे रक्त, रस, स्त्रियोंके ऋतु-जनित रोग और पुरुषोंकी वीर्यपात-जनित बीमारीके कारण रक्तहीनता होनेपर नेट्रम म्यूर विशेष उपयोगी है। मसूढ़ेसे सर्वदा रक्त चूनेपर। यह फलस्वरूप स्कार्भी-रोगमें परिणित हो जाता है। इस अवस्थामें भी यह उत्कृष्ट है। मुखकी ज्योति विवर्ण, फीका, पीला-सा एव मलिन। शरीर अतिशय शीर्ण, उत्कृष्ट भोजन करनेपर भी शरीर सूखता जाता है। यह शुष्कता उसकी गर्दनमें ही अधिक दिखाई देती है। रोग-वृद्धिके साथ-साथ उसकी स्नायविक दुर्बलता बढती रहती है। थोडा भी शारीरिक या मानसिक परिश्रम करनेसे ही रोगी अतिशय क्लान्ति बोध करता है और इस परिश्रमके फलस्वरूप रोगीका हृदस्पन्दन भी बढ़

जाता है। बायें वक्षस्थलमें कैमी तो एक प्रकारकी तकलीफ मालूम करता है। रोगीको प्रायः ही कोष्ठबद्धता रहती है।

इसके साथ मानसिक लक्षण सभी उल्लेखयोग्य हैं। मन अत्यधिक उदास, अवसन्न, हताशपूर्ण और दुःखित रहता है। रोगीके शोक या दुःखमें सहानुभूति दिखलानेसे वह रो पडता है, केवल यही नहीं, वह विरक्त और क्रोधित भी होता है। और भी विशेष बात तो यह है कि इस प्रकारसे रोनेके समय रोगीको हृद्स्पन्दन होता है और नाडी तक सविराम होती है। इस प्रकार होनेका कारण दुर्बलताके अलावा और कुछ नहीं है। किन्तु इस समय रोगीकी परीक्षा करनेपर मालूम होता है मानो उसे हृद्‌पिण्डकी कोई बीमारी हुई है। और एक प्रकारका मानसिक भाव भी नेट्रममें दिखाई देता है। सामान्य कारणसे ही रोगी उत्तेजित हो जाता है। उसकी यह क्रोधकी हालत शीघ्र दूर नहीं होती, इसके फलस्वरूप उसको बहुत देर तक कष्ट उठाना पडता है। केवल यही नहीं, इस प्रकारकी कोई अप्रीतिकर घटना घटनेसे रातमें सोते समय उसकी छाती धडकती है। उसकी स्मरण शक्ति तक भी विलुप्त होती जाती है, इसलिए सभी कामोंमें ही गलती किया करता है। इसके साथ इस औषधका सिर-दर्द भी उल्लेखनीय है। हथौडी मारनेकी भाँति सिर-दर्द एवं पढ़नेसे उसकी वृद्धि। पूर्वोक्त दोनो प्रकारके मानसिक लक्षण; और कभी-कभी पर्यायक्रमसे भी दीख पडते हैं, अर्थात् अभी उत्तेजित होते देखा गया और थोडी ही देर बाद फिर उसे बहुत दुःखित और उदास होते देखा जाता है। जो सब मानसिक लक्षण मैं अभी बतला रहा हूँ, उनका मानसिक लक्षण अध्यायमें ही वर्णन किया गया है, किन्तु इन सब विषयोंके सम्बन्धमें विस्तृत आलोचनाके बिना कुछ सीखनेका उपाय नहीं और एनिमियाके साथ इस प्रकारके मानसिक लक्षण थोडे-बहुत रहते ही हैं।

युवतियोंको अनियमित ऋतुस्राव भी रहता है। ऋतु एक समयपर नहीं होना, बहुत विलम्बसे होता है, और जब होता है, तो अत्यल्प परिमाणमें होता है। मानसिक लक्षण, सिर-दर्द और हृद्स्पन्दनके विषय

ऊपर वर्णित हुए है। किन्तु इसके साथ और भी जो-सव लक्षण रहते हैं, वे भी इसके वाद वर्णित हो रहे हैं। रोगिणीके जरायुकी विच्युति एवं प्रातःकाल ही उसकी वृद्धि होती है। जरायुके लक्षणके साथ रोगिणीकी कमरमें वेदना और प्रात.कालके समय उसकी वृद्धि दिखाई देती है। फलस्वरूप इस कमरकी वेदनाके कारण रोगिणी वहुत ही कष्ट अनुभव करती है। यह कमरकी वेदना चित्त होकर सोनेसे, कडे विछावनपर सोनेसे अथवा तकियेसे दवाकर सोनेसे घटती है। पेशाव करनेके वाद जलन रहती है। ऊपरके वर्णित लक्षणोंको देखकर औषध प्रयोग करनेसे आश्चर्यजनक फल प्राप्त होता है। वहुत दिनों तक मैलेरिया ज्वरसे पीड़ित रहनेके वाद रक्ताल्पता। जिह्वा सरस, शुष्क, मानचित्रकी भाँति और सुन्न-सा। मुखसे लार निकलता है। मुखमें वदवू भी रहती है। इसके साथ सिर-दर्द, अनियमित ऋतुस्राव और जरायुकी स्थानच्यूति इत्यादि रह सकते है और उनके विस्तृत लक्षणोंके लिये दूसरी जगह उन-उन विषयोंके विवरण देखना चाहिये। वहुत दिनों तक मैलेरिया ज्वर भोगनेके वाद रक्ताल्पता।

शक्ति—१२x।

हरित्-रोग (chlorosis)—क्लोरोसिस या हरित-रोगके लक्षण रक्ताल्पता अध्यायमें वर्णित लक्षणोंकी भाँति हैं।

शरीरका शीर्ण होना (सुखण्डी marasmus)—शरीर शीर्ण होनेके रोगमें यह औषध विशेष उपयोगी है। परिपोषण क्रियाके अभाव से ही इस प्रकारकी शीर्णता होती है। शिशु खाता-पीता है, भूख भी अच्छी ही लगती है, किन्तु शरीर शीर्ण होता जाता है। नियमित भूख लगती हो एवं उत्तम आहारादि मिलते रहनेपर भी यदि शरीर शीर्ण होता रहे और गर्दन ही अधिकतर शीर्ण होती हो, तो नेट्रम म्यूर ही वास्तविक औषध है। शिशुकी जीभ अतिशय शुष्क और इसके साथ प्यास रहती है तथा वह अत्यधिक परिमाणमें वहुत वार पानी पीता है। जल पीनेके पश्चात रोगी मानो कुछ स्वस्थ हो जाता है। शिशुको प्राय. ही

कोष्ठबद्धता रहती है, लेकिन कभी-कभी उदरामय भी हो जाता है। शक्ति—१२x।

रोगीका विवरण—खुलना शहरमें जब रह रहा था, गीताञ्जलि नामक एक शिशुकी मैंने चिकित्साकी। शिशुको उदरामय और निम्न गतिमें डरसे लिपट जानेका लक्षण देखकर बोरेक्स ३०, २००, हाथ, पैर व सिरके उत्ताप, चर्मरोग और ठण्डा पसन्द करना लक्षण देखकर सलफर २०० इत्यादि कई एक औषध लक्षणानुसार दी। किन्तु १० से १५ वार पतला पाखाना होना किसी तरह नहीं घटा। और भी २-३ अच्छे होमियोपैथोंके साथ सलाह की गई। किन्तु उन लोगोंने कहा कि औषधका चुनाव बिलकुल ठीक हुआ है, अतएव और भी ऊंची शक्तिका प्रयोग करना होगा। पर फल कुछ भी नहीं हुआ। लडकीका शरीर क्रमशः दुबला होने लगा, चमडे ढीले, सारे शरीरकी अपेक्षा गर्दन ही अधिक पतली है, हमेशा खानेके लिए रोते रहना, मिजाज चिडचिडा, रोने वाला इत्यादि लक्षण दीख पडे। लडकीके जीवनके सम्बन्धमें हताश हो गया। उसीके साथ ज्वर भी हो रहा था। एक दिन शिशुकी माँ बोली कि रसोई घरमें घुसनेसे नमक खाना चाहती है तथा सुअवसर मिलते ही अपने हाथसे भी खा लेती है। इसलिए औषधके सम्बन्धमें और सन्देह न रह गया। **नेट्रम म्यूर** २०० एक मात्रा देते ही पहले उदरामय १०-१५ वारसे २-१ वारमें आ पहुँचा और अन्तमें कडा पायखाना होने लगा। उसके बाद लक्षण भी घट गए।

ज्वर (fever)—सब प्रकारके ज्वरोंमें, विशेषकर सविराम ज्वर में यह एक बहुमूल्य औषध है। आर्सेनिक और क्विनीनके अपव्यवहारसे उत्पन्न ज्वरमें इसके तुल्य और कोई दूसरी दवा नहीं है। बहुत दिनों तक ज्वर भोगते रहनेपर रोगी जीर्ण-शीर्ण और रक्तहीन हो पडता है।

विशेषत्व (peculiarity)—सब प्रकारके ज्वरमे ही जब निद्रालुता, अचैतन्यावस्था, जलीय पदार्थका वमन एवं हथौड़ी मारनेकी तरह सिर-दर्द रहता है, तब यह अव्यर्थ है। यह ज्वर यदि

दिनमें १० या ११ बजे ज्वर आता हो, इसके साथ अगर अत्यधिक प्यास रहे, तब दो और कोई बात ही नहीं, निःसन्देह होकर इस दवाका प्रयोग करनेसे हाथो-हाथ फल मिलता है। केवल इसी लक्षणके मिलनेपर भी ज्वरमें नेट्रम म्यूरका निर्वाचन करनेमें अधिकांश समय ही विशेष कोई कठिनाई नहीं होती। किन्तु ज्वरमें नेट्रम म्यूर इतना उपकारी है कि इसकी अधिक अवस्थाओंमें स्पष्ट होता है कि विचारपूर्वक लिखनेकी आवश्यकता है। ज्वरकी सभी अवस्थाओंमें ही सर्दीके लक्षण रह सकता है; जैसे कि आँख, मुख और नाकसे पानी गिरना, जलीय वमन, छींक इत्यादि। ज्वरकी सभी अवस्थाओंमें प्यास रहती है। शीतावस्था एवं इसके पहले अतिशय कम्प रहता है। ज्वरके साथ शरीरमें आमवात (urticaria) का निकलना।

ज्वरका कारण (cause)—कुनीनके अपव्यवहार, सीड स्थानमें, नयी खेतिहर जमीनके निकट वास करने, किसी तालके निकट रहने, समुद्रके किनारे या लवणाक्त स्थानमें रहनेके कारण उत्पन्न ज्वर, चर्मरोग बैठ जानेके बाद सविराम ज्वर। बहुत दिनोंतक किसी मलेरिया वाले स्थानमें रहनेके कारण ज्वर होना।

ज्वरका समय (time)—दिनमें १०/११ बजे ज्वर आना ही नेट्रमकी विशेषता है। किन्तु लक्षणोंका सादृश्य रहनेपर जिस किसी समय ज्वर आ सकता है। प्रातःकालके समय और दोपहरके पहले आता है। अपराह्न ४ बजेसे सन्ध्या ७ बजे तक ज्वर आता है। रोजाना या एक दिनके अन्तरसे ज्वर आना। एक दिन ज्वर कम—एक दिन ज्यादा, पीछे हटनेकी प्रकृति। तृतीय और चतुर्थ दिनका ज्वर। यह पर्याय नाशक है।

ज्वरकी पूर्वावस्था (prodrome)—अत्यन्त शीत, भीतर शीत, शीत और कम्पनके लिये भय होता है। प्यास और प्रबल सिर-दर्द आ रोगीको और भी कष्ट देता है। यहाँ तक कि प्यास और सिर-दर्दको देखकर रोगी समझ जाता है कि ज्वर आ रहा है। वमन या मिचली का भाव। हाथ पैरमें वेदना। पीठ और कमरमें शीत। अनिवार्य-

रूपसे सोनेकी उत्कट इच्छा। ज्वरके साथ शरीरमें आमवात (urticaria) निकलना। मानसिक अवसाद। हाथ-पैर और किडनी (kidney) में वेदना।

शीतावस्था (chill)—शीत और कम्पके साथ बहुत अधिक ठण्डे जलकी प्यास, ९ बजेसे १२ बजे तक शीत। यदि सुबह ८ बजे शीत आरम्भ होता है, तो वह दोपहर तक रहता है। शीतसे दाँत कट-कटाना। **अत्यन्त सिर-दर्द एवं उसके कारण अज्ञान और अचैतन्यावस्था;** सिर-दर्दने रोगी इतना अभिभूत हो जाता है कि कहाँपर है वह समझ नहीं पाता। शीत कमरसे शुरू हो मेरुदण्डसे होकर चला जाता है। हाथ और पैरकी अगुलियों तथा कमरसे शीतकी उत्पत्ति होती है। शीतावस्थामें जल पीनेसे कभी-कभी जलीय वमन होता है। डा० लिपिका कहना है कि नेट्रमकी शीतावस्था ही प्रबल है। हाथ और पैर बरफ-सा ठण्डा, सरलतासे उत्तप्त नहीं होता। ओंठ और नख नीलवर्ण हो जाते हैं। हाथ और पैरोंमें वेदना।

उत्तापावस्था (heat)—उत्तापावस्थामें सबसे **अधिक प्यास** एव इसी समय सिर-दर्द भी अत्यन्त बढ जाता है। मालूम होता है मानो मस्तकमें हजारों हथौडियाँ मारी जा रही हों। फलस्वरूप इस प्रबल सिर-दर्दके कारण रोगी उन्मत्त-सा हो जाता है, कभी-कभी बेहोश भी हो पडता है। सिर-दर्दके कारण रोगी अच्छी तरह देख भी नहीं सकता। **सिर-दर्दके कारण रोगी अज्ञान अचैतन्यभावसे पड़ा रहता है।** और सो जानेकी भी इच्छा दीख पडती है। ओंठमें **मोतीझरेके दाने** भी निकलते हैं। शरीरमें दर्द भी रहता है।

पसीना वाली अवस्था (sweat)—बहुत पसीना होता है। **पसीना होनेके कारण शरीरके दर्दका घट जाना,** किन्तु सिर-दर्द आराम नहीं होता—कभी कम होता है और कभी नहीं भी होता। हिलने-डोलनेपर अत्यधिक परिमाणमें पसीना निकलना। पसीना निकलनेके पश्चात् शरीर अत्यन्त दुर्बल और आलस मालूम होता है। ओंठमें

मोतीझरेके दाने, मानो ठीक जैसे मोतीकी तरह। हृद्‌पिण्डके स्पन्दनसे समस्त शरीर स्पन्दित होता रहता है।

विज्वरावस्था (apyrexia)—पसीना होकर ज्वर तो उतर जाता है, किन्तु शरीर ग्लानिशून्य नहीं होता। रोगीकी निस्तेजता और आलस्यकी वृद्धि। ज्वर उतरनेके बाद भी रोगी उदासीनकी तरह चित होकर सोया रहता है। हिलना-डोलना वह बिलकुल ही नहीं चाहता। सदा विज्वरावस्था नहीं होती ; शरीर अतिशय दुर्बल और शीर्ण, शरीरका चमडा पीली आभा लिये—या फीका। प्लीहा और यकृतकी वृद्धि और वहाँपर सूई गडनेकी भाँति वेदना होती है। कोष्ठबद्धता और उदरामय भी रह सकता है। पसीनावाली अवस्थाके समय भी प्यास रहती है। मोतीझरांके दाने और ओठके कोनोंमें घाव। भोजन करनेके बाद पेट भारी मालूम होना। पेशाब धुँधला और बालूके कणकी तरह तलछट पडती है।

वृद्धि (aggravation)—ज्वरका कारण देखना चाहिये, उसमें सभी विषय लिखे गये हैं। मानसिक परिश्रमसे, किसी प्रकारके तापसे और सोनेसे बढ़ना।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, उठकर बैठनेसे, भोजन करनेसे एवं ठण्डे जलमे धोनेपर घटता है।

नेट्रम सल्फ—केवल निद्रालुताके लक्षणपर ही बहुतसे लोग नेट्रम म्यूरका व्यवहार किया करते हैं ; किन्तु ऐसा करना उचित नहीं। कारण, इस औषधमें भी निद्रालुताका लक्षण है। लेकिन अन्तर यह है कि नेट्रम म्यूरमें जलीय लक्षण (आँख, नाक इत्यादिसे तरल जल गिरना) के साथ निद्रालुताका रहना और नेट्रम सल्फमें पैत्तिक लक्षण (पित्तवमन, पित्तका दस्त इत्यादि) के साथ निद्रालुता रहती है। इसके अलावा मुखका स्वाद तिक्त और जीभका रग भी देखना चाहिए।

नाड़ी (pulse)—बायीं करवट सोनेसे नाड़ी अनियमित (irregular) और सविराम (intermittent) होती है। नाडीकी

गति कभी तेज (rapid) या तो कभी कमजोर (weak) रहती है। छातीके स्पन्दनके साथ समस्त शरीर स्पन्दित होता है।

रोगीका विवरण—ई० १९६[illegible] सालके प्रारम्भमें दक्षिण कलकत्तेके ढाकुरियासे श्रीमती   मजुमदार उनके ज्वरकी चिकित्सा करानेके लिए मेरे चिकित्सालयमें आई। रोगिणीकी उमर २४-२५ वर्ष होगी। ३-४ दिनोंसे ज्वर ११-१२ बजे दोपहरके समय ठण्ड और कम्पके साथ आता है और उसके साथ बहुत ही कष्टदायक फट जानेकी भाँति सिर-दर्द, कब्ज, जलकी प्यास उल्लेखनीय रूपसे नहीं है, ज्वर सायंकालके बाद छूट जाता है। अन्यान्य लक्षण उल्लेखनीय नहीं हैं।

औषध नेट्रम म्यूर ही चुना। कुछ दिन पहले इस रोगिणीकी धातु-गत औषधके रूपमें नेट्रम म्यूर चुनकर व प्रयोगकर बहुत अच्छा फल पाया था। यह ज्वर मेलेरिया हो सकता है, किन्तु इस समय उसके विषयमें मुझे जानकारी कर कोई लाभ नहीं। अभी इस सबेरेके ९॥ बजे के समय नेट्रम म्यूरका प्रयोग करना उचित होगा कि नहीं सोचने लगा। क्योंकि औषधकी वृद्धि और रोगिणीके रोगकी वृद्धिका एक ही समय होनेसे रोगके बढ़नेकी शंका करना अकारण नहीं। दूसरी तरफ दवाको सायंकालके बाद प्रयोग करनेसे इस तरहकी आशंकाका कोई कारण नहीं रहता। अवश्य ही इस प्रकारकी व्यवस्थासे रोगिणी और एक दिन ज्वरसे भोगेंगी। जो हो, नेट्रम म्यूर २०० एक मात्रा उसी समय दी गई।

दूसरे दिन प्रातःकाल खबर मिली कि ज्वर फिर नहीं आया है और उसके साथ ही दूसरे और कोई उपसर्ग भी नहीं है और औषध नहीं देनी पड़ी।

सान्निपातिक ज्वर (typhoid fever)—ऊपर सब प्रकारके ज्वरोंके लक्षण ही वर्णित हुए है। टाइफॉयड ज्वरके लिये भी वे ही सब लक्षण देखना चाहिये। प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रम से व्यवहार करनेसे प्रायः ही रोग आराम हो जाता है। जब रोगी

वडवड़ाते हुए प्रलाप वकता है, अत्यधिक निद्रालुता, यहाँ तक कि पुकारने पर भी दो-एक वातका उत्तर देकर पुनः निद्रित हो पडता है (केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)। हाथ-पैर आदिका कम्पन और विछौनेके कपडेको खींचना। जिह्वा शुष्क एव वहुत प्यास रहती है।

निद्रा (sleep)—इस औषधकी निद्राका लक्षण विशेष उल्लेखनीय है। इस निद्राके लक्षणको पकडकर वहुत प्रकारके रोगोकी चिकित्साकी जा सकती है। **मस्तिष्कमे जलीय पदार्थ संचित होनेके कारण अतिनिद्रा। सदा ही निद्रा, मालूम होता है जैसे वगैर सोये रहा नहीं जाता।** दिनमें सोनेकी प्रवल इच्छा, किन्तु रातमें प्रवल इच्छा रहनेपर भी नींद नही आती। निद्रावस्थामें वात करता है। रातमे काफी नींद होनेपर भी प्रात:काल क्लान्ति और आलसका भाव रहना। झगडा, विवाद, मार-काट, खून, आग लगना एव नाना प्रकारके सुन्दर स्वप्न देखता है। और भी एक आश्चर्यजनक लक्षण यह है कि रातमे चोर-डाकुओंका स्वप्न देखकर जग पडनेपर भी उसका यह भ्रम दूर नहीं होता। वह घरका कोना-कोना खूव अच्छी तरह देखता-भालता है और वादमें अपने भ्रमको समझ पाता है। जग जानेपर भी स्वप्नके विषयको सच ही समझता है।

जिह्वा (tongue)—डॉ० लिपिका कहना है कि **जिह्वामे झुन-झुनी होना एवं नाक, ओठ और जिह्वामे** चटचट करना नेट्रम म्यूरका अति उत्तम लक्षण है। उन्होने इन लक्षणोंके सहारे यकृतकी पुरानी वेदना, पाकस्थलीकी गडवडी इत्यादि रोग इस औषधकी अति उच्च शक्तिसे अच्छा किये हैं। **जिह्वा मानचित्रकी भाँति (mapped), जिह्वा साफ, लसदार एवं वुलवुलोमय थूककी तरह।** जिह्वाके अगले भागमें फफोले और घावकी तरह होना। जीभ कडी, शुष्क, चेतनाहीन, पक्षाघातग्रस्तकी भाँति और इसलिये स्वर भारी और कष्टकर। शिशुका विलम्वसे वात करना सीखना। जिह्वाका स्वाद लवणाक्त। जल पीनेसे, लवणाक्त, तिक्त, अम्लस्वाद अथवा कोई भी स्वाद नही मिलता।

पर तिक्त और लवणाक्त द्रव्य खानेकी उत्कट इच्छा, किन्तु रोगी खाना पसन्द नहीं करता। मुखसे लार गिरना, जिह्वापर केश रहनेकी भाँति अनुभव होना।

वृद्धि (aggravation)—प्रातःकालके समय, दिनमें १०-११ बजे, लवणाक्त स्थानमें या समुद्रके किनारे, सूर्य—अथवा अग्निके उत्ताप से, ग्रीष्मकालमें, वर्षाकालमें, सोनेसे, मानसिक परिश्रम करनेसे, लिखने-पढ़नेसे, बात करनेसे, सञ्चालनसे, निद्राके पश्चात्, पूर्णिमाको, टहलनेमें, खिन्नता व्यवहार करनेके बाद, हृद्पिण्डकी बीमारीमें और बायीं करवट सोनेसे।

ह्रास (amelioration)—खुली हवामें, ठण्डे जलसे स्नान करने से, पेट भरकर भोजन न करनेसे, दाहिनी करवट सोनेसे, कमरकी वेदना कड़े बिछावनपर सोनेसे कम होती है।

सम्बन्ध (relation)—युवतियोंके ऋतुकालके समयके सिर-दर्द में कैल्क फॉसके साथ इसका विशेष सादृश्य है। जीभपर केश रहने के अनुभवमें नेट्रम म्यूर और साइलिसिया दोनों ही व्यवहृत होते हैं। बड़बड़ाकर प्रलाप बकनेके लक्षणमें केलि फॉस और नेट्रम म्यूर दोनों ही प्रायः पर्यायक्रमसे व्यवहृत होते हैं।

ऋतुकालके समय अत्यधिक रक्तस्राव होते रहनेपर केलि सल्फके साथ, इयुस्टेसियन नली व कर्णपटहकी नलीमें पीब होनेपर केलि म्यूर व केलि सल्फके साथ; चित्तोन्मत्तता (हाइपोकण्ड्रिया) के साथ अजीर्णताके लक्षणमें नेट्रम सल्फके साथ (नेट्रम म्यूरमें कब्ज रहता है, और नेट्रम सल्फमें उदरामय रहता है), मुखमें पानी आनेमें नेट्रम फॉस व नेट्रम सल्फके साथ नेट्रम म्यूरकी तुलना आवश्यक है। नेट्रम म्यूरमें पानी आना स्वच्छ व स्वादहीन होता है व नेट्रम फॉसमें पानी आना अम्ल, जलनकारक, बदबूदार होता है और नेट्रम सल्फका पानी आना तिक्त, बदबूदार, काफी मात्रामें हरे श्लेष्माके साथ मिला हुआ होता है।

शक्ति (potency)—मैं साधारणतः १२x शक्ति ही व्यवहार

करता हूँ और यही शक्ति सबसे अधिक फलदायक मालूम पड़ती है। इससे निम्नशक्तिका व्यवहार न करना ही अच्छा है। ३०x, ६०x, २००x शक्तियाँ भी सदा व्यवहृत होती हैं।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषधियाँ—इसकी परिपूरक औषध—एपिस व अर्जेण्ट नाइट्रिक है। नेट्रम म्यूरके बाद प्रायः ही पुरानी बीमारीकी हालतमें सिपिया व सलफरकी आवश्यकता होती है। अत्यधिक नमक खानेके कुफलमें इस औषधकी तरह फॉसफोरसकी भी आवश्यकता होती है। समुद्रके स्नानके बुरे फलमें नेट्रमकी तरह आर्स भी व्यवहृत होता है। श्लैष्मिक झिल्लीके सूखेपनमें एलुमिना व ब्रायो तुलना योग्य है। ऋतुस्रावके समय सिर-दर्दमें युवतियोंको कैल्क फॉस व फेरम फॉस और कीड़े-मकोड़ोंके काटनेपर लिडमके साथ इसकी तुलना होती है।

विषघ्न (antidote)—आर्स व फॉस।

नेट्रम फॉस्फोरिकम

(Natrum Phosphoricum)

एण्टि-सार्कोटिक

भिन्न नाम—सोडियम फॉस्फेट, नेट्रम फॉस्फेट इत्यादि।

साधारण नाम—फॉस्फेट ऑफ सोडा।

सक्षिप्त नाम—नेट फॉस (nat. phos)

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—कार्बनेट ऑफ सोडियमके साथ अर्था-फॉस्फोरिक एसिड मिश्रितकर अथवा अस्थि भस्म बनाकर यह तैयार करना पडता है। इसके स्वच्छ दानोंमें सैकडे १२ भाग जल रहता है। यह परिस्रुत सुरामें घुलता नहीं—६ भाग ठण्डे जल और २ भाग उष्ण जलमें द्रव होता है। विचूर्ण पद्धतिके अनुसार इसकी शक्ति बनाई जाती है।

क्रिया—डा० शुसलर इस औषधका जिस तरहसे विस्तृत रूपमें व्यवहार कर गये हैं, होमियोपैथिक मतसे इसका उस रूपमें प्रचलन नहीं हुआ है। रक्त, पेशी, अस्थि, ग्रन्थि, स्नायु, मस्तिष्क, उदर, फुसफुस इत्यादिके ऊपर यह औषध विशेष कार्य किया करती है। मानव शरीरमें लैकटिक एसिड नामक पदार्थ सर्वदा ही विद्यमान रहता है। लैकटिक एसिडके साथ यह लावणिक पदार्थ मिश्रित होकर उसको कार्बनिक एसिड और जल दो हिस्सोंमें बाँट देता है। लैकटिक एसिडके ऊपर नेट्रम फॉसका विशेष प्रभाव विद्यमान रहनेके कारण, लैकटिक एसिडकी अधिकतासे जिन सब रोगोंकी उत्पत्ति होती है, उनमें नेट्रम फॉसका आभ्यन्तरिक प्रयोग ही आरोग्य लाभका एकमात्र उपाय है। नेट्रम फॉस कोलेस्टरिनको पित्तनलीस्थ श्लेष्मा और पित्तके साथ मिश्रित हो घना होने नहीं देता। यदि किसी कारणसे कोलेस्टरिन मिश्रित हो घना हो जाता है, तो पित्तभाव या पित्त-विकृतिके कारण पित्तशूल, कामला (jaundice), सिर-दर्द तैलाक्त खाद्य भोजन करनेके कारण अजीर्ण प्रभृति

नाना प्रकारके रोग होते हैं। इन हालतोंके आ उपस्थित होनेपर नेट्रम फॉसका अभाव समझकर नेट्रम फॉसका ही प्रयोग करना चाहिये। यह कहना नहीं होगा कि नेट्रम फॉस उपयुक्त मात्रामें रहनेपर वे सब रोग उत्पन्न ही नहीं हो सकते।

पहले ही कहा गया है कि रक्तमें फॉस्फेट ऑफ सोडा उपयुक्त मात्रामे रहनेसे लैकटिक एसिडसे कार्बनिक एसिड और जल तैयार होकर कार्बनिक एसिडको फुसफुसके रास्ते निकाल देता है। किन्तु यदि किसी कारणसे फॉस्फेट ऑफ सोडाकी कमी हुई हो, तब तो यथोपयुक्त क्रियाके अभावमें लैक्टिक एसिड शरीरसे न निकल सक अविकृत अवस्थामें रह जानेसे शरीरमें अम्लका भाग बढ़ जाता है। शरीरमें अम्लका भाग बढ जानेपर अजीर्ण और विविध आन्त्रिक रोगोंकी उत्पत्ति होती है। सब प्रकारके वात ही (gout and rheumatism) इसके अभावके कारण उत्पन्न होते हैं। अम्लोद्गार, अम्लवमन, मुखमें अम्लजल आना, अम्लगन्धमय मल, जिह्वा व जिस किसी भी स्थानमें सोनेकी भाँति पीली आभा लिये मैल किसी भी रोगमें दीख पड़े, उसमें ही यह औषध लाभदायक होगी। एक बातमें कहना यह है कि अम्लके लक्षणके साथ सभी रोगोंमें यह महौषध है।

रक्तस्थ-शर्करा (sugar) के साथ फॉस्फेट ऑफ सोडाका विशेष सम्बन्ध है। किसी भी कारणसे रक्तमें शर्कराका अंश बढ जानेसे फॉस्फेट ऑफ सोडा रक्तसे उसको निकाल देता है। किन्तु यदि किसी कारणसे वह रक्तसे निकल न सके, तो बहुमूत्र रोगकी उत्पत्ति होती है। इसलिये नेट्रम फॉस बहुमूत्र-रोगकी प्रधान औषध है।

इस लावणिक पदार्थका अभाव होनेसे मानसिक लक्षणोंमें भी विशेष तारतम्य दीख पड़ता है। रातमें भय-भय-सा लगना एवं कोई दुर्घटना घटेगी ऐसी आशंका होना। जिस रोगके साथ उक्त प्रकारके लक्षण रहेंगे उसीमें यह औषध फलदायक होगी।

याद रखना चाहिये कि एलब्यूमेन (albumen) के साथ फॉस्फेट

ऑफ लाइमका जो सम्बन्ध है, अम्लके साथ फॉस्फेट ऑफ सोडाका भी वही सम्बन्ध है। शरीरमें अम्ल सञ्चित होते रहनेपर एवं निकलनेमें असमर्थ होनेसे लोग उसे अम्लकी बीमारी या अम्लकी अधिकताके हेतु रोग कहा करते हैं। किन्तु वास्तवमें फॉस्फेट ऑफ सोडाकी कमीके कारण ही उस प्रकार हुआ करता है। जिस कामको ५ आदमियोंके करनेसे पूरा होता है, वह यदि किसी कारणसे तीन आदमियोंकी अनुपस्थितिवश दो ही आदमीको पूरा करना पडे, तो अवश्य ही उन दो आदमियोंको अतिरिक्त और अस्वाभाविक रूपमें परिश्रम करना पड़ेगा। किन्तु इस कारणके लिये कार्यकी वृद्धि हुई है ऐसा नहीं कहा जा सकता, वास्तवमें तो काम करनेवालोंका अभाव ही उसका कारण है। अतः कार्य जिस तरह काम करनेवालोंकी संख्या घट जानेके कारण जम जाता है, अम्ल भी उसी प्रकार सोडियम फॉस्फेटकी कमीके कारण सञ्चित होता है।

परिचायक लक्षण (Characteristic Symptoms)

१—मानसिक उद्वेग, चिड़चिड़ा और उत्तेजित प्रकृति। स्मरण-शक्तिकी अल्पता। रातके समय भीतिप्रद उत्कण्ठा। रातमें नींद टूटनेके बाद घरकी चीजोंको मनुष्य समझता है।

२—प्रातःकाल नींद टूटनेके बाद ही मस्तकके शिखर-प्रान्तमें वेदना एवं उसके साथ जीभपर साढ़ीकी भाँति पीले रंगका लेप। खट्टा वमन अथवा पाकस्थलीकी गड़बडीके साथ अम्ल-लक्षण।

३—जीभके पिछले हिस्सेकी नमीके साथ साढ़ीकी भाँति पीले रँगकी मैलसे आवृत रहना इस औषधका विशेष परिचायक लक्षण है।

४—इसके सभी प्रकारके स्राव ही पीले रंगकी साढ़ीकी भाँति एवं किसी स्थानपर घाव होनेसे उसपर जो पपडी पडती है, उसका भी रंग सोनेकी तरह होता है।

५—इस औषधका अम्ल-लक्षण एक विशेष उल्लेखनीय लक्षण है एवं जिन सब रोगोंके साथ अम्लवमन, अम्लोद्गार, मुखमें पानी आना,

छातीमें जलन, स्राव और पसीनेमें अम्ल गन्ध इत्यादि अम्ल-लक्षण रहते हैं, उनमें ही यह विशेष सफलताके साथ व्यवहृत होता है।

६—टान्सिलाइटिस, गलक्षत, गलगण्ड, गण्डमाला, रक्तहीनता इत्यादि रोगोंमें ४थे और ५वें लक्षणोंमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर यह विशेष आवश्यक है। गण्डमाला (scrofula) में घाव होनेके पहले व्यवहृत होता है।

७—सब प्रकारके कृमिके उपद्रवोंमें यही प्रधान औषध है। बालक रातमें दाँत काटते हैं। कृमिके कारण अस्थिर निद्रा। नाक खोदना और खुजलाना।

८—२य (जीहाका रंग) लक्षणके साथ जिस किसी प्रकारका अजीर्ण रोग। शिशुओंके पेटमें दर्दके साथ अम्लगन्धयुक्त दस्त और वमन। अम्ल या कृमिके कारण शिशुओंके पेटमें दर्द होता है। पेटमें दर्दके साथ हरे रंगका तरल मल और छेनेकी तरह जमा हुआ दुग्ध-वमन, तैलाक्त द्रव्य और कच्चे फलोंका खाना बर्दाश्त नहीं होता।

९—कृमिके कारण उत्पन्न हैजेकी प्रधान औषध है। दस्त और वमनमें अम्ल गन्ध और उससे अत्यधिक कष्ट।

१०—कृमिके कारण लड़कोंके शय्यामूत्र (नेट्रम म्यूर, केलि म्यूर)। मूत्राशयके पक्षाघात हेतु बूँद-बूँद पेशाब होना (केलि फॉसके साथ)। मूत्राशयकी पेशियोंकी दुर्बलता हेतु मूत्रका वेग रोक रखनेमें असमर्थ (फेरम फॉसके साथ)।

११—पेशाब बन्द रहनेपर अथवा बार-बार पेशाब करनेकी इच्छा होनेके साथ प्रमेह रोग। पीले रंगकी पीबका स्राव। अम्लधर्माक्रान्त पेशाब। पेशाब करते समय जलन। पित्तपथरी।

१२—अम्ल अजीर्ण लक्षणके साथ स्वप्नदोष। शुक्रतारल्य। अधिक दिनोंतक अपरिमित इन्द्रिय-सेवनके फलस्वरूप हाथ, पैर, कमर प्रभृति स्थानोंमें दुर्बलता और विविध कुफल।

१३—अनियमित ऋतुस्राव—समय पूर्ण होनेके पहले एवं दीर्घकाल

स्थायी। स्रावके रंग और गन्धके लिये ४था लक्षण देखना चाहिये। उस प्रकारका स्रावयुक्त श्वेत-प्रदर।

१४—योनि या जरायुसे अम्लगन्धमय स्राव निकलनेके फलस्वरूप वन्ध्यत्व (sterility)।

१५—अम्ललक्षणयुक्त-अजीर्ण रोगके साथ यक्ष्मा-रोगमें यही प्रधान औषध है। श्लेष्मा फेंकते समय वह ओंठ, जीभ और मुखमें लगकर घाव होना।

१६—सन्धिवात। हाथ और पैरकी दुर्बलता और क्लान्ति। वात-ज्वरके साथ अम्लगन्धमय पसीना।

१७—अजीर्ण और अम्ललक्षणके साथ रैकाइटिस-रोग (कैल्क फॉसके साथ)।

१८—अम्ल और कृमिके साथ ज्वर।

विशेषत्व (peculiarity)—नेट्रम फॉसका नाम लेनेपर पहले ही इसकी अम्लनाशक शक्तिका विषय याद हो आता है और जिस किसी भी रोगके साथ अम्ल लक्षण रहेगा, उसीमें यह विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होगा। इसके अलावा कृमिजनित सभी उपसर्गोंमें यह जो एकमात्र औषध है ऐसा कहनेपर भी अत्युक्ति न होगी। जिस किसी स्थानसे दूध की छाली-सा पीला स्राव निकलनेसे ही इस औषधका नाम याद आ जाता है। जीभपर ही इस रंगके लेपका होना इनका प्रकृति-सिद्ध लक्षण है। शुक्रतारल्य, स्वप्नदोष, वात और प्रमेह रोगोंमें दूसरी दवाका व्यवहार करनेके पहले इसके विषयमें एक बार सोच लेना चाहिए। यद्यपि लक्षणानुसार ही औषधका निर्वाचन करना उचित है, तब भी सब रोगोंमें बहुत बार इसी औषधके ही लक्षण दीख पड़ते हैं।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—मानसिक उद्वेग, आशा व हिम्मतहीन, कोई दुर्घटना घटेगी ऐसा सन्देह होता है। रातमें नींद टूटनेपर घरकी सभी चीजोंको मनुष्य-सा भ्रम करता है और बगलके कमरेमें कोई आदमी घूम-फिर रहा है, ऐसा समझ वह भयभीत होता

है। रोगी अतिशय उत्तेजित, चिड़चिड़ा और सामान्य कारणसे ही डरता है। स्वप्नदोष होनेके बाद मन बहुत उदासीन हो जाता है। स्मरणशक्ति बहुत घट जाती है। मालूम होता है मानो जीभपर एक बाल लगा हुआ है। रातमें विपद घटनेके भयसे भीत होना इस औषधका एक विशेष लक्षण है। **मन अत्यन्त अवसन्न।** सहज हीमें चौंक उठता है।

सिर-दर्द (headache)—**प्रातःकाल नींदसे उठनेके बाद ही मस्तकके ऊपरी अंशमें वेदना एवं उसके साथ जीभके पिछले भागमें दूधकी छाली-सा पीले रंगका लेप चढ़ा।** इसके अलावा उसके साथ अगर **अम्ल-लक्षण** रहे, तब तो और कोई बात ही नहीं—नेट्रम फॉस अवश्य ही प्रयोग करना चाहिये। मस्तकके ऊपरी हिस्सेमें भारी मालूम होना या वेदना मालूम होती है। प्रायः ही पाकस्थलीकी गड़बड़ी रहती है। अम्ल वमनके साथ सिर-दर्द। सिर-दर्दके साथ मिचली रहती है एवं मुखसे अम्लजल निकलता है। हिलने-डोलने और उठकर खड़ा होनेपर गिर जायगा ऐसा मालूम होता है। मस्तक उत्तप्त, आँखोंके ऊपर और ललाट बहुत भारी मालूम होता है। गाढ़ा और बासी खट्टा दूध पीनेके बादका सिर-दर्द। अम्ललक्षणके साथ अधकपारी। **मानसिक परिश्रमसे,** रोशनीमें, सञ्चालनसे, शब्दसे और निद्रा भंगके बाद वेदनाकी वृद्धि—खुली हवामें कम हो जाना।

संन्यास (apoplexy)—पेशाब बन्द होकर रोग होनेपर एवं उसके साथ आँख और मुख रक्तवर्ण रहनेसे **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—चक्षुप्रदाहमें **आँखसे सोनेकी भाँति पीले रंगकी कीचड़ निकलना** एवं प्रातःकाल आँखें सटी रहना। आँखोंके अन्दर बालू रहनेकी भाँति मालूम होता है (केलि म्यूर, नेट्रम म्यूर) और प्रतीत होता है कि आँखोंके ऊपर एक पर्दा पड़ा हुआ है (कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर)। इसीलिये अच्छी तरह देख

नही सकता। **आँखोंमें दर्द एवं लिखने-पढ़नेका काम करनेपर** आँखके दर्दकी वृद्धि। रोगी गैसकी रोशनी सह नही सकता, आँखके चारों ओर रोशनीवाले पदार्थ देखता है। **कृमिके कारण ऐंची या वक्र-दृष्टि** (मेग फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)। आँखके सामने जुगनूकी तरह उज्ज्वल आभामय रोशनी दीख पडती है। शक्ति—६x।

कर्णपीड़ा समूह (diseases of the ear)—पाकस्थलीकी गडवडी या अम्ललक्षणके साथ एक कान लाल, उत्तप्त, जलन होती है और खुजलाता है। कान इतना खुजलाता है कि उससे रक्त निकलता है। कानके वाहर घाव एव उससे **पीले रंगकी पीबका स्राव** होना और पपडी पडती है। सोनेके वाद कानमें जल गिरनेकी तरह आवाज। कानमें नाना प्रकारके शब्द—**गर्जनध्वनि**, घण्टाध्वनि और गुनगुनकी आवाज सुनाई देती है। कानके भीतर और वाहर **सूई गड़नेकी तरह वेदना मालूम होना।**

सर्दी (coryza)—नाकसे **पीले रंगका** गाढ़ा श्लेष्मा निकलना। मस्तकमें ठण्डा लगकर उसी प्रकारकी सर्दी होना। प्रातःकाल नाकसे वदवू निकलती है। **नाक खुजलाता है**; कृमिके कारण भी नाक नोंचता है। उसीके साथ जीभपर पीले रगका दूधकी छालीकी तरह लेप रह सकता है।

दन्त-रोग (diseases of the teeth)—मसूढ़ोंसे रक्त निकलता है। जीभ पीले रंगके लेपसे आवृत। दाँत सव क्षय हो जाते हैं। दाँतकी जडोंकी शिथिलता। रातको दाँतमें **जलन**, वेदना एव वाहरी उत्तापसे घटना। जीभका स्वाद **खट्टा**, तिक्त और लवणाक्त।

कृमि (worms)—सव प्रकारके कृमिके लिये नेट्रम फॉस प्रधान औषध है; क्योंकि शारीरिक रक्तमें इस पदार्थका अभाव होनेसे ही कृमिकी उत्पत्ति होती है। दाँत निकलनेके समय पेटके रोग। वालकोंका सोते समय दाँत पीसना। शक्ति—२x, ३x।

पिन-वर्मके लिये २० ग्रेन नेट फॉस एक पोवा मामूली गरम पानीके साथ मिश्रित कर मलद्वारमें पिचकारी देना पड़ता है।

कृमिकी और भी कईएक औषधं हैं, अतः उनके प्रभेद भी जान लेना आवश्यक है।

केलि म्यूर—छोटे, श्वेतवर्ण, सूतवत कृमिके साथ मलद्वारमें खुजलाहट। जीभ सफेद रंगकी मैलसे आवृत।

नेट्रम म्यूर—इसमें सूतवत कृमि रहते हैं, किन्तु उसके साथ मुंहसे पानी निकलनेका लक्षण रहना चाहिये। मुंहसे पानी निकलने एवं इस औषधके दूसरे लक्षणोंके रहनेपर बड़ी कृमिमें भी व्यवहृत हो सकता है।

फेरम फॉस—कृमिके साथ ज्वर अथवा अन्य किसी प्रदाहका लक्षण रहनेपर। अजीर्ण रूपमें खायी वस्तुका वमन अथवा मलके साथ निकलना। इसके साथ मुंह या मलद्वारसे भी कृमि निकल सकता है।

साइलिसिया—नेट फॉसकी तरह कृमिके कारण शूलवेदना इस दवामें भी है। नेट म्यूरकी भाँति मुंहमें पानी गिरना भी है, इसके अलावा मैग फॉसकी तरह पेटकी वेदना और उत्तापसे कम मालूम होनेका लक्षण भी इसमें है। शूलवेदनाके समय हाथ पीले या नीले रङ्गके हो जाते हैं। फीताकृमि और मलवर्न।

टॉन्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—टॉन्सिलकी सर्दीके कारण टॉन्सिल और जीभपर पीले रंगका लेप रहनेसे यह अत्युत्कृष्ट है। **मुखका स्वाद खट्टा।**

गलक्षत (sore throat)—गलेमें घाव-सी वेदना। गला और टॉन्सिल पीले रङ्गकी मैलसे आवृत। **जीभपर भी पीतवर्णका लेप।** तरल द्रव्य पीनेसे दर्द बढ़ जाता है, किन्तु कड़ी चीजें खानेसे वेदनाका घटना।

डिफ्थिरिया (diphtheria)—तालु और जीभपर पीले रंगका लेप। नाकके पीछेकी तरफसे गाढा पीले रंगका श्लेष्मा निकलता है, विशेषकर रातमें। इसीलिये नींद टूट जाती है एवं कफ बगैर साफ किये

किसी तरह भी नहीं रहा जाता। अम्ल-लक्षण भी रह सकता है। शक्ति—३x।

अजीर्ण-रोग (dyspepsia)—अम्लादूगार, मुखसे अम्लजल निकलता, मुखका अम्लस्वाद, छातीमें जलन इत्यादि अम्ललक्षणके साथ जिस किसी प्रकारका भी अजीर्ण रोग। उसके साथ इस औषधका प्रकृति सिद्ध जीभका रंग (पीला) रहनेपर भोजन करनेके बाद पाकस्थलीके किसी स्थानमें वेदना (कैल्क फॉस, फेरम फॉस)। भोजन करनेके दो घण्टेके पश्चात् पेटमें दर्द। मिचली आना। अम्ल वमन, काफीके चूर-सा काला वमन (कैल्क फॉस या फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे)। शिशुओंके पेटमें दर्दके साथ हरे रंगका तरल दस्त होना, छेनेकी भाँति जमा हुआ दुग्ध-वमन और अम्लगन्धमय दस्त या वमन। अम्ल या कृमिके कारण शिशुओंके पेटमें दर्द। पेट फूलता है।

दूधके साथ अधिक परिमाणमें चीनी खिलानेके कारण अम्लपीड़ा। तैलाक्त खाद्य बिलकुल ही बर्दास्त नहीं होता, खानेपर भी अजीर्ण-रोग हो जाना ; इसके अलावा तैलाक्त द्रव्य, दूध, रोटी और चर्बी तो रोगी खाना ही नहीं चाहता, उससे सहा भी नहीं जाता। बीयर नामक शराब पीनेसे रोग घटता है। जली मछली, अण्डा, शीतल पेय एवं अम्लमय खाद्य खानेकी प्रबल इच्छा होती है। भूख कभी अत्यधिक, यहाँ तक कि—कौओंकी तरह बार-बार, कभी या तो कम रहती है। आहार करनेके बाद अनेक लक्षणोंकी वृद्धि। गर्भिणीका प्रातःकालके समयका अम्लवमन। शक्ति—तरुणावस्थामें—३x, साधारणतः ६x, १२x, २४x, ३०x व्यवहृत होते हैं।

वमन (vomiting)—अजीर्ण अथवा कृमिके कारण वमन। छेनेकी तरह जमा हुआ दुग्ध वमन, दहीके भाँति वमन, अम्ल वमन एवं इसके साथ पीले रंगके पनीर-सा जीभका रङ्ग रहनेपर। गर्भावस्थामें अम्ल-वमन, शक्ति—३x, ६x।

हिचकी (hiccough)—अम्ल या कृमिके कारण हिचकी। **मैग फॉस** ही इस रोगकी प्रधान औषध है। मैग फॉसके साथ यह औषध निम्नक्रममें (३x) व्यवहार करना चाहिए।

अंत्रकी पीड़ा समूह (diseases of the intestine)—रोगके साथ अम्लवमन, अम्लोद्गार, मलमें अम्लगन्ध इत्यादि **अम्ललक्षण** रहनेपर **फेरम फॉसके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। अजीर्णकारक द्रव्य खानेके कारण उत्पन्न वे सब अम्ललक्षण। शक्ति—६x, १२x।

उदरामय (diarrhœa)—**हरे रंगका अम्लगन्धयुक्तमल** अथवा पीले रंगका तरल मल एवं उसके साथ छेनेकी तरह पदार्थ तैरता रहता है और उसमें अम्लगन्ध रहती है। **उदरमें वायु इकट्ठी** होकर पेटमें मरोड़ या वेदनाके साथ उक्त प्रकारका अम्लगन्धयुक्त मल अथवा जमे हुए दूधका वमन। इन सब लक्षणयुक्त उदरामय शिशुओंको ही प्राय होता दीख पड़ता है। वार-वार मलका वेग होता है अथवा उदरामयके साथ अत्यधिक कूथनसह **जेलीकी तरह श्लेष्मा स्राव** (केलि म्यूर)। कृमिके लक्षणके साथ सब प्रकारकी उदर वेदना। पर्यायक्रमसे कोष्ठ-बद्धता और उदरामय। मलद्वार खुजलाता है और नाक खोदना या खुजलाना। मल त्यागनेके पहले मलद्वार अतिशय दुर्बल और ढीला मालूम होता है। वायु निकालनेके निमित्त वेग देनेमें भी भय होता है; कारण कि वायु निकलनेके समय बहुधा मल निकल जाता है। कच्चे फल खानेके कारण उदरामय। मल त्यागनेके पहले सरलान्त्रकी दुर्बलता एवं मल त्यागते समय और बादमें मलद्वारमें जलन।

हैजा (cholera)—कृमिसे उत्पन्न हैजेकी प्रधान औषध है। दस्त और वमनमें अम्लगन्ध रहनेपर एवं थोड़े-थोड़े दस्त और वमनमें अत्यन्त कष्ट रहनेपर यह औषध व्यवहार्य है। पेशाव वन्द हो जानेपर यह औषध विशेष उपकारी है; यहाँतक कि पीड़ाकी प्रथमावस्थासे इस औषधका व्यवहार करनेसे पेशाव वन्द नहीं हो सकता। मूत्र-विकारमें **फेरम फासके** साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। शक्ति—३x।

कोष्ठबद्धता (constipation)—बालकोंकी कोष्ठबद्धता, कभी या तो उसके साथ उदरामय भी रहता है। इसके साथ अधिक मात्रामें यह औषध सेवन करानेसे प्रायः कोष्ठ साफ होता है; विशेषकर बालकों के सरलान्त्रकी क्रियाहीनता। शक्ति—१x शक्तिका ६।१० ग्रेन।

शूल-वेदना (colic)—कृमि या अम्ललक्षण हेतु शूल वेदना। अम्ललक्षणयुक्त दस्त और वमनके साथ शूल-वेदना। रेनल (renal) कालिक। शूल-वेदनाके प्रधान औषध **मेग फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे। शक्ति—३x।

मूत्रविकार (uræmia)—पेशाव बन्द होना ही इस रोगका प्रधान लक्षण है। प्रथमावस्थामें आँख और मुख रक्तवर्ण, पेशावकी अल्पता और ज्वरादि रहनेपर इसके साथ **फेरम फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेसे अतिशीघ्र उपकार होता है।

मूत्रपथरी (stone in the bladder)—सदा ही पेशाव करनेकी इच्छा, पेशावके वेगको रोक रखनेकी शक्ति नहीं रहती। पेशाव करते-करते अचानक पेशाव बन्द हो जाना एवं इस कारण पेशाव करनेके समय कूथन देना पड़ता है। पेशाव करते समय जलन होती है। अम्ल-गन्धमय पेशाव अथवा दूसरे अम्ललक्षण रहनेपर। मूत्र त्यागनेकी प्रवृत्ति रातमें, पुरुषोंके सहवास करनेके बाद, भोजनके बाद एवं सोनेके समय। पेशाव दूसरे समयमें तो अल्प होता है, किन्तु प्रातःकाल और रातमें काफी परिमाणमें होता है। पेशाव बादलके रंगका, विवर्ण, दुर्गन्धयुक्त और नीचे श्लेष्मायुक्त होता है।

शय्यामूत्र (enuresis)—कृमिके कारण रोग होनेपर यही प्रधान औषध है। कृमिके कारण रोग होनेसे **नेट्रम म्यूर** और **केलि म्यूर** भी व्यवहृत होते हैं, किन्तु इनके लक्षण रहना चाहिये। मूत्राशयके पक्षाघातके कारण बूँद-बूँद कर पेशाव होनेसे नेट्रम फॉस और **केलि फॉस** व्यवहृत होते हैं। मूत्राशयकी पेशियोंकी दुर्बलता हेतु मूत्रके वेगको

रोकनेमें असमर्थ होनेपर फेरम फॉस और नेट्रम फॉस प्रधान औषध है। शक्ति—3x।

नेफ्राइटिस (nephritis)—ब्राइट्स डिजीज भी इस रोगके अन्तर्गत ही है। पूर्ण रूपसे पेशाव बन्द हो जानेपर इस औषधका प्रयोग करना पड़ता है; क्योंकि इससे पेशाव होनेमें सहायता मिलती है।

बहुमूत्र (diabetes)—अम्ललक्षण रहनेपर लाभदायक है। इस रोगकी प्रधान औषध नेट्रम सल्फ है।

प्रमेह (gonorrhœa)—केलि म्यूर ही इस रोगकी प्रधान औषध है, लेकिन डा० शुसलरके मतसे यही प्रधान औषध है। पीले रंगका गाढ़ा स्राव होना। पेशाव बन्द रहनेपर एव बार-बार पेशाव करनेकी इच्छा रहनेपर। शक्ति—3x, ६x; किन्तु पुराना होनेपर २००x।

स्वप्नदोष (night pollution)—अतिरिक्त शुक्रक्षय हेतु परिपाक-यंत्रकी दुर्बलताके कारण अजीर्ण-रोग एव उसके साथ अम्ललक्षण रहनेपर इस औषधका प्रयोग अवश्य करना चाहिये। विना स्वप्नके ही स्वप्नदोष होता है एवं बिल्कुल स्पष्ट स्वप्न देखकर भी स्वप्नदोष होता है। स्वप्नदोषके बाद शरीर एवं कमर बहुत दुर्बल हो पड़ते है। बहुत दिनों तक बार-बार ऐसा होते रहनेपर शुक्र निकलनेके बाद ही हाथ-पैरमें भी कम्प हो जाता है, घुटनेमें बल नहीं मिलता एव अण्डकोष और शिश्नमुख इत्यादि स्थान खुजलाते हैं। प्रातःकाल और रातमें बार-बार तकलीफ देनेवाला लिंगोद्रेक होना। हस्तमैथुनादि हेतु अत्यधिक दुर्बलता को दूर करनेके लिये कैल्क फॉस अति उत्तम है (कैल्क फॉस अध्यायमें देखें)। शक्ति—३०x से २००x तक व्यवहार्य है। शुक्रतारल्यके लिये ६०x।

अपरिमित इन्द्रिय सेवन हेतु पीड़ा (diseases from excessive venery)—बालकोंकी कच्ची उम्रमें हस्तमैथुनादिकी तरह ही पूरे उम्रवाले पुरुषोंका अत्यधिक सहवास भी स्वास्थ्यके लिये बहुत हानि-कारक है।

स्त्री-सहवासके बाद पुरुषांगके मुखमें जलन होती है और खुजलाता है। जिस स्थानपर शुक्र लग जाता है, वही स्थान खुजलाता है। सहवासके बाद भी स्वप्नदोष होता है। **सहवासके बाद** बिना स्वप्नके और अनजानमें शुक्र निकलना। सहवासकी इच्छा घट जाना या अधिक होना। रातको सोनेमें पुरुषांगकी उत्तेजना। स्पर्मेटिक कार्डमें वेदना मालूम होना। अतिरिक्त स्त्री-सहवासके बाद पीठमें वेदना। अन्यान्य विषय स्वप्नदोष अध्यायमें देखें।

ऋतुस्राव (menstruation)—जरायु और योनिसे **अम्लगन्ध स्राव या पीतवर्ण जल सा तरल स्राव निकलना। दूधकी छालीकी** तरह पीतवर्ण ऋतुस्राव। अनियमित ऋतुस्रावके साथ **अम्लस्वाद या अम्ल गन्धयुक्त वमन।** ऋतु अति शीघ्र-शीघ्र नियमित समयसे ४-५ दिन या इससे भी पहले ही होता है। ऋतुके पहले उत्तेजना और अनिद्रा दिखाई देती है। स्रावका रंग फीका और जल-सा तरल। **ऋतु दीर्घकाल स्थायी होता है।** ऋतुकालके समय कमर और पीठमें वेदना रहती है।

श्वेत-प्रदर (leucorrhœa)—श्वेत-प्रदरका स्राव भी पीतवर्ण जल-सा या दूधकी छालीकी तरह पीतवर्ण; किन्तु वह स्राव **अम्ल-गन्धमय** और तीव्र होना चाहिये। उक्त स्राव जिस स्थान पर लगता है, वहाँ खुजलाता है और घाव हो जाता है।

जरायुकी स्थानच्युति (displacement of the uterus)—वात-वेदनाके साथ जरायुकी स्थानच्युति होनेपर इस औषधसे लाभ होता है। जरायु बहुत दुर्बल मालूम पड़ता है। मल त्यागनेके पश्चात् जरायु बाहर निकल जायगा ऐसा मालूम होता है।

वन्ध्यत्व (sterility)—योनिसे **अम्लस्राव** निकलनेसे पुरुषके निकले वीर्यके शुक्रकीट नष्ट होनेके कारण सन्तानादि उत्पन्न न होनेपर यही उत्तम औषध है।

खाँसी (cough)—सन्ध्याके समय सूखी खाँसी, प्रातःकाल कफ निकलता है। कफ पीब की भाँति, दुर्गन्धयुक्त, हरी आभा लिये, पीला-सा और लवणाक्त। पीनेके बाद, सन्ध्या समय, सोनेपर और शीतके समय खाँसीकी वृद्धि।

यक्ष्मा (phthisis)—डा० शुसलरका कहना है कि नेट्रम फॉस ही यक्ष्मा-रोगकी एकमात्र औषध है। **अम्ल और अजीर्णादि** रोगके साथ यह रोग होनेपर यही प्रधान औषध है। श्लेषमा निकालनेके समय वह ओंठ, मुख और जीभमें लगकर घाव-सी वेदना मालूम होती है। स्वरभङ्ग। पानी पीनेसे खाँसी बढ जाती है। वक्षःस्थलमें खाली मालूम होता है, विशेषकर भोजनके बाद। क्षय रोगमें वक्षःस्थल पूर्ण और भारी मालूम होता है। वक्षःस्थलमें वेदना मालूम होती है। फुसफुस का सड़ना आरम्भ होनेपर भी यह लाभदायक है (केलि फॉस, माइलि)।

हृद्पिण्डका स्पन्दन (palpitation of the heart)—अजीर्ण रोगके कारण हृद्पिण्डकी अनियमित क्रिया और हृद्स्पन्दन। **यह कम्पन आहारके बाद बढ़ भी जाता है।** सीढीसे ऊपर चढ़नेमें छाती काँपती है (केलि फॉस)। सन्ध्या समय, भोजनके बाद, बायीं करवट सोनेसे, आँधी-तूफानके समय और आवाजसे बढ़ जाता है। हृद्पिण्डमें वेदना।

रक्तहीनता (anæmia)—**कैल्क फॉस** इस रोगकी प्रधान औषध है; लेकिन **अम्ललक्षणयुक्त अजीर्ण-रोगके हेतु** रक्तहीनता होनेसे यही प्रधान औषध है। उक्त लक्षणमें इस औषधका व्यवहार करनेसे यह जीर्णशक्तियोंको बढाकर रोग आराम कर देता है। अम्लोद्गार, जीभपर पीले रङ्गका लेप और दोनो पैरोंमें भार बोध होना इत्यादि इसके लक्षण हैं। ट्यूबरक्युलर और स्क्राफुला धातु। शक्ति—३०x (अवस्थाके अनुसार निम्न शक्ति भी व्यवहृत होती है)।

गण्डमाला (scrofula)—डा० शुसलरके मतानुसार घावके पहले तक यही प्रधान औषध है, किन्तु घाव हो जानेपर **मैग फॉस** ही प्रधान औषध है। लेकिन अधिक दिनोंसे रोग भोगते रहनेपर दूसरी दवाके

लक्षण भी आ जाते हैं। ग्रे-ट्यूबर्कल् होनेसे एवं अम्ललक्षण रहनेपर यही एकमात्र दवा है। शक्ति—उच्च क्रम।

गलगण्ड (goitre)—**कैल्क फॉस** ही प्रधान औषध है; लेकिन डॉ० वाकरका कहना है कि यही प्रधान औषध है। अम्ललक्षण रहना चाहिये। जीभपर पीले रंगका लेप रहता है। अन्यान्य ग्रन्थि रोगोंमें भी पूर्वोक्त लक्षण रहनेपर उपयोगी है। शक्ति—उच्च क्रम।

सब प्रकारकी वात व्याधि (gout, rheumatism)—सब प्रकारकी नयी या पुरानी सन्धिवातमें यह औषध विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होती है। शरीरमें लैकटिक एसिडकी वृद्धि हेतु वात-व्याधि होती है, यह तो पहले ही कह चुका हूँ। सन्धि स्थानके वातमें यह विशेष उल्लेख-नीय औषध है। हाथकी कलाई, घुटना, ऍडी, गर्दन, मेरुदण्डके नीचेके सन्धियों और अन्यान्य सधि-स्थानोंमें वेदना। हाथ और पैर बहुत दुर्बल मालूम होते हैं। थकावटके कारण हाथ और दोनों पैरोंको हिलाया-डुलाया भी नहीं जा सकता। नेट्रम फॉसके अन्यान्य रोगोंकी भाँति इस रोगमें भी अम्ललक्षण रहता है। साराश यह कि **अम्ललक्षण** रहनेपर सब प्रकारके रोगोंमें ही प्रायः बगैर द्विविधाके इस औषधका व्यवहार किया जा सकता है। वात-ज्वरके साथ अम्लगन्ध युक्त पसीना रहनेपर इस औषधके साथ **फेरम फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है। इस औषधकी वात-व्याधिमें हाथ-पैरकी सन्धियोंमें कष्टदायक तकलीफ ही अधिकतर दिखाई देती है। हाथकी अंगुलियाँ और पैरोंके तलवे तक वेदनाक्रान्त होते हैं। सन्धिस्थान समूह फूल जाते हैं, चेतनाहीन हो जाते हैं और दर्द करता है। वेदना हृद्‌पिण्डमें भी स्थानान्तरित होती है। वातके साथ गाढ़ा लालवर्णका पेशाब होना (फेरम फॉस)।

रेकाइटिस (rachitis)—यद्यपि **कैल्क फॉस** इस रोगकी प्रधान औषध है, किन्तु अम्ललक्षणके रहनेपर एव खाद्य-द्रव्यके ठीकसे हजम न होनेके कारण रोग होनेपर यही प्रधान औषध है; लेकिन इसके साथ कैल्क फॉस पर्यायक्रमसे बीच-बीचमें २।१ मात्रा करके व्यवहार करना पड़ता

है। किसी-किसीका कहना है कि शरीरमें लैकटिक एसिडकी वृद्धि होनेके कारण ही यह रोग उत्पन्न हुआ करता है ; अतः यही प्रधान औषध है।

चर्मपीड़ा-समूह (diseases of the skin)—सब प्रकारकी चर्मपीड़ाओंमें पनीर-सा पीले रंगका या मधुके रंगकी भाँति स्राव निकलनेपर। घावके ऊपर सोनेके रंगकी तरह पपड़ी पड़ती है। एरिथिमामें चमड़ेके ऊपर लाल रंगके चकते-चकते दाग दिखाई देते हैं। **मच्छड़के काटनेकी भाँति सारे शरीरमें लाल-लाल दाग और खुजली** एवं शिशुओंके **मस्तकमें पामा** या दाद-रोग। एरिथिमामें फेरम फॉसके साथ पर्याय-क्रमसे व्यवहार करना पड़ता है। जीभपर पीले रंगका लेप अथवा दूसरा कोई अम्ललक्षण रहनेपर। रातको और बिछावनकी गरमीसे बढ़ना।

क्षत (ulcer)—पाकस्थली अथवा अन्त्रके घावके साथ काफीके चूरकी तरह काला अथवा अम्लवमन। सब प्रकारके घावसे दूधकी छालीकी भाँति पीला स्राव, उपदंशका क्षत। जीभपर दूधकी छाली-सा लेप। जीभमें कैन्सर (cancer)।

जल जाना (burns and scalds)—**फेरम फॉस** और **केलि म्यूर** ही अवस्थानुसार प्रधान औषध हैं। कोई स्थान जलकर घाव हो जानेपर यदि उससे पीले रङ्गकी पीब निकले, तो यह औषध विशेष रूपसे लाभदायक है। शक्ति—३x, ६x।

प्लीहा (spleen)—अम्ल और अजीर्ण लक्षणके साथ बढ़ी हुई प्लीहामें यह औषध लाभदायक है। शक्ति—३x, ६x।

ज्वर (fever)—ज्वरमें यह औषध सर्वदा व्यवहृत नहीं होती, लेकिन अम्लवमन, अम्ल पसीना और कृमिके उपद्रव रहनेपर ज्वरमें यह दवा व्यवहृत होती है। उसके साथ प्लीहा बहुत बढ़ी रहनेपर यह और भी उपयोगी है। वात-ज्वरके साथ अम्ल पसीना। सर्वदा आलसीपन रहना। जिह्वाका वर्ण देखना चाहिये।

जिह्वा (tongue)—**जीभका पिछला भाग तर, पीले रङ्गकी दूधकी छाली-सी मैलसे आवृत** रहना इस औषधका विशेष लक्षण है।

ऊपर मानो केश है ऐसा मालूम होता है (नेट्रम म्यूर, साइलि) जीभके ऊपर जलसे भरे फफोले (कैल्क फॉस, नेट्रम म्यूर, साईलि)।

निद्रा (sleep)—**कृमिके कारण अस्थिर निद्रा।** सदा ही तन्द्रा आती है, किन्तु अच्छी नींद नहीं होती। १२।१ बजे रात तक नींद नहीं आती—इसके बाद आती है। सहवास और मृत्युके सम्बन्धमें स्वप्न देखता है। स्वप्न **भीतिपूर्ण**, विरक्तिकर और छाती **दबानेवाला।** निद्राके समय चिहुँकना, नाक और मलद्वार खुजलाना, दाँत कटकटाना इत्यादिके विषयमें तो पहले ही लिखा जा चुका है।

रोगके कारण (cause of diseases)—अत्यधिक मीठा खाना, तिक्त और तैलाक्त द्रव्यके आहारसे उत्पन्न रोगमें विशेष लाभदायक है।

वृद्धि (aggravation)—इसके सभी लक्षण सामयिक हैं; एक-एक समयमें एक-एक प्रकारके रोगकी वृद्धि होती है। जैसे—वज्राघातके समय कोई-कोई वेदना, सहवासके कारण कुछ रोग; अधिकांश लक्षण **प्रातःकालके समय, सन्ध्या समय और रातमें** बढते हैं। **खुली हवा** रोगी पसन्द नहीं करता। ठण्डेमें और बायीं करवट सोनेसे बहुत लक्षणोंकी वृद्धि होती है। **अम्ल द्रव्य, सिरका, चर्बी,** दूध, फल और ठण्डे खाद्योंसे पाकस्थलीकी हालत खराब होती है। स्नानसे अप्रवृत्ति।

ह्रास (amelioration)—उल्लेखनीय कुछ नहीं है, लेकिन बहुतसे लक्षण भोजन करनेके बाद घट जाते हैं।

शक्ति (potency)—सबसे अधिक ३x शक्ति ही व्यवहृत होती है, इसके बाद ही ६x शक्ति। १२x, ३०x, ६०x और २००x शक्तियाँ भी प्रायः व्यवहृत होती हैं।

सम्बन्ध—शिशुओंके उदरामयमें कैल्क-फॉसके साथ (अम्ल बदबूमय मलके द्वारा ही दोनोंका प्रभेद निर्णीत होता है); पानी पीनेके बादकी खाँसीमें साइलिसियाके साथ और रेतःपातके बाद पीठ व दोनों घुटनेकी दुर्बलतामें नेट्रम म्यूरके साथ नेट्रम फॉसका प्रभेद निर्णय करना आवश्यक है।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषधियाँ—शिशुओंके खट्टी गन्धवाले मलकी केवल नेट्रम फॉसको वायोकेमिक मतसे एक औषध कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। कैल्क कार्बके साथ इसकी तुलना हो सकती है। अधिकतर खट्टी गन्धवाले पाखानेमें रियुमेक्स समता रखती है। सारे शरीरकी खुजलीमें आर्टिका युरेन्स, डलिकस व सलफरके साथ इस दवाकी तुलना होती है। खट्टेपनके लक्षणकी प्रधानतामय गठिया वातमें इसके साथ कॉल्चि, लाइको व वेञ्जोकी तुलना होती है।

विषघ्न (antidote)—एपिस व सिपिया।

नेट्रम सल्फ्यूरिकम
(Natrum Sulphuricum)

*एण्टि सोरिक, *एण्टि साइकोटिक और एण्टि सिफिलिटिक

भिन्न नाम :—सोडियम सल्फेट, सोडि सल्फस।

साधारण नाम :—सल्फेट ऑफ सोडा, ग्लोवर्स सल्ट।

संक्षिप्त नाम :—नेट सल्फ (nat sulph)।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—साधारणतः समुद्रके जलमें और लवणाक्त झीलमें यह पाया जाता है। इसके अलावा साधारण लवणके साथ सल्फ्यूरिक एसिड मिश्रित कर विशुद्ध दाने तैयार किये जा सकते हैं। विशुद्ध दानोंसे दुग्ध-शर्कराके साथ चूर्ण तैयार किया जाता है।

क्रिया—शारीरिक कोषोंमें नेट्रम सल्फका अस्तित्व दीख नहीं पडता, केवल कोषोंके अन्दरके तरल पदार्थमें यह दिखाई देता है। शरीरसे अनावश्यक जलीयांशको निकाल देना ही इसका कार्य है एव इससे देहके अन्दरके रस और जलकी समताकी रक्षा होती है। **नेट्रम फॉस** किस तरहसे शरीरमें जल तैयार किया करता है, यह नेट्रम फॉस अध्यायमें वर्णित हुआ है। वही जल सोडियम क्लोराइड या **नेट्रम म्यूरके** द्वारा समस्त शरीर-विधानमें फैल जाता है एव नेट्रम सल्फसे शरीरस्थ अनावश्यक या जो जल आवश्यकतासे अधिक होता है, वह शरीरसे निकल जाता है। **नेट्रम म्यूर** और नेट्रम सल्फ दोनों ही जलको आकर्षित करते हैं; किन्तु नेट्रम म्यूर जलको आकर्षित करनेके बाद वह शरीरके निर्माण-कार्यके लिये जिस स्थानमें जो जरूरत पडती है, उसे वहाँ भेजा करता है और नेट्रम सल्फ बाकी अनावश्यक जलको शरीरसे निकाल देता है। धामनिक (arterial) रक्तके आवागमनमें गडबडी होनेपर **नेट्रम म्यूर** और शिराओंके (veinous) रक्तके आवगमनमें गडबडी होने पर नेट्रम सल्फ उपयोगी है।

जब नेट्रम सल्फकी कमी होती है, अर्थात् अनावश्यकीय जलीयांश

निकल नहीं पाते, तब रक्त दूषित हो जाता है एव विविध रोगोकी उत्पत्ति होती है। ज्वर, हैजा, शोथ, नाकसे हरे या पीले रंगकी आभा लिये श्लेष्मा निकलता है। नेट्रम म्यूर और सलफर इन दोनों औषधोंका एक साथ सम्मिश्रण होनेके कारण मैलेरिया ज्वरमें यह इतना सुफलदायक है। किस प्रकार शरीरका जलीय अश वढकर ज्वरादि उत्पन्न हो जाते हैं, उसके सम्वन्धमें कुछ कहना आवश्यक है। (१) पहले ही कह चुका हूँ कि **नेट फॉस**की क्रियासे शरीरमें जल उत्पन्न होता है एवं **नेट्रम म्यूर**मे वह सारे शरीरमें सचालित होकर अवशिष्ट अनावश्यकीय जल नेट्रम सल्फके द्वारा शरीरसे निकल जाता है। किन्तु यदि नेट्रम सल्फके अभावके कारण वह अनावश्यकीय जल न निकले, तब शरीरमें जलीय अंश वढ जाता है। (२) सूर्योत्तापसे जलाशयका जल वाष्प वनकर वायुके साथ मिश्रित हो जानेपर अथवा वर्षाकालकी वायु सदा तर रहनेके कारण उस समय वह वायु साँसके रास्ते आनेकी वजहसे जलीय पदार्थ भी शरीरमें प्रविष्ट होता है। स्वस्थ या अस्वस्थ प्रत्येक व्यक्तिके ही शरीरमें सर्वदा इस प्रकारकी क्रिया चल रही है; किन्तु जव शरीर स्वस्थ रहता है, अर्थात् नेट्रम सल्फ उपयुक्त परिमाणमें रहता है, उस समय अनावश्यक जलीय अश निकल जाता है। वाष्पमें जलीय अश अत्यधिक परिमाणमें रहनेपर वहुतसे लोगोंके लिये, खासकर दुर्वल धातुके व्यक्तियोंके लिये सह सकना असम्भव हो जाता है, अर्थात् उनके शरीरमें यथावश्यक नेट्रम सल्फ न रहनेके कारण प्रविष्ट जलीय पदार्थ प्रकृतिके द्वारा जिस किसी सुविधाजनक द्वारसे निकलनेकी चेष्टा करता है। कहना ठीक होगा कि रक्तमें जलीय अश भी इसी समम वढ जाता है। वह मलद्वारसे निकलनेपर पित्त-उदरामय या हैजा, नाकसे निकलनेपर सर्दी, मुखसे निकलनेपर पित्तवमन इत्यादि विविध नामोंके रोगलक्षण प्रकट होते हैं। ज्वरके समय जो कम्प अनुभूत होता है वह और कुछ नहीं, वल्कि शरीरके जलीयाशकी वृद्धि हेतु रक्तसचालन-यन्त्र, पेशी इत्यादिके भीतरका कम्पन ही वाहर प्रकट होता है। कुछ देर तक कम्प होनेके वाद ज्वरका वेग

बढ जाता है यह तो सभी जानते हैं। कम्पनके बाद ही रक्त चर्मपथसे प्रवाहित होता है, इसलिये शरीरका तापक्रम बढ जाता है और हृद्‌पिण्डमें जब रक्त प्रवाहित होता है, उस समय नाडीकी पूर्णता, द्रुतता इत्यादि सम्पादित होती है। शारीरिक रक्तमें आक्सिजनकी कमी होती है, इसलिए रक्त चर्मपथसे प्रवाहित होता है एव चमडेमें बाहरी हवाके स्पर्शसे आक्सिजन भी भीतर प्रवेश करता है। सबसे अधिक आक्सिजन साँसके रास्ते शरीरमें प्रवेश करता है। ज्वरमें जो शीघ्र-शीघ्र श्वास-प्रश्वासकी क्रिया होती है, इसका कारण और कुछ नहीं है, शरीरमें आक्सिजनकी अल्पता हेतु बाहरसे आक्सिजन ग्रहण करनेकी प्रकृतिका ही वह एक उपाय है। शरीरमे जब कुछ आक्सिजन प्रवेश कर जाता है, तब उस अनावश्यक जलका कुछ अश पसीनेके रूपमें निकलकर ज्वर छूट जाता है। इसलिये शीघ्र-शीघ्र श्वास-प्रश्वास और नहीं होता, किन्तु वह जलीयाश फिर क्रमशः बढ़ता रहता है एव कई-एक घण्टों या कई-एक दिनोंके बाद ज्वर आ जाता है। इस कारण सब प्रकारके ज्वरोंमें ही नेट्रम सल्फका अभाव दीख पडता है, इसलिये सूक्ष्म मात्रामें केवल उसे अथवा पर्यायक्रमसे प्रयोग करना पडता है। इन सब कारणोंसे वर्षाकालके विविध रोगोंमें तर वायु या जलाशयके नजदीककी दलदली जमीनपर रहनेके कारण जो सब रोग उत्पन्न होते हैं, उन्हींमें इस औषधका प्रयोग विशेष लाभदायक है। एक बातमें कहना यह है कि वर्षाकालके विविध रोगोंमें यही हम-लोगोंका प्रधान अवलम्बन है।

पित्तके ऊपर इस औषधकी आश्चर्यजनक क्रिया दिखाई देती है एव यह पित्तकी समताकी रक्षा करता है। पित्त-विकृतिके कारण जो कोई भी रोग क्यों न हो, उनमें ही यह अव्यर्थ दवा है। किसी रोगके साथ पित्त-वमन, पित्तमल, मुँहका स्वाद तिक्त, जीभ हरी आभा लिये भूरे रगका (greenish grey)—या हरी आभा लिये बदामी—या छाई (greenish brown) रंगका लेप चढ़ा रहनेपर इसे निःसन्देह चुना जा सकता है।

यह रक्तरोधक गुणयुक्त है; इसलिये स्त्रियोंके जरायु, नाक इत्यादि

स्थानोंसे रक्तस्राव होनेमें यह फलदायक है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—पित्ताधिक्य हेतु लक्षणोंके साथ जिस किसी रोगमें ही यह उत्कृष्ट है। मुखका स्वाद तिक्त, पित्तवमन, पित्तका दस्त, जिह्वापर पित्तज लेप इत्यादि सभी ही पित्ताधिक्यके लक्षण हैं।

२—जीभपर हरी आभा लिये भूरे रगकी (greenish grey) या हरी आभा लिये वादामी या छाई रंगका (greenish brown) लेप इसका प्रकृतिगत लक्षण है।

३—अधिक पित्ताधिक्य हेतु मानसिक उत्तेजना और आत्महत्या करनेकी इच्छा। जीवन धारणसे घृणा। वहुत अधिक चिडचिडा और उदास। प्रातःकाल लक्षणोंकी वृद्धि होती है।

४—मस्तकमें चोट लगने या गिर पडनेके कारण मानसिक रोग।

५—हाइड्रोजिनयेड कान्स्टिट्यूशन धातुवाले रोगियोंके, अर्थात जिन सव रोगियोंको तरी विलकुल ही वर्दास्त नही होती, वरसातमें और शुष्क वायुसे, तर हवामें परिवर्तन होनेपर जिनको पीडाकी उत्पत्ति होती है, उन लोगोंके सभी प्रकारके रोगोंका यही महौषध है। सिर्फ इतना ही नही, जलज पौधों, फल या मछली खानेसे भी रोग हो जाते हैं। साइकोटिक धातुके रोगियोंके लिये भी यह उपयुक्त दवा है। प्रात.काल के समय रोगकी वृद्धि इसका और एक उत्कृष्ट लक्षण है। पानीमें भीगकर विविध रोग।

६—नाकसे गाढ़ा रगका कफ निकलना एव कुछ देर तक रहनेके वाद वह हरे रगका हो जाता है। तर वायु वर्दास्त नही होती एव सर्दी हो जाती है।

७—पित्त वृद्धि हेतु मुँह पीला या कामला रोगकी भाँति पीला, फीका या रक्तहीन।

८—प्रथम और द्वितीय लक्षणके साथ कोई भी अजीर्णरोग। पेटमें वायु इकट्ठी होकर शूलवेदना। सीसेके व्यवहार हेतु शूलवेदना। पेटके

अन्दर सदा हड्हड-गडगड आवाज होती है। प्रातःकाल नींद टूटनेके बाद दो-एक कदम चलना आरम्भ करते ही पाखानेका अत्यन्त वेग होता है एवं इस कारण वडी शीघ्रतासे पाखानेको दौडना पडता है। तरल मल त्यागनेके वाद मनमें आनन्दका उदय होता है।

९—यकृतकी वेदना वायीं करवट सोनेसे, हाथसे स्पर्श करनेपर और तर वायुसे वृद्धि होती है। १म और २य लक्षण देखें। यकृतमें रक्ताधिक्य (फेरम फॉस)। विरक्तिके कारण कामला रोग।

१०—१म और २य लक्षणमें वर्णित लक्षणोंके रहनेपर हैजेमें व्यवहृत होती है। यह हैजेका प्रतिषेधक है।

११—वहुमूत्र रोगमें पेशावकी चीनीको घटानेके लिये यह औषध वहुत क्षमता रखती है। पेशावमें लिथिक एसिडकी तलछट रहती है। ईंटके चूरकी तरह एवं वालू-सी तलछट पेशावमे रहती है। पेशावके साथ अत्यधिक पित्त निकलता है।

१२—जलन और दर्दविहीन पुराने गनोरिया रोगमें गाढ़ा पीला-सा या हरी आभा लिये स्राव निकलता है। लुप्त प्रमेह रोग।

१३—ऋतुस्रावके पहले अथवा ऋतुस्रावके समय नाकसे रक्तस्राव। अधिक परिमाणमें ऋतुस्राव होता है एव निकलते समय वह जिन-जिन स्थानमें लगता है, वे स्थान खुजलाते हैं, जलन होती है और उन स्थानोंमें फुन्सियोंकी तरह हो जाते हैं। इस प्रकारके लक्षणयुक्त श्वेत-प्रदर।

१४—खाँसीके कष्टसे विछावनपर उठकर वैठनेके लिये वाध्य होता है एव घटनेकी आशासे हाथोंसे छातीको दवा रखता है। वायें फुसफुसके नीचे घाव-सी वेदना रहना इस औषधका एक उल्लेखनीय लक्षण है। रस्सीकी भाँति गाढा हरे रगका कफ निकलता है। वरसातमें और तर वायुमें पीडाकी उत्पत्ति या वृद्धि। ये सव लक्षण दमा, न्यूमोनिया, साधारण खाँसी इत्यादि जिस किसी भी फुसफुसके रोगके साथ रहें, उनमें ही इस औषधसे सुफल मिलता है। प्रातःकालके समय खाँसीकी वृद्धि। पित्तलक्षण रहनेपर और भी उपयोगी है।

१५—बेरीबेरी और शोथ रोगकी यह प्रधान औषध है। बरसातमें एवं दलदली जगहमें रहनेके कारण रोग।

१६—ज्वरके साथ पित्त लक्षण रहनेपर।

विशेषता (peculiarity)—इस औषधके विषय याद आनेसे ही पित्त-वृद्धिजनित लक्षणोंके विषय ही याद हो जाते हैं। फलस्वरूप जिस किसी भी रोगके साथ ही क्यों न हो, अगर मुखमें तिक्त स्वाद, पित्त वमन, पित्तका दस्त, हरी आभा लिये खैर या राखके रंगके लेपयुक्त जिह्वा, मुँह और आँखें पीले रंगकी इत्यादि पित्त-वृद्धिजनित लक्षण रहे, तो उनमें ही इस औषधके व्यवहारसे निश्चय ही उपकार होगा। जिस किसी भी स्थानसे ही क्यों न हो, हरा-सा या पीले रंगका स्राव होना इसका विशेष लक्षण है। बरसात में और तर वायुमें रोगके लक्षणोंकी वृद्धि या उत्पत्ति होनेपर यह सब प्रकारके रोगोंमें ही अच्छा काम करता है।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—पित्ताधिक्य हेतु मानसिक उत्तेजना, अधिक पित्त निकलनेसे उत्तेजना अत्यधिक बढ़ जाती है एवं इसलिये आत्महत्या तक करनेमें भी संकोच नहीं करता। अपने जीवनके प्रति कुछ भी ममता नहीं रहती, वह सोचता है कि उसकी सभी इच्छायें पूरी हो गई हैं। रोगी बहुत उदास, चिड़चिड़ा, बात करना या किसीकी बातको सुनना भी नहीं चाहता। साथी भी नहीं चाहता। मानसिक अवसाद इतना अधिक कि उत्तम गाने-बजानोंसे भी रोगिणी दुःखी हो पड़ती है। पतला मल त्यागनेके बाद मन आनन्दित होता है। मनके दुःखसे रोती है। मस्तकमें बाहरी चोटके हेतु विविध जटिल मानसिक रोग। चोट या गिर पड़नेके कारण नाना प्रकारके मस्तिष्क रोग। प्रातःकालके समय और तर वायुमें सभी प्रकारके रोग लक्षणोंकी वृद्धि—इसका एक प्रधान लक्षण है।

सिर-दर्द (headache)—मस्तकके ऊपरी हिस्सेमें अत्यधिक टपक (pulsating) और जलन करनेवाला सिर-दर्द। पित्त वमन और पित्तिक मलयुक्त अतिसार, मुखका स्वाद तिक्त, हरी आभा लिये

वादामी—या राखके रंगका लेपयुक्त जिह्वा इत्यादि **पैत्तिक लक्षणयुक्त सिर-दर्द।** सिर-दर्दके साथ उदर वेदना और मिचली आना। मस्तकके निम्न भागमें अतिशय वेदना, ऐसा मालूम होता है। मानो मस्तकके निम्न भागमें कुछ चवा रहा है या सँडसीसे हड्डीको चूर कर डाल रहा है। ललाटमें इतनी वेदना कि मालूम होता है मानों वह फट जायगा। भोजनके वाद इस भावकी वृद्धि। सिर-दर्दके साथ चक्कर आना और तन्द्रा; इससे पाण्डु या कामला रोग होनेके पूर्व लक्षण प्रकट होते हैं। अतिरिक्त पित्त निकलनेसे भी सिरमें चक्कर आता है एव मानसिक उत्ते-जना आती है। मस्तिष्कमें चोट लगना या गिर पडनेके कारण मस्तिष्क का कोई भी रोग। मालूम होता है मानो मस्तिष्क शिथिल हो गया है, दोपहरके पहले और चुपचाप रहनेपर इस लक्षणकी वृद्धि होती है। सविराम या स्वल्पविराम ज्वरके साथ सिर भारी मालूम होना। पित्ता-धिक्यजनित सव प्रकारके सिर-दर्दकी यही एकमात्र औपध है।

मेरुमज्जा-झिल्लीका प्रदाह (spinal meningitis)—डॉ० केण्टके मतसे इस रोगकी यही एकमात्र औषध है। इससे वहुत थोडे समयके अन्दर मस्तिष्ककी रक्ताधिक्यतामें कमी हो जाती है। **मस्तिष्कके निम्न भागमे अचानक चवाने या काटने-सी वेदना।** वेदनाकी प्रवलता रोगीके मस्तकको मानो पीछेकी तरफ खींच लाती है। मस्तकमें अत्यधिक रक्तसचय, प्रलाप वकना और वीच-वीचमें आक्षेपिक लक्षण। टंकारके साथ शरीर पीछेकी तरफ धनुपकी भाँति टेढा हो जाता है।

सन्यास (apoplexy)—रोगाक्रमणके पहले मस्तकमें अत्यधिक रक्तसचय या पैत्तिक लक्षण रहनेपर यह औपध फलदायक है।

अधकपारी (hemicrania)—पैत्तिक (पित्तसे उत्पन्न) लक्षणयुक्त अधकपारी। मैलेरिया या भीगी दलदली जगहमें रहनेके कारण रोग।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—आँखका कन्जक-टाइवा पीले रगका। पलकोंमें वडे वड़े **फफोलोंकी भाँति मासाकुर उत्पन्न होता है** और उसके साथ आँसू गिरना और आँखोंमें जलन। प्रमेह

या साइकोसिस विपसे उत्पन्न अक्षिपुट (पलकों) में पूर्वोक्त प्रकारका मांसोद्भेद। पुराने चक्षु-प्रदाहके साथ ग्रेन्यूलर लिड्स। आँखोंसे हरे रंगकी पीब निकलती है एवं उसके साथ भयानक आलोकातंक (रोशनीसे भय)। प्रातःकाल पलकें कीचड़से सटी रहती हैं (नेट्रम म्यूर, नेट्रम फॉस) एवं रोशनीकी तरफ ताक नहीं सकता। कार्नियामें दाग होते हैं। सुबह पलकोंके पिछले हिस्से खुजलाते हैं। अपराह्नके बादसे सन्ध्या तक आँखें सूखी मालूम होती हैं और जलती हैं।

कर्णपीड़ा-समूह (diseases of the ear)—कर्णशूल (मेग फॉस, साइलि)। रोगी सोचता है मानो कानके छेदसे कोई द्रव्य बाहर निकला आ रहा है। कानके भीतर बिजली-सी चुभन मालूम होती है। ठण्डे और तर स्थानोंमें या तर वायुमें रहनेसे वृद्धि। सन्ध्या समय कानके अन्दर चिड़ियोंकी बोली-सी आवाज। दाहिने कानमें वेदनाकी अधिकता।

सर्दी (coryza)—नाक बन्द, नाकके अन्दर शुष्कता एवं जलन। नाकसे गाढ़ा पीले रंगका श्लेष्मा निकलना एवं वह धूपके तापसे अथवा हवामें थोड़ी देर तक रहनेपर हरे रंगका हो जाता है। नाकमें खुजलाहट रहती है। प्रातःकाल-नाकसे गाढ़ा हरी आभा लिये श्लेष्मा निकलता है। **वायुका परिवर्तन होनेके साथ साथ सर्दी लग जाती है, बरसातमें रोगोंकी वृद्धि या आरम्भ। ठण्डे तर स्थानमें रहनेके कारण सर्दी।**

नाकसे रक्तस्राव (bleeding from the nose)—ऋतु होनेके समय, पहले या ऋतुके बदले नाकसे रक्तस्राव होनेपर इस औषधसे उपकार होता है। प्रायः ही अपराह्नके समय इस प्रकार होता है। इस औषधमें रक्तरोध करनेकी विशेष ताकत है। शक्ति—निम्नक्रमसे अच्छा फल मिलता है।

मुखाकृति (appearance of the face)—बहुत बार चेहरेको देखकर इस औषधका निर्वाचन करना सहज हो जाता है। पित्ताधिक्य-जनित मुख कागजकी तरह पीलापन लिये फीका, रक्तहीन और पीले रंगका।

मुखके रोग (diseases of the mouth)—मुखका स्वाद तिक्त, खराव, सदाही मुखके अन्दर गाढ़ा लसदार सफेद कफ जमा रहता है। इस कारण उसे निकाल देनेके लिये डकार उठती है और खखारना पड़ता है। जीभ, मुख और गलेमें मिरचाकी तीताईकी भाँति जलन मालूम होती है।

जिह्वा (tongue)—जीभके पिछले हिस्सेमे मलिन हरी आभा लिये या वादामी या राखके रंगका लेप चढ़ा रहना। जीभ लसदार, जीभके अग्रभागमें जलन और फफोले उत्पन्न होते ह (केल्क सल्फ, नेट म्यूर)। जीभका स्वाद तिक्त या अस्वादहीन (केलि सल्फ, नेट म्यूर), जीभके ऊपर कीचड (कादा) की तरह मैल। जीभ लाल वर्णका।

दन्तशूल (toothache)—दन्तशूलमें तम्वाकूका धुआँ लगनेसे अथवा तम्वाकू सेवन करनेसे, ठण्डे जल या ठण्डी वायुसे आराम मालूम होनेपर यह उत्कृष्ट दवा है। रातमें, विशेपकर, विछावनपर सोये रहनेकी हालतमें, नींद टूट जानेपर एव गरम जल पीनेसे दन्तशूलकी वृद्धि होती है। चर्मरोग दोपग्रस्त धातुवालोंके दाँतकी जड शिथिल होना।

डिफ्थीरिया (diphtheria)—इस रोगमें जव हरी आभा लिये वमन होता है, मुखमें तिक्त स्वाद और मुखसे तिक्त पानी निकलनेका लक्षण रहता है, उस समय यह व्यवहार्य है। गलनलीके अन्दर वेदना और घाव मालूम होता है। कडी चीजें निगल नहीं सकता। घूँट निगलते समय ऐसा मालूम होता है मानो गलेके अन्दर गोली-सी कोई चीज है (नेट्रम फॉस, साइलि)।

अजीर्णता (dyspepsia)—पित्तवमन, पित्तका दस्त, मुखमें तिक्त स्वाद, जिह्वापर पित्तज लेप (greenish grey or greenish brown) इत्यादि पित्त वृद्धिके लक्षणोंके साथ जिस किसी प्रकारका भी अजीर्ण रोग। जीभपर हरी आभा लिये वादामी अथवा हरी आभा लिये राखके रगका लेप रहनेपर पित्त वृद्धि समझा जाता है एव इस हालतमें नेट्रम सल्फ लाभदायक है, किन्तु जिह्वापर जव सफेद रगकी मैल रहती है, तव

पित्तका कम निकलना समझकर केलि म्यूरका प्रयोग करना होगा। अतः पित्त-विकृति होने से ही नेट्रम सल्फका प्रयोग करना ही होगा ऐसी बात नही ; पित्त निकलना केवल अधिक होनेपर ही इसका प्रयोग हो सकता है। पेटमें अत्यधिक वायु सञ्चित होकर शूलवेदना, वेदनाकी प्रकृति काटनेकी भाँति (cutting pain)। प्रातःकाल पाकस्थली शून्य होनेपर इस वेदनाकी अधिकता। वायु निकलनेपर उदरमे कष्ट होना एव डकार आनेपर शून्यताका घटना। पहले सिर भारी होकर अम्ल या लवणाक्त जल-वमन होता है एव इसके वाद अवसन्नता मालूम होती है। उदरके स्थान-स्थानमें वायु इकट्ठी होती है एव पेटमें दर्द करता है। प्रतिदिन सन्ध्या समय शीतल पेयके लिये उत्कट इच्छा। सीसेके व्यवहार हेतु शूल-वेदना (lead colic) ; १x या २x क्रम वार-वार व्यवहार करना चाहिये। पाकस्थली अत्यन्त स्फीत और भारी मालूम होनेपर श्वास छोडनेमें कष्ट होता है एव वमनोद्रेक होता है। भोजन करनेकी इच्छा नही होती, आहार करते समय सिरमें चक्कर आता है एव वादमें वमनोद्रेक होता है। शाम को उदरसे ऊपर तक वेदना मालूम होती है और नि:श्वास छोडनेमें कष्ट मालूम होता है। गलेमें अम्ल डकार उठती हे और छातीमें जलन होती है। साग-सब्जी वर्दास्त नही होती। रोटी और माससे अप्रवृत्ति। शक्ति—६x।

उदरामय (diarrhœa)—हरे रगका पित्तयुक्त दस्त या वमन। जिह्वाके लक्षण देखना चाहिये। प्रातःकाल नींद टूटनेके वाद २।१ कदम चलनेके वाद ही मलका वेग आता है एव शीघ्रतासे पाखाना जाना पडता है। प्रातःकाल उस प्रकार २।१ वार तरल दस्त होता है, या नही तो दिन-रातमें भी नहीं होता। केल्क फॉसकी भाँति इस औषधमें भी मल त्यागनेके समय अत्यधिक वायु निकलनेका लक्षण है। नेट्रम सल्फमें अत्यधिक पेट वोलना और पेटमें भुट-भाट या हड-हड़ गड-गड आवाज होनेका लक्षण है। लेकिन पेटकी दाहिनी ओरके तल पेट (ileocecal region) में ही इस प्रकारकी आवाज अधिक होती है। पुराने उदरामयमें जव यकृत

आक्रान्त होकर दाहिनी ओरके पेटमें वेदना होती है और उसमें स्पर्श तक भी नहीं सहा जाता। **वरसातमें, तर वायुमें, प्रातःकालके समय, पक्के घरकी निचली सतहमें या दलदली जमीनपर रहनेके कारण रोगकी उत्पत्ति या वृद्धि होनेपर यह अति उत्कृष्ट दवा है।** आहार करनेके वाद भी रोगकी वृद्धि होती है। वृद्धोंके उदरामयमें अधिकांश समय ही इस दवाकी आवश्यकता होती है एवं इससे वहुत शीघ्र रोग आराम हो जाता है। लडकोंको वहुत वार पीले रंगका तरल दस्त होता है एवं पाकस्थलीमें अम्ल उत्पन्न होता है। श्लेष्माधिक्य धातु में यह औषध अच्छा काम करता है। तरल मल त्यागनेके वाद मनमें आनन्द होना इस औषधका निर्वाचक लक्षण है। आन्त्रिक ट्यूवर्क्युलोसिस रोगकी प्रथमावस्थामें इस औषधसे आश्चर्यजनक फल होता है। **मैग फॉस**की तरह जोरसे पिचकारीकी भाँति दस्त होता है। मल त्यागनेके वाद मलद्वारमें जलन होती है (नेट्रम म्यूर, साइलि)। और कुटकुटाता है। तरल मल भी कूथन देकर त्यागना पडता है (साइलि)। दस्तके पहले पेटमें दर्द करना और मल त्यागनेके वाद उसका घटना। शक्ति—१२x और पुराना होनेपर ३०x एव २००x।

रोगीका विवरण—शहरके एक चिकित्सकको ही वहुत दिनोंसे उदरामय था। पहले वे ट्यूववेलका जल व्यवहार करते थे। अभी स्थान परिवर्तन तथा क्लोरिन मिला शहरके नलका जल व्यवहार कर उदरामय किसी तरह भी अच्छा नही हो रहा था। यकृतकी गडवडीके कारण अनियमित पाखाना वचपनसे ही था। वहुत प्रकारकी चिकित्सा से भी कोई उपकार नही हुआ था। सवेरे नींद टूटनेके वाद ही पाखानेका वेग होता था। मलके साथ वायु निकलना, पेट गडगडाना, वहुत पतला मल होनेके दिन पिचकारीकी तरह वेगसे मल निकलना, मलमें ऑव था और नरम मल भी समय-समयपर कॉंखकर निकालना पडता था। सवेरे स्नान करनेके समय तक २-३ वार पाखाना होता और दूसरे समय भी २-१ वार होता था। रातको विशेष कुछ नहीं होता। पाखानेके वाद ही शरीरमें कुछ आराम मालूम होता था। मालूम होता है जैसे

और पाखाना नहीं होगा और उस समय काम-धन्धा करनेमें भी अच्छा उत्साह होता। जो हो, नेट्रम सल्फ २०० एक मात्रा देनेपर आशासे भी अधिक फायदा मिला। विलकुल आरोग्य होनेमें समय लगा था, क्योंकि रोगका मूल कारण तथा उत्तेजक कारण जो जल था, उसका व्यवहार बन्द करना सम्भव न था। कुछ दिनोंके बाद वे अच्छे जरूर हो गए। इस रोगीको कच्चा बेल भुना सवेरे खाली पेट थोडेसे गुडके साथ खानेके लिए देनेसे काफी फायदा हुआ था और उसके बाद बहुतसे रोगियोंको इसी व्यवस्थासे आश्चर्यजनक फल मिला था। इस रोगीने वैद्यकी चिकित्सा भी कुछ दिन कराई, किन्तु अच्छा फल नहीं हुआ।

यकृत-पीड़ासमूह (diseases of the liver)—मुखमें तिक्त स्वाद, पित्त वमन, पित्तमय मल, मुँह और आँख पीले रंगकी, जिह्वापर पित्तज लेप एवं दाहिने कन्धेमें वेदना रहनेपर यह औषध उपयोगी है। यकृतमें रक्ताधिक्य और विरक्तिके कारण कामला (jaundice)। यकृत स्फीत और वर्द्धित एवं थोडेसे स्पर्शसे भी दर्द मालूम होता है। यकृतमें तीव्र कोंचनेकी भाँति वेदना होती है और चरांता है। मानसिक परिश्रमके बाद यकृत उत्तेजित होनेपर केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। **बायीं करवट सोनेसे यकृतकी वेदनाकी वृद्धि होती है। बरसातमें और तर वायुमें भी रोगकी वृद्धि होती है।** यकृतके सब प्रकारके रोगोंमें दूसरी दवा निर्देशित होनेपर भी यह औषध बीच-बीचमें २।१ मात्राकर प्रयोग करना पडता है।

रोगीका विवरण—(१) १ली अगस्त, १९४८ साल तीसरे पहर श्रीयुक्त बाबू राजेन्द्रनाथ सरकार, एम० ए०, बी० एल०, एम० एल० ए० महोदयके खुलनास्थित मकानमें उनके डेढ़ वर्षकी उमरके लडकेको देखनेके लिए बुलाया गया। लडका दो सप्ताहोंसे ज्वरसे भोग रहा था। चिकित्सा होमियोपैथिक मतसे हुई थी, किन्तु हालतमें विशेष कोई परिवर्तन दीख नहीं पडा था। औषध कैमोमिला, एकोनाइट, आर्सेनिक, लाइको, इपिकाक इत्यादि दी गई थीं।

ज्वर २४ सो घण्टे रहता था—किन्तु वहुत अधिक नहीं, घटता वढ़ता है कि नहीं ठीक समझ नहीं पडता ; खाँसी, कै, रोना-धोना था। ललाट सिकुडा, पेशाव लाल, कैके साथ पीले रंगका पित्त रहते देखा जाता था। पहले सारा दिन रोना-धोना करता था और रातभर अच्छा रहता था। किन्तु अव वैसा नहीं था। ठण्डा नहीं था। पाखानेमें भी कोई विशेषता नही थी।

औषध—**नेट्रम सल्फ** ६x दो दिनोके लिये छः मात्रा। २४ घण्टे वाद खवर मिली—ज्वर वन्द हो गया है और कै भी और नहीं हुई है। पूरी तरहसे आरोग्य होनेके लिए २-१ मात्रा दवा भर दे दी।

(२) १६६१ सालके अप्रिल महीनेके अन्तिम सप्ताहमें १५-१६ वर्ष की उमरकी एक वालिका जॉण्डिस या कॅवल रोगकी चिकित्सा करानेके लिए आई। उत्तर कलकत्तेके किसी मुहल्लेमें रहती थी। दो सप्ताहसे रोगका आरम्भ हुआ था। दोनो आँखें, चेहरा, पेशाव, हथेली इत्यादि पीले रगके हो गए थे। मल सफेदी लिए, खानेकी रुचि नहीं थी। मुखमें स्वाद नहीं और जीभका रग भी उल्लेखनीय नही था। दूसरा भी कोई लक्षण नहीं मिला।

चेलिडोनियम २x नित्य ४ मात्रा कर देकर ४ दिनमें भी विशेप कोई लाभ नही हुआ। केलि म्यूर ६x देकर भी कोई फायदा नहीं हुआ। इसके वाद ध्यान देकर देखा कि सदैव ही वालिकाका चेहरा उदास प्रकृतिका है। घरमें भी मानसिक शान्ति नही थी। **नेट्रम सल्फ** ६x तीन मात्रा कर दो दिन देते ही उल्लेखनीय परिवर्तन दीख पडा। ३-४ दिनोके अन्दर मल पीले रगका हो गया, पेशावका रग वहुत कुछ साफ हो गया और रोगिणीको खानेकी रुचि तथा भोजनका परिमाण वढ़ गया। वादमें उसी दवाकी १२x शक्ति एक मात्रा कर देनेपर थोडे दिनोंके अन्दर रोगिणी पूर्ण स्वस्थ हो गई।

मन्तव्य—मानसिक लक्षण न पानेपर इस रोगिणीके लिए नेट्रम सल्फको चुनना सम्भव होता कि नहीं सन्देह है। अन्यान्य रोगियोकी

तरह इस रोगिणीके लिए भी औषधकी मात्रा एक ग्रेन ही दी गई थी।

पित्त-पथरी (gall-stone)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है। पित्तवमन, पित्तका दस्त, कोष्ठबद्धता, मुखमें तिक्त स्वाद इत्यादि पित्त लक्षण रहनेपर यह औषध उत्कृष्ट है। **कैल्क फॉसके** सेवनसे नयी पित्तशिलाओंका होना वन्द हो जाता है, इसलिये वहुत वार दोनों औषधोंको पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पड़ता है। पत्थर पित्तनलीसे निकलते समय यदि अत्यधिक आक्षेपिक वेदना हो, तो इस औषधके साथ **मैग फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिये। शक्ति—३x, ६x, व १२x।

पित्तपथरीमें साधारणतः कैल्क-फॉ, मेग-फॉ व नेट्रम-स—ये तीन दवायें ही व्यवहृत होती हैं। रोगकी नई हालतमें **मैग-फॉ** व नेट्रम-स वार-वार देनेकी आवश्यकया होती है।

वहुत दिनोंके पुराने रोगमें अथवा लापरवाहीकी दशामें **कैल्क-फॉ** व **साइलिसिया** व्यवहृत होते हैं। पित्तपथरीको गलानेमें विशेषकर वडे आकारकी पित्तपथरी होनेपर साइलि अत्यधिक कार्यशील होता है। पर्यायक्रमसे वीच-वीचमें या नित्य २-१ मात्रा कर **कैल्क-फॉका** प्रयोग करना पड़ता है।

पथरीका उत्पन्न होना वन्द करनेके लिये कैल्क फॉ श्रेष्ठ औषध है। पैत्तिक लक्षण रहनेपर पर्यायक्रमसे नेट्रम सल्फ। कोई-कोई ग्रन्थकार **नेट्रम-फॉस** निम्न क्रमका पथरी उत्पन्न होना वन्द करनेके लिये व्यवहार करनेको कहते हैं। उदरके निचले भागके दाहिनी तरफ असहनीय दर्द होनेपर **कैल्क-फॉ** १२x, नेट्रम-स १२x व्यवहृत होते हैं।

रोगीका विवरण—ई० १६५० सालकी....तारीखके तडके खुलना शहरके समीपवर्ती टुटपाड़ाके श्री श्रीकान्त मण्डलने अपनी स्त्रीको एक वार अविलम्व देख आनेके लिए विशेष-रूपसे अनुरोध किया। क्योंकि रोगिणी यकृतके तेज दर्दसे मृत्युतुल्य कष्ट भोग रही थी। मैं भी तुरन्त रवाना हो गया। सुना कि खुलना शहरके एलोपैथिक चिकित्सकों द्वारा उसकी चिकित्सा समाप्त हो चुकी है। एलोपैथिक डॉक्टर वावू

लोगोंने नाना प्रकारकी दवाइयाँ दी थीं। किन्तु उनसे थोड़ा बहुत भी फायदा न होनेके कारण अन्तमें मॉर्फिया इन्जेक्शन दिया। उनसे थोड़े समयके लिए तकलीफ घटी। अन्तमें कलकत्तेमें एक्स-रे परीक्षा द्वारा रोग निर्णय करनेका उपदेश दिया। अर्थात् हमलोगोंने भरसक चेष्टा की और उसकी मजूरी भी पा चुके—अब मुनाफेके साथ और रुपए कमाना सम्भव नहीं, अतएव—हमलोगोंके पाससे दूसरी जगह चले जाओ। जो हो, एक अनुभवी यानी बहुतेरे रोगियोंको देखे हुए एक होमियोपैथिक चिकित्सकको बुलाया गया। उन्होंने भी होमियोपैथिक औषधसे कोई विशेष सुविधा प्राप्त न कर सकनेपर नाना प्रकारकी दर्दनाशक एलोपैथिक टिकियोंका प्रयोग किया। अन्तमें मुझे बुलाया गया था। मैंने रोगिणीकी परीक्षाकर निम्नलिखित लक्षणोंको संग्रह किया—

एक वर्षसे स्वास्थ्य खराब है—बदहजमी, अजीर्ण इत्यादि बीच-बीचमें होता है। पिछले १०-१२ दिनोंसे यकृतमें असहनीय पागल बना देनेवाला दर्द होता था। पिछले ३-४ दिनोंसे उसकी तीव्रता और भी बढ़ गई थी, दिन रात हमेशा दर्द रहता था। दर्द किस प्रकारका था यह भाषामें प्रकट नहीं किया जा सकता, फट जाने-सा, मरोड़ इत्यादि प्रकृतिका। किसी करवट ही सो नहीं सकती। बेचैनी—एक बार खड़ी होती है, एक बार इस करवट एक बार उस करवट करना, ४-५ ऊँचे तकियेके ऊपर कुछ ठेस लगाकर कुछ देर रह सकती थी। अत्यधिक प्यास—किन्तु थोड़े परिणाममें जल पीती थी, कब्ज, जीभका स्वाद तीता, तीती कै, ओकाई, भूख न लगना, मृत्युकी कामना करना, बहुत उदास प्रकृति इत्यादि लक्षण थे।

नेट्रम सल्फ ६x—हर घण्टेपर एक मात्राकर सेवन करनेका निर्देश दिया। सध्या समय खबर मिली कि अब २५-३० मिनटके अन्तर-अन्तर से दर्द उठता है—पहलेकी तरह लगातार दर्द नहीं रहता। उसी दवा को अधिक समयका अन्तर देकर सेवन करनेके लिए कह दिया। किन्तु दर्द न उठनेपर दवा बन्द रहेगी।

दूसरे दिन—कई एक दिनोंके बाद पिछली रातको बीच-बीचमें नींद हुई थी। दर्द न रहनेपर बिछौनेपर सो सकती थी। कै या ओकाई नहीं थी। २ दिनोंके बाद एक कड़ा पाखाना हुआ था। औषध नेट्रम सल्फ ३० दो मात्रा दी गई।

तीसरे दिन—दर्द और नहीं उठा था। खूब भूख लगने लगी थी। कच्चे हरे नारियलके जलके अलावे अब वार्लो, फल इत्यादिका पथ्य दिया जा रहा था। औषध बन्द।

चौथे दिन—हर हालतसे अच्छी थी। तीसरे पहर थोड़ा ज्वर हो रहा था। जीभका स्वाद अभी भी तीता था। छाती, पीठ फटनेके कारण बहुत कष्ट पा रही थी। यकृतकी परीक्षा करनेपर उसकी आकृति बहुत छोटी मालूम पड़ी। ३-४ दिन पहले यकृत-स्थानपर हाथ नहीं लगाया जा सकता था। आज टीप-टापकर परीक्षा कर पाया था। **चेलिडोनियम** ३० तीन मात्रा व बादमें २०० एक मात्रा देकर रोगिणीकी चिकित्सा खतम कर दी व अन्नका पथ्य दिया।

इस प्रकार एक कठिन रोगिणीका पागल बनानेवाला कष्टपूर्ण दर्द नेट्रम सल्फकी कई एक मात्रासे २४ घण्टेके अन्दर ही सम्पूर्ण आरोग्य हो गया। एक सप्ताहके अन्दर रोगिणी सम्पूर्ण आरोग्य हो गई थी यह कहकर मत प्रकट करना केवल होमियोपैथिकके लिए ही सम्भव हुआ।

इस रोगिणीका यह विवरण इस ग्रन्थके रचयिताके मानसिक लक्षणोंकी मेटिरिया मेडिका नामक पुस्तकसे उद्धृत किया गया है।

पेरिटोनाइटिस (peritonitis)—अंत्रके आवरक-झिल्लियोंका नाम पेरिटोनियम है। उक्त झिल्लियोंके प्रदाहको पेरिटोनाइटिस कहते हैं। उक्त झिल्लीके प्रदाहके साथ मुखमें तिक्त स्वाद इत्यादि पित्तलक्षण विद्यमान रहनेपर यह उपयोगी है। उदरमें जल-सञ्चय ; किन्तु उदरामय रहते हुए भी यदि वह जल न घटे, तो इस औषधका प्रयोग करना चाहिए। प्रथमावस्थामें प्रबल ज्वर इत्यादि रहनेपर **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

रक्तामाशय (dysentery)—पित्तलक्षण वर्त्तमान रहनेपर यह व्यवहृत होता है। इस रोगकी प्रधान औषध **केलि म्यूर** है।

हैजा (cholera)—हैजाके आरम्भ होनेके समय प्रत्येक दिन इस औषधका ३x चूर्ण शक्ति २।१ मात्रा करके सेवन करनेसे रोगके आक्रमणका भय नही रहता। प्रथमावस्थामें इस औषधका प्रयोग करनेसे सहज ही में रोग आराम हो जाया करता है। पित्त-वमन, पित्तका दस्त, मुखमें पानी आना और जीभपर पित्तज लेप रहनेपर यह विशेष उपयोगी है। वालकोंके उदरामय और हैजेमें साधारणतः कैल्क फॉस, फेरम फॉस और नेट्रम फॉस—इन तीनों दवाओंकी अधिक आवश्यकता नही होती।

शक्ति—३x।

कोष्ठबद्धता (constipation)—मल कडा, लेंडकी भाँति एव उसमें रक्त तथा श्लेष्मा मिला रहता है। **तरल मल भी कूथन देकर निकालना पड़ता है।** मल त्यागनेके समय दुर्गन्धयुक्त वायु निकलना। मल त्यागनेके समय और उसके वाद मलद्वार खुजलाता है और कुटकुटाता है। अधिक मात्रामें यह औषध खिलानेपर जुलावका काम करती है (नेट फॉस)।

शूल-वेदना (colic)—अजीर्णता अध्यायमें सभी लक्षण वर्णित हुए हैं। शक्ति :—१x, २x और ३x।

भगन्दर (fistula in ano)—मलद्वार लाल वर्ण, घाववाले स्थानपर और पीवका रग हरा एव अन्य कोई पित्त लक्षण रहनेपर। अधिक दिनोंकी स्थायी पीडा। शक्ति—३०x और २००x ; निम्न क्रमसे भी लाभ होता है।

अर्श (ववासीर—piles)—अर्शके साथ पित्त लक्षण और जीभके लक्षण रहनेपर इससे लाभ होता है। वहुतसे रक्तस्रावी, अर्श-रोगी इस औषधसे आरोग्य हुए हैं। प्रधान औषध **कैल्क फ्लोर**के साथ पर्याय-क्रमसे।

वहुमूत्र (diabetes)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है। अन्य

कोई औषध निर्वाचित होनेपर भी इस औषधकी २।१ मात्रा करके प्रयोग करना पड़ता है। मूत्रकी चीनी घटानेमें यह औषध अद्वितीय है। **पेशावकी तलछट (sediment) मे अत्यधिक परिमाणमे लिथिक एसिड जमता है। वह तलछट देखनेमे ईंटके चूरकी तरह होता है एवं जिस पात्रमें पेशाव करता है, उसमे चारों तरफ वह लगा रहता है। पेशावमे अत्यधिक पित्त निकलता है।** पेशावके नीचे वालूके कणकी भाँति दीख पड़ता है। अधिक परिमाणमें पेशाव होता है। यकृतकी विकृतिके कारण रोग होनेपर बहुत वार इस औषधके साथ **केलि म्यूर** व्यवहार करनेकी आवश्यकता होती है और उसीसे रोग अच्छा हो जाता है। रातमें अल्प परिमाणमें वार-वार पेशाव होता है।

एकशिरा (hydrocele)—अण्डकोषके अन्दर पानी या रक्त संचित होता है। लिंगमें भी शोथ होता है। **नेट्रम म्यूर**के साथ पर्याय-क्रमसे। शक्ति—३०x।

यह **कोरण्ड** रोगकी प्रधान औषध है और बहुतसे रोगी इस औषधके उच्च और निम्न क्रमसे अच्छे हो गये है।

प्रमेह (gonorrhœa)—नये रोगमें इस औषधकी आवश्यकता नहीं होती। डा० नैशका कहना है कि पुराने कठिन गनोरिया रोगमें जव स्राव गाढ़ा और कुछ हरे रगका होता है एवं जलन और दर्द नहीं रहता, उस समय यह उत्कृष्ट है। ऐलेनके मतसे **हरी आभा लिए पीले रंगके और वेदनाहीन गाढ़े स्रावमे** यह अच्छी दवा है। पुराना अथवा लुप्त प्रमेह रोग। इसके साथ कोई पित्तलक्षण वर्तमान रहनेपर यह और भी लाभदायक है। लिंग और अण्डकोष खुजलाते हैं और खुजलानेके वाद उनमें जलन होती है। प्रातःकालके समय लिंग उत्तेजित होता है और सहवासेच्छा प्रवल होती है। लिंगमुण्डके चारों ओर मस्से एव उनमेंसे हरी आभा लिये पीव निकलती है। शक्ति—३x चूर्ण वार-वार।

उपदंश (syphilis)—पुराना उपदंश रोग। **मलद्वार और लिंगमे मस्से।**

ऋतुस्राव (menstruation)—ऋतुके पहले या समयमें नाकसे रक्तस्राव। अत्यन्त अधिक परिमाणमें ऋतुस्राव। जिस स्थानसे निकलता है एवं वह स्राव जिस स्थानमें लग जाता है, वह स्थान खुजलाता है, जलन होती है और फुन्सियों-सी हो जाती है। **नेट्रम म्यूरमें** भी जलन उत्पन्न करनेवाला स्राव है; किन्तु वह स्राव बहुत पतला होता है एव उसके साथ उदासी, दुःखित और क्रन्दनशील इत्यादि मानसिक लक्षणोंसे ही इस औषधका निर्वाचन करना पड़ता है। ऋतुस्राव जब परिमाणमें अल्प होता है, उस समय उसके साथ शूलका दर्द आ उपस्थित होता है। प्रातःकालके समयका उदरामय या कोष्ठबद्धता।

श्वेत-प्रदर (leucorrhœa)—श्वेत-प्रदरका स्राव जहाँ लगता है, वहाँ जलन होती है और घाव-सा व फुन्सियोंकी भाँति हो जाते हैं।

वमन (vomiting)—गर्भावस्थामें अथवा दूसरे किसी समय पित्त वमन। मुखमें तिक्त स्वाद। जिह्वाके लक्षण देखें। वमन प्रातःकाल ही अधिक होता है।

मूत्रावरोध (retention of the urine)—प्रास्टेटग्रन्थिकी वृद्धिके कारण पेशाब बन्द होनेपर इस औषधके साथ पर्यायक्रमसे **मैग फॉसका** व्यवहार करनेसे अच्छा फल मिलता है। शक्ति—दोनों औषध ही ६x।

यक्ष्मा रोग (phthisis)—डा० शुसलरके मतसे **नेट फॉस** ही इस रोगकी प्रधान औषध है। यक्ष्माके साथ पित्तलक्षण रहनेपर यह औषध लाभदायक है। आभा लिये पतला अथवा गाढ़ा श्लेष्मा निकलना।

सब प्रकारकी खाँसी (all kinds of cough)—नेट्रम सल्फकी खाँसी उस तरहकी शुष्क नहीं बल्कि तरल; किन्तु खाँसते समय रोगी खाँसीके कष्टसे बिछावनपर शीघ्रतासे उठ बैठता है एव खाँसीके कष्टसे छुटकारा पानेकी आशासे दोनों हाथोंसे छाती दबा रखता है। **बायें फुसफुसके निचले अंशमें वेदना और घाव-सा मालूम होना इस औषधका निश्चित निर्वाचक लक्षण** है। रस्सीकी भाँति हरे रंगका पीव-सा श्लेष्मा

निकलता है। वरसातमें और तर वायुमें रोगकी वृद्धि होती है। न्यूमोनिया, साधारण खाँसी, दमा, यक्ष्मा इत्यादि श्वासयन्त्रकी किसी भी बीमारीमें ये सब लक्षण रहनेपर यह औषध फलदायक होगी। पित्तलक्षण एव इस औषधके निर्दिष्ट जिह्वा-लक्षण रहनेपर यह औषध और भी लाभदायक होगी। चर्मरोग दोषग्रस्त व्यक्तियोंके न्यूमोनिया इत्यादिमें बहुत वार इस औषधका प्रयोग न करनेसे रोगी आरोग्य नहीं होता है। शक्ति—६x, १२x।

दमा (asthma)—सब प्रकारकी खाँसी अध्यायमें सभी विषय वर्णित हुए हैं, अतः पुनः उल्लेख करना अनावश्यक है। दमेके साथ गलेमें घड़घड़ाहटकी आवाज। श्वास-प्रश्वासके कष्टसे रोगी बिछावनपर उठ बैठनेके लिए वाध्य होता है एवं ठण्डी हवाके लिये सभी दरवाजों और खिड़कियोंको खोल देता है। बहुत दिनोंकी स्थायी सर्दीसे जो समस्त दमाका रोग उत्पन्न होता है, उनमें यह फलप्रद है। प्रातःकाल ३।४ बजे, तर वायु एव वरसातमें रोगकी वृद्धि। प्रातःकालीन उदरामय। लड़कोंके चर्मरोग-दोषग्रस्त माता-पितासे उत्पन्न तर दमाकी यह उत्कृष्ट औषध है।

साइलिसिया—साइलिसिया अध्यायमें नेट्रम सल्फके साथ प्रभेद विस्तार-पूर्वक वर्णित हुआ है, इसलिये यहाँपर पुनरुल्लेख नहीं किया गया।

हृद्‌पिण्डकी पीड़ाएँ (diseases of the heart)—हृद्‌पिण्डके स्थानमें भार और कष्ट मालूम होना एव इस कारण खुली वायुमें जाना चाहता है।

ग्रन्थिवात (gout)—नयी और पुरानी दोनों प्रकारकी ग्रन्थिवातोंमें यह प्रधान औषध है। धनी व्यक्तियोंके गठियावातमें यह अधिकतर उपयोगी है। वातके साथ पित्त लक्षण रहनेपर। नये रोगकी प्रथमावस्थामें फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है। शक्ति—६x।

कटिवात (lumbago)—ग्रन्थिवातके लक्षण वर्तमान रहनेपर केलि फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है।

वेरीवेरी (beriberi)—यही इस रोगकी प्रधान औषध है। यह तो पहले ही लिखा जा चुका है कि शारीरिक रक्तमें जलीय अंश बढ जानेपर

ही रक्त दूषित होता है और धीरे-धीरे हृद्‌पिण्ड, स्नायुमण्डली इत्यादि विविध यन्त्र आक्रान्त होते हैं। इसीलिये इस औषधसे सुन्दर कार्य होता है ; लेकिन इसके साथ श्वास-कष्ट अत्यधिक रहनेपर **केलि सल्फ** एवं हृद्‌कम्प रहनेपर **केलि फास** इत्यादि ; जब जो लक्षण रहता है, तभी इस औषधके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहृत होता है। शक्ति—नयी हालतमें ३x, ६x एवं पुरानी हालतमें १२x अथवा ३०x।

प्लेग (plague)—प्लेगकी चिकित्सामें यह दवा बहुत ही कम व्यवहृत होती है ; लेकिन पित्त-वमनादि पित्त लक्षण रहनेपर २।१ मात्रा अन्य औषधके बीचमें प्रयोग किया जा सकता है।

चेचक (pox)—गोटियाँ निकलनेके पहले बहुत बार रोगीको पित्त-वमन इत्यादि होते दिखाई देता है और इसीके साथ दवाके जिह्वा का लक्षण रहनेपर यह औषध व्यवहृत होती है ; लेकिन ज्वरादि प्रबल रहनेपर प्रथमावस्थामें ही फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग करना पड़ता है।

शोथ (dropsy)—यही शोथ रोगकी प्रधान औषध है। इसके व्यवहारसे शरीरके अन्दरका अनावश्यक जल निकल जाता है। स्थानीय (local) शोथमें भी यह लाभदायक है। बरसातमें एवं तर या दल-दले स्थानमें रहनेके कारण रोग। पित्तजनित कोई लक्षण रहनेपर यह अति उत्कृष्ट औषध है। शक्ति—१२x, ३०x।

प्लीहा-रोग (diseases of the spleen)—दलदले स्थानमें या मैलेरियासे आक्रान्त स्थानमें रहनेके कारण रोग। मुखका तिक्त स्वाद, पित्तज लेपयुक्त जिह्वा इत्यादि पित्तलक्षण उसके साथ रहनेपर उपयोगी है। शक्ति—६x, १२x और ३०x।

सेप्टीसिमिया (septicæmia or pyæmia)—यही इस रोग की प्रधान औषध है। शक्ति—३x।

विसर्प (erysipelas)—एरिसिपेलसकी यही प्रधान औषध है। आक्रान्त स्थान स्फीत लालवर्ण और चमकीला होनेपर तथा चरांना या

चिलक मारने-सी वेदना रहनेपर व्यवहृत होती है। इसके साथ पित्त-जनित कोई लक्षण रहनेपर यह अति उत्कृष्ट है। लाल रंगके एरिसिपेलसकी प्रधान औषध **फेरम फॉस** है, विशेषकर इसके साथ ज्वर, आक्रान्त स्थान उत्तप्त इत्यादि लक्षण रहनेपर। शक्ति—३x, ६x।

चर्मरोग-समूह (diseases of the skin)—जिस किसी प्रकारका ही चर्मरोग क्यों न हो, अगर उसमेंसे जल-सी पीली आभा लिये पीव निकलती हो, तो यह लाभदायक है। घाववाले स्थानके ऊपर जो पपडी पडती है, वह भी पीली आभा लिये और तर होती है। चर्मरोगके साथ पित्त-लक्षण वर्त्तमान रहनेपर। फफोले पडनेपर अगर उसमेंसे पीले रंगका रस निकले। दीर्घकाल स्थायी नासूरसे जल-सी पतली पीव निकलती है। घावके चारों ओर हरी आभायुक्त रंग दिख पडता है।

इस औषधकी एक और विशेषता यह है कि **शरीरके कपड़ेको हटाते ही खुजलाना आरम्भ हो जाता है**, मैलेरिया और कामलासे इस प्रकारकी खुजली होनेपर यही वास्तविक औषध है।

शरीरके अनेक स्थानोंमें **मस्सोंका** होना। प्राचीन उपदंशके कारण विविध प्रकारके चर्मरोग। नखके चारो ओर पीव उत्पन्न होनेकी प्रवणता। हथेलीमें चर्मरोग।

आमवात-रोगमें शरीरके विभिन्न स्थानोंमें लाल या सफेद रंगके चकत्ते-चकत्ते दाग होते हैं, खुजलाता है और वहुत अधिक जलन होती है।

ज्वर (fever)—सविराम और स्वल्पविराम ज्वरमें यही प्रधान औषध है। दूसरी कोई दवा निर्देशित होनेपर भी बीच-बीचमें २।१ मात्रा करके इस औषधका प्रयोग करना ही पडता है। रक्तमें जलीयांश वृद्धि या किस प्रकारसे ज्वर होता है यह इस लेखके आरम्भमें ही क्रिया अध्यायमें वर्णित हुआ है—उसे पढनेसे ही नेट सल्फकी उपकारिता समझमें आ जायेगी। **बरसातके** ज्वरमें वहुत वार यह औषध अकेले ही ज्वर आराम कर देती है। शास्त्रानुसार न होनेपर भी यह देखा गया है कि सविराम या स्वल्पविराम ज्वरमें वहुत वार ठीक रूपमें किसी औषधका

निर्वाचन न कर सकनेपर **फेरम फॉस** ६x और नेट्रम सल्फ ६x पर्यायक्रमसे प्रयोग करनेपर अत्यन्त शीघ्र ही ज्वर छूटकर रोगी अच्छा हो जाता है।

इसका जो कोई कारण नहीं है या यह विषय ही युक्तिहीन है, ऐसी बात नहीं। क्यों, वही संक्षेपमें कहता हूँ। हमलोग पहले क्रिया अध्यायमें देख चुके हैं कि वर्षाकालकी तर वायु अथवा अन्य जिस किसी कारणसे ही क्यों न हों, शरीरमें जलीय वाष्प प्रवेश करनेपर नेट सल्फ अतिरिक्त जलको शरीरसे निकाल देता है। एक बातमें कहना यह है कि अतिरिक्त जलको शरीरसे निकाल देना ही नेट सल्फका कार्य है। जलीय वाष्प शरीरमें प्रवेश करते ही फुसफुस और रक्तवाहिनी नाडीमें प्रविष्ट होता है। नेट्रम सल्फके साथ आक्सिजनका और आक्सिजनके साथ नेट्रम सल्फका निकट सम्पर्क है। यदि किसी कारण से रक्तमें अत्यधिक जलीय अंश बढ़ जाता है एवं नेट्रम सल्फ निःश्वाससे ली वायुके साथ यथेष्ट परिमाणमें आक्सिजन न पाये, तो वह अतिरिक्त जलीय अंश भी शरीरसे अलग नहीं होता एवं रक्तमें आक्सिजनका परिमाण भी ह्रास हो जाता है। इसलिये वाध्य होकर ही नेट्रम सल्फ रक्तस्थ फेरम फॉससे उसका कुछ अंश ले लेता है। अतएव जलीय अंश बढ़ते ही यदि शीघ्रतासे वह जलीयांश शरीरसे निकल न जाय, तो फेरम फॉसका अभाव हो जाता है। इसी कारणसे ही ज्वरकी प्रथमावस्थामें नेट्रम सल्फ एवं **फेरम फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहृत होनेपर शीघ्र ही ज्वर छूटकर रोगी अच्छा हो जाता है। अधिक विलम्ब होनेसे केलि म्यूर, नेट्रम म्यूर इत्यादि अन्यान्य लावणिक पदार्थोंका भी अभाव होता रहता है; क्योंकि एकके साथ दूसरेका सम्बन्ध है।

ज्वरका समय—सुबह ३।४ बजे, एक दिन अन्तर, दो दिन अन्तर अथवा दैनिक आता हो ऐसे सविराम एवं स्वल्पविराम ज्वर।

ज्वरका कारण—तर अथवा दलदले स्थानमें रहना, जलके निकट रहना, शुष्क तर ऋतुका परिवर्तन, बरसाती जलीय हवा इत्यादि।

ज्वरके साथ शीतसे कम्प, प्यास, शरीरमें वेदना एवं वमनमाया

और अगडाई लेने इत्यादिका लक्षण रहता है। ज्वरके साथ हाथ-पैरमें जलन एव मुखमें तिक्त स्वाद, जीभपर भूरे या राखके रंगका लेप, पित्त वमन, पित्तका दस्त, आँख और मुख पीले रंगका होना इत्यादि **पित्त-लक्षण रहनेपर अव्यर्थ है। पित्त-ज्वर** (yellow fever)। सन्ध्या समय और रातमें शीत व उत्ताप। रातमें अत्यधिक पसीना। पुराना ज्वर एवं प्लीहा यकृत सयुक्त ज्वर। ज्वर छोड़नेके समय अत्यधिक पसीना निकलता है। निम्नागोंमें कनकनाहटकी वेदना—संचालनसे उसका घटना। पैरके तलवेमें जलन और उत्ताप।

पित्तजनित लक्षण ही इस औषधके निर्वाचनमें प्रधान सहायक है, यह तो पहले ही बहुत वार वर्णित हुआ है। शक्ति—३x, ६x, पुराने ज्वरमें ३०x।

रोगीका विवरण—(१) उलुवेडिया (हवडा) शहरके खोकन बाबू, ग्यारह महीनेकी उमर थी, रोना-धोना एकदम नही, २-३ दिनोंसे तेज ज्वर था। ४-५ दिन पहलेसे खूब सर्दी खाँसीके साथ श्वासकष्ट था। छातीकी परीक्षा करनेपर छातीके सब जगह राल्स पाया गया।

ई० १९५० सालके अगस्त महीनेमें **फेरम फॉस** १२x पाँच मात्रा और **नेट्रम सल्फ** ६x पाँच मात्रा तीन दिनोंके लिए पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेके लिए दिया। तीन दिनोंके बाद खबर मिली कि औषध खानेके दूसरे दिनसे और ज्वर न आकर छूट गया है। खाँसी थोडी है और सब तरहसे अच्छा है। **नेट्रम सल्फ** ६x और भी ४ मात्रा दो दिनोंके लिये दिया। कहनेको भूल ही गया कि लडका दिनभरमें अधिकतर समय ठण्डे फर्शपर पड़ा रहता और बहुत वार पेशाबसे भीगा कुर्ता भी पहने रहता। और औषध नहीं देनी पडी।

(२) ई० १९४८ सालके अक्टूबर महीनेके प्रारम्भमें खुलनाके वकील श्रीयुक्त बाबू नगेन्द्रनाथ भौमिकका पोता चार वर्ष उमरके श्रीमान् आशीषकी परीक्षाकी। खूब सर्दी, सर्दी पक गई थी, मुँह फूला-फूला-सा मानो रसाया हुआ है, शरीर थोड़ा गरम होता है। श्लेष्मा-जनित

मोटी नाडी। परीक्षाकर दूसरे और कोई विशेष लक्षण प्राप्त न कर सका। स्वस्थावस्थामें वह अस्वाभाविक चचल और हमेशा ठण्डा चाहता है या ठण्डे स्थानमें सोना पसन्द करता है। खानेकी तरफ कोई विशेषता नही मिली। होमियोपैथिक मतसे १०-१२ दिनो तक दवा दी गई, किन्तु विशेष कोई फायदा नही मिला। अचानक एक दिन ज्वर वढ़ जाकर १०२ डिग्री हो गया। ज्वरके वढनेके समय थोडी देर तक चुपचाप सोये रहनेके अलावा और कोई लक्षण नही पाया गया। रोगीके अभिभावक वहुत घवडा गए।

८-१०-४८—**नेट्रम सल्फ** ६x तीन मात्रा दी गई। यह दवा देनेके वादवाले दिन खवर मिली कि ज्वर एक डिग्री घटा भर है। किन्तु ज्वर किसी समय छूटता नहीं। वही दवा दैनिक तीन मात्रा करके देनेपर ज्वर छूट जाकर दूसरे दिनसे और ज्वर नही आया। और भी २ दिन दो मात्रा कर उसी दवाका प्रयोग करते ही रोगीके मँहका रस घट जाकर स्वाभाविक रूप धारण किया और सर्दी भी पूरी तरहसे दूर हो गई।

वायोकेमिक औषध यथा समय प्रयोग न करनेसे यह रोगी निश्चित हाथसे निकल जाता। वायोकेमिक औषध देनेके आगेवाले दिन एक एलोपैथिक एम० वी० डॉक्टरसे भी सलाह ली गई थी।

निद्रा (sleep)—पित्त-लक्षणके साथ तन्द्रा एवं क्लान्ति (ऐसी हालत प्रायः ही पाण्डु या कामला-रोग होनेके पहले दिखाई देती है)। प्रातःकालके समय वहुत आलस मालूम होना और निद्रालुता। उस समय कोई भी काम करनेकी इच्छा नहीं होती। दोपहरको और सन्ध्या समय अच्छा रहता है।

सुनिद्रा नहीं होती। विछावनपर जा नीद आते ही केवल नाना प्रकारके स्वप्न देखता रहता है। स्वप्नमें तैरना, झगडना और मार-पीट करना, उड़ना, जलमें डूव जाना इत्यादि विविध स्वप्न देखता है।

प्रतिषेधक शक्ति—यह जो **कालराका** प्रतिषेधक है यह तो पहले ही कहा जा चुका है। यह औषध कालरा आरम्भ होनेके समय हर

रोज सुबह ३x शक्तिकी एक मात्रा करके सेवन करनेसे रोगके हाथसे छुटकारा पाया जाता है। रोगके आरम्भमें २।१ मात्रा करके प्रयोग करनेसे रोग सहज-साध्य हो जाता है।

कालराकी भाँति चेचक-रोगके फैलनेके समय भी इस औषधको इसी प्रकारसे सेवन कर प्राणनाशक चेचक-रोगके हाथसे छुटकारा पाया जाता है, यह परीक्षाके द्वारा प्रमाणित हुआ है।

ऐलोपैथिक चिकित्साके भक्तोंके अन्दर देखा जाता है कि जिसमें ज्वरका आक्रमण न हो, इसके लिये पहले हीसे वे क्विनीनका प्रयोग किया करते हैं। सदा क्विनीनसे नुकसान न दिखाई देनेपर भी क्विनीनको ज्वर बन्द करनेकी शक्ति है। क्विनीन जो ज्वर बन्द करता है, इसका कारण यह है कि क्विनीनमें अत्यल्प परिमाणमें नेट्रम सल्फ और फेरम फॉस ये दोनों ही उपादान वर्तमान हैं। नेट्रम सल्फके सम्बन्धमें ज्ञान लाभ करनेपर ज्वरके सभी देखेंगे कि इसको ज्वरके आक्रमणको रोकनेकी बहुत अधिक ताकत है। बरसातमें जब चारों ओर ज्वर होते रहते हैं, उस समय हर रोज एक मात्राके हिसाबसे या २।१ दिनके अन्तरसे यह औषध प्रयोग करनेपर ज्वरके हाथसे छुटकारा पाना सम्भव है। बरसातमें सदा निश्वासके साथ जलमय वायु शरीरमें प्रवेश करता है और इस लावणिक पदार्थका अभाव होनेपर अतिरिक्त जलीय अंश शरीरसे न निकल सकनेके कारण ज्वर हुआ करता है। किन्तु पहले हीसे इस औषधका व्यवहार करनेपर यह डर नहीं रहता। जो लोग जलके नालोंके निकट रहते हैं, उनको ऐसी व्यवस्था करना अत्यन्त आवश्यक है।

वृद्धि (aggravation)—प्रातःकाल, तर वायुमें, बरसातमें, समुद्र के किनारे और गीली जमीनपर रहनेपर, जलके अन्दर या उसके किनारे उत्पन्न शाक-सब्जीके खानेसे, ठण्डा जल पीनेसे, बायीं करवट सोनेसे, चुपचाप बैठे रहनेपर, स्पर्श करनेसे, विश्रामसे एवं मछलीके खानेसे रोग लक्षणोंकी वृद्धि।

ह्रास (amelioration)—शुष्क वायु, शुष्क स्थानमें रहना,

दबानेसे (वेदनाका), खुली हवामें, बैठनेपर और स्थिति बदलनेसे (खाँसीका) रोग-लक्षणोंका ह्रास होता है।

सम्बन्ध—दमामें साइलिसियाके साथ इसकी तुलनाकी जाती है। चर्मरोगमें नेट्रम-म्यूर इसके बादमें व्यवहार करनेवाली उपयोगी दवा है।

शक्ति (potency)—हमलोग साधारणतः ६x शक्ति व्यवहार करते हैं। ३x, १२x, ३०x और २००x शक्ति सदा ही व्यवहृत होती है।

तुलनात्मक होमियोपैथिक औषधियाँ—धातुगत साइकोटिक रोगकी चिकित्सामें थूजा इसका अनुपूरक है। एक औषधके व्यवहार करनेके बाद आशानुरूप फल प्राप्त न होनेपर प्रायः ही दूसरी औषध व्यवहृत होती है। दोनों दवाओंके ह्रास व वृद्धिमें भी समता है। नेट्रम सल्फ आर्सका भी परिपूरक है। साइकोटिक रोगीमें आर्स दवा नई बीमारीकी चिकित्साकी तरह काम करती है। नेट्रम म्यूर व सलफरके बहुतसे लक्षण इस दवामें दीख पडते हैं। खाँसीमें ब्रायोके साथ इसकी समता है। प्रारम्भिक हालतमें कष्टदायक सूखी व उत्तेजक खाँसीमें जब छातीपर हाथ रखकर न खाँसनेपर छाती मानो फटकर बाहर निकल पडेगी ऐसा मालूम हो उस समय ब्रायो, और नेट्रम सल्फ अन्तिम हालतमें जब कफ घना, इस प्रकार सूखी नहीं, किन्तु कष्ट घटानेके लिए छातीपर हाथ रखकर खाँसना पडता है, उस समय व्यवहृत होता है। आँखके पुराने उपसर्गोंमें ग्रेफाइटिसके साथ तुलनाकी जा सकती है।

साइलिसिया

(Silicea)

**एण्टिसोरिक, **एण्टिसाइकोटिक और एण्टिसिफिलिटिक

भिन्न नाम—सिलिका (सिलिकन या बालूसे यह औषध तैयार होती है इसलिए कोई-कोई इसको सिलिका कहा करते हैं), सिलिसिक औक्साइड।

साधारण नाम—कोयार्ट्स (स्फटिक), प्योर फ्लिण्ट (pure flint)।

संक्षिप्त नाम—सिलिका।

प्रस्तुत करनेकी पद्धति—सिलिका और कार्बनेट ऑफ सोडा दोनों को एक साथ मिश्रित कर उत्तापसे द्रवीभूत कर लेना पड़ता है। बादमें इसको छानकर हाइड्रोक्लोरिक एसिडके द्वारा पेंदीमें तलछट डाल लेना पड़ता है। यह पदार्थ देखनेमें सफेद होता है एवं इसमें कोई स्वाद या गन्ध नहीं रहती। इसमें दुग्ध-शर्कराके साथ चूर्ण तैयार करके नियमानुसार चूर्ण तैयार कर लेना पड़ता है।

फ्लिण्ट नामक पत्थरको साफ और जलाकर लवणके सहयोगसे द्रवीभूत कर लेनेसे ही यह औषध तैयार हो जाती है।

क्रिया—नाना प्रकारके अन्न, घास, पेड़-पौधों और लतादिमें यह पदार्थ बहुत अधिक परिमाणमें विद्यमान रहनेपर भी मनुष्य शरीरमें इसका परिमाण बहुत कम है। मनुष्यके केश, नख एवं चमड़ेमें इस पदार्थका अस्तित्व अन्यान्य स्थानोंकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें दिखाई देता है। लेकिन रक्त, मास, मस्तिष्क, स्नायु, मूत्र, पित्त इत्यादिपर भी इसकी क्रिया दीख पड़ती है। साधारण बालूमें कोई भेषज गुण नहीं है यह सभी मानेंगे। साधारण लवणके विषयमें भी यह बात कही जा सकती है। किन्तु होमियोपैथिक नियमानुयायी ट्राइट्युरेशन या डाइल्युशन करनेसे इसकी अन्तर्निहित असीम शक्तिका जो विकाश होता है, वह एलोपैथिकोंकी धारणाके भी बाहरकी बात है। मानव शरीरस्थ संयोजक तन्तुओंके अन्दर

इसका अस्तित्व वर्तमान है। शरीरस्थ अण्डलाल और सौत्रिक पदार्थोंके अन्दर इसकी क्रिया दिखाई देती है। मिट्टीके ऊपरके आवरणमें भी यह रहता है। वृक्षादि मिट्टीसे रस ग्रहण करते हैं, अतः वृक्षादि भी इस पदार्थको ग्रहण करते हैं : इस कारण वृक्षादिकी छालमें यह बहुत परिमाणमें विद्यमान रहता है। घास इत्यादिके कडे होनेका कारण भी यही धातव-पदार्थ है। **हाथ, विशेषकर पैरका पसीना बन्द होकर जो सब रोग होते हैं, उनमें यह विशेष लाभदायक है।** साइलिसिया का प्रयोग करनेपर पहलेका रुका हुआ पसीना फिर प्रकट होकर रोग आराम करता है और बादमें पसीना होना भी अच्छा हो जाता है। पसीना होना रुक जानेके फलस्वरूप वात, पक्षाघात, मोतियाबिन्द, हिस्टीरिया, एपिलेप्सी इत्यादि रोगोंकी प्रधान औषध है। जिन सब शिशुओंके सिरके पीछे **अत्यधिक परिमाणमें पसीना होकर तकिया भींग जाता है,** उनकी किसी भी बीमारीमें यह विशेष लाभदायक है।

शरीरसे पीब निकलनेमें एवं अतिरिक्त पीबके स्रावको घटानेमें इसकी अद्भुत शक्ति दिखाई देती है। जिन सब स्थानोंमें पीब पैदा होती है, उन्ही सब स्थानोंपर ही इसकी क्रिया सर्वाधिक होती है। नासूरका नाम सुनते ही इस दवाका नाम याद हो आता है। पीब उत्पन्न होनेकी सम्भावना होते ही जिस तरह इस औषधका प्रयोग करना पडता है, उसी तरह बहुत दिनोंसे पीब (दुर्गन्धमय) निकलते रहनेपर भी इसका प्रयोग करनेके सिवाय और कोई दूसरा उपाय नही रहता। प्रदाहमें यह औषध फेरम फॉस और केलि म्यूरके बादमें एव कैल्क फॉसके पहले व्यवहृत होती है। शरीरमें साइलिसिया उपयुक्त परिमाणमें रहनेसे स्फोटकादि ही पक जाते हैं एव क्षत स्थान भी सूख जाते हैं। किन्तु इसका अभाव होनेपर स्फोटकादि पकते भी नही एव उसकी स्फीति और कठिनता बहुत दिनोंतक वर्तमान रहती है। किसी स्थानसे पीब निकलती रहनेपर भी यदि उन स्थानोंकी स्फीति वर्तमान रहे, तो साइलिसिया ही उपयुक्त औषध है। इस हालतमें यह औषध देनेसे सञ्चित रसादि घटकर

क्षत स्थान सूखजाता है। किन्तु रसादि घटकर भी अगर पीव निकलती रहे, तो अब साइलिसियासे उपकार न होगा। तब कैल्क सल्फ ही वास्तविक औषध है। कैल्क सल्फसे क्षतादि शीघ्र ही सूख जाते हैं।

खराब बीजसे टीका देनेके फलस्वरूप जो सब रोग उत्पन्न होते हैं, उनमें यह लाभदायक है। पारा इत्यादिको निकाल देनेमें साइलिसिया अति उत्तम औषध है। शरीरसे किसी चीजको निकाल देनेमें इसकी असीम शक्ति दीख पडती है। शरीरके अन्दर काँटा, सूई इत्यादि गड जानेपर साइलिसियाके सेवनसे वे बाहर निकल जाते हैं। इसीलिये यह स्फोटक (फोड़ों) को जिस तरह पकाता है (it ripens a boil—*Tissue Remedies* by Dewey and Boericke, ऐलेनकी *Keynotes* इत्यादि अनेक पुस्तकोंमें फोडा पकनेकी बात है, लेकिन कोई-कोई इसको नहीं मानते), उसी तरह स्फोटक पकनेपर छूरीकी भाँति ही पीव निकाल देता है।

इसका अभाव होनेपर नख टूट जाते है एव उनके चारो ओर पीव पैदा होती है। इसके अभावसे शरीरके चमडे अस्वस्थ होते हैं एव सामान्य खरोंच उठनेपर भी उसमे पीव पैदा होती है और घाव हो जाता है।

किसी संयोजक तन्तुमें साइलिसियाका अभाव होनेपर वह स्थान सूखता जाता है। मस्तिष्कमें ऐसा होनेपर धारणा-शक्तिकी गडबडी दिखाई देती है। रोगी मामूली गोलमाल भी बर्दास्त नही कर सकता। सामान्य उत्तेजनासे मन अस्थिर हो जाता है।

साइलिसियाकी क्रिया धीर एव परीक्षाके समय इसके लक्षण भी धीरे-धीरे प्रकट हुए थे। अतः जो सब रोग क्रमशः प्रकट होते रहते हैं, उनमें यह लाभदायक है। यह दीर्घकाल तक और गम्भीरतापूर्वक कार्य करनेवाली औषध है, यहाँ तक कि इससे वशगत दोष भी दूर हो सकते हैं।

रोगलक्षण समूहका रातमें, पूर्णिमाके समय एव खुली हवामें वृद्धि और उत्तापसे घटनेपर यह औषध विशेष लाभदायक है।

परिचायक लक्षण (characteristic symptoms)

१—साइलिसियाके शिशु स्क्राफ्यूलस और रिकेटिक धातुके (scrofulous and rachitic constitution) होते हैं। उनका मस्तक प्रायः ही बड़ा, ब्रह्मरन्ध्र और मस्तककी अस्थियोंके संयोजक स्थान बहुत दिनोंतक असंयुक्तावस्थामें रहते हैं एवं उसके सिरमें अत्यधिक परिमाणमें पसीना होता है। सिरमें इतना पसीना होनेपर भी वह मस्तकको बगैर ढँके नहीं रह सकता है। मुखमण्डल वृद्ध-सा, बुद्धि स्थूल, पेट मोटा और हाथ-पैर पतले-पतले।

२—पैरमें दुर्गन्धयुक्त पसीना एवं पैरका पसीना लुप्त होकर जिस किसी प्रकारका रोग होनेपर यह अव्यर्थ है।

३—ठण्डेमें खुली हालतमें रहनेपर, विशेषकर मस्तक एवं अमावस्याको, पूर्णिमाको और रातमें सभी रोगके लक्षणोंकी वृद्धि होती है।

४—उत्तापसे विशेषकर मस्तकको ढँक रखनेपर सभी रोगके लक्षणोंका ह्रास होना।

५—रोगीका मिजाज चिड़चिड़ा, मानो वह हमेशा क्रोधित ही है।

६—टीका देनेके कुफलके कारण जो सब रोग होते हैं, उनमें यह लाभदायक है। पत्थर खोदनेवालोंके विविध रोगोंमें, विशेषकर फुसफुस सम्बन्धीय रोगमें यह लाभदायक है।

७—सिर-दर्दमें ऊपरकी तरफ ताकनेपर रोगी सामनेकी ओर लड़-खड़ाकर गिर जायगा ऐसा मालूम होता है। जो सिर-दर्द गर्दनसे आरम्भ होकर सिरके ऊपरी हिस्से तक फैल जाता है। एवं वह वेदना दाहिनी आँखके ऊपर आ ठहरती है। यौवन-कालके किसी कठिन रोगके बाद कष्टदायक सिर-दर्द। ह्रास और वृद्धिके लिये ३य और ४र्थ लक्षण देखें।

८—पीवको उत्पन्न करनेके लिये, पीव उत्पन्न हो जानेपर घावको फटानेके लिये एवं फटानेके बाद घावको सुखानेकी इसे एकमात्र औषध कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इसके सब प्रकारके स्राव ही गाढ़ा

पीले रङ्गके अथवा पतला पानी-सा पीवकी भाँति, किन्तु अत्यधिक दुर्गन्ध-युक्त। यह अस्थिक्षत, नासूर, भगन्दर, कानका पकना इत्यादिका महौषध है। ठण्डी और खुली हवाका वहना सहा नही जाता।

९—स्तनदुग्ध, गो दुग्ध अथवा अन्य जो कुछ भी क्यों न पीये, कै कर देता है। वमन अम्लस्वादयुक्त अथवा जमा-जमा छेनेकी भाँतिका नही होता।

१०—अत्यधिक राक्षसी भूख अथवा क्षुधाहीनता। भोजन करनेके पश्चात् पेटमें दर्द और मुखमें पानी आना। गरम खाद्य एव पकाया हुआ कोई भी खाद्य रोगी खाना पसन्द नही करता। ठण्डे खाद्य और फल-मूल खाना पसन्द करता है। दूध और मास वर्दास्त नही होता।

११—उदरामयमें अत्यधिक दुर्गन्धयुक्त पतला मल। टीका देनेके बुरे फलके कारण उदरामय। परिवर्तनशील पतला मल। शिशु पेट भर-भरकर अच्छे-अच्छे खाद्योंको खाकर भी शीर्ण हो जाता है एव अजीर्णता हेतु उसके मलमें खाद्यके दाने दीख पडते हैं।

१२—अतिशय कोष्ठवद्धता। मल कुछ वाहर निकलकर फिर भीतर घुम जाता है।

१३—अतिरिक्त स्त्री-सहवास अथवा हस्तमैथुनके बुरे फलस्वरूप विविध रोग।

१४—सदा ठण्डे पानीमें काम करनेवाली स्त्रियोका अत्यधिक रजः-स्राव। स्राव जिस स्थानपर लगता है घाव-सा हो जाता है और उसमें वहुत वदवू रहती है। सन्तानको स्तन पिलाते समय भी योनिद्वारसे उज्ज्वल रक्तस्राव।

१५—दुर्गन्धयुक्त, जलन करनेवाला, दूधकी भाँति रगवाला श्वेत-प्रदरका स्राव।

१६—सव प्रकारकी खाँसी अथवा श्वास-यन्त्रके रोगमें वहुत अधिक परिमाणमें दुर्गन्धयुक्त गाढा पीले रङ्गका या हरी आभा लिये पीले रगका पीव-सा मल। यक्ष्मा-रोगसे पीडित व्यक्तियोको दुर्वलता लानेवाला

रातको पसीना होना। दमाके साथ श्वासकष्ट। सोनेसे, प्रातःकालके समय और ठण्डा जल पीनेसे रोगकी वृद्धि। अमावस्या और पूर्णिमाको दमाकी वृद्धि।

१७—काँटा, सूई, अस्थिखण्ड इत्यादि शरीरके अन्दर रहनेसे इसके सेवनसे उसे बाहर निकलनेमें सहायता मिलती है।

विशेषत्व (peculiarity)—साइलिसियाका नाम सुननेपर नासूर, स्फोटक, कार्बङ्कल, कानसे पीव निकलना, भगन्दर इत्यादिसे पीवके स्रावको घटानेमें इसकी अद्भुत शक्तिकी बात ही याद आती है। वास्तवमें इस अधिकारमें इसके तुल्य शक्तिशाली औषध और दूसरी नहीं है। किसी घावसे बहुत दिनोंसे पीव निकलती रहनेपर इस औषधके व्यवहारसे जैसे वह बन्द हो जाती है, तो किसी स्थानके पकनेकी हालत होनेपर यह वैसे ही चारों ओरके अकार्य्यकारी पदार्थोंको पीवके रूपमें एक स्थानमें सञ्चित करता है एवं बादमें फटाकर बाहर निकाल देता है। इस मौकेपर यह छूरीका काम करता है।

यदि बच्चेका सिर बड़ा, पेट मोटा, हाथ-पैर पतले-पतले, हड्डी कोमल या टेढ़ी, सिर और पैरमें दुर्गन्धयुक्त पसीना, मुखमण्डल वृद्धोंकी तरह, बुद्धि भी स्थूल, स्वभाव चिड़चिड़ा—ऐसे धातुका (शारीरिक आकृति अध्याय देखें) रहे, तो यह औषध सभी रोगोंमें ही व्यवहृत हो सकती है।

रोग-लक्षणोंका पूर्णिमा या अमावस्याको, रातमें, खुले बदन रहने पर—विशेषकर मस्तक और पैरका पसीना लुप्त होनेपर वृद्धि एवं उत्तापसे—विशेषकर सिरको कपड़ेसे लपेट रखनेपर घटना—इस औषधके विशेष उल्लेखयोग्य लक्षण है।

पारेके दोषको दूर करनेमें इसकी बहुत अद्भुत शक्ति दीख पड़ती है।

इसके सभी प्रकारके स्राव ही गाढ़ा पीले रंगके अथवा पतला जो कुछ भी क्यों न हो, उसमें बदबू रहेगी ही। अत्यधिक दुर्बलताके साथ क्षय-रोगग्रस्त रोगियोंको रातमें बहुत अधिक पसीना होनेसे इस औषधका नाम ही पहले याद आता है।

शारीरिक आकृति—साइलिसियाके बच्चोका मुखमण्डल सुन्दर किन्तु शुष्क, मलिन, वृद्धकी तरह अथवा बन्दरकी भाँति धँसा हुआ दिखाई देता है। बुद्धिहीन होनेके कारण केवल जो उसका मुखमण्डल वृद्धकी तरह दिखाई देता है ऐसी बात नही, उसके शरीरके सभी अग-प्रत्यगकी भी दशा वैसी ही होती है। शिशुका **निम्नोदर बड़ा**, घुटने पतले-पतले, एँड़ी दुर्बल एव बहुत देरसे चलना सीखता है। अच्छे-अच्छे खाद्योंके खानेपर भी शिशु परिपोषणके अभावसे शीर्ण हो जाता है (कैल्क फॉस)। शारीरिक या मानसिक किसी भी तरह शिशुकी वृद्धि दिखाई नही पडती। अत्यधिक दुर्वलता और क्लान्तिके कारण रोगी सो रहना चाहता है।

स्क्राफ्यूलस और रैकिटिक धातुका शिशु (scrofulous and rachitic constitution)। मस्तक बड़ा, ब्रह्मरन्ध्र (fontanelles) और मस्तककी अस्थियोंके सयोगस्थल खुले रहते हैं एव अनेक दिनो तक सयुक्त नही होते (open fontanelles and sutures)। मस्तकमें बहुत अधिक परिमाणमें पसीना होता है (कैल्केरियाके रोगीको पसीना मस्तकसे ऊपर, और साइलिसियाके रोगीको पसीना अत्यन्त नीचेकी ओर—(Allen's *Keynotes*)। मस्तकको बगैर ढँके नही रह सकता। इन रोगियोंका शरीर अत्यधिक दुर्बल, चर्म शुष्क, गन्दा और कोमल, मुखमण्डल पीला एव मासपेशियाँ शिथिल रहती है। रोगीका स्वभाव बहुत चिडचिडा और उत्तेजनाशील और रोगी बहुत जिद्दी होता है। पैरमें अत्यन्त दुर्गन्धमय पसीना होता है एवं वह बन्द होनेसे विविध पीडाएँ होती हैं। ठण्डेमें और अमावास्याको सभी प्रकार के रोगोंकी वृद्धि होती है। कैल्केरिया फॉसके साथ इस औषधका बहुत विषयोंमें सादृश्य है। दोनों औषधोंका प्रभेद कैल्क फॉसके अध्यायमें देखना चाहिये।

कैल्केरिया फ्लोरिकाके साथ साइलिसियाका प्रभेद

कैल्केरिया फ्लोरिका	साइलिसिया
१—वृद्धोंके लिये विशेष लाभदायक है।	१—शिशुके लिये विशेष लाभदायक है।
२—स्क्राफ्यूला धातुवालोंके लिये लाभदायक है, किन्तु इसके शारीरिक आकृतिमें कोई विशेषता नहीं है।	२—स्क्राफ्यूला धातुके लिये विशेष लाभदायक है और इसके शिशुकी शारीरिक आकृतिमें एक विशेषता है (पहले वर्णित हुआ है)।
३—अवसन्न और अर्थनाश होनेके डरसे भयभीत।	३—उत्तेजित क्षुब्धचित्त एवं कभी-कभी अवसन्न।
४—आँखकी पुतलियाँ फैली हुई।	४—आँखकी पुतलियाँ सकुचित।
५—रातके प्रथम भागमें अनिद्रा।	५—रातके अन्तिम भागमें अनिद्रा।
६—अत्यन्त क्षुधार्तता।	६—क्षुधार्तता और क्षुधाहीनता दोनों ही अवस्थायें दीख पड़ती हैं।
७—घरमें रहनेपर शरीरमें पसीना होता है।	७—घरमें रहनेपर पसीनेका होना घटता है।
८—ठण्डेमें घावोंका अच्छा रहना।	८—गर्मीमें घावोंका अच्छा रहना।
९—तर भीगी जलवायुके परिवर्तन और ठण्डी हवासे वृद्धि एव उत्ताप और वाहरी गरमके प्रयोगसे घटना।	९—ठण्डी तर जलवायुमें इसकी भी वृद्धि होती है, किन्तु सूखी और ठण्डी जलवायुमें घटना। कुछ लक्षण उत्तापसे घटते हैं।

कैल्केरिया फ्लोरिका	साइलिसिया
१०—वक्ष-रोगमें ठण्डेसे वृद्धि एवं रोगी गरम पसन्द करता है।	१०—वक्ष-रोग ठण्डेसे वृद्धि, किन्तु रोगी ठण्डे खाद्य और शीतल पेय पसन्द करता है।
११—खुजलानेसे आराम मालूम होता है।	११—खुजलानेसे वृद्धि।
१२—वातवेदना विश्रामसे वृद्धि एवं सचालन और उत्तापसे ह्रास	१२—वातवेदना ठण्डेसे वृद्धि एव उत्ताप और विश्रामसे ह्रास।

मानसिक लक्षण (mental symptoms)—किसी भी काममें रोगीका मन नहीं लगता। ससारमें ऐसा कोई भी काम नही है जिसे उसे करनेकी इच्छा हो। यदि किसी समय कोई कार्य सम्पन्न करनेके लिये लेता भी है, तो वह अधिक देरतक उस कार्यको नहीं कर सकता—थोडा-सा ही करके थक जाता है। कार्य आरम्भ करनेके पहले तो भय लगता है; किन्तु काममें लग जानेपर उसको अच्छी ही तरहसे कर डालता है। विचार-शक्ति और स्मरणशक्ति दोनों ही उसको कम रहते हैं। मानसिक परिश्रम तो विलकुल ही नही कर सकता। थोडा भी लिखने-पढनेका काम करनेसे वहुत थका-सा हो पड़ता है। चिन्ताशक्ति भी उसकी घट जाती है। विद्यालयके लडके-लडकियाँ कोई भी विषय कण्ठस्थ नही सुना सकती। केवल भूल होती रहती है।

रोगी अत्यन्त अवसादग्रस्त, भीतचित्त एव आशा-भरोसाहीन होता है। इस औषधके व्यवहारसे रोगी फिरसे आशान्वित होता है एव उसकी शारीरिक और मानसिक थकावट दूर हो जाती है। रोगी सदा ही दुःखित रहता है। किसीकी भी वात सुननेकी उसकी इच्छा नहीं होती, स्वय भी कुछ नही वोलता। चुपचाप रहना ही उसको पसन्द होता है। कोई वात करनेपर, मामूली शब्द या गोलमाल होनेपर रोगी वहुत विरक्त मालूम करता है। रोगीका स्वभाव भी चिड़चिडा—सदा ही मानो वह

क्रोधित ही हुआ रहता है। सामान्य कारणसे उसका मिजाज गरम हो जाता है।

कोई-कोई रोगी केवल रोता है। आत्महत्या करनेको भी इच्छुक होता है। घर छोडकर चला जाना होगा सोचकर डरता है।

रोगीके बहुत-से लक्षण पूर्णिमाको बढ जाते हैं।

सिर-दर्द (headache)— जो सिर-दर्द गर्दनसे आरम्भ होकर सिरके ऊपरी हिस्से तक फैल जाता है एव दर्द दाहिनी आँखके ऊपर आकर रुक जाता है, उसमें यह औषध अत्यधिक सुफलदायक है। ऊपर की ओर दृष्टि डालनेसे रोगी सामनेकी तरफ गिर पडेगा ऐसा प्रतीत होता है। **यौवनकालकी किसी कठिन बीमारीके बादके सिर-दर्दमें** यह बहुत लाभदायक है। ऐसे सिर-दर्दके साथ प्रायः ही मिचली रहती है। सिर-दर्दके समय सिरके अन्दर टपटप करता रहता है। मालूम होता है मानो सिर फटा जा रहा है या कोई चीज पीट रहा है। मस्तक पर कोई दबाव सहा नहीं जाता। **मस्तकके चमड़े स्पर्शसे ही बहुत दर्द करना। शिशुके मस्तकमें पसीना होता है** (कैल्क फॉस)।

सिर-दर्द प्रातःकालसे आरम्भ होकर दिनभर एक ही प्रकार रहता है, किन्तु शामसे धीरे-धीरे बढकर रातमें अत्यन्त कष्टदायक हो पडता है। सिरमें कपडे लपेटकर गरम रखनेसे सिर-दर्द कम मालूम होता है— सिरमें ठण्डा लगने ही से वृद्धि होती है। मानसिक परिश्रमसे, गोलमाल से, रोशनीसे, शीतल वायुसे, हिलने-डोलनेपर, बैठनेसे या चलनेसे सिर-दर्दकी वृद्धि एव विश्रामसे, उत्तप्त घरमें, मस्तक कसकर बाँधनेसे और मस्तकपर उत्ताप देनेसे सिर-दर्द घटता है।

अधकपारी (hemicrania)— रोग रातको बढ जाता है। वृद्धावस्थाके रोगमें विशेष लाभदायक है। दाहिनी तरफका सिर-दर्द। ऊपर सिर-दर्द अध्यायमें सब कुछ वर्णित हो चुका है। **केलि फॉस** प्रधान औषध है।

मस्तिष्क-शून्यता (brain-fag)—मानसिक परिश्रम करनेकी शक्ति

बिलकुल नहीं रहती। मामूली चिन्ता या लिखने-पढ़नेका काम करनेसे
ही अवसन्न हो पड़ता है। हिलने-डालनेपर, उसकी ओर ताकनेसे एवं
मस्तक झुकानेमें रोगकी वृद्धि होती है। अन्यान्य लक्षणोंके लिये आवश्यक
होनेपर मानसिक लक्षण और सिर-दर्द अध्याय पढ़ा जा सकता है।

शक्ति—१२x।

मृगी (epilepsy)—रातमें, एकादशीको, विशेषकर अमावस्या
और पूर्णिमाको रोग होनेपर यह औषध विशेष लाभदायक है। दौरा
होनेपर पहले शरीर ठण्डा मालूम होता है।

कोरिया (chorea)—आक्षेप। नींदमें भयानक स्वप्न देखकर
भयभीत होना और जाग पड़ता है। मुखमण्डल पीला या रक्तहीन,
आँखोंमें नाना प्रकारके आक्षेप, आँखें मानो वेगसे निकल आयेंगी एवं
आँख नाना प्रकारसे घुमाता है। कृमिके लक्षण दीख पड़नेपर **नेट्रम**
फॉस सह पर्यायक्रमसे व्यवहार्य है।

स्नायुशूल (neuralgia)—अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण शरीर, अच्छी तरहसे
पोषण नहीं हो पाता। स्नायुशूल शीघ्र आराम होना नहीं चाहता।
रातको वेदनाकी वृद्धि। प्रधान औषध **मैग फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे
व्यवहार करना चाहिये।

मेरुमज्जाकी उत्तेजना (spinal irritation)—शारीरिक आकृति
के साथ सादृश्य रहनेपर। मस्तिष्कमें पसीना होना। कृमिकी उत्तेजना
के कारण होनेपर **नेट फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे। पैरमें पसीना होना।

चक्षुपीड़ा-समूह (diseases of the eye)—**अश्रुस्रावी-ग्रन्थि**
(lachrymal glands) के रोगोंमें यही प्रधान औषध है। लैक्रिमल
फिश्चूला। ठण्डी और खुली हवा सही नहीं जाती, आँखसे पानी
गिरता है।

चक्षुप्रदाह और रेटिनाका प्रदाह। कार्नियाके घावमें (corneal
ulcers) क्रमशः स्लफ (slough) पड़कर क्षय होकर छेद हो जानेपर
एवं एण्टीरियर चेम्बरमें पीव जमा होनेपर साइलिसिया लाभदायक है।

आँखोंमें मछलीकी चोइयोंकी भाँति-सा पदार्थ उत्पन्न होता है। कार्नियाके घावसे सडी दुर्गन्ध निकलती है। आँखसे गाढा पीला रंगका स्राव निकलता है। बहुत दिनोंसे रोशनी बर्दास्त नहीं होती।

आँखें बहुत दुर्बल, इस हेतु पलकें शीघ्र-शीघ्र गिरती हैं। दृष्टि-शक्ति भी अत्यन्त दुर्बल, इसलिये किसी चीजकी तरफ ताकनेसे मालूम होता है मानो कुहासाके अन्दरसे देख रहा है। **पैरका पसीना** बन्द होकर अचानक दृष्टिकी दुर्बलता। पढनेके समय अक्षर सब लेपावृत दिखाई पडते है। शक्ति—१२x, पुराना होनेपर २४x और ३०x।

अंजनी (बिलनी—hordeolum or stye)—बिलनीमें अत्यधिक वेदना और स्फीति रहनेपर पहले हीसे फेरम फॉसके साथ साइलिसिया पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर बगैर दूसरी दवाकी सहायताके ही अच्छी हो जाती है। आँखकी पलकोंके जलमय अर्बुदमें साइलिसियाकी उच्च शक्तिका प्रयोग करना अच्छा है।

मोतियाबिन्द (cataract)—**पैरका पसीना विलुप्त होकर** मोतियाबिन्द होनेपर यही एकमात्र औषध है।

कर्ण-प्रदाह व कानसे पीब निकलना (otitis and otorrhœa)—बाहरी और मध्य कानकी प्रदाहिक स्फीति। कानमें शूलवेदना, टपक और काटने-सी वेदना। पैरोटिड (parotid) ग्रन्थिकी स्फीति और वह स्थान कडा होना। कानके चारों तरफ छोटे-छोटे फोडे। प्रदाहकी प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे सेवन करानेसे पीब उत्पन्न होना रुक जाता है एव दर्द भी दूर हो जाता है। इसके बादकी अवस्थामें जब कान स्फीत और वेदनामय होता है—लेकिन तब तक भी पीब नहीं हुई रहती, ऐसी हालतमें **केलि म्यूर**के साथ पर्यायक्रमसे इस औषधका सेवन करनेसे सभी कष्ट घट जाते हैं। पीब हो जानेपर साइलिसिया सर्वापेक्षा अधिक लाभदायक है। कानमें स्नायविक शूलवेदना होनेपर भी **मैग फॉस**के साथ यह औषध व्यवहृत होती है। मालूम होता है मानो कानके अन्दर चीटियाँ घुमकर फर-फर शब्द कर रही है। श्रवणशक्तिकी अल्पता।

पूर्णिमाको श्रवणशक्तिको हीनता या अधिकता। स्नान करनेके कारण कानमें प्रदाह।

कानके पकनेमें साइलिसिया एक विशेष उल्लेखनीय औषध है। पुराने कान पकेमें यह अधिक लाभदायक है। यदि कानकी पीव गाढ़ी, पीली, दहीकी तरह थक्का-थक्का, जल-सा तरल, रक्त मिश्रित और दुर्गन्ध-युक्त हो, तो यह औषध व्यवहृत होती है। ठण्डी वायुके प्रवाहसे पीवकी वृद्धि होती है। इसके साथ शारीरिक आकृतिका सादृश्य रहनेपर तो कोई बात ही नहीं।

सर्दी (coryza)—सर्दीकी पुरानी हालत में नाकसे दुर्गन्धयुक्त पीला पीव-सा एव कभी-कभी रक्त मिश्रित स्राव निकलता है। नाकका भीतरी भाग अत्यधिक सूखा एव उसके चारों ओर घाव होता है। नाकसे रक्तस्राव। नाकका भीतरी भाग लालवर्णका दिखाई देता है। नाककी खुजली (कृमि-जनित होनेसे नेट फॉस)।

नाकका घाव (ozæna)—स्क्राफ्यूलस शिशुके नाकका घाव। **मस्तक और पैरोंमें अत्यधिक परिमाणमें दुर्गन्धमय पसीना।** नाकके बीचकी हड्डीका आवरण (periosteum) आक्रान्त होकर वहाँसे दुर्गन्धमय स्राव निकलता है। उपदशजनित नाक की अस्थिमें घाव और दुर्गन्धमय पीव निकलती है। स्पर्श करनेसे वेदना मालूम होती है। नाककी हड्डियाँ नष्ट होकर सडती रहती हैं।

दन्तशूल (toothache)—भयानक कष्टदायक दन्तशूल। दन्त-वेदना शीलतासे अथवा उत्तापके प्रयोगसे किसी तरह ही नहीं घटती, बल्कि उससे वेदनाकी वृद्धि होती है। वेदना रातमें और भोजन करते समय अत्यन्त बढ जाती है। रातमें अधिक वेदना होती है इस हेतु नींद नहीं आती। डा० केण्टका कहना है कि दन्तवेदना शीलतासे वृद्धि और उत्तापसे घटती है। मेरा खयाल है कि रोग जटिल या पुराना होनेसे रोगी किसी तरहसे भी आराम नहीं पाता। **पैरका पसीना लुप्त होनेके कारण** दन्तशूलकी उत्पत्ति। दाँत लम्बे और शिथिल मालूम

होते हैं। दाँतकी वेदना बहुत भीतर मालूम पड़ती है। जब दूसरी किसी दवासे दन्तशूल दूर नहीं होता, उस समय यही उपयुक्त औषध है। प्रादाहिक दन्तशूलमें पर्यायक्रमसे फेरम फॉसके साथ।

मसूड़ेका प्रादाहिक वेदनामें (gingivitis & gum boil)—फेरम फॉसके साथ पर्यायक्रमसे व्यवहारकी बात तो पहले ही कह चुका हूँ, किन्तु यदि फेरमकी अवस्था उत्तीर्ण होकर मसूड़े स्फीत हों तो **कैलि म्यूर** अकेले अथवा पर्यायक्रमसे व्यवहार करना होता है। इनसे उपकार न होनेपर तब यदि पीब होनेकी सम्भावना रहे अथवा पीब बनती ही रहे, तो साइलिसियाके व्यवहारसे शीघ्र ही पीबकी उत्पत्ति होकर फोड़ा फट जाता है और रोग आराम हो जाता है।

दन्तक्षत (caries of the teeth)—यही प्रधान औषध है, लेकिन अन्यान्य औषधियोंके लक्षण रहनेपर इस औषधके साथ पर्यायक्रमसे प्रयोग किया जा सकता है। साइलिसियाके सभी प्रकारके क्षतमें ही दुर्गन्ध-युक्त स्राव रहता है। दाँतका एनामेल या मीना उठ जानेसे दाँत भुरभुरे हो जाते हैं और बादमें क्षत उत्पन्न होते हैं।

दाँत निकलनेके समयके रोग (dentition and its effects)—**कैल्क फॉस** ही इस अवस्थाकी प्रधान औषध है। स्क्राफ्यूलस शिशुओंके रोग। मस्तक और पैरमें बहुत अधिक पसीना होना कैल्क फॉसके साथ पर्यायक्रमसे।

टॉन्सिल-प्रदाह (tonsillitis)—टॉन्सिल-प्रदाहमें पीब पैदा होनेकी सम्भावना होनेपर इस औषधके प्रयोगसे शीघ्र पीब पैदा हो फटकर निकल जाती है। पीब निकल जानेके भी बाद घाव सुखानेके लिये इस औषधकी आवश्यकता होती है। लेकिन यदि शीघ्र न सूखे तो **कैल्क सल्फ**का प्रयोग करना पड़ता है। खाना निगलते समय वेदना मालूम होती है। प्रतीत होता है मानो टान्सिलमें एक पिन धँसा हुआ है। घावसे गाढ़ी पीले रंगकी पीब निकलती है। पीबमें बदबू रहती है। पतली पीब भी निकलती है। ठण्डा लगनेके बाद रोग—दूसरी दवासे

उपकार न होनेपर।

वमन (vomiting)—शिशु दूध पीनेके साथ ही वमन कर देता है। माँका दूध पीनेपर भी उसी तरह वमन करता है (फेरम फॉस, कैल्क फॉस)। शिशु माँके स्तनसे दूध पीना नहीं चाहता। दूध पीनेसे उदरामय होता है। वमन अम्लस्वादयुक्त नहीं होता।

अजीर्णता (dyspepsia)—पुराने अजीर्ण रोगमें अम्लोद्गार, छातीमें जलन और शीतानुभव रहनेसे (कैल्क फॉस, नेट्रम फॉस)। पेटमें दर्दके साथ मुखमें पानी आना एव कै होना। पेटमें दर्द प्रायः भोजनके वाद ही होता है। आहार करनेके वाद वमन। दूध पीनेसे उदरामय होता है। वहुत अधिक भूखका लगना, केवल खाना-खाना ही करता रहता है, यहाँ तक कि भोजन करनेके वाद ही फिर खाना चाहता है। रातमें भूखके कारण नींद तक भी नहीं होती। भूखके समय न खानेसे हाथ पैर थरथराते रहते हैं। भूखकी वृद्धि प्रात.काल और सन्ध्या समय ही अधिक दिखाई देती है। भोजनके वाद या पहले मुखसे पानी निकलना।

अत्यधिक क्षुधा लगनेके विषयमें ऊपर वर्णित हुआ है; किन्तु क्षुधाहीनता भी इस औषधका एक और लक्षण है। प्रातःकाल मुखविक्त मालूम होता है। पकाया हुआ कोई भी खाद्य खाना नहीं चाहता। गरम भोजन रोगी खाना नहीं चाहता। ठण्डे भोजन और कच्चे फल-मूल खानेकी उत्कट इच्छा। मछली और मास खानेकी भी उसकी इच्छा नहीं होती, खानेसे भी वर्दास्त नहीं होता। वीयर नामक शराव पीनेकी इच्छा होती है।

उदरामय (diarrhœa)—शिशुओंके मस्तकमें दुर्गन्धयुक्त पसीनाके साथ दुर्गन्धमय पतला उदरामय। मलकी दुर्गन्धसे मानो नाडी तक हिल जाती है। उदर कडा, स्फीत और वेदनायुक्त। टीका देनेके वाद उदरामय। पेट भरकर उत्तम-उत्तम भोजन करता है, तव भी क्रमश शीर्ण होता जाता है (नेट्रम म्युर)। खाद्य-द्रव्य अच्छी तरहसे

हजम नहीं होते, यहाँ तक कि जो-कुछ खाता है सभी अजीर्णावस्थामें मलके साथ निकल जाता है। म्लानमुख शिशु। बीच-बीचमें दुर्गन्धयुक्त वायु निकलता है। **परिवर्तनशील पतला मल**—एक-एक समय एक-एक प्रकारका दस्त होता है। ठण्डी हवामें उदरामयकी वृद्धि। कभी भूखसे खाना-खाना किया करता है, कभी या तो भूख लगती ही नहीं। किन्तु खानेसे ही कै हो जाती है। पकाया हुआ खाद्य खाना नहीं चाहता, अच्छी नींद नहीं होती।

रोगी तत्त्व—खुलना शहरमें एक सम्भ्रान्त परिवारके एक जटिल रोगीकी चिकित्सा करनेके लिए मैं बुलाया गया। रोगी ३-४ सालका शिशु था। ६।७ महीनेसे पेटकी बीमारीसे पीड़ित रहकर जीर्ण-शीर्ण हो गया था। सभी प्रकारके मतोंसे चिकित्सा कराकर भी कोई फल नहीं मिला। शिशु पहले हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ था, किन्तु वर्तमान समयमें सिर शरीर की तुलनामें बड़ा, पेट निकला, हाथ-पैर पतले, सदा ही खानेकी इच्छा—लेकिन खानेपर पचता नहीं, मस्तकमें दुर्गन्धयुक्त पसीना एवं मुखका रंग फीका दीख पड़ा। मलमें सड़ी लाशकी तरह दुर्गन्ध एवं शिशु अत्यन्त चिड़चिड़े स्वभावका था। बीच-बीचमें एकादशी या अमावस्या तिथि को ज्वर आ जाता था। मलका रंग हर बार एक प्रकारका नहीं होता। **साइलिसिया** २००x एक मात्रासे एक महीनेके अन्दर रोगीका चेहरा पूर्णरूपसे परिवर्तित होकर वह एक नया मनुष्य बन गया। एक मात्रासे इतना बड़ा परिवर्तन विश्वास नहीं होता।

रक्तामाशय (dysentery)—कफ और रक्तमिश्रित मल। आमाशय भी इस औषधसे आराम हो सकता है, किन्तु मलमें अत्यधिक दुर्गन्ध रहना चाहिए। शारीरिक आकृति अध्यायमें वर्णित लक्षण रहनेपर जिस किसी भी रोगमें यह दवा फलदायक होगी।

कोष्ठबद्धता (constipation)—**सरलान्त्रकी दुर्बलता हेतु** आसानीसे मल नहीं निकलना चाहता—**मल बहुत तकलीफसे कुछ निकलकर फिर अन्दर घुस जाता है।** ऋतुके पहले या बादमें प्रायः

सभी अवसरोंपर ही कोष्ठवद्धता रहती है। सरलान्त्रमें वहुत दिनों तक मल जमा रहता है। दुर्गन्धमय वायु निकलता है। सूखा मल त्यागनेके वाद मल त्यागनेमें जलन मालूम होना।

कृमि (worms)—कृमिके कारण शूलवेदना (नेट फॉस)। मुँहमें पानी आना (नेट म्यूर)। पेटमें दर्द और उत्तापसे उसका घटना (मैग फॉस)। शूलवेदनाके समय हाथ पीले और नीले रंगका होता है। फीताकी भाँति कृमि और म वर्म।

हैज़ा (cholera)—उदरामयके लक्षण देखना चाहिये।

भगन्दर (fistula in ano)—वक्षके लक्षणकी उपस्थितिके साथ भगन्दर। घावमें पीव सञ्चित होना। चलते समय मलद्वारमें तीव्र सूई गडने-सी वेदना एव उत्तापसे उसका घटना। शक्ति २००x सर्वोत्कृष्ट, ३०x और ६०x क्रम भी अच्छा है।

प्रमेह (gonorrhœa)—वहुत दिनोंके स्थायी प्रमेह रोगमें गाढी दुर्गन्धमय पीवका स्राव होनेपर। कूथन देनेपर पेशावके रास्तेसे पीव या रक्तमिश्रित पीव अथवा सूतेकी तरह पदार्थ निकलता है। रोगी सदा ही शीतानुभव करता है, यहाँ तक कि व्यायाम करनेपर भी शीत नहीं जाता। रोगीको हमेशा ही पेशाव करनेकी इच्छा होती है, किन्तु थोड़े परिमाणमें पेशाव होता है।

उपदंश (syphilis)—पुराने उपदंशके साथ स्थानीय (local) कठिनता। घावके चारों ओरके स्थान ऊँचे। वेदनामय और प्रदाहित एवं उस स्थानसे पतले दुर्गन्धमय रक्तमिश्रित पीवका स्राव। वाधीमें पीव उत्पन्न होनेपर पाराका दोष दूर करनेके लिए इसकी शक्ति अद्वितीय है। अधिक पारा सेवन करनेके कारण शरीरमें दाग होनेपर इस औषधके सेवनसे अच्छा हो जाता है।

रेतःस्खलन (स्वप्नदोष—spermatorrhœa)—अतिरिक्त हस्त-मैथुन अथवा अतिरिक्त स्त्री-सहवासके कुफल स्वरूप पीडा-समूह रेतः-स्खलनके अन्तर्गत हैं। स्त्रियोंके विषयमें आलोचना करनेसे अथवा

किसी स्त्रीको देखनेसे प्रास्टेटिक-रस निकलता है। मल त्यागनेके समय कुथनसे भी उसी प्रकार प्रास्टेटिक-रस निकलता है। हमेशा ही केवल स्त्रियोंके विषयकी चिन्ता और रातको स्वप्नदोष होना। स्त्री-सहवास के वाद अत्यधिक थकावट एवं हाथ-पैर कमजोर मालूम पड़ते हैं। जननेन्द्रियकी दुर्बलता हेतु सहवास करनेकी इच्छा नहीं रहती। अतिरिक्त उत्तेजना हेतु दिन-रात स्त्री-सहवासके विषयमें जिस तरह चिन्ता करता है, वैसे ही उसके विपरीत भी दिखाई देता है—अर्थात् सहवासकी इच्छा रहित लक्षण भी दीख पड़ता है।

मूत्रयन्त्रकी बीमारी (urinary complaints) —किडनीमें पीबका उत्पन्न होना। पीब और कफ मिश्रित पेशाब। पेशाबमें यूरिक एसिड या लाल रंगकी वालू-सी तलछट (sediment) पड़ती है।

अण्डकोष-प्रदाह (orchitis)—अण्डकोष प्रदाहित होनेके बाद उसमें पीब संचित होनेकी सम्भावना होनेपर ६x शक्तिसे शीघ्र ही पीब उत्पन्न होकर निकल जाती है। इसके बाद उच्चक्रम, तथा पुराने रोगमें भी उच्चक्रम।

एकशिरा और कोरण्ड (hydrocele and elephantiasis of the scrotum)—अमावस्या और पूर्णिमाको रोगकी वृद्धि होनेपर यह उत्कृष्ट है। गण्डमाला धातुग्रस्त बालकोंके रोग। पौष्टिकताके अभावसे शरीर क्रमशः दुबला होता जाता है। मस्तकमें दुर्गन्धमय पसीना, अण्डकोषमें शोथ और खुजली। शक्ति—३०x।

ऋतुस्राव (menstruation)—**ऋतुस्रावके साथ अथवा उसके पहले हर हालतमें ही कोष्ठबद्धता रहती है।** ऋतुस्राव होनेके समय सर्वाङ्ग शीतल मालूम होता है। **जो सदा ठण्डे जलमें रहकर काम करती हैं, उनके अत्यधिक ऋतुस्रावमें।** ऋतुस्राव बहुत अधिक परिमाणमें होता है और वह स्राव इतना तीव्र होता है कि जिस स्थानपर लगता है वहीं घाव-सा हो जाता है और जलन होती है। २।३ महीनेके अन्तरसे भी ऋतुस्राव होता है। **ऋतुके समय पैरमें दुर्गन्धमय**

पसीना। योनि-द्वारमें जलन होती है, खुजलाता है और उसके ऊपरके केश उड़ जाते हैं। ऋतुकालमें उदर-वेदना। अत्यधिक पुरुष सहवासकी इच्छा होती है। सन्तानको स्तन पिलानेके समय भी ऋतु होता है या योनिद्वारसे रक्त निकलता है।

स्तनकी चुचूक (nipple) मालूम होता है कि स्तनके अन्दर घुस गई।

श्वेत-प्रदर (leucorrhœa)—अम्लात्मक और दूध-सा सफेद स्राव। इतना तीव्र कि जिस स्थानपर लगता है वहाँ घाव-सा हो जाता है और जलन होती है। स्रावका परिमाण अत्यन्त अधिक।

स्तन-प्रदाह (mastitis)—साधारण फोड़ोंकी भाँति चिकित्सा होती है। फोड़े अध्याय देखें। यह स्तनकी बहुत अच्छी दवा है। ठीक समयपर प्रयोग किया जानेपर दर्दके साथ-साथ सभी रोग भी आराम हो जाते हैं।

गर्भावस्था (pregnancy)—डा० केण्टका कहना है कि जिस जगह स्त्रियाँ इतनी दुर्बल होती हैं कि गर्भस्राव होनेकी प्रवणता रहती है अथवा किसी तरहसे भी गर्भ नहीं रहता, उनके लिये इस औषधका प्रयोजन होता है। मालूम होता मानो यन्त्रादि थक गये हैं और कामके करनेमें वे असमर्थ हैं।

किसी-किसीका कहना है कि जब किसी तरह भी सन्तानका प्रसव नहीं होता, उस समय साइलिसियाके उच्च क्रमके प्रयोगसे अति शीघ्र ही सन्तानका प्रसव हो जाता है।

जरायुके अर्बुद (tumour of the uterus)—फैलोपियन ट्यूब (fallopian tube) अर्थात् डिम्बकोषसे जरायु तककी नलके अन्दर पीब और जलका सञ्चय होना इस औषधसे अच्छा हो जाता है। जरायुके एक तरफ एक अर्बुद या ढेलेकी तरह बढ़ती रहती है एवं जल-सा या पीब-सा अथवा रक्तकी तरह तरल स्राव अचानक स्रोतकी भाँति वेगसे अत्यधिक निकलता रहता है; इस प्रकार अर्बुद या ढेले-सी वस्तु गायब हो जाती है, किन्तु कुछ दिनोंके बाद उसकी फिर पहलेकी-सी ही अवस्था

हो जाती है। विस्तृत विवरणके लिये ५५ पृष्ठमे अर्वुद द्रष्टव्य।

रैकाइटिस (rachitis)--शारीरिक आकृति इसके साथ जरूर देखना चाहिए। इस रोगके साथ रोगीके मस्तकमे बहुत अधिक परिमाणमें पसीना और उदरामयके मलमें अत्यधिक दुर्गन्ध रहनेपर यह औषध उपयोगी है। **कैल्क फॉस**में भी उस प्रकार का लक्षण है और अन्यान्य बहुतसे लक्षण दोनोके एक ही प्रकारके हैं। दोनो औषधोंके प्रभेद कैल्क फॉस अध्यायमे देखें। दोनोके मस्तकमें पसीनाका लक्षण रहनेपर भी साइलिसियाकी तरह पैरमें पसीना कैल्क फॉसमें नही है। इसके अलावा (sensitiveness to touch)—अर्थात् स्पर्शाधिक्य साइलिसियामें है, किन्तु कैल्केरियामें नही है।

सब प्रकारकी खाँसी (all kinds of cough)—ठण्डे जलके पीनेसे, प्रातःकालके समय और रातमें सोते रहनेके समय खाँसीकी वृद्धि, गलनलीमें सूखेपनके भावके कारण गला सुरसुराकर खाँसी (tickling cough) आना, खाँसीके साथ स्वरभंग। गला घड-घड करता है एव खाँसनेपर सहज ही में कफ निकल आता है। खाँसते समय मालूम होता है मानो गलेमें एक केश घुसा हुआ है। बात करनेपर भी खाँसी बढ़ जाती है। खाँसनेके समय छातीमें वेदना। स्वरयन्त्रकी किसी भी बीमारीमें पीब संचित होना। अत्यधिक परिमाणमें गाढा पीला या हरी आभा लिये रंगका कफ निकलना। दुर्गन्धयुक्त कफ। ये सब लक्षण रहनेपर श्वास-यत्र सम्बन्धी सभी रोगोमें ही यह औषध फलदायक होगी। पत्थर खोदनेवालोकी खाँसीमें यह उत्कृष्ट है।

यक्ष्मा (phthisis)—सब प्रकारकी खाँसी अध्यायमें वर्णित लक्षणोको देखना चाहिए। **जलसे भरे बर्तनमे कफ फेकनेपर वह डूब जाता है। यक्ष्माके साथ अतिशय दुर्बलता और रातको पसीना होना** (कैल्क फॉस, नेट म्यूर)। तलवोमें जलन और पसीना होना। कोष्ठबद्धता। यह रोगकी अन्तिम अवस्थाकी औषध है। यक्ष्माकी प्राथमिक अवस्थामें जब फुसफुस व्यापक रूपमें आक्रान्त नहीं

होता, उस समय यह औषध उपयोगी है। यदि धातुगत रूपमें लक्षण मिल जायें, तो यह औषध रोगकी जड़में पहुँच जाती है एवं रोगी अच्छा हो जाता है। यह एक बहुत ही गहरी क्रियाशील औषध है। इस जगह एक विषय बतला रखना अच्छा है। चिकित्साकी साधारण पुस्तकोंमें लिखा हुआ है कि क्षय-रोगीको शेषावस्थाके अलावा प्रथमावस्थामें इस औषधका व्यवहार बहुत खतरनाक है। किन्तु मैं इसके विपरीत अवस्था का उल्लेख करना चाहता हूँ। क्षय-रोगीके लिये साइलिसिया कहाँ मारात्मक होता है?

शरीरके अन्दर अगर कोई बाहरी चीज, जैसे—बाँसका टुकड़ा, काँटा इत्यादि रहें, तो उनके चारों तरफ पीब उत्पन्न करनेकी ताकत इस औषधमें है। शरीरके अन्दर किसी अज्ञात स्थानमें एक काँटा या सुई अथवा ऐसी ही कोई चीज घुस जानेपर उसके चारों तरफ पीब उत्पन्न होनेसे उसे निकाल देनेकी ताकत सिर्फ इस औषधमें ही है। यदि रोगीके मर्मस्थलमें रक्तशिरासमाच्छन्न स्थानमें कुछ हुआ रहे एवं साइलिसियाके लक्षण रहें, तब तो निश्चय ही बाहरी वस्तुके चारों तरफ पीब उत्पन्न कर उसे बाहर निकाल देगा, किन्तु रोगी हो तो यह बर्दास्त नहीं कर सकेगा। इन्हीं कारणोंसे यदि क्षय रोगकी गोटियाँ फुसफुसके अन्दर व्यापक रूपमें फैली हों एवं साइलिसियाके लक्षण रहें, तो इस औषधका खूब उच्चक्रम और बार-बार प्रयोग न करना ही बुद्धिमानीका काम होगा। क्योंकि ऐसी हालतमें उच्च शक्तिके औषधका प्रयोग करनेसे फुसफुसके कोषोंमें स्फोटक उत्पन्न कर गोटियोंको तो निकाल अवश्य देगा, लेकिन रोगीके और बचनेकी आशा न रहेगी। इसलिये लक्षण रहनेपर भी ऐसी हालतमें निम्नक्रमके औषधका प्रयोग करना ही अच्छा है, कारण कि यक्ष्मा रोगकी अन्तिम हालतमें रोगीको रोगके हिसाबसे आरोग्य करनेकी चेष्टा नहीं करनी चाहिये। केवल थोड़ा सा सहारा देकर किसी तरह रोगीके मरणको कष्टविहीन करना पड़ता है। अतः देखनेमें आता है कि प्रथमा-वस्थाकी अपेक्षा शेषावस्थामें औषध प्रयोग करनेके विषयमें सावधान

होना होगा। किन्तु **कैल्केरिया औषधों में** यह भय नहीं है ; वे फुसफुसकी गोटियोंके चारों तरफ पीब उत्पन्न नहीं करते, किन्तु उनको सकुचित कर कोषनद्ध करते हैं एव गोटियोंको और भी कड़े रूपमें परिणत करते हैं।

मैं जानता हूँ कि मेरे एक उपाधिधारी चिकित्सक मित्र औषधकी गति और शक्तिके विषयका ज्ञान न रखनेके कारण एक यक्ष्मा-रोगके रोगीकी मृत्युका कारण हुए थे। ग्रन्थकारके होमियोपैथिक औषधकी शक्ति और मात्रा नामक बंगला पुस्तकमें इस विषयपर विस्तृत रूपमें आलोचना की गई है।

सोनेसे ही भयानक खाँसी एवं थक्का-थक्का घना पीले रंगका कफ निकलता है (violent cough when lying down, with thick yellow lumpy expectoration—Boericke)।

दमा (asthma)—दमाके साथ अतिशय श्वासकष्ट, विशेषकर सोनेपर उसकी वृद्धि होती है (नेट्रम सल्फ)। श्वासकष्टको घटानेके लिये रोगी खुले वायुमें जाना चाहता है, इसके लिये रोगी खिड़कीके निकट मुँह लगाकर बैठा रहता है। साँय-साँय शब्द, ढीले दमा-रोगमें घडघडकी मोटी आवाज एव सचालनमें असमर्थता। अत्यधिक परिश्रमसे, उत्तप्त होनेसे एवं लुप्त प्रमेहसे रोगकी उत्पत्ति होती है। पुराने प्रमेहग्रस्त लोगोंके या चर्म-रोगग्रस्त माता-पिताके सन्तानोंके दमामें व्यवहृत होता है। अमावस्या और पूर्णिमाको रोगकी वृद्धि होती है। श्वासकष्टके लिये **केलि फॉस** पर्यायक्रमसे व्यवहार करना चाहिए। शक्ति—१२x, केलि फॉस—३x।

नेट्रम सल्फ—साइलिसियाकी भाँति नेट्रम सल्फमें भी पुराने चर्म-रोग दोषग्रस्त या चर्म-रोग दोषग्रस्त माता-पिताकी सन्तानके दमा, श्वासकष्टको घटानेके लिये खुले वायुमें जानेकी इच्छा एवं तर जलवायुमें रोगकी वृद्धि है। साइलिसियाकी खाँसी सूखी होनेपर भी नेट्रम सल्फकी तरह तरल खाँसी भी है। किन्तु **नेट्रम सल्फमें** खाँसनेके समय छातीमें, खासकर बॉयी छातीमें इतनी वेदना होती है कि खाँसीकी चोट

से उठकर बैठ जानेको वाध्य होता है ; किन्तु साइलिसियामें ऐसा कुछ नहीं है। साइलिसियामें हिलने-डोलनेपर खाँसीकी वृद्धि है, **नेट्रम सल्फमें** संचालनसे सभी लक्षणोंका ही घटना है। तर जलवायुमें रोग-वृद्धिकी प्रधान औषध **नेट्रम सल्फ** है ; यहाँ तक कि जो लोग जल-प्रणालीके निकट रहकर या जलज उद्भिद खाकर पीडित होते हैं, उन लोगोंके लिये नेट्रम सल्फ ही एकमात्र दवा है। इसीलिये डा० फैरिंग-टनने कहा है कि—you will find Natrum sulph especially indicated for ailments which are either aggravated or dependent upon dampness of the weather or dwelling in damp houses—*Clinical Materia Medica*, page 696) जिन सव रोगोंकी तर जलवायुमें अथवा सीडभरे गीले कमरोंमें रहनेके कारण वृद्धि होती है, उन सव रोगोंके लिये खासकर **नेट्रम सल्फ** उपयोगी है। केवल तर जलवायुमें वृद्धि अथवा तर जलवायु ही रोगका उत्तेजक कारण है—सिर्फ इस इतिहासके पानेसे नेट्रम सल्फ व्यवहृत हो सकता है ; किन्तु साइलिसियामें अन्य लक्षण न रहनेपर केवल उस लक्षणपर यह व्यवहृत नहीं हो सकता। साइलिसियाकी खाँसी पहले सूखी, पीछे ढीली होती है, **नेट्रम सल्फकी** खाँसी आरम्भसे ही ढीली होती है। साइलिसियामें कोष्ठवद्धता होनेका स्वभाव है, **नेट्रम सल्फमें** उदरामय होनेका स्वभाव है। साइलिसियामें सोनेसे ही भयानक खाँसी होती है (violent cough when lying down —Boericke), इस कारण उठकर वैठ जाता है ; **नेट्रम सल्फमें** भी रोगी विछावनपर उठकर वैठ जाता है, लेकिन वह खाँसीकी चोट सँभालनेके लिए (springs upon bed the cough hurts so—Boericke), नेट्रम सल्फमें खाँसीके समय रोगी छातीको पकड रखता है, विशेषकर वेदना-क्रान्तकी तरफ, वायी छातीमें ही साधारणतः वेदना होती है। डा० नैश वाँयी छातीकी वेदनाको एक उत्कृष्ट लक्षणके रूपमे समझते हैं। साइलिसियाकी खाँसी रातमें सो जानेके वाद, पूर्णिमाके समय और

वात करनेसे वढ जाती है, और **नेट्रम सल्फकी** खाँसी वहुत तडके और तर सन्ध्याकी हवामें वृद्धि होती है।

हृद्स्पन्दन (heart beat)—मामूली हिलने-डोलनेपर हृद्स्पन्दन और नाडी लुप्त हो जाना।

वात (rheumatism)—पुराना वात, खासकर वह खान्दानी होनेसे यह औषध विशेष फलदायक है। सन्धिस्थानकी वात-वेदनामें यह अधिक उपयोगी है। साइलिसियाकी वेदना रातके समय एव ठण्डेमें वढती है। आक्रान्त स्थानपर कपडे लपेट रखनेसे—या उत्तापसे घटना, आवरण हटानेसे वृद्धि होती है।

स्नायुशूल (neuralgia)—वहुत कष्टदायक स्नायुशूल। जो सव स्नायुशूल अनेक प्रकारके औषधोंसे भी आरोग्य होना नहीं चाहते। ठण्डे या उत्ताप किसीसे भी घटता नहीं। रातमें वहुत अधिक वृद्धि होती है। वीच-वीचमें प्रधान औषध **मैग फॉसका** प्रयोग करना पडता है। मुखके दाहिनी ओर आक्रमण होता है। डा० केण्टका कहना है कि उत्तापसे घटना और ठण्डेसे वृद्धि होती है।

पक्षाघात (paralysis)—मेरुदण्डकी किसी भी वीमारीके साथ पक्षाघात रहनेसे यह उपयोगी है। साइलिसियाके रोगीको कोष्ठ-काठिन्यता और स्पर्शाधिक्य अधिक रहता है। शरीर हाथसे स्पर्श करनेसे या जोरसे शब्द करनेपर रोगी चौंक उठता है। ठण्डसे रोग-लक्षणोंकी वृद्धि एव उत्तापसे घटना।

कण्टकादि निकालनेकी शक्ति—इस औषधका यह विशेष उल्लेखनीय लक्षण है। शरीरके अन्दर मछलीका काँटा, सूई या कोई भी काँटा घुस जानेसे अथवा टूटी हड्डीका टुकडा भीतरमें अटका रहनेसे यह औषध उसे वाहर निकाल देनेमें विशेष सहायता करती है।

रोगी विवरण—ई० १६३५ सालके किसी एक समयकी घटना है। गोपालपुरके एक ब्राह्मण युवकके ८।६ वर्षकी उम्रके एक पुत्रके तलवेमें एक काँटा गडकर पैर वहुत ही कष्टदायक हो गया था। पैरमें अस्त्रो-

पचार करके काँटा निकालना निश्चित हुआ था ; किन्तु काँटा गडनेका ठीक स्थान मालूम न हो सकनेके कारण किस स्थानपर अस्त्रोपचार किया जावे यही एक विकट समस्या उपस्थित हो पडी थी। मेरे पास आनेपर मैंने २-३ मात्रा **हिपर सलफर** ३० शक्ति की दवा दे दी। इससे ज्वर और वेदना विलकुल ही गायव हो गई और वह वालक चलने-फिरने लायक हो गया। इस हालतमें ४ ५ दिन औषध बन्द रखनेके वाद **साइलिसिया** ३० की दो मात्रा व्यवहार किया गया। इससे वह स्थान पहले सफेद होकर २-१ दिनके अन्दर ही करीव डेढ इचका एक काँटा तलवेके ऊपरकी ओर एक वगलसे निकल गया था। औषधिकी इस प्रकारकी आश्चर्य-चकित क्रिया देखकर लडकेके पिता को वहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होने कहा कि एलोपैथिक चिकित्साके ऊपर निर्भर कर रहनेसे लडकेकी जो किस प्रकारकी चिकित्सा होती और उसे जो कितना कष्ट भोगना पडता, यह सोचनेसे हृदय काँप उठता है। अभी तो केवल एक्स-रेकी वात सुनी जा रही है। किन्तु वह भी यहाँसे प्रायः ६० मील दूर पवना शहरमें। अर्थ-सम्पन्न लोगोके अलावे उसकी सहायता प्राप्त करना साधारण लोगोके लिए सम्भव नही। इस दशामें ४-५ मात्रा होमियोपैथिक दवा जो की है, वह सारे जीवनमें भूलनेको नही। वालकके पिता एक एलोपैथिक चिकित्सक थे, किन्तु इस घटनाके वादसे उन्होंने होमियोपैथिक चिकित्साकी दीक्षा ग्रहण कर ली।

हाय! एलोपैथिक सर्जरीकी इतनी उन्नति होनेपर भी किन्तु एक एलोपैथिक चिकित्सकको सर्जरीके विषयको ही लेकर एलोपैथी त्याग देना पडा।

प्लेग (plague)—कभी-कभी आवश्यकता होती है। लेकिन व्यूवोनिक प्लेगमे आक्रान्त ग्रन्थिमें पीव उत्पन्न होनेसे आवश्यकता होती है।

शारीरिक तापहीनता—शरीरमें तापके अभावके कारण सदा जाड़ा-जाडा-सा मालूम होता है। शारीरिक परिश्रम करनेपर भी शरीर गर्म नहीं होता।

स्फोटक—(abscess)—शरीरके जिस किसी भी ग्लैण्ड एवं टिशूमें प्रदाह, स्फीति और पीवकी उत्पत्ति क्यों न हो, उसीपर ही इसका अच्छा अधिकार है। टिशू कोमल या कडे हों, पेरियस्टियम, अस्थि, ग्लैण्ड, टेण्डन, फुसफुस, अन्त्रपथ इत्यादि जो कोई स्थान क्यों न हो एवं उनमें स्फोटक, नासूर अथवा जिस किसी प्रकारका भी घाव क्यों न उत्पन्न हो, साइलिसिया से आशातिरिक्त उपकार मिलेगा। साइलिसिया स्फोटकादिमें जिस तरह पीव उत्पन्न कर सकता है, वैसे ही स्फोटकादिसे निकलती हुई पीवके परिणामको घटाकर घावोंको सुखा भी दे सकता है। अब किस हालतमें किन-किन लक्षणोंपर साइलिसियाका प्रयोग करना होगा, वही बतला रहा हूँ।

किसी स्थानपर प्रदाह होनेसे (स्फोटक, मुँहासा, कार्वङ्कल इत्यादि में) उसे दूर करनेके लिये **फेरम फॉस**का प्रयोग करना पडता है एव उससे बहुत बार रोग आराम भी हो जाता है; इसीलिये दूसरी और किसी दवाकी आवश्यकता नहीं होती। किन्तु यदि प्रदाह घटकर भी स्फीति वर्तमान रहे, तो उस समय **केलि म्यूर**का व्यवहार करनेसे रस-रक्तादि शोषित होकर सभी उपसर्ग शान्त हो जाते हैं; पर ऐसा न होनेपर इसी औषधका प्रयोग करना पडता है। शरीरमें साइलिसियाकी कमी होनेपर स्फोटकादिमें पीव पैदा नहीं होती एवं शीघ्र अच्छा होना नहीं चाहता। इसी समय इस औषधका प्रयोग करनेपर **शीघ्रतासे स्फोटकोंमें पीव पैदा होती है एवं स्फोटकको फटा व संचित पीवको निकालकर शीघ्र ही घाववाले स्थानको सुखा डालता है। जब तक स्फोटकादिके चारों तरफकी कड़ाई चली नहीं जाती तब तक इसका व्यवहार करना पड़ता है।** साइलिसियाके व्यवहार करनेके बाद जब संचित रसादि निकल जाकर भी घाव सूखना नहीं चाहता, उस समय **कैल्क सल्फ**की आवश्यता होती है। इस हालतमें साइलिसियाका प्रयोग करनेसे बेकार ही समय नष्ट होता है। बहुत दिनोंसे यदि किसी स्थानसे पीव निकलती रहे, किसी भी उपायसे बन्द होना नहीं चाहती, तो साइलिसियासे वह आराम होता है; पर पीवमें

दुर्गन्ध अवश्य रहनी चाहिए। इससे मालूम होता है कि यह औषध द्वितीयावस्था उत्तीर्णकर तृतीयावस्थाके आनेपर उपकारी है, अर्थात् यह तृतीयावस्थाकी दवा है। यह फेरम फॉस और केलि म्यूरके बाद एव कैल्क सल्फके पहले व्यवहृत होता है। किसी-किसी स्थानमें प्रथमावस्थामें ही फेरम फॉसके साथ यह औषध पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है और उसके घाव वगैर पके ही प्रायः प्रथमावस्थामें ही रोग अच्छा हो जाता है। **गलका** रोगमें बहुत बार इस प्रकारसे औषधका प्रयोग करनेसे रोग शीघ्र आराम हो जाता है।

कैल्क सल्फके साथ साइलिसियाका प्रभेद कैल्क सल्फके सब प्रकारके घाव अध्यायमें देखें। नासूरमें प्रायः ही साइलिसियाके अलावा दूसरी दवाकी आवश्यकता नहीं होती तथा उत्तेजित स्नायुमडल भी इससे शान्त होते हैं।

घावसे गाढी पीले रगकी दुर्गन्धमय पीवका स्राव होता है। जलकी तरह पतली पीव भी निकलती है। पर पीव पतली हो या गाढी उसमें बहुत ही बदबू रहती है। **कैल्क सल्फ**की पीव भी बहुत कुछ साइलिसियाकी पीवकी तरह होती है, किन्तु **कैल्क सल्फ**की पीवमें बदबू नहीं रहती, साइलिसियामें है। कैल्क सल्फकी पीवमें प्राय. ही रक्तके दाग रहते हैं।

चमडा मामूली खरोंट उठनेपर भी वह पक जाता है। गहरे स्थानके पीवकी उत्पत्ति होनेमें यह उत्तम औषध है। कभी-कभी स्थान स्फीत होकर बहुत दिनो तक उसमें पीव पैदा नही होती एव वेदना भी नही रहती ; किन्तु वह स्थान कडे होनेका रूप धारण करता है। इन सब स्थानोंमें कैल्क फ्लोर अथवा साइलिसिया या दोनो ही औषध पर्यायक्रमसे व्यवहार करना पडता है।

शक्ति—पीव उत्पन्न करनेके लिये ६x क्रम। जबतक स्फोटकादिके चारों तरफ रस-रक्तादि सञ्चित होते रहते हैं, तबतक उसको निकालनेके लिये निम्नक्रम ही अच्छा है। किन्तु पीवकी उत्पत्ति हो जाने एवं स्फोट-कादि फट जानेपर १२x, ३०x इत्यादि उच्चक्रम ही व्यवहार करना चाहिये।

पुराने रोगमें भी उच्चक्रमका प्रयोग करना पड़ता है एवं ऐसी हालतोंमें दैनिक २-१ मात्रा ही यथेष्ट है। किन्तु नये स्फोटकादिको फटानेके लिये एवं कार्बङ्कलमें ३-४ घण्टेके अन्तरसे निम्न क्रमकी (६x) औषधका प्रयोग करना पड़ता है और बाहरी प्रयोगके लिये उसी औषधका ही ३x चूर्ण उष्ण जलके साथ व्यवहृत होता है।

रोगी-विवरण—१६३५ ई. में ५-६ मीलकी दूरीपर स्थित परमानन्दपुर नामक गाँवमें एक मुसलमान युवतीके तलपेटमें एक बहुत बड़ा फोड़ा हुआ था। बाहरी हिस्सेकी परीक्षा करनेपर कड़ा मालूम होता था, किन्तु भीतरी हिस्सेमें वह फोड़ा क्रमशः बढ़ता जाता था। इसके साथ रोगिणीको ज्वर और प्रदाहित स्थानमें अतीव्र वेदना थी। इस रोगिणीकी आयुर्वेदिक, ऐलोपैथिक और घरेलू टोटका इत्यादि बहुत-सी चिकित्सायें हुई थीं। अन्तमें अस्त्रोपचार करना ही निश्चित हुआ, किन्तु स्थानीय चिकित्सकोंको साहस न हुआ। इसके बाद रोगिणीको चिकित्सार्थ मेरे पास लाया गया। मैंने ढाढस देकर तीन दिनोंके लिये **कैल्क फ्लोर** ६x—२ मात्रा एवं **साइलिसिया** ६x—२ मात्रा करके सेवन करनेके लिये दिया। आश्चर्यका विषय तो यह है कि तीसरे दिन स्फोटकसे अपने ही से करीब डेढ़ सेर पीव निकलकर सभी उपसर्ग घट गये। बादमें **साइलिसिया** १२x का प्रयोग करनेसे घाव सूख गया था।

अस्थि-रोग (diseases of the bone)—अस्थि-रोगमें साइलिसिया विशेष उपयोगी है; किन्तु साइलिसियाके रोगीके आक्रान्त स्थान पर ठण्ड सही नहीं जाती। ठण्डा जल, ठण्डी हवा कोई भी चीज उसे नहीं सहाती, आक्रान्त स्थानपर लगनेसे ही कष्ट होता है। शिशुओंके मेरुदण्डकी अस्थिकी वक्रतामें (curvature of the spine) यह विशेष लाभदायक है। स्क्राफ्यूलस (scrofulous) धातुके शिशुओंके अस्थि-रोगमें यह एक उल्लेखनीय औषध है। साइलिसियाके निर्दिष्ट घावसे जलकी तरह पतली दुर्गन्धमय पीव निकलती है। पीले रङ्गकी गाढ़ी दुर्गन्धजनक पीव भी निकलती है। घाव बहुत गहराईमें मालूम पड़ता

है। केरिज (caries) के साथ घाव और उसमें जलन रहती है। घावके चारों तरफ कड़ा एवं उससे तीव्र, दुर्गन्धमय एवं रस मिश्रित पीव निकलती है। घावकी पीव जिस स्थानपर लगती है, वहाँपर भी घाव हो जाता है। अस्थि सड़ जाती है और उसमें टनक और वेदना रहती है। अस्थिकी वक्रता और कोमलता। उपदंश रोगके कारण नाना प्रकारके घाव। टिबिया (tibia) अस्थिका रोग।

हिपजयेन्टके रोग (diseases of the hipjoint)—अस्थि रोग देखें। उस प्रकारकी पीवके स्रावमें उपकारी है। प्रथमावस्थामें **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे व्यवहार करनेपर पीव नहीं होती। पीव होनेपर भी इससे शीघ्र पीव बन्द होकर घाव सूख जाते हैं। आक्रान्त स्थानमें जलन, खुजलाहट और डंक मारनेकी भाँति वेदना।

घुट्ठीके रोग (diseases of the ankle-joint)—घुट्ठीसे तलवे तक वेदना और पैर या पैरकी घुट्ठीमें अत्यधिक दुर्बलता मालूम होती है। प्रतीत होता है मानों उसमें कुछ भी बल नहीं है। तलवेमें जलन होती है, खासकर रातके समय।

घाव, नासूर, कैन्सर इत्यादि (ulcer, sinus, cancer etc.)—स्फोटक अध्याय देखें। जरायु और मुखका कैन्सर।

मांसके भीतर उमड़नेवाला नख (ingrowing of the nails)—स्फोटककी भाँति चिकित्सा होती है। अधिक वेदना रहनेपर **फेरम फॉस**के साथ पर्यायक्रमसे। नख रुखड़ा और सहज हीमें टूट जाता है।

चर्मरोग (diseases of the skin)—चर्मरोगके साथ शारीरिक आकृतिका सादृश्य रहनेपर उत्कृष्ट है। पैरका पसीना रुककर रोग अथवा चर्मरोगके साथ पैरका पसीना होते रहना। जिस किसी भी स्थानसे क्यों न हो, गाढी पीले रंगकी दुर्गन्धमय पीवका स्राव होनेपर। पीवके साथ रक्त भी मिश्रित रहता है। मुँहासा, चिलब्लेन-रोग, शिशुओंके मस्तकके घाव (कैल्क सल्फ), कुष्ठ, सामान्य चोटसे ही रोग, समस्त शरीर ही खुजलाता रहता है, मालूम होता है मानो शरीरपर कीड़े चल रहे हैं।

रातमें खुजलीकी वृद्धि। एक्जिमा-रोगमें मछलीकी चोइयोंकी तरह परत उठना। ओठ खखड़ा, चमड़ा उठता है एवं फट जाता है।

स्राव लुप्त हेतु विविध रोग—पैरका पसीना, कानकी पीव, नासूर इत्यादि लुप्त होनेके समयसे प्रतिक्षेपिक स्राव, अर्बुद, मस्तिष्ककी थकावट, ज्वर, पुराना पाकाशय-प्रदाह इत्यादि विविध रोगोंकी उत्पत्ति होती है। खोज लगानेपर मालूम होता है कि उसके पहलेके इतिहासमें उन सब रोगोंके स्रावको लोप करनेकी कथा थी। कोई-कोई कहेंगे कि उनके कानके स्राव या नासूरको वाहरी औषधके प्रयोगसे आरोग्य होनेके वादसे इतने वर्ष उनके वक्षसे सम्बन्धित लक्षण उनको कष्ट दे रहे हैं। लक्षणोंका मेल हो जानेपर साइलिसिया पहलेके लुप्त स्रावको फिर लौटा लायेगा और रोगीको स्वस्थ कर देगा।

ज्वर (fever)—स्फोटक, नासूर, अस्थि-रोग इत्यादिके साथ ज्वर रहनेपर साइलिसिया विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होती है। साइलिसियाके ज्वरकी एक विशेषता यह है कि **रोगीको दिन-भर शीत-शीत-सा भाव मालूम होता है।** २-१ लक्षणोंपर ही निर्भर न कर जिसमें उपयुक्त अवसरपर साइलिसिया निर्वाचित हो सके, उसके लिये इसके सभी लक्षण क्रमानुसार वर्णित किये जा रहे हैं।

कारण (cause) - **पैरका पसीना रुककर** ज्वर होनेपर साइलिसिया इसकी एकमात्र औषध है।

वृद्धि (aggravation)—**अमावस्याको, सोनेपर, पूर्णिमाको,** मस्तक वगैर ढँके रहनेसे और ठण्डसे।

ह्रास (amelioration)-उष्णतासे, विशेषकर मस्तक ढँक रखनेसे।

प्रकार (type)—ज्वरकी पारीका कोई ठीक नहीं—सभी समय आ सकता है।

समय (time)—अपराह्नसे सारी रात, रातको सोने जानेके बाद ज्वर, कब जो ज्वर आता है यह रोगी वतला नहीं सकता। सुवह १० वजेसे रात ८ वजे तक, आधी रातसे दूसरे दिन सुवह ८ वजेतक, दिनको

१२ वजेसे १ वजेके अन्दर शीतशून्य ज्वर। पूर्णिमाके समय ज्वर होकर २-१ दिन रहता है।

शीतावस्था (chill)—प्यास नहीं रहती। **प्रत्येक वार हिलने-डोलनेसे ही ठण्ड मालूम होती है। दिन-भर ठण्ड लगना।** उत्तप्त घरमें भी इस ठण्डसे छुटकारा नहीं। वगैर ओढनेके विलकुल ही नहीं रह सकता। सारे शरीरका उत्ताप वहुत घट जाता है। भीतरी जाडा मालूम होता है। विछावनसे हाथ-पैर वाहर निकालनेसे ही ठण्डा मालूम होना। **शीतके साथ अस्वाभाविक भूख।** घुटनेसे पैरतक वरफ-सा ठण्डा। नाक अत्यन्त ठण्डी। **सन्ध्या समय कम्पके साथ शीत।**

उत्तापावस्था (heat)—अतिशय प्यास, विशेपकर अपराह्नमें, सन्ध्या समय और रातमें। अधिक देरतक रहनेवाला उत्ताप, विशेषकर मस्तकमें। उत्तापावस्थामें मुखमण्डल खूल रक्तवर्ण। अपराह्नमें और रातके समय जो ज्वर आता है, उसमें अतिशय तृष्णा और श्वास-कष्ट मालूम होता है। ज्वरमें कम्प न हो। रोगीको दिनभर ही उत्ताप रहता है।

पसीनावाली अवस्था (sweat)—अत्यधिक पसीना। थोडेसे परिश्रमसे ही पसीना होना। **रातभर सारे शरीरमें वहुत ही अधिक पसीना होता है।** मवसे अधिक पसीना मस्तकमें, मुखमें और छातीमें होता है। **दोनों पैरोंमें दुर्गन्धमय पसीना** होना इस औषधका एक उल्लेखनीय लक्षण है। साइलिसियाके पसीनामें अत्यधिक **दुर्गन्ध,** कभी-कभी अम्लगन्ध भी रहती है। पसीनाके कारण रोगी वहुत दुर्वलता अनुभव करता है। क्षय-रोगमें **अतिशय दुर्वलताके साथ रातको पसीना होना** रहनेपर साइलिसिया विशेष उपयोगिताके साथ व्यवहृत होता है। साधारणतः सुवह १० वजेसे रात ८ वजे तक, तीसरे पहर ३ वजेसे ५ वजेतक एवं रातको ११ वजेसे दूसरे दिन प्रातःकाल तक पसीना होता है।

नाड़ी (pulse)—नाड़ी पहले तेज, न दवनेवाली और अनियमित—किन्तु वादमें धीर गतिवाली हो जाती है।

जिह्वा (tongue)—जिह्वा कड़ी एवं क्षतयुक्त। **मालूम होता है मानो जीभपर केश सटा हुआ है।** जीभ भूरे या बादामी रंगके श्लेष्मासे ढकी रहती है। जिह्वामें केन्सर। गरम भोजनसे अनिच्छा, किन्तु ठण्डे खाद्य आग्रहके साथ खाता या पीता है।

निद्रा (sleep)—क्षय-रोगसे पीड़ित व्यक्तियोंकी रात्रिकालीन अनिद्रा। निद्रावस्थामें शरीरमें अत्यधिक पसीना होता है। निद्रावस्था में टहलता है, विशेषकर पूर्णिमाके समय। नौकासे भ्रमण करनेका स्वप्न देखता है। डाकू, चोर, जलाशय और विविध भयजनक स्वप्न देखता है। निद्रावस्थामें बात करता है। नाकसे आवाज होती है। निद्रावस्थामें हाथ-पैरका फेंकना। मस्तकमें रक्ताधिक्य अथवा उत्ताप होनेके कारण अनिद्रा। निद्रामें चौंक उठता है। सन्ध्या समय नींद लग जाती है किन्तु आधी रातके बाद और नींद नहीं लगती। सोनेकी प्रबल इच्छा रहनेपर भी सो नहीं सकता।

रोगके कारण (causes of diseases)—**टीका लगवानेके बाद के विविध रोगोंमें** यह औषध उत्तम फलदायक है। पत्थर खोदनेवालोंके रोगमें। शुक्र या जीवनीशक्ति-रक्षक तरल पदार्थके अत्यधिक निकल जानेके कारण, **चरणोंमें पसीना बैठ जानेके** फलस्वरूप एवं मस्तकमें या पीठमें ठण्ड लगनेके कारण रोग।

वृद्धि (aggravation)—ठण्डेसे, **बगैर ढके बदन रहनेसे—विशेषकर मस्तक, सोनेसे, पूर्णिमाको,** ऋतुकालके समय, अमावस्याको, **पैरके पसीनेके लुप्त होनेके** फलस्वरूप, रातमें, उष्ण भोजन करनेसे, पैरोंमें ठण्ड लगनेसे, हिलने-डोलनेपर एवं मानसिक परिश्रमसे। रोगी शीतार्त। अत्यधिक ठण्ड या गरम दोनों ही बर्दाश्त नहीं होते—मध्यावस्था पसन्द करता है।

ह्रास (amelioration)—उत्तापसे, विशेषकर मस्तकमें कपड़े लपेटनेसे, ठण्डे भोजनसे (सभी रोगोंके घटनेपर भी पाकाशयके लक्षण बढ़ जाते हैं), गरमीके मौसममें एवं बैटरीके व्यवहारसे। मेसमेराइज होनेकी इच्छा।

सम्बन्ध (relation)—कैल्क फॉस एव केलि म्यूरके बाद व्यवहृत होता है। गलका एव स्थानानुसार स्फोटकमें फेरम फॉसके साथ पर्याय-क्रमसे व्यवहृत होता है।

पीव—एकत्रित होनेमें कैल्क-सल्फके साथ इसकी तुलना हो सकती है। इनमें यही प्रभेद है कि यह पीव उत्पन्न करता है और पकाकर पूरी तरहसे तैयार दशामें ला देता है, किन्तु कैल्क-सल्फ पीवको दूरकर इसे आरोग्य करता है। साइलिसियाकी पीवमें बदबू रहती है, किन्तु कैल्क-सल्फमें इसकी तरहकी बदबू नहीं रहती। आँसू बहानेवाली ग्रन्थिकी नलीमें नेट्रम-म्यूरके साथ तुलना हो सकती है।

शक्ति (potency)—सर्वदा ही १२x शक्ति व्यवहृत होती है। पीव उत्पन्न करनेके लिये ६x शक्ति अच्छी है। पीव उत्पन्न हो जानेपर १२x शक्ति एवं अवस्थानुसार इसके ऊपरके क्रम-समूह। २४x, ३०x, ६०x और २००x शक्तियाँ बहुत बार व्यवहृत होती हैं।

तुलनामूलक होमियोपैथिक औषधियाँ—परिपूरक औषध—थूजा, पल्स व सैनिक्यु, फ्लोरं एसि। पलसेटिलाकी पुरानी दशामें साइलिसियाकी आवश्यकता होती है। हड्डीकी किसी बीमारीमें मर्कके साथ तुलनाकी जा सकती है, किन्तु मर्कके बाद यह दवा व्यवहृत नहीं होती। गो-वीजके टीकाके कुफलमें साधारणतः साइलि, थूजा, केलि म्यूर, सलफर व मैलेण्ड्रिनम व्यवहृत होता है। सिर-दर्दमें स्पाइजि, सँगुने व जेल्सके साथ तुलनाकी जा सकती है। छिलौरी (whitlow) और नखका कोन बढ़नेमें साइलिसिया व्यर्थ होनेपर प्रायः ही ग्रैफाइटिस फलदायक होता है। पीवकी दशामें साइलिके साथ कैल्क सल्फकी समता है। पर कैल्क सल्फ अन्तिम दशामें पीव सुखानेके लिये व्यवहृत होता है। इसके विशद प्रभेद उनके-उनके प्रकरणमें देखें।

विपक्ष (antidote)—मर्क्यूरियस।

रोगी-विवरण

अधकपारीके दर्दमें—फेरम फॉस

१९७१ सालके जनवरीके मध्यमें रोगिणी श्रीमती ....वसु, दक्षिणी कलकत्तेकी रहनेवाली, मध्य आयुकी। उनके प्रधान कष्टदायक लक्षण सब हैं—मस्तकके दाहिनी तरफ तेज दर्द, दाहिनी आँखसे पानी गिरता है, दाहिने हाथमें वातका दर्द और मामूली सर्दी। सिर-दर्द हिलने-डोलनेसे बढ़ता है, बढ़नेका समय कोई ठीक नहीं है, साधारणतः सन्ध्या व रातको बढना और वातका दर्द गरम सेक देनेसे घटना, दबानेपर घटना व हिलने-डोलनेसे घटना। किन्तु मुख्य बात यह है कि सिर-दर्द व आँखसे पानी गिरना ये ही बहुत कष्टदायक हो पड़े हैं। वातका दर्द बहुत दिनोंका है।

होमियोपैथिक मतानुसार **सैंगुनेरिया** २००, **ब्रायोनिया** २०० देकर कोई फल न हुआ। इसके उपरान्त सर्दी बहुत ही बढ़ गई है और नाककी हड्डीमें तेज दर्द होने लगा है। नाकमें हाथ नहीं लगाया जाता, नाक और मुखका कुछ भाग फूल गया है। हिलने-डोलनेसे बढ़ना और गरम सेक देनेपर घटना। ज्वर-ज्वर-सा लगना व हिलने-डोलनेपर बढ़ना। **हिपर-सल्फ** ३० देकर कोई फायदा न हुआ। अब बात बोलनेमें भी कष्ट मालूम पड़ता है। **फेरम-फॉस** १२x व **मैग-फॉस** १२x पर्यायक्रमसे हरेक दवा की दो मात्राके हिसाबसे ४ मात्राकर दी गई। और औषध सेवन करनेके २४ घण्टेके अन्दर सब तकलीफें आधेसे अधिक घट गईं और बादके २४ घण्टेके अन्दर रोगिणीकी सभी प्रकारकी तकलीफें घट गई। रोगिणीको फिर और कोई दवा नहीं दी गई। दवाकी क्रिया इतनी शीघ्रतापूर्वक होगी, यह मैं स्वयं भी सोच नहीं पाया था। रोगिणीकी नाकका कष्ट व सूजनके साथ सिर-दर्द व आँखसे पानी गिरना तक सब कुछ घट गया।

कैन्सरमें- कैल्केरिया फ्लोर

२५ वीं अक्टूबर १६७० साल। रोगी—श्रीमान् " दास। आयु ३ महीना, निवास हुगली। जन्मके वाद ही देखनेमें आया कि दाहिने पुट्ठेमें मामूली सूजनके साथ एक सफेद चिह्न है। क्रमशः यह फूला स्थान और भी फूलता गया है और सारा स्थान लाल रंगका हो गया। वादमें उस स्थानपर घाव हो गया है। घाववाले स्थानपर मामूली दवाव डालनेपर पतला जलकी भाँति रक्तस्राव होते देखा जाता है, भीतरकी ओर नासूर हुआ है ऐसा मालूम होता है। क्रमशः उस स्थानपर एक मास-पिण्डकी भाँति दीख पड़ने लगा तथा वह तेजीसे चारों ओर वढ़ने लगा। उस मास-पिण्डमें तेज दर्द, हाथतक भी नही लगाया जाता, हिलने-डोलनेपर रक्तकी तरह लालरगका पसेव निकलता है। मास-पिण्ड ऊँचाइमें प्रायः एक इञ्च हो गया है। उसके साथ ज्वर, लगातार रोना-धोना, जीभपर सफेद लेप, मस्तकके शीर्ष-स्थानपर उत्ताप इत्यादि लक्षण हैं। माता-पितामें ठण्ड लग जानेकी प्रवणता है।

एलोपैथिक चिकित्सकोने अस्त्र-चिकित्सा करनेकी सलाह दी है। किन्तु रोगीके लोग अस्त्र-चिकित्सा कराना अस्वीकार कर मेरे पास चिकित्सार्थ आये है।

मै रोगीको कैल्क-स, हिपर-स, साइलि, सल्फ, कैमोमिला इत्यादि दवायें देकर सामयिक कुछ उपकार होनेपर भी रोगीके हिसावसे कोई फायदा होते नही देखा। विशेषकर क्रमशः वढते हुए मास-पिण्डकी तरफ कोई फायदा ही नही हुआ है। वार-वार पेशाव होता है। तो क्या यह कैन्सर ही हो गया है?

१-१२-७०—**कैल्क फ्लो** १२x दैनिक २ मात्राकर देनेकी व्यवस्था-की गई।

१२-१२—दस दिनोके वाद मास-पिण्डका छोटा होना दीख पडा। रक्तस्राव, ज्वर, रोना-धोना सव कुछ ही उन्नतिकी ओर हैं। **कैल्क-फ्लो** १२x पहलेकी ही भाँति।

२१-१२—घाववाला स्थान प्रायः सूख गया है। रक्तस्राव बन्द हो गया है और दर्द प्रायः नही ही है। ज्वर, रोना-धोना इत्यादि दूसरे लक्षण सब नही हैं। दवा पहलेकी भाँति।

११-१-७१—मास-पिण्ड १२ आने गायब हो गया है। घाववाला स्थान पूरा सूख गया है। दबानेपर भी अब दर्द नही करता है। रोना-धोना बिल्कुल नहीं है। स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। दवा पहलेकी तरह। मालूम हो रहा है मानो मास-पिण्ड कई-एक दिनोके अन्दर ही बिल्कुल गायब हो जायेगा।

मन्तव्य—इस प्रकारके रोगको लेकर जो सब शिशु जन्मग्रहण करते हैं, तो उनके रोगोको जिस किसी मतके चिकित्सकोके लिये आरोग्य करना कठिन कार्य है। यथासमय बायोकेमिक मतानुसार कैल्क फ्लोर दवाकी व्यवस्था न कर सकनेपर यह रोगी बचा रहनेपर भी इसका भविष्य जीवन जो कितना कष्टकर हो पडता, यह चिन्ता भी नही की जा सकती।

मुखके घावमें—केलि म्यूर

(१) **रोगी श्री**—मुखोपाध्याय, आयु ४१ वर्ष, नौकरी-पेशा। ४-५ वर्षोंसे गला, मुखके अन्दर व जीभमें दर्द व घावसे कष्ट पा रहे हैं। शुरूसे आजतक एलोपैथिक चिकित्सा करा रहे हैं। दुर्गापुर जेनरल अस्पतालमें बहुत दिनोसे चिकित्सा कराते आ रहे हैं। वहाँसे रोगका निर्णय किया गया है—**क्रॉनिक फैरिञ्जाइटिस।**

वर्तमान कष्टदायक लक्षणावली—सारे मुखमें, जीभमे व गलेमें दर्द व घाव है। किसी कडे खाद्यको निगलनेकी उनमें शक्ति नही है, तरल खाद्य बहुत देरमें बडे कष्टसे निगल ले सकते हैं। वे बहुत ही भयभीत हो पडे हैं। जीभ सफेद लेपसे भरी हुई है, जीभकी जडमें सफेद लेपमय घाव। बीच-बीचमें थोडा-थोडा ज्वर हो रहा है। मल कडा, कब्जकी प्रकृति, रोज नही होता। बेचैनी है, एक स्थानपर बहुत देरतक नही ठहर सकते हैं। ब्रॉङ्काइटिस। सदैव सिर-दर्द—कभी बाईं

ओर, कभी दाहिनी तरफ आक्रमण करता है और विश्रामसे व सिर बाँध रखनेपर आराम मालूम होता है। सिर-दर्द तेज होनेपर उन्हें सेरिडन टेबलेट लेना ही पड़ता है। पितामें न्यूमोनिया, पुराना सिर-दर्द व सर्दी-खाँसीकी प्रवणता थी और मातामें वात, सर्दी-खाँसीकी प्रकृति और ववासीर रोग है।

१४-१२-७०—**केलि-म्यू** १२x व **फेरम-फॉ** १२x दो मात्राके हिसाबसे ४ मात्रा पर्यायक्रमसे खिलानेकी व्यवस्थाकी।

२१-१२—घाव प्रायः अच्छा हो आया है, सिर-दर्द नहीं है, गलेमें दर्द नहीं है, जीभ साफ है और ज्वर सप्ताहमें केवल एक ही दिन आया था। फिर वही **केलि म्यूर** १२x व **फेरम फॉ** १२x पहलेकी ही भाँति।

३०-१२—आश्चर्यकी बात है कि रोगीके गले, जीभ आदिमें किसी प्रकारके कष्टदायक लक्षण अब नहीं रह गये हैं। अब उनके प्रकृतिगत लक्षणो को संग्रहकर पुरानी-बीमारीकी नीतिके अनुसार चिकित्साकी जा रही है।

मन्तव्य—जिन सब उपसर्गोंके लिये पिछले ४-५ वर्षोंसे आधुनिक खर्चीली वैज्ञानिक चिकित्सा करके भी कोई फल नहीं हुआ, बल्कि रोगीकी हालत क्रमशः शोचनीय होती जा रही थी, वह केवल दो सप्ताहोंकी चिकित्साके द्वारा आरोग्य हो गया। ये सब आरोग्यकी कथायें न देखने पर केवल मुँहके वर्णन सुनकर विश्वास करना कठिन हो जाता है।

(२) २५ वीं अक्टूबर, १९७० साल। रोगी श्री''' नस्कर, २४ परगना जिलाके किसी मुहल्लेके अधिवासी, आयु ४५ वर्ष, दुबला-पतला तथा एक व्यवसायी हैं।

प्रधान कष्ट यह है कि पिछले दो महीनोंसे गलेके बाईं ओर फूल गया हुआ है। वह स्थान कड़ा हो गया है, १½ इञ्च व्यास है और वह अन्ननलीतक फैला हुआ है। आक्रान्त स्थानका रंग चमकीले लालरंगका, ऊपरी भाग सफेद और उस स्थानसे पीव निकल रही है। दाहिनी तरफ भी कुछ सूजन थी किन्तु उपस्थित नहीं है। आकार क्रमशः बढ़ता ही जा रहा है, ठण्डा पानी पीनेसे बढ़ता है, गरम पानी पीनेसे घटता है, लार

गिरता है और घाववाले स्थानमें जलन है। गलेको साफ करनेकी प्रवणता है और सफेद, घना व नमकीन श्लेष्मा निकलता है।

७-८ महीने पहले मसूढ़ोंके फूलनेका लक्षण था। कारबारके लिये रात जागना भी पडता है। हर बार ही चेचककी टीका ली जाती है। पितामें शायद सिफिलिस दोष था और माता यकृतके फोडेसे मरी है।

पी० जी० अस्पतालमें दिखलाया गया है। उन्हें केन्सर रह सकता है सोचकर उन्हें बायोपसी करने व अस्त्रोपचार करनेकी सलाह दी गई। अस्त्रोपचार करनेके लिये तैयार न होनेके कारण मेरे पास चिकित्सार्थ आये हैं। पहली दशामें वे कुछ दिनों तक एलोपैथिक चिकित्सा कराये थे। ११ पेनिसिलिन इन्जेक्शन देनेके बाद सारे शरीरमें एलर्जी (alergy) हो गया। कुछ दिनो तक होमियोपैथिक चिकित्सा भी हुई है।

६-११—**मर्क-बिन-आयोड** २०० व १००० देनेपर भी कोई फल न हुआ। पिछले दिनसे दर्द बहुत बढ़ गया है, घाव दाहिनी तरफ फैल गया है, जीभ मोटे पीली आभायुक्त सफेद लेपसे भरी और गरमसे घटता है। औषध—**फेरम फॉस** १२x व **केलि म्यू** १२x पर्यायक्रमसे दो मात्राके हिसाबसे दैनिक ४ मात्रा दी गई।

१६-११—घाववाले स्थानपर सफेद लेप और उसके चारों तरफ लालरंग। **फेरम फॉस** १२x व **केलि म्यूर** ६x पर्यायक्रमसे ४ मात्रा खानेके लिये दी गई।

२४-११—सफेद लेप चौदह आने घट गया है, सूजन घट गई है, लाल व दर्दमें कमी हो गई है। औषध—पहलेकी भाँति।

५-१२—घाव व घाववाले स्थानपर सफेद लेप नहीं है, ललाई नहीं है, जीभपर अभी भी सफेद लेप है, मामूली सूजन है, उप-जिह्वा बड़ी है। औषध—**फेरम फॉस** १२x व केलि-म्यूर १२x पहलेकी तरह।

२२-१२—हर तरहसे अच्छा है। अभी भी जीभपर मामूली सफेद लेप है, मामूली सूजन भी अभी है, घाव नहीं है, उप जिह्वा अभी भी काफी बडी है। **केलि म्यूर** ३०x दैनिक २ मात्राके हिसाबसे।

१४-१-७१—कष्टदायक लक्षण अब कुछ भी नहीं है। अब उनकी धातुगत (constitutional) चिकित्साकी जरूरत है।

केवल एक महीनेके अन्दर इस प्रकारकी एक कठिन बीमारीको आरोग्य करना बायोकेमिक चिकित्साके लिये ही गौरवकी बात है सन्देह नहीं।

परिशिष्ट

कईएक वर्ष पहले वन-डार-गज नामक जर्मन देशके एक चिकित्सकने महामान्य शुसलरके बारह टिशू रेमेडीजके अलावा और भी ७२ औषधोंका उल्लेखकर एक पुस्तक लिखी। यद्यपि उन्होंने औषधोंको होमियोपैथिक पुस्तकसे लिया है, किन्तु तब भी उन्होंने अपनी पुस्तकमें व्यवहार योग्य लक्षणावलीका उल्लेख नहीं किया है। शुसलरके बारह औषध जिस जगह विफल होते हैं, उस जगह उन्होंने उक्त औषधोंका व्यवहार करनेके लिये कहा है। उक्त औषध समूह शरीरके कोषोंमें कभी-कभी दीखभर पड़ते हैं, सदा नहीं रहते ; अतः उनके व्यवहारसे सुफल मिलनेकी आशा नहीं है। और हमलोग, इन बारह औषधोंसे ही चिकित्सा कार्य चला सकते हैं, ऐसा विश्वास करते हैं। कुछ ही दिन पहलेसे देख रहा हूँ कि २-३ बायोकेमिक औषध मिश्रित कर एक-एक औषध तैयारकी जा रही है एवं उनसे लाभ भी हो रहा है। जैसे साइलिसिया और नेट्रम म्यूरके संयोगसे सिलिका मेरिना, नेट्रम फॉस, साइलिसिया एवं कैल्केरिया फ्लोरिकमके संयोगसे नेट्रम सिलिका फ्लोरिकम इत्यादि औषध तैयार हो रहे हैं। हमलोग उस प्रकार मिश्रित औषध न खरीद कर आवश्यकतानुसार पर्यायक्रमसे औषध व्यवहार करते हैं अथवा मिश्रित कर लेते हैं। लेकिन किसी-किसीका कहना है कि उस प्रकारके औषधसे भी फल होता है।

रोग और उनकी दवाएँ

(Therapeutic Index)

इस सूचीमें संक्षिप्त-रूपसे विभिन्न रोगोंके औषधोंके केवल नाम तथा पृष्ठ संख्याका उल्लेख किया गया है, पूरा विवरण इस ग्रन्थके अध्ययनसे ही प्राप्त होगा।

अ

ड

त

द

य

र

—०—

रोगीके विवरणकी सूची

रोगका नाम	औपधका नाम	पृष्ठ-सख्या
ज्वर	नेट्रम म्यूर	२९२
,,	फेरम-फॉस	१४९
,,	,, ,,	१५०
,,	,, ,,	१५१
अधकपारी व नाकका प्रदाह	,, ,,	३७४
क्रॉनिक फेरिन्जाइटिस	केलि-म्यूर	३७६
केन्सर	,, ,,	३७७
हिचकी	नेट्रम-म्यूर	२७२
पुराना उदरामय	साइलिसिया	३५६
फोडेकी एक रोगिणी	,,	३६८
पुराना उदरामय	नेट्रम सल्फ	३२४
जॉण्डिस	,, ,,	३२५,३२६
गॉल-स्टोन कॉलिक	,, ,,	३२७
ज्वरका शिशु	,, ,,	३३७
लक्षणविहीन ज्वरका एक रोगी	,, ,,	३३७
तलवेमें कॉंटा गडे रोगीकी दशा	,, ,,	३६४
दॉंतमें दर्द	केल्क-फ्लोर	४८
हर्निया रोग	,, ,,	५०
केन्सर	,, ,,	३७५
हड्डीके घावका रोगी	केल्क-फॉस	८०

—०—

लेखकका परिचय

डॉ० विजयकुमार वसुका होमियोपैथिक चिकित्सा के रूपमें विशेष रूपसे सुनाम है। उनकी रचित होमियोपैथिक चिकित्सा-पुस्तकें व विभिन्न सामयिक पत्रोंमें प्रकाशित लेख आदि उनके चिकित्सा-शास्त्रमें निपुण ज्ञाता होनेके प्रत्यक्ष उज्ज्वल प्रमाण हैं।

डॉ० वसु खुलना जिलान्तर्गत महेश्वरपाशा ग्राममें १३१२ वगाब्दके ५ वीं अषाढको जन्म ग्रहण किये थे। वे साधारण शिक्षा समाप्त करनेके वाद टेलीग्राफी-शिक्षामें उत्तीर्ण होकर नौकरीके लिये पहले हजारीवाग व वादमें मेदिनीपुर गये। कर्म-जीवनकालमें ही उनमें साहित्यकी प्रतिभा उमड पडी थी व दैनिक पत्रिका आदिमें उनके लिखे हुए लेख आदि प्रकाशित होते थे। इसी समय उनमें धर्माचरणका प्रादुर्भाव हुआ तथा वे गृह-त्यागी हो गये। वे कुलदानन्द ब्रह्मचारीकी कृपा लाभकर फिर गृहस्थाश्रममें लौट आये। फिर कर्मजीवनमें लग जानेके समय कॉंग्रेसमें योगदान किये और पुलिस-अधिकारियोंके आदेशसे मेदिनीपुर जिलाको त्याग देनेके लिये वाध्य हुए। इस घटनासे इनके जीवनकी गतिमें एक परिवर्तन आया तथा वे होमियोपैथी शिक्षा ग्रहण करने लग गये। १९२८ ई० के २८ वीं फरवरीसे उनके चिकित्सक-जीवनका सूत्रपात्र हुआ। देशका विभाजन होनेके वादसे कलकत्तामें रहकर अवतक भी वे होमियोपैथिककी सक्रियरूपमें सेवा करते आ रहे हैं। १३६० वगाब्दसे हैनिमैन नामक वगला मासिक पत्रिकाका एक सम्पादकके रूपमें विशेष कृतित्वके साथ सम्पादनका कार्य कर रहे हैं। पश्चिम वग जेनरल काउन्सिल व स्टेट फैकल्टी ऑफ होमियोपैथिक मेडिसिनके वे निर्वाचित सदस्य (१९६०), स्टेट फैकल्टी द्वारा परिचालित कॉलेजोंके एक प्रश्नकर्त्ता व परीक्षक, पश्चिम वग राज्य होमियो सघके प्रथम निर्वाचित सभापति (१९६३-६४) थे। इनके अलावे वे स्टेज मैजिक व मेस्मेरिज्मका प्रदर्शन करनेमें भी एक निपुण व्यक्ति हैं। वे वहुत ही सभाओं व सम्मेलनोंका सभापतित्व करनेका सम्मान भी प्राप्त किये हुए हैं। उनके ग्रन्थ सव होमियोपैथिक साहित्य-जगतको समृद्धशाली किये हैं।

हमारे प्रकाशित हिन्दी पुस्तकोंकी सूची

डॉ० एस० एम० भड़ रचित

शिशुरोग चिकित्सा

(चतुर्थ संस्करण)

एक तो यों ही चिकित्सा-शास्त्र अन्यान्य शास्त्रोंसे कठिन शास्त्र माना जाता है, पर इस शास्त्रमें भी वयस्कोंकी अपेक्षा शिशुओंकी चिकित्सा करना जो कठिन होता है यह सर्वजन-विदित है। यह इसलिए कि शिशु अपनी जबानसे अपने रोगोंके विषयमें कहकर कुछ व्यक्त नहीं कर सकता। चिकित्सकोंको स्वय अपने अनुभवों पर निर्भर कर शिशुओंके रोगोंका सावधानीसे सठीक निदान कर चिकित्सा करनी पड़ती है। उनकी हर अवस्थाओंका सूक्ष्म दिग्दर्शन करना पड़ता है। इस पुस्तकके रचयिता चिकित्सकने अपने सम्पूर्ण अनुभवोंका समावेश इस पुस्तकमें कर दिया है। किस रोगमें या किन अवस्थाओंमें शिशुओंके क्रन्दनमें किस-किस प्रकारकी विभिन्नतायें पाई जाती हैं या किस अंग व प्रत्यंगकी क्या गति होती है जिससे उसके ठीक रोग को पकड़कर चिकित्सा की जाती है, उनका पूर्ण विवरण इसमें दिया हुआ है। उनकी दैनन्दिन सेवा, परिचर्य्या, आहार व पोशाक आदि अन्यान्य ज्ञातव्य विषय भी इसमें उल्लिखित हैं। हिन्दीमें शिशु-चिकित्सापर ऐसी पुस्तक जो है ही नहीं अगर कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

यह डॉ० एस० एम० भड़ रचित बंगला शिशुरोग चिकित्सा नामक पुस्तकका सहजबोध्य हिन्दी अनुवाद है जिसकी बंगलामें इतनी माँग है कि बहुत थोड़े समयमें ही इसके १० संस्करण हो चुके हैं। यह पुस्तक हिन्दी भाषा-भाषी जगतके एक महान अभाव की पूर्ति करेगी तथा गृहस्थों व चिकित्सकों दोनोंके लिये ही एक बहुमूल्य पुस्तक सिद्ध होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

हिन्दी-जगतमे अद्वितीय होमियो ग्रन्थ
डॉ० एन० सी० घोष रचित

होमियोपैथिक

कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिका

(चतुर्दश सस्करण)

यह उसी परमोपयोगी वग भाषाके ग्रन्थका हिन्दी भाषान्तर है, जिसकी वगलामें थोडे ही दिनोमें ६०,००० प्रतियाँ विक चुकी हैं, अट्ठारह सस्करण हो चुके हैं और जिसकी दिन-दूनी माग वढती ही जा रही है। हिन्दीमें भी वहुत थोडे ही समयमें यह चौदहवाँ सस्करण हुआ हे।

यदि थोडे दिनोंमें ही चिकित्सा-ज्ञान और यश-प्राप्तिकी इच्छा हो, थोडे परिश्रममें ही सुचिकित्सक वनना हो, वहुत जल्द औषध निर्वांचन करना हो और अग्रेजी भाषाके अनेक नामी ग्रन्थोंकी वातें एक ही स्थानमें देखनी हों तो इसे अपने पास रखिये। इसकी भाषा वडी सरल है, वडे-वडे डाक्टरी शब्दोंकी भरमार नहीं है, वहुत कम पढ़ा लिखा मनुष्य भी अति सहजमें इसे हृदयङ्गम कर सभी रोगोंकी चिकित्सा कर सकता है। सम-लक्षणवाली एक दवासे दूसरेका प्रभेद-विचार, चरित्रगत लक्षण, मानसिक लक्षण, विशेष लक्षण, रोगकी वृद्धि, ह्रास, पूर्व और परिवर्ती दवाएँ, दवाकी क्रियाका स्थितिकाल, इसके अलावा ग्रन्थकारकी अभिज्ञताके परिणाम-रूपमें तुरन्त लाभ दिखानेवाली दवाका वर्णन, मेडिकल सायन्सके अन्तर्गत अङ्गरेजी नामके सव रोगोंका लक्षण वतानेके साथ उनकी दवा, जगह-जगहपर एनाटोमी अर्थात शरीरके वर्णन, ऑर्गाननकी आवश्यक वातें—साराश यह कि चिकित्सकको जो कुछ जाननेकी जरूरत है—वह सभी इसमें एक ही जगह हैं।

प्रैक्टिसनर्स गाइड

(एकादश संस्करण)

ग्रन्थकार— कॉम्पैरेटिव मेटिरिया मेडिकाके विख्यात लेखक—

डॉ० एन० सी० घोष

प्रैक्टिसनर्स गाइड बिल्कुल नये ढङ्गका चिकित्सा-ग्रन्थ है। हमारे
देशकी धातु-प्रकृतिके अनुसार नित्य काममें आनेवाले ऐसे कितने ही नये
विषय हैं जो विदेशी भाषाओंमें लिखी कीमती अंग्रेजी पुस्तकोंमें भी नहीं
है। रोग-परीक्षा स्टेथस्कोप की सहायतासे और अन्यान्य जितने प्रकारसे
रोगीकी परीक्षा होती है, वे परीक्षाएँ, रोगका कारण, लक्षण, उपसर्ग
मारात्मक उपसर्ग, भावी फल, समलक्षणवाली दूसरी-दूसरी बीमारियोंसे
प्रभेद, इन प्रभेदोंके अनुसार औषध-निर्वाचन, वर्तमान रोगके अन्तर्गत
शरीरके यन्त्रोंका स्थान (एनाटोमी), उनकी स्वस्थ, अस्वस्थ अवस्थाओंकी
क्रिया और परिवर्तन (फिजिओलॉजी) और पिचकारी, डूस, एनिमा,
कैथिटर, गैस प्रभृतिकी प्रयोग-विधि, मलद्वारसे पिचकारीके सहारे आहार
देना, स्नान, आहार, पथ्य इत्यादि— **सारांश यह कि चिकित्सकके**
करनेके सभी विषय इस पुस्तकमें दे दिये गये हैं।

इसमें चिकित्सा-शास्त्रके उस अंशका भी विशद विवरण व चिकित्सा
समन्वित हैं जो ऐलोपैथोंके लिये अस्त्र-चिकित्साके अन्तर्गत आते हैं।
होमियोपैथिक चिकित्साके लिये यह ग्रन्थ बहुत ही उपादेय व आवश्य
इसलिये है कि अस्त्र-चिकित्साके अन्तर्गत आनेवाले अधिकांश रोगोंकी
चिकित्सा होमियोपैथिक दवाओंकी सहायता व किस व्यवस्था द्वारा किस
प्रकार करनी चाहिए इसमें बतलाया गया है।

अस्त्र-चिकित्साके काममें आनेवाली आवश्यक वस्तुओंके नाम व
विवरण तथा उनका उपयोग दिया हुआ है। नासूर, जल जाना, हड्डीका
फ्रैक्चर, हड्डीका ट्यूमर, डिस्लोकेशन, आकस्मिक दुर्घटनाएँ, मोतिया-
बिन्द, कैन्सर व अन्यान्य अस्त्र-चिकित्साके अन्तर्गत आनेवाले विभिन्न

रोगोंकी चिकित्सा व व्यवस्था आदि बड़े उत्तम ढंगसे दी हुई है। इस ग्रन्थके अध्ययनसे इस प्रकारके रोगोंकी चिकित्सा करनेका समुचित ज्ञान प्राप्त हो जायगा।

होमियोपैथिक भेषज-रत्नाकर

(षष्ठ संस्करण)

यह पुस्तक जगत विख्यात डॉ० ई० बी० नैश, एम० डी० के अंग्रेजी भाषाके लीडर्स इन होमियोपैथिक थेराप्यूटिक्स नामक ग्रन्थका प्रत्यक्ष और सरल हिन्दी अनुवाद है। इसके अंग्रेजी संस्करणकी लाखों पुस्तकें आजतक छप चुकी हैं। इसके समान पुस्तक अंग्रेजी भाषामें डॉ० केण्ट, एलेन इत्यादि २-४ बड़े-बड़े लेखकोंके ग्रन्थोंको छोड़कर और कोई भी नहीं है। इस ग्रन्थमें प्रत्येक औषधका सबसे जबर्दस्त लक्षण पाठकोंके दिमागमें बैठाना, लक्षणतत्त्व और निदानतत्त्वका झगड़ा मिटाना और कम-से-कम मात्रा प्रयोग-विधिपर विश्वास दिलाया गया है। संसारमें कोई भी होमियोपैथिक कॉलेज नहीं—जहाँ इसकी पढ़ाई न होती हो।

हमें विश्वास है कि कोई भी सुदृढ़ मस्तिष्क और सत्यग्राही चिकित्सक अवश्य ही इस ग्रन्थपर पूरा विश्वास करेगा और इसे चिकित्सामें सर्वोच्च स्थान देगा। इस किताबकी भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी इसे आसानीसे समझकर लाभ उठा सकते हैं।

सरल पारिवारिक चिकित्सा

(सप्तम संस्करण)

खूब सहज तरीके और सरल भाषामें गृहस्थोंके लिये यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें प्रत्येक रोगका विवरण, रोग पहचाननेके तरीके और उसी ढंगके रोगसे प्रभेद, रोगकी विभिन्न अवस्थाएँ, उनकी होमियोपैथिक मतसे चिकित्सा, आनुषंगिक चिकित्सा अर्थात् किस रोगमें कैसा ऊपरी

उपचार करना चाहिये, पथ्यापथ्य प्रभृति विषय बडे ही सुन्दर भावसे लिखे गये हैं। साधारणतः इसमें सभी तरहके रोग, स्त्री रोग, बच्चोंकी बीमारियाँ अर्थात् शिशु-रोग, आकस्मिक दुर्घटना प्रभृति समस्त रोगोंका इलाज बता दिया गया है। इस ग्रन्थके इस सस्करणमें बहुतसे विषय जैसे कि—वक्ष परीक्षा, मल व मूत्र परीक्षा, रक्त दूषण-जनित ज्वर, ब्लड-प्रेसर इत्यादि रोगोंके विवरण और उनकी चिकित्सा तथा और भी अन्यान्य बहुतसे विषय बढाये गये है। इनके अलावा रोगोंकी चिकित्साके अन्तर्गत पहलेके सस्करणोंकी अपेक्षा इस सस्करणमें बहुत-सी दवाएँ भी और बढायी गई है। दवाओंकी सक्षिप्त मेटिरिया मेडिका जो दी हुई है उसमें भी और दवाएँ बढी हैं। बायोकेमिककी १२ हो दवाएँ व कुछ और भारतीय औषधियाँ भी सयुक्त की गई हैं।

संक्षिप्त सरल पारिवारिक चिकित्सा

(सप्तम संस्करण)

हमारी प्रकाशित सरल पारिवारिक चिकित्साका सार सग्रह कर यह पुस्तक नवसिखुए विद्यार्थी और गृहस्थोंके लिये लिखी गयी है। इसमें भी सभी रोगोंका निदान और लक्षण तथा चिकित्साका बहुत सरलता-पूर्वक वर्णन कर दिया गया है। इस सस्करणमें बहुत-सी बीमारियोंका वर्णन और उनकी चिकित्सा तथा आकस्मिक दुर्घटनाएँ इत्यादि बढाई गई हैं। रोगोंकी चिकित्साके अन्तर्गत तो बहुत-सी दवाएँ बढ़ाई गयी है।

डॉ० आर० के० मुखर्जी, बी० ए० प्रणीत

सरल बायोकेमिक चिकित्सा

(दशम सस्करण)

डॉ० शुसलरकी बायोकेमिक चिकित्सा-प्रणालीकी यह एक श्रेष्ठ पुस्तक है। इसमें अत्यन्त बालबोध-हिन्दीमें अकसर होनेवाली सभी बीमारियोंका इलाज, रोगका लक्षण, रोगके चुनावका तरीका इत्यादि

सभी बातें बता दी गयी हैं। बायोकेमिककी १२ दवाओंसे इस पुस्तकके सहारे सभी बीमारियोंकी चिकित्सा बहुत सुगमता-पूर्वक हो सकती है। चिकित्सक तथा गृहस्थोंके बडे ही कामकी चीज है। पुस्तकके अन्तमें सब दवाओंकी मेटिरिया मेडिका भी दे दी गई है।

डॉ० के० एन० वसु प्रणीत

भारतीय औषधियोंका भेषजतत्व

(सप्तम संस्करण)

यूरोप और अमेरिकामें जिन प्रणालियोंका अवलम्बन कर नाना प्रकारके दवाओंकी परीक्षा हुई है और वे समस्त संसारमें व्यवहारकी जा रही हैं, उसी तरह हमारे इस देशकी तुलसी, कालमेघ, नीम, गुलच, पित्तपापडा, अडूसा प्रभृति ४६ दवाओंकी उसी प्रणालीसे परीक्षा हुई है और बहुत वर्षोंसे शहर और मुफस्सिलके होमियोपैथिक चिकित्सकगण इनके सहारे बहुत-सी कडी और कठिन बीमारियोंके रोगीको आरोग्य कर चुके हैं। इस पुस्तकमें इन सब देशी दवाओंकी मेटिरिया मेडिका दी गयी है। पुस्तक कितनी उपादेय है, इसका पता इसीसे लगता है कि बंगलामें इसके बारह संस्करण हो चुके हैं।

प्रफुल्लचन्द्र भड़ द्वारा संग्रहीत

(१) धातुदौर्बल्य

(सप्तम संस्करण)

इस पुस्तकमें धातुदौर्बल्य उत्पन्न करनेवाले सभी कारणोंको बताकर उनसे बचनेका उपाय समझाकर, स्वप्नदोष, ध्वजभंग, जननेन्द्रियकी दुर्बलता, हस्तमैथुन और उसका दुष्परिणाम और उसके बादके मानसिक रोग सब अर्थात् धातुदौर्बल्यके कारण उत्पन्न बीमारियोंका परिचय और उनकी चिकित्सा इतनी खुलासा बता दी गयी है कि एक अनभिज्ञ मनुष्य

भी वहुत सरलतापूर्वक अपनी चिकित्मा आप ही कर सकता है। इसे प्रत्येक चिकित्सक और विद्यार्थीको अवश्य सग्रह कर रखना चाहिये।

(२) ऋतुसम्बन्धी पीड़ाएँ

(चतुर्थ सस्करण)

स्त्रियोंके मासिक धर्म सम्बन्धी रोग

यह पुस्तक वगलाकी उस लोकप्रिय पुस्तकका हिन्दी अनुवाद है जिसका कि थोडे समयमें ही सात सस्करण हो चुके हैं। इस पुस्तकके इतना उपादेय होनेके कारण ही से प्रभान्वित होकर हिन्दी भाषा-भाषी जनता भी जिसमें उसी रूपमें लाभान्वित हो पाये, यह हिन्दी सस्करण प्रकाशित किया गया है।

इस पुस्तकमें स्त्रियोंके ऋतुसम्बन्धी प्रायः सभी रोगोंका वर्णन और उनकी चिकित्सा वडे सुन्दर ढगसे दिये हुए हैं। यह पुस्तक चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञानके विद्यार्थी व गृहस्थों सभीके लिये समान रूपसे लाभ-दायक है, क्योंकि इसकी सहायतासे कोई भी स्त्रियोंकी ऋतुसम्बन्धी गडबडियोकी चिकित्सा सरलतापूर्वक कर सकता है।

होमियोपैथिक गो-चिकित्सा

(द्वितीय सस्करण)

डॉ० एस० मण्डल रचित

मानवकी भाँति गो आदि पशुओंकी भी चिकित्सामें होमियोपैथी समान रूपसे एक अति फलदायक चिकित्सा-प्रणाली सिद्ध हुई है। गो-चिकित्सा नामक वगला ग्रन्थका वगालमें इतना अधिक आदर हुआ है कि इसकी प्रतियाँ वहुत अधिक सख्यामें विक चुकी हैं। इसके उपयोगी होनेका इसे एक ठोस प्रमाण कहा जा सकता है। उसी पुस्तकका यह अति सरल हिन्दीमें अनुवाद है।

डॉ० जे० चटर्जी रचित

फिजिओलॉजी

यह उसी विषयपर एक अति उपयोगी व आवश्यकीय पुस्तक है जिससे चिकित्सा प्रणालीमें पारदर्शी बननेके लिये मनुष्य शरीरके विभिन्न यन्त्रोंकी स्वाभाविक दशामें क्या और कैसे क्रियायें होती है इसका समुचित ज्ञान प्राप्त करना सम्भव होता है जिससे कि चिकित्सा करनेमें बड़ी मदद मिलती है। हिन्दीमें उच्चकोटिकी ऐसी पुस्तक का अभाव इससे दूर हो गया है।

प्रकाशक

हैनिमैन पब्लिशिङ्ग कम्पनी प्राइवेट लि०

१६५, विपिन विहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता ७०००१२।